

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची

भाग २

मंशोधि- कुल ५-१२=८०
राज्याज. सं. (६) क्र.सं. ३३
दिनांक ३-१२-७७ के अनुसार

प्रभारी अधिकारी
रा० प्रा० वि० प्र० मन्त्रालय



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

‡

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

‡

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिवद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना; गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(ऑनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए.

उप सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर.

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७	} भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२	} ख्रिस्ताब्द १९६०
प्रथमावृत्ति ५००		

मुद्रक—श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर ।

RAJASTHAN PURATANA GRANTHMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa,
Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to
India in general and Rajasthan in particular.

★

GENERAL EDITOR

JINA VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar
Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvarananda Vaidic
Research Institute, Hoshiarpur, (Punjab); Gujrat Sahitya
Sabha, Ahmedabad; Retired Honorary Director,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay; General
Editor, Gujarat Puratattva Mandir
Granthavali; Bharatiya Vidya
Series; Sinhgaji Jain Series
etc. etc.

★ ★

No. 51

A CLASSIFIED LIST OF MANUSCRIPTS IN THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

Pt. 2.

★ ★ ★

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana
(Rajasthan Oriental Research Institute)
JODHPUR (RAJASTHAN)

V.S. 2017]

All Rights Reserved

[1960 A.D.

सञ्चालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत सूची राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुरमें अप्रैल सन् १९५६ ई० से मार्च सन् १९५८ ई० तक संगृहीत ३८५५ हस्तलिखित ग्रन्थोंकी है। मार्च सन् १९५६ तक संगृहीत ४००० ग्रन्थोंकी सूची भाग १ के रूपमें प्रकाशित हो चुकी है। साथ ही मार्च सन् १९५८ तक संगृहीत राजस्थानी ग्रन्थोंकी सूची भी राजस्थानी ग्रन्थ सूची, भाग १, के नामसे पृथक् प्रकाशित की जा चुकी है।

ग्रन्थोंका वर्गीकरण और विषयनिर्धारण ये दोनों ही कठिन एवं समय-सापेक्ष्य कार्य हैं। हमारा विचार था कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमें संगृहीत ग्रन्थोंका वर्गीकृत और सविवरण सूचीपत्र तैयार कराकर विज्ञजनोंके सामने लाया जाय, किन्तु ग्रन्थोंकी संख्या दिनों-दिन बढ़ती रही और आगन्तुक विद्वानों एवं अनुसंधित्सुओं का, सामग्रीकी उपयोगिताकी दृष्टिमें रखते हुए, यह अनुरोध रहा कि संगृहीत सामग्रीका कोई न कोई रूप जल्दी से जल्दी सामने आ जाना चाहिए। एतदर्थ यथासाध्य उपकरणोंको जुटा कर विभागीय कर्मचारियों द्वारा थोड़े से थोड़े समयमें मोटे तौर पर वर्गीकरण एवं विषय-विभाजन कराकर ये सूचियाँ वार्षिक सूचिकाके रूपमें प्रकाशित की जा रही हैं। आगे विवरणादि तैयार करनेका कार्यक्रम भी हमारे सामने है और राजस्थानी सचित्र ग्रन्थोंके सूचीपत्रका काम इस दिशामें श्रीगणेश करनेके लिए हाथ में लिया गया है। इस प्रकार हमारे सूची-प्रकाशन कार्यक्रममें एक तो संगृहीत-ग्रन्थोंकी सूची और दूसरी विवरणात्मक सूचियाँ यथावसर निकलती रहेंगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची, भाग २, का स्वरूप यद्यपि प्रथम भागके बहुत कुछ अनु-रूप रखा गया है, फिर भी इसमें आवश्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किये गये हैं। यथा भाषाका कोष्ठक कम करके हिन्दी एवं राजस्थानी ग्रन्थोंके पृथक् विषय बना दिये गये हैं जिससे सुविधानुसार इन दोनों भाषाओंके ग्रन्थोंकी जानकारी मिल सके। विशेष उल्लेखनीय के कोष्ठकमें रचनाकाल, लिपिस्थान, लिपिकर्त्ता, ग्रन्थदशा और विषय-स्पष्टीकरणका संक्षिप्त संसूचन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिशिष्ट १ में कुछ विशिष्ट ग्रन्थोंके आद्यन्त अंश अविकल रूपमें उद्धृत कर दिये गये हैं। साथ ही ग्रन्थके विषयमें यदि कोई विशेष सूचना प्राप्त हुई है तो वह भी समाविष्ट कर दी गई है। तात्पर्य यह है कि ग्रन्थके स्वरूप एवं दशाको समझनेके लिए संक्षिप्त रूपमें जानकारी देनेका यथाशक्य प्रयास किया गया है। परिशिष्ट २ में ग्रन्थकर्त्ता-नामानुक्रमणिका दी

गई है। स्पष्ट है कि इन दोनों ही सूचियोंमें बहुतसे ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारोंके नाम अद्यावधि अन्यान्य संस्थाओंमें प्रकाशित ग्रन्थसूचियोंमें, विशेषतः राजस्थानी ग्रन्थ-सूचियोंमें नहीं पाये जाते हैं, जो अद्यतन अनुसंधित्सु विद्वानोंके लिए विशेष आवश्यक एवं उपयोगी हैं।

प्रतिष्ठानकी वर्द्धमान प्रगतिको देखते हुए यह भी उचित समझा गया है कि राज्यमें तत्स्थानों पर उपलब्ध हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहोंको भी इसी विभागके आगत कर दिया जावे। तदनुसार इन्द्रगढ़ पोथीखानेके २०६ ग्रन्थ प्रतिष्ठानमें प्राप्त हुए हैं जिनकी सूची इसी भागके परिशिष्ट ३ में प्रकाशित की जा रही है। भविष्यमें भी ऐसे प्राप्त होने वाले सरकारी एवं व्यक्तिगत संग्रहोंकी सूचियाँ प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित की जावेंगी।

इस सूचीमें समाविष्ट ग्रन्थोंके आक्रमांक विशिष्ट परिचयान्त परिचय-पत्रक सन् १९५८ के नवम्बर मासमें ही श्री गोपालनारायण बहुरा एवं श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी द्वारा भरे जा चुके थे, परन्तु दिसम्बर १९५८ में प्रतिष्ठानका स्थानान्तरण जोधपुरमें हो गया। यहाँ आकर व्यवस्था आदि करने में ५-६ मासका समय लगा। तदनंतर पुनः जांच आदि करके प्रेस कापियाँ तैयार की गईं और मुद्रण चालू करवाया गया। इस पुस्तक का सम्पादन हमारे निर्देशनमें विभाग के उप संचालक श्री गोपालनारायण बहुराने किया तथा परिचय पत्रकांकन, प्रेस काँपी लेखन, नामानुक्रमणिका और परिशिष्टादि संकलन और प्रूफ-संशोधनादि कार्यमें सर्व श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी, रमानन्द सारस्वत, स्वर्गीय विश्वेश्वरदत्त द्विवेदी प्रभृतिने भी यथेष्ट सहयोग दिया।

आशा है, इस प्रकाशनसे विद्वज्जन एवं पुरासाहित्यानुसंधित्सु लाभान्वित होंगे।

राज० प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
दि० २९-७-६०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

विषय - तालिका



विषय	कृतियाँ	पृष्ठ संख्या
१ स्तुतिस्तोत्रादि	२६०	१-१४
२ वैदिक	११०	१५-२०
३ कर्मकाण्ड	१७६	२१-३०
४ तन्त्रमन्त्रादि	१३१	३१-३८
५ धर्मशास्त्र	११३	३९-४६
६ पुराण-कथा-माहात्म्यादि	१७१	४७-५७
७ वेदान्त	२२६	५८-६९
८ न्याय-दर्शन	५९	७०-७२
९ व्याकरण	१६६	७३-८१
१० कोष	५३	८२-८४
११ ज्योतिष	६२३	८५-१२१
१२ छन्दःशास्त्र	२४	१२२-१२३
१३ संगीतशास्त्र	३	१२४
१४ कामशास्त्र	४	१२५
१५ काव्य-नाटक-चम्पु	२३३	१२६-१४०
१६ रसालङ्कारादि	४३	१४१-१४३
१७ सुभाषितादि	६४	१४४-१४८
१८ कथा-चरित्र-आख्यानादि	६१	१४९-१५३
१९ आयुर्वेद	१४२	१५४-१६१
२० राजस्थानीग्रन्थ	७९८	१६२-२०५
२१ हिन्दीग्रन्थ	५४८	२०६-२३६
२२ जैनस्तोत्र	१४९	२३७-२४५
२३ जैनागम	१८१	२४६-२५९
२४ जैनप्रकरण	१७१	२६०-२७१
२५ प्रकीर्णग्रन्थ	३५	२७२-२७४
परिशिष्ट १ [कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]		२७५-३२९
परिशिष्ट २ [ग्रन्थकारनामानुक्रमणिका]		३३०-३४६
परिशिष्ट ३ [इन्द्रगढ़ पोथीखानेसे प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची]		३४७-३९१



राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १. स्तुतिस्तोत्रादि]

क्रमाङ्कः	ग्रन्थाङ्कः	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५८	अग्निहोत्रपञ्चाग्नि स्तोत्र		१८२७	११	लि. क.—वैष्णव नृसिंहदास
२	४५०३ (१)	अपराजिता विद्या (रुद्रगीता)	विष्णुधर्मोत्तर तृतीयकाण्डगत	१८वीं श.	१-६	गढ़ बधणोर मध्ये
३	७६६८	अपराधनिरसन स्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१८६०	२	लि. क.—रामनारायण
४	६६५२	अपराधमुन्दरस्तोत्र सटीक	शङ्कराचार्य (टी. रामानन्दभिक्षु रामेन्द्रवनशिष्य)	१७६७	७	लि. क.—परमानन्द
५	४४६७	अपामार्जन स्तोत्र	विष्णुरहस्योक्त (दालभ्य- पुलस्त्यसंवाद)	१८०२	८	लि. क.—दवे सदाशिव
६	४४७७	" "	विष्णुधर्मोत्तरे विष्णुरहस्योक्त	१६वीं श.	१०	
७	५४३८ (६)	अष्टाविंशति नाम	भगवदुक्त	१८६०	६६-६७	
८	४२३४	अहल्यास्तोत्र	अध्यात्मरामायणगत	१८वीं श.	६	*
९	४२५४	अज्ञानविमोचनस्तोत्र	नन्दपुराणगत	१६वीं श.	३	*
१०	४३७०	आदित्यहृदयस्तोत्र (द्वादशावरण)	भविष्योत्तरपुराणगत	१८२०	११	लि. क.—गंगाधर
११	४५१२	आदित्यहृदयस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१६वीं श.	२५	
१२	५०५२	"	"	१८६५	१६	लि. क.—जोशी पन्नालाल सवाई जयपुरमध्ये
१३	५०५७	"	"	१६२३	१८	
१४	६७८५	आनन्दलहरी	शङ्कराचार्य	१६०८	२	
१५	४५१३	आपद्बुद्धारबटुकभैरवकवच स्तोत्र (अष्टोत्तरशतनाम)	रुद्रयामले भैरवतन्त्रोक्त	१८०३	७	लि. क.—दवे सदाशिव
१६	६०७४	आलवन्दारस्तोत्र सटीक त्रिपाठ	यामुनाचार्य	१८२८	१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६२४३	आलवन्दारस्तोत्र सटीक	यामुनाचार्य	१८२६	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८	६५४७	" "	"	१९वीं श.	१४	
१९	७५८२	" "	"	१८७८	१८	
२०	६३७६	इन्द्राक्षी स्तोत्र		१८वीं श.	५	
२१	४६०४	(१) एकश्लोकी भागवत (२) महाभारत (३) दुर्गा (४) सप्तश्लोकी गीता			६६ से ६९	
२२	५६४७	कर्पूरस्तवराज सटीक	महाकालसंहितोक्त	१९वीं श.	१२	लि.क.—व्रजवासी, अलवर
२३	५४४८	कार्तवीर्यार्जुन कवच	अमरतन्त्रोक्त	"	३८	
२४	५७०३	कालिका-कवच	तन्त्रोक्त	१९१२	२	
२५	५७६०	कालिकाखड्गमाला स्तोत्र	महाकालसंहितान्तर्गत	१९वीं श.	३	
२६	५८१७	कालीसहस्रनाम	"	१८वीं श.	३०	लि.क.पुजारी हरदेवदास, गोविंदगढ़
२७	५१६२	काशीमङ्गल स्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१९वीं श.	८	
२८	६२८० (२)	कृष्णकण्ठामृत	लीलाशुक	१९०६	७-१६	
२९	७६१६	कृष्णस्तवराज		१९वीं श.	१०	
३०	४२३६	कौस्तुभस्तोत्र	अध्यात्मरामायणान्तर्गत	१८वीं श.	४	हिन्दी टीका सहित
३१	४२३१	गंगालहरी	जगन्नाथ भट्ट	१९वीं श.	२७	
३२	५४२० (२)	गंगालहरी (सटीक)	जगन्नाथ, टी. बलदेव	१९वीं श.	४८-६५	
३३	५५६९	गंगालहरी बालबोधिनी टीकासहित	टी. दलपतिराम	"	३२	
३४	६०५८	गंगालहरी टीका	टी. चतुर्भुज मिश्र	१९०६	५८	लि. क.—सालग्राम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	४२३७	गंगास्तोत्र	नारायण भट्ट	१८वीं श.	४	
३६	६६३६	"	ब्रह्मवैवर्त्तपुराणगत	१८८१	५	
३७	४२६६	गजेन्द्रमोक्ष	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२६	
३८	५२८४	"	"	१९वीं श.	१३	
३९	४५०६	"	"	१८३६	१६	
४०	४४५२ (३८)	गणपतिस्तोत्र		१८वीं श.	४१	लि. क.-पं० प्रीतसौभाग्य
४१	४६७०	गायत्रीसहस्रनाम	रुद्रयामलोक्त	१८१२	११	लि.क.-महात्मा नाथराम शिवपुरीमध्ये
४२	५४५६	गीता पञ्चरत्न सचित्र		१८वीं श.	२१६	चित्र संख्या ५
४३	५५०८	"		१८३०	३६०	
४४	५८१८	"		१८७४	१६२	
४५	७१७४	" सचित्र		१८वीं श.	गुटका	चित्र संख्या ५१
४६	४५०८	गुरुगीता	स्कन्दपुराणोत्तरखण्डोक्त	१८१६	५	लि.क.-भीकमजी
४७	७६२६	गुरुपादुकास्मृति		१९वीं श.	३	
४८	७१४८	गुरुस्मरणाष्टक		"	४०	
४९	५३१६	गोपालविशति	कवितार्किकसिंह बेंकटनाथ शिष्य गोपाल	१८८३	२	गोपालविद्याथिना लिखितं नेतरामजी कृते
५०	५२०५ (१४)	गोपिकागीत (रासपंचाध्यायी)	भागवतोक्त	१८वीं श.	४६-६४	
५१	४२६१	गोपीनाथाष्टक	विश्वनाथ चक्रवर्ती	१९४७	२	
५२	४५०५	गोविन्दस्तोत्र	श्रीशंकराचार्य	१८४३	३	
५३	७७८६	गोविन्दाष्टकम्	"	१७५१	२	
५४	५०८३	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१७८६	६१	ग्राह्य चार पत्र अप्राप्त, लि.क.-धवल, चित्र सं. ४६

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५	५२०८	चण्डीपाठ (सचित्र)	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१८वीं श.	६८	चित्र संख्या १०
५६	५२०५(१२)	चतुःश्लोकी भागवत		"	४७-४८	
५७	४४५२(५८)	चतुःषष्टियोगिनीस्तव		"	११६वां	
५८	६३८१	जानकीनवरत्नस्तोत्र	मार्कण्डेयपुराणोक्त	१६वीं श.	६	लि.क.—भरतदास वैष्णव, भरतपुर
५९	७७०३	जानकीस्तवराज	अग्रस्त्यसंहितान्तर्गत	"	६	लि.क.—रामनारायण
६०	६६६७	जानकीसहस्रनामस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१७६०	१८	लि.क.—भगवद्दास
६१	७०६५	जानकीसहस्रनाम		२०वीं श.	७	
६२	४६६६	ताराकवच	भैरवीतन्त्रोक्त	१६वीं श.	४	
६३	४२४६	तारा-श्रीरामसंवाद	रामायणोक्त	१८वीं श.	५	वेदान्तपरक
६४	६६३४	द्वादशस्तोत्राणि	आनन्दतीर्थ	१६वीं श.	११	
६५	७७०५	दशहरास्तोत्र	स्कन्दपुराणे काशीखंडोक्त	१७४२	४	लि.क.—चतुर्भुज व्यास, अम्बावती
६६	७६१२	दशावतारस्तोत्र		१६वीं श.	१	लि.क.—केशवदास, गढ़बदनोर
६७	६०५२	दक्षिणामूर्तिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	४	
६८	४५४४	"	"	१७६४	१२	
६९	५५०४	दुर्गाकीलकस्तोत्र		१८८६	१२	लि.क.—हनुमदुपाध्याय
७०	४२०७	दुर्गासप्तशती		१६वीं श.	३५	
७१	४४७६	"		१७७३	५६	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२	५३२८	"		१८३१	५६	लि.क.—रघुनाथजोशी, स. जयपुर
७३	५४६३	"		१८८६	५८	लि.क.—हनुमदुपाध्याय
७४	६६२७	"		१७वीं श.	८४	भोजपत्र पर लिखित
७५	७१५७	"		१८वीं श.	१६१	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	५०६२	देवीचरित्र (दुर्गोपाख्यान, त्रयोदशाध्यायान्त)	रुद्रयामलोत्तरखंडोक्त	१६वीं श.	५१	पत्र १ व ३२वां अप्राप्त तथा १५वें पत्रमें कुछ सन्दर्भ त्रुटित
७७	५५२०	देवीमहिम्नस्तोत्र	दुर्वासःप्रोक्त	१६१७	२२	लि.क.—व्यास मुकुन्ददास, जोधनगर
७८	४३११	देवीमाहात्म्य	वेदव्यास	१८५६	१८	
७९	४२६०	नंदाष्टक, कृष्णाष्टक	श्रीमद्गोस्वामी (विठ्ठल?)	१८वीं श.	४	
८०	७७५७(६)	नवश्लोकीस्तोत्र	शंकराचार्य	१८५०	२२८-२३०	
८१	४१७२	नारायणकवच	भागवतोक्त	१८वीं श.	८	
८२	४४६८	"	"	१६वीं श.	४	
८३	५४३८(७)	"	"	१८६०	६७-७३	
८४	४२३३	नारायणाष्टक		१८वीं श.	३	
८५	६४५०	नारायणहृदयस्तोत्र		१६१७	१-४	
८६	४२६७	नृसिंहकवच		१८वीं श.	४	प्रथम पत्र सचित्र
८७	४१७५	पंचमुखी हनुमत्कवच		१६वीं श.	१३	
८८	७६५३	पंचायुधस्तोत्र	ब्रह्मांडपुराणोक्त	१८३७	२	
८९	४१७०	पद्मपुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	१८७८	१०	
९०	६८५८	"	"	१८वीं श.	८	आद्यपत्र चित्रित
९१	४८८१	(१) पवनविजयाशनिस्तोत्र (२) रामनवमीसंकल्प		१६वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
९२	४१७८	पीयूषलहरी	जगन्नाथ पंडितराज	१६१०	१४	लि.क.—गोटाराम जोशी
T ९३	४१७९	पीयूषलहरी		१६१०	१३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४	४५१०	पीयूष लहरी	जगन्नाथ पण्डितराज	१६१०	११	
६५	५२५६	"	"	१८वीं श.	२६	
६६	६५८५	ब्रह्मस्तुति (व्याख्यासहित)	श्रीनिवासदास	१८४०	२५	
६७	५२४८	बगलामुखीस्तोत्र		२०वीं श.	७	
६८	४१३३	बटुकभैरवकवच		१६वीं श.	८	
६९	४१३४	बटुकभैरवसहस्रनामस्तोत्र		"	३५	
१००	४१५४	भगवती अर्गला कीलकस्तोत्र		"	३	
१०१	४१६२	भगवती पुष्पाञ्जलि	कवि रामकृष्ण	"	६	लि.क.—रामशंकर, कुबेरलाल, स्थान—ग्राम मधवासना
१०२	६४२३	"	"	१८०७	६	
१०३	७६६४	भवान्यष्टक	शंकराचार्य	१७६४	१	लि.क.—राघव जोशी
१०४	४१२४	(१) भवानी कवच (२) भवानीसहस्रनामस्तोत्र		१८वीं श.	२२	
१०५	४२५६	भवानीसहस्रनाम		१८६१	३०	लि.क.—गंगाविष्णु, मलारणा
१०६	५२१३	"		१८वीं श.	३०	
१०७	५७६०	भवानीसहस्रनाम एवं कवच		१८६८	६	लि.क.—हरिवल्लभ शर्मा
१०८	५४६७	भावकल्पतरु	मधुर शर्मा	१९वीं श.	३४	
१०९	४२४१	भीष्मस्तवराज	महाभारतोक्त	१८वीं श.	२२	
११०	५२८५	"	"	१९वीं श.	६	
१११	६६६६	"	"	"	१२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	४५१८	भीष्मस्तोत्र, अनुस्मृति	शान्तिपूर्वोक्त	१८३१	१४	
११३	५२०५ (१३)	भुजङ्गप्रयाताष्टकम्			४८-४९	
११४	४२७५	भुवनेश्वरीस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	१६८६	८	
११५	५३८५ (६)	मङ्गलाष्टक		१६वीं श.		
११६	६६६०	"	कालिदास	१८६७	५	
११७	७७०१	मधुरकुञ्जविहार्यष्टक		१८वीं श.	१	
११८	५२४३	मल्लारिकवचस्तोत्र	ब्रह्माण्डपुराणक्षेत्रखण्डोक्त	"	३	
११९	५०५६	महागणपतिकवच	देवीरहस्योक्त	१६वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	४५१४	महागणपतिस्तोत्र	राघवचैतन्य	१८२६	३	लि.क.—तिवाड़ी बखतरामजी
१२१	४५०३ (२)	महागणपतिस्तोत्र	शंकराचार्य	१८वीं श.	६-८	
१२२	४२१५	महानारायणस्तोत्रचिन्तामणि		१६वीं श.	१८	
१२३	५०४६	महालक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	"	११	
१२४	६६८२	महासुदर्शनकवच	सुदर्शनसंहिता	"	३	
१२५	५२५०	महिम्नस्तोत्र	श्रीविष्णुकृत	१८३१	६	
१२६	५८७०	"	पुष्पदन्त	१६वीं श.	४	
१२७	६६८३	"	"	१७६०	११	लिपि स्थान—काशी
१२८	६६६१	"	"	१८८६	१०	लि.क.—नन्दराम
१२९	७४६६	महिम्नस्तोत्रटीका	मधुसूदन सरस्वती	१७६३	४८	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१३०	५५६०	महिम्नस्तोत्र सटीक (त्रिपाठ)		१६वीं श.	१६	
१३१	६७८४	"		१६१६		लि.क.—रामदास कबीरपंथी
१३२	५७८४	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	रुद्रयामलतंत्रोक्त	१८८१	८	लि.क.—ब्रजवासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३३	६६६८	महिषमर्दिनीसहस्रनाम	विश्वसारोद्धृत	१६वीं श.	१२	
१३४	५२७८	यमकाष्टक	पद्मप्रभदेव	२०वीं श.	५	
१३५	४२३८	यमुनाष्टकस्तोत्र		१८वीं श.	३	
१३६	६७०१	यमुनाष्टकादिस्तोत्र	श्रीवल्लभ-विठ्ठल-हरिराय-रघुनाथ	१६वीं श.	५४	(४८ कृतियां)
१३७	६३७६	युगलकिशोर सहस्रनाम	नारदीयपुराण	१८वीं श.	१२	
१३८	४१७३	रघुवरसहस्रनामस्तोत्र	ब्रह्मरहस्यगत	१८११	२१	लि.क.—रामसेवक, चित्रकूट
१३९	६७४६ (५)	राधाकवच		१६वीं श.	११७-११६	अंतमें नवग्रहस्तोत्र आदि हैं
१४०	५४५५ (२)	राधाकृष्णशतनामस्तोत्र	तंत्रोक्त	"	११	
१४१	७७००	राधाष्टकस्तोत्र	त्रैलोक्यसम्मोहनतंत्रोक्त	१८वीं श.	१	
१४२	६२८० (५)	राधास्तवराज	गौतमीयतंत्रोक्त	१६०६		लि.क.—पुजारी हरदेवदास
१४३	५४५४	राधासहस्रनामस्तोत्र	रुद्रयामलोक्त	१८१८	३६	
१४४	५५१८	"	"	१६वीं श.	२५	
१४५	५२४७	राधिकाष्टकस्तोत्र		,	२	
१४६	७७०२	राधिकास्तोत्र	बृहद्ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१७६६	१	
१४७	६२८० (७)	राधिकाष्टोत्तरशतनाम		१६०६	२	लि.क.—पुजारी हरदेवदास
१४८	५२८३	रामचन्द्रस्तवराज	नारदप्रोक्त	१६वीं श.	८	
१४९	७७१८	रामचन्द्र स्तुति आदि		"	६	
१५०	६३६६	राम महिम्नः स्तोत्रम्	विजयरामाचार्य	१६०१	११	
१५१	४३३२	रामरक्षाकवच	विश्वामित्र ऋषि	१८वीं श.	६	
१५२	७६४७	रामरक्षाविवरणकारिका	नीलकण्ठ	१६वीं श.	३	
१५३	५०५३	रामरक्षास्तोत्र	विश्वामित्र	"	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५४	६६७६	(१) रामवज्रकवच (२) विष्णुहृदयस्तोत्र	हिरण्यगर्भसंहितोक्त	१६वीं श.	८	
१५५	६६८०	रामशरणस्तोत्र	बृहद् ब्रह्मसंहितोक्त	१८वीं श.	४	
१५६	६६३०	रामस्तव		१६वीं श.	३	
१५७	४२४७	रामस्तवराज	समत्कुमारसंहितोक्त	१८वीं श.	१८	
१५८	५२३५	"	"	१७५६	७	
१५९	५४३८(१)	"	"	१८६०	१-१६	
१६०	६६६५	"	"	१८६०	६	लि.क.—जयजयराम
१६१	६७४६(४)	"	"	१६वीं श.	१०५-११६	
१६२	५२३३	"	"	१६०६	३८	किला अमरकोट मालवामें लिखित
१६३	४२४८	रामहृदयस्तोत्र		१८वीं श.	६	
१६४	४५०४	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१६वीं श.	५	
१६५	७७५७(८)	"	अध्यात्मरामायणोक्त	१८५०	२२२-२२७	
१६६	६६३६	रामानुजाष्टोत्तरशतनाम	महात्मा आङ्घ्रिपूर्ण	१८वीं श.	२	
१६७	७६१६	रामाष्टक, रामस्तोत्र	महेश्वर भट्ट	१६वीं श.	१	
१६८	५७१५	रुचिस्तव	मार्कण्डेयपुराणोक्त	"	५	
१६९	७७६६	रूपचिन्तामणिस्तोत्र	चक्रवर्ती	१८६०	४	लि.क.—रामनारायण
१७०	६२८०(६)	"	"	१६०६	२५-२८	लि.क.—पुजारी हरदेवदास
१७१	५१६४	ललितादिव्यनामत्रिशती	ललितोपाख्यानगत	१६वीं श.	२०	
१७२	५८०७	ललितास्तव	दुर्वासि	१६वीं श.	२६	स्तव २११ आर्याग्रामोंमें है ।
१७३	७६५६	लक्ष्मीपञ्जरस्तोत्र	मन्त्ररहस्योत्तरखण्डोक्त	१६१३	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७४	६६८६	लक्ष्मीस्तव	वैकटनाथ वेदान्ताचार्य	१६वीं श.	३	
१७५	६६८८	लक्ष्मीस्तोत्र		१६०१	४	
१७६	५५१६	लक्ष्मीस्तोत्र, नारायणहृदय	अथर्वणरहस्योक्त	१६२६	१२	
१७७	५३१६	लक्ष्मीसहस्रनाम	ब्रह्माण्डपुराणगत	१८२८	१०	७वां पत्र अप्राप्त
१७८	६४४० (२)	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र	अथर्वणरहस्योक्त	१६१७	५-१७	
१७९	७७१३	ब्रजविहार	श्रीधर स्वामी	२०वीं श.	२	
१८०	५३३६	वरदगुरुपंचाशत	नारायण	२०वीं श.	६	लि.क.—देवकृष्ण, र.का. १६०१
१८१	५२३४ (२)	(१) विशतिनामस्तोत्र (२) चतुःश्लोकी भागवत (३) एकश्लोकी रामायण (४) सप्तश्लोकी गीता (५) बिहारी सतसई के २३ दोहे		१६११	१०-१४	
१८२	५५११	विलोम सप्तशती	मार्कण्डेयपुराण	१८वीं श.	३२	
१८३	७७२१ (१६)	विष्णुपञ्जरस्तोत्र		१८४४	२०३-२०५	लि.क.—व्यास केशा
१८४	७७५० (२)	"	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८६०	२१-२४	लिपिकर्त्री—किशनी, लिपि स्थान—खारला
१८५	४२५१	विष्णुसहस्रनामस्तोत्र	महाभारतोक्त	१८वीं श.	३२	
१८६	४४७८	विष्णुसहस्रनाम (सार्थ)	पद्मपुराणोक्त	१७वीं श.	५३	टीका हिन्दीमें
१८७	५२८२	"	महाभारतोक्त	१६वीं श.	१३	
१८८	५४३८ (२)	"	"	१८६०	१६-४०	
१८९	५४६०	" (गीतापञ्चरत्न)	"	१८८२	३०१	चित्र संख्या ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६६३५	विष्णुसहस्रनाम	महाभारतोक्त	१७वीं श.	११	लि.क.-पण्डित हरिपाणि
१६१	६३७५	"	"	१७८२	१७	
१६२	४५१५	"	"	१८वीं श.	१६	
१६३	६८६४	विषाणहारस्तोत्र व्याख्या	धनञ्जयसूरि	१६वीं श.	१०	
१६४	५२०५(१७)	विक्षिप्त ? (विक्षिप्तिस्तोत्र)	विठ्ठलेश दीक्षित	१८वीं श.	८६-८८	
१६५	५१८३	वृन्दावनशतकम्	प्रबोधानन्द सरस्वती	"	२०	
१६६	५४६६	"	"	१८३७	११	
१६७	६४६८	वेदस्तव सटीक	विश्वनाथ	१६वीं श.	२७	
१६८	४२४६	वेदस्तुति	भागवतोक्त	१८वीं श.	१४	
१६९	५४६७	वेदस्तुति (अन्वयबोधिनी टीका)		१८६२	३६	
२००	६४६३	वेदस्तुति सटीक		१६६६	६	लि.क.-शिवनिधानगणि, लि० स्था०-प्रल्हादनपुर
२०१	६४६७	" "	टी. श्रीधर	१८८८	५४	लि.क.-हरिलाल
२०२	६५६३	" "	श्रीनिवासदास	१६वीं श.	२८	
२०३	४१८०	वैशम्पायन सहस्रनाम	वेदव्यास	"	२७	
२०४	४२५३	श्रीदेवीपुष्पाञ्जलि	रामकृष्ण	१८४६	३	
२०५	४१३१	श्रीसूक्त (सभाष्य)	विद्यातीर्थ	१६वीं श.	६	
२०६	७७५७(१०)	श्लोकोपनिषत्	शंकराचार्य	१८५०	२३०-२३२	
२०७	५७५६	शरभसहस्रनाम (सकवच)	आकाशभैरवकल्पोक्त	१६वीं श.	७	
२०८	४१७१	शारभकवच	शंकरप्रोक्त	"	१२	
२०९	६६८७	शालिग्रामस्तोत्र	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१०	७७६०	शिवताण्डवस्तोत्र	रावण	१६वीं श.	२	जयपुर में लिखित
२११	५५०६	शिवमहिम्नःस्तोत्र	पुष्पदन्त	१८४२	६	
२१२	४६२१	शिवमहिम्नःस्तोत्र	"	१६वीं श.	५	
२१३	४१६१	शिवमहिम्नःस्तोत्रटीका	अहोबिल शास्त्री	"	२४	
२१४	६१६८	शिवमहिम्नःस्तोत्र (सटीक)	"	"	८	
२१५	६६६७	" "	"	१६१५	१४	लि.क.—ब्रह्मानन्द
२१६	५१८६	" "	मधुसूदन सरस्वती	१६वीं श.	५०	
२१७	७७७२	शिवस्तोत्र	रावण	१६वीं श.	१	
२१८	४४६६	शिवसहस्रनामस्तोत्र	शिवपुराणोक्त	१८६२	१०	
२१९	५०५६	शिवाष्टक	शंकराचार्य	१८६०	३	
२२०	४२१६	शीतलास्तोत्र		१८७१	३	लि.क.—गोपीनाथ
२२१	७८११(३)	स्तोत्रकवचादि		१८वीं श.		लि.क.—केसोराम कान्यकुब्ज
२२२	६२८०(४)	स्मरणमंगल		१८वीं श.		लि० स्था०—नगर बौली
२२३	४५०१	संकटनाशनस्तोत्र	पद्मपुराणोक्त	१६०६	२१-२२	*
२२४	४१५३	सप्तशती दुर्गापाठ		१६वीं श.	१	लि.क.—पुजारी हरदेवदास
२२५	७८३५	सप्तशती दुर्गास्तोत्र		१६२७	१०८	
२२६	५५१२	सप्तशती टीका	नागोजी भट्ट	१६वीं श.	११२	चित्र संख्या ११२
२२७	७७६२	सप्तशती भाष्यम्	"	१८२४	८१	
२२८	४४५२(५६)	(१) सरस्वती मंत्रस्तोत्र (२) गणपतिमन्त्र	"	१६वीं श.	५६	
				१८वीं श.	११७वां	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपी समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२६	६३६६	सहस्रनामस्तोत्र	कृष्णदास पयोहारी	१८०८	३	
२३०	५६२५	साम्बपंचाशिका विवरण	टी.—राजानक क्षेमराज	१६वीं श.	३२	
२३१	६६७७	सुदर्शनस्तोत्र		"	१	
२३२	५५२७	सुदर्शनसहस्रनाम स्तोत्र	अहिर्बुध्न्य संहितागत	"	६	
१३३	४४३६	सुधालहर्ष्याख्यमिहिरस्तव	पंडितराज जगन्नाथ	"	१०	
२३४	४५०२	सूर्यस्तोत्र	शंकराचार्य	"	१	
२३५	७००६	"	सीताराम पर्वणीकर	२०वीं श.	३	
२३६	७७२१(१५)	सूर्याष्टक		१८४४	२०२	
२३७	४१७७	सौन्दर्यलहरी	शंकराचार्य	१९वीं श.	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३८	४४०३	"	"	१८५७	७	लि.क.—ऋषि देवचन्द
२३९	४५०७	"	"	१८२३	८	लि.क.—ऋषि श्रीकृष्ण
२४०	४५१६	"	"	१७३४	१५	लि.क.—पलायथाग्रामस्थ ठाकुरसूरजीपुत्र वल्लभ
२४१	४५२६	"	"	१६वीं श.	१०	
२४२	५२४४	"	"	१८६३	१६	लि.क.—धनीराम मिश्र
२४३	५५८४	सौन्दर्यलहरी सटीक	टी. श्री रंगदास	१६वीं श.	५४	
२४४	५६७६	"	टी. नरसिंह	"	४१	
२४५	५७८८	"	कैवल्याश्रम	१९३६	७५	
२४६	६५२३	सौन्दर्यलहरी व्याख्या	गोरीकान्त	२०वीं श.	३३	
२४७	५२३१	हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र	वाल्मीकीय रामायणोक्त	१७५६	१३	लि.क.—शिवदत्त लि०स्था०—प्रजयदुर्ग

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	७६४६	हनुमन्मधुनामस्तोत्र		२०वीं श.	२	लाङ्गूल शत्रुञ्जयस्तोत्र
२४९	६७०७	हयग्रीवस्तोत्र	वैकटनाथ वेदान्ताचार्य	१९वीं श.	४	
२५०	७७०६	हरिनाममालास्तोत्र	शंकराचार्य	"	३	
२५१	७८१२	हरिहरस्तोत्र	हरिवंशपुराणोक्त	"	६	(८१वां अध्याय)
२५२	७६८८	हरिहरात्मकस्तोत्र		"	३	
२५१	६८२६(२)	(१) हस्तामलक (२) यमुनाष्टक (३) हनुमानाष्टक	शंकराचार्य नन्ददास तुलसीदास	१९०२	१-१४	
२५४	६५८२	हस्तामलक सटीक	शंकराचार्य	१९वीं श.	५	
२५५	६५८४	क्षमाषोडशी	वेदाचार्य	१८९५	७	लि.क.—रामसुख रामनारायण
२५६	६६७८	"	"	१९वीं श.	३	
२५७	५१०९	(१) त्रिपुरसुन्दरीहृदय (२) त्रिशती (३) कल्याणीस्तोत्र (४) ललितास्तवराज	वीरमहेश्वरतन्त्रोक्त	१९२५	३१	लि.क.—रामकुमार, कोटा
२५८	५१९१	त्रिपुराकवच		१९वीं श.	३	
२५९	७७२१(१७)	त्रिपुरास्तोत्र आदि		१८४४	२०५-२७७	
२६०	४१९३	त्रैलोक्यविजयकवच	उत्तरगन्धर्वतन्त्र	१९वीं श.	२४	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २. वैदिक]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६४३	अथर्वण निरुक्त		१८६५	१२	लि.क.—सदासुख शुक्ल, जयनगर
२	४६३७	अथर्वणसंहिता अष्टादशकांड		१६०४	११	" "
३	४६२८	अथर्वणसंहिता		१८६२	१३४	" "
४	४०६५	आपस्तम्ब अग्निष्टोमसूत्र		१८वीं श.	५६	लि.क.—महादेव भट्ट
५	४७०२	ऐतरेयोपनिषत्		१६वीं श.	५	
६	४६४५	ऐतरेयोपनिषद्भाष्य	माधव	"	३०	
७	६५६२	ऐतरेयोपनिषद्भाष्यटीका	अभिनव नारायणेश्वर सरस्वती	"	४४	
८	४५६२	ऋग्विधान		"	२१	लि.क.—भट्ट मयाराम
९	४६४६	"		१८०६	१६	लि.क.—सवाईराम
१०	४६४४	ऋग्वेद (चतुर्थाष्टक चतुर्थाध्याय)	माधव	१६वीं श.	६४	
११	५०१०	ऋग्वेद प्रथमाष्टक		१७८१	१०५	लि.क.—वीरेश्वर शुक्ल
१२	५०११	" द्वितीयाष्टक		१७८४	७५	" "
१३	५०१२	" तृतीयाष्टक		"	८७	" "
१४	५०१३	" चतुर्थाष्टक		१७१६	१२४	" "
१५	५०१४	" पञ्चमाष्टक		१७८४	७२	" "
१६	५०१५	" षष्ठाष्टक		१७८२	१११	लि.क.—पंड्या चिन्तामणि
१७	५०१६	" सप्तमाष्टक		"	६६	" "
१८	५०१७	" अष्टमाष्टक		१७८२	६८	लि.क.—वीरेश्वर
१९	५०१८	" प्रथमाष्टक		१७२६	१३३	पत्र १६, ४६, ४७ अप्राप्त
२०	५०१९	" द्वितीयाष्टक		१६वीं श.	१२७	

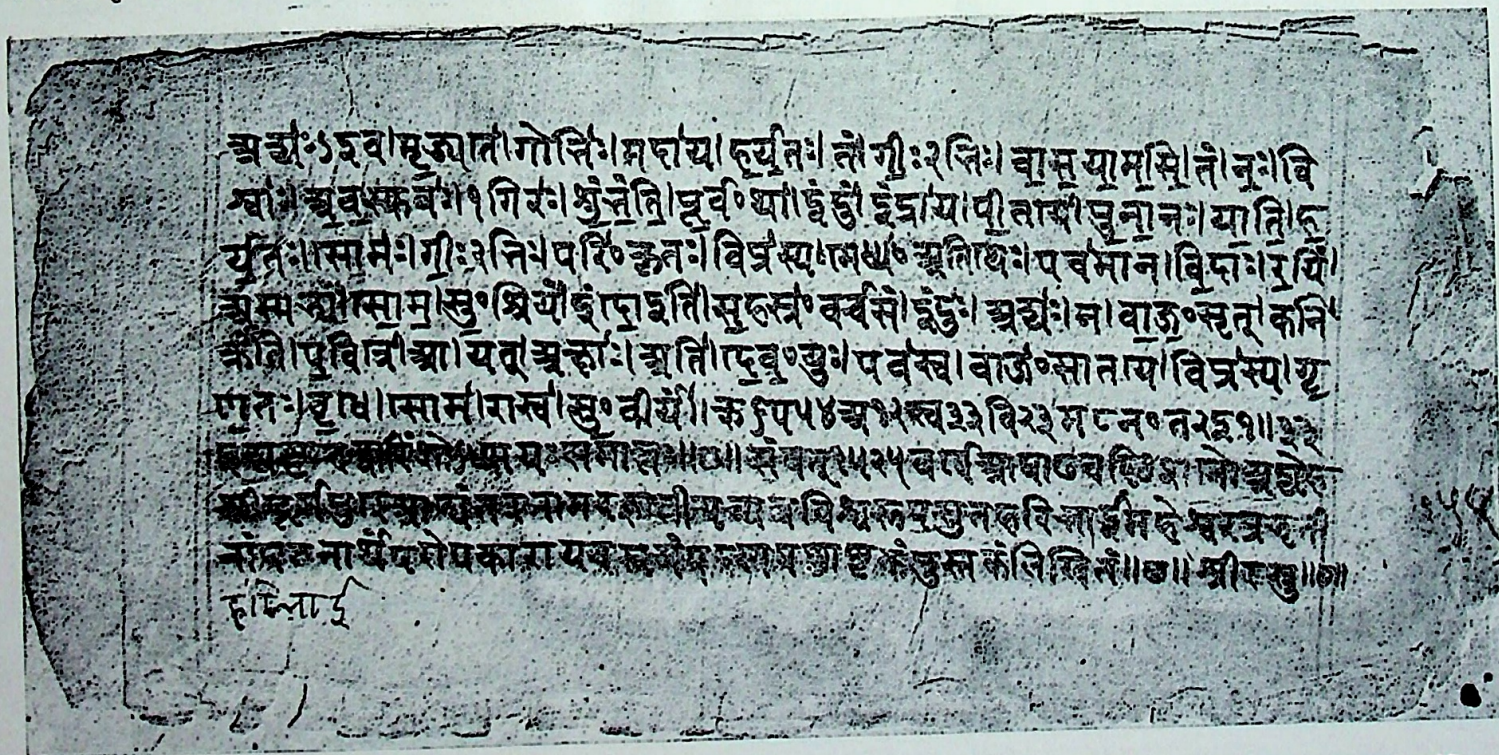
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	५०२०	ऋग्वेद तृतीयाष्टक		१६वीं श.	१११	
२२	५०२१	चतुर्थाष्टक		१८५३	१२६	१७वां पत्र अप्राप्त
२३	५०२२	पञ्चमाष्टक		१८५५	६७	
२४	५०२३	षष्ठाष्टक		१८५५	१०४	
४५	५०२४	सप्तमाष्टक		१८५६	६६	
२६	५०२५	अष्टमाष्टक		१८५८	११४	
२७	५५७०	तृतीयाष्टक		१८वीं श.	६६	पत्र २७ से ३८ तक अप्राप्त
२८	७६७३	प्रथमाष्टक		१७७५	६६	
२९	७६७४	द्वितीयाष्टक		१७७३	७४	
३०	७६७५	तृतीयाष्टक		१७७५	६६	
३१	७६७६	चतुर्थाष्टक		१७७५	७२	
३२	७६७७	पञ्चमाष्टक		१७२०	१००	
३३	७६७८	षष्ठाष्टक		१७८०	८४	लि.क.—वीरेश्वर शुक्ल
३४	७६७९	सप्तमाष्टक		१७७४	७२	
३५	७६८०	द्वितीयाष्टक		१६६९	८२	लि.क.—जगन्नाथ, काशी
३६	७६८१	तृतीयाष्टक		१७६३	७९	
३७	७६८२	"		१७०४	१६३	लि.क.—व्यास गोकुल, टोड़ा
३८	७३८३	"		१७२९	६१	लि.क.—पण्ड्या चिन्तामणि
३९	७६८४	पञ्चमाष्टक		१७७४	७१	
४०	७६८५	षष्ठाष्टक		"	७२	
४१	७६८६	सप्तमाष्टक		१८५३	११०	लि.क.—सुखजी

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	४६६७	ऋग्वेद प्रातिशाख्य (प्रथमाध्याय)	रघुनाथ	१८वीं श.	१६	लि.क.—फकीरचन्द
४३	४६५३	ऋग्वेद संहिता		१७६३	६३	
४४	५१६६	,,		१७३०	१५१	
४५	५०२६	ऋग्वेदानुक्रमणिका		१८५२	१२३	स्वरितं देवशंकरेण
४६	५०२७	,, (दूँदूँ)		१७६६	४७	लि.क.—रविदत्त
४७	५०२८	,, परिभाषाभाष्य		१७६८	१०	अपूर्ण
४८	५०८५	ऋग्वेदानुक्रमणिका विवृति		१८वीं श.	१३	
४९	४६६६	केनोपनिषत्		१६वीं श.	३	
५०	७५८४	कैवल्योपनिषत्		१६वीं श.	१	
५१	६१२६(२)	कौषीतक ब्राह्मण		१५४३	१३३	
५२	५४४३	गोपालतापिन्युपनिषत् त्रिपाठ सटीक	पाणिनीय	१६०१	१६	लि.क.—अम्बालाल
५३	४६२८	चरणन्यूह व्याख्या		१७८०	५	लि.क.—पीताम्बर, कान्हाजीसुत
५४	५७००	,,		१६२४	३	लि.क.—हरिकृष्ण
५५	७८२०	धनुर्वेदपरिच्छेद (वीरचिन्तामणिनामा)		१७६६	२६	
५६	४२४५	नारायणोपनिषत्		१८वीं श.	१३	
५७	७७१०	,,		१६वीं श.	४	लि.क.शुभराम, तुलाराम व्याससुत
५८	५०३०	निघण्टु		१८१२	२२	
५९	६७२४	,,		१६वीं श.	२६	
६०	५५७३	निरुक्तम्		१७२४	६३	पत्र ८, व २८ से ४२ तक अप्राप्त
६१	५०३४	ब्राह्मण प्रथम पंचिका		१८वीं श.	२३	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५४८२	ब्राह्मण प्रथमपंचिका		१८वीं श.	४६	पत्र १, २, ५५ अप्राप्त
६३	७७०४	" "		"	२२	
६४	५०३५	" द्वितीयपंचिका		"	२८	
६५	५५६६	" "		"	६१	
६६	५०३६	" तृतीयपंचिका		"	३०	
६७	५४८३	" "		"	५५	
६८	५०३७	" चतुर्थपंचिका		"	२४	
६९	५०३८	" पंचमपंचिका		"	३०	
७०	५०३९	" षष्ठपंचिका		"	२३	
७१	५०४०	" सप्तमपंचिका		"	२०	
७२	५०४१	" अष्टमपंचिका		"	२०	
७३	६६४४	ब्राह्मणानि (तृतीयाध्यायपर्यन्त)		१८५४	५२	लि.क.—माधवाश्रम शंकर पत्र २० से ६२ अप्राप्त आदिके दो पत्र नहीं हैं लि. क.—मित्रमणि
७४	४१९४	मण्डल (श्रावणीकर्माङ्गभूत)		१९वीं श.	७	
७५	५१७६	मण्डल प्रकरण		१७६१	१०	
७६	४६३०	मण्डल व्याख्यान	सायणाचार्य	१७वीं श.	६	
७७	५५७१	मन्त्रसंहिता शान्तिसूक्तानि		१८वीं श.	१७१	
७८	५८२३	मन्त्रार्थदीपिका	शत्रुघ्नोपाध्याय	१८२५	१४२	
७९	७७१७	मन्युसूक्त		२०वीं श.	४	
८०	४६०८	मनोज्योतिर्मन्त्र		१९१३	२	
८१	४७००	माण्डूक्योपनिषत्		१९वीं श.	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२	७६६३	माध्यन्दिनी संहिता		१८५६	४	
८३	४७०१	मुण्डकोपनिषत्		१६वीं श.	७	
८४	५५८०	रुद्रजाप्य (रुद्राष्टाध्यायी)		१७८८	३८	लि. क.—रामगोपाल दाधीच पत्र १, ५, ११, ३७ अप्राप्त
८५	४४७६	रुद्रांगभूतमंत्रन्यासादि		१६वीं श.	८	
८६	७६६५	रुद्राध्याय		१८६६	१३	
८७	५७२८	वंश-ब्राह्मण		१६वीं श.	११	
८८	४५७६	वाजसनेयी शिक्षा	याज्ञवल्क्य	"	१५	
८९	४२०३	वाजसनेय संहिता		१७६७	१६०	लि. क.—रावल बलभजी
९०	५००७	" "		१८४८	१४६	लि. क.—वल्लभराम दुर्लभराम नागर, विषमनगरा
९१	५२००	" "		१८वीं श.	१५७	
९२	५८०३	" "		१७८२	१८२	लि. क.—जयचंद धनेश्वरसुत
९३	४६३२	" पूर्वार्द्ध		१८७६	१७०	लि. क.—राधाकृष्ण स्थान-अम्बावती
९४	५७७८	" "		१८५२	१४८	
९५	४६३३	" उत्तरार्द्ध		१८७६	१०७	लि. क.—रामकृष्ण
९६	५७७६	" "		१८७३	६३	
९७	५१६७	"		१८२८	१५३	लि. क.—रामशुक्ल
९८	६४६६	वाजसनेयी संहितोपनिषदीशा- वास्यभाष्य सटिप्पण	भा.—शंकराचार्य, टि.आनन्दगिरि	१८८६	६	
९९	७८३०	वैदिक संहिता (पदसंग्रह)		१५२५	१५५	लि. क.—हरिभाई सूर्यपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५०२६	शिक्षाज्योतिषछन्दांसि	श्रीशत्रुघ्न	१७२७	२४	लि. क.—अम्बिकेश्वर श्यामजी- शुक्लमुत्, टोडावास्तव्य
१०१	५०३१	„ (शांकरोशिक्षा)		१७६७	१५	लि. क.—पुरुषोत्तम
१०२	७५०६	षडङ्गमन्त्राः (मन्त्रार्थदीपिकाख्या- टीकोपेताः)		१६वीं श.	७५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०३	५५७४	षष्ठाध्यायः		१७२४	१०३	लि. क.—करणीदत्त पालीवाल
१०४	४११६	संहिता		१८६७	१८०	
१०५	५५७७	„ (द्वितीयाष्टक)		१७५६	१०४	
१०६	५००१	संहितैकादशप्रकाशः	ब्राह्मणोक्त	१६वीं श.	१३	घन जटा, मण्डलादि
१०७	४६५६	सर्वानुक्रमणिकावृत्ति		१७६८	६१	लि. क.—दीनानाथ
१०८	४६४१	हव्यकाण्ड		१६८७	२११	लि. क.—मेदपाटज्ञातीय वामुदेव
१०९	७७७१	त्र्युचाभाष्य		१६१७	२	
११०	७७७८	त्र्युचाभाष्य		१६३७	२	



ग्रन्थसंख्या ७८३०

ऋग्वेदसंहिता

(संग्रहके वैदिक ग्रन्थोंमें प्राचीनतम ब्राह्मणलिपिमें संवत् १५२५ में लिखित ग्रन्थ)

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ३. कर्मकाण्ड]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४४६	अग्निष्टोमपद्धति	देव याज्ञिक	१८६६	८५	कात्यायनसूत्रोक्त
२	४४५०	"	"	१८६५	८२	लि.क.—उमाशंकर शुक्ल
३	४६१०	अनन्तव्रतविधि	भविष्योत्तरे	१८००	११	लि.क.—नन्दराम आचार्य
४	४४५१	अध्वर्युप्रयोग		१८००	५३	लि.क.—दुखभंजन तिवाड़ी श्रीदीक्ष्य
५	४५५८	अधिदेवतादिस्थापनहोमविधि		१९वीं श.	१३	
६	५३४६	अष्टमहादानप्रकरण		१९वीं श.	३	
७	४६८८	आतुरसंन्यासपद्धति	अंगिरोक्त	१७७३	५	लि.क.—लीलाधर ठाकुर, कोटा
८	५१७५	"	"	१८वीं श.	१४	
९	४६३६	आरामप्रतिष्ठाविधि		१५६८	२१	
१०	४०६४	आश्वलायनगृह्यपरिशिष्ट		१८वीं श.	२६	
११	४६५०	आश्वलायनगृह्यसूत्रवृत्ति	नारायण	१८०३	१०७	
१२	४६५५	" "	त्रैविध्यवृद्ध	१८००	६४	
१३	४६५४	" "	"	१७६६	१०७	
१४	५०३३	आश्वलायनश्रौतसूत्र		१७६५	५२	लि.क.—इच्छाराम व्यास
१५	४६१६(२)	आह्निकपद्धति	देवयाज्ञिक	१७६८	४२	लि.क.—यदुराम
१६	६६७४	एकोद्दिष्टश्राद्धविधि		१६०३	६	
१७	४६१३	ऋषिपञ्चमीव्रतविधि	भविष्यत्पुराणोक्त	१८वीं श.	४	लि.क.—छेदालाल, पंडित
१८	४६८३	कर्कभाष्य	कर्कचार्य	१८०७	१६	लि.क.—मुखदेव गोलवाल, सुरतबंदरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४६२५	कर्मप्रदीप		१९वीं श.	३३	१५वां पत्र अप्राप्त
२०	४६८७	"	गोभिलोक्त	१५६६	३५	लि. क.—कालुआ महन्त, महसाणा
२१	४६४६	कात्यायनश्रौतसूत्र		१७६३	६१	
२२	४४४८	कात्यायनसूत्रपद्धति	देव याज्ञिक	१८६४	१५६	
२३	५४६४	कात्यायनपद्धति (सौत्रामणी)	"	१८वीं श.	२०	
२४	६३६८	कार्तिकोद्यापनविधि		१८२२	६	
२५	४६६५	कुण्डकल्पद्रुम	माधव	१८१०	१८	र. का.—१७१२ लि. क.—ऋषीश्वर शुक्ल
२६	५७४६	"	"	१९वीं श.	१०	*
२७	४६६०	कुण्डतत्त्वप्रदीप	बलभद्रशुक्ल	१८वीं श.	१५	*
२८	४६७८	कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)	रामचंद्र नैमिषवासी	१८१७	३१	*
२९	५६१८	कुण्डप्रदीपक सटीक	महादेव राजगुरु	१९२६	८	
३०	४६३५	कुण्डमण्डपसिद्धि सवृत्तिक	विठ्ठल दीक्षित	१९वीं श.	४२	
३१	४५२७	" विवृति	"	१८वीं श.	२५	लि.क.—चंद्रदत्त शुक्ल जम्बूसर
३२	५६४४	कुण्डरत्नटीका	विश्वनाथ श्रीपतिद्विवेदसुत	१९वीं श.	८६	
३३	४१२८	कुण्डार्क (मरीचिमालाटीकोपेत)	मू. शंकर भट्ट टी. रघुवीर दीक्षित	१८६४	११	लि. क.—ब्रजवासी सिल्लुः
३४	४६६७	कुशकण्डिका		१९वीं श.	६	
३५	४११५	क्रियापद्धति	विश्वनाथ	१८६०	१०६	
३६	४६५१	"	"	१८वीं श.	७५	जीर्ण प्रति

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	४६६३	क्रियापद्धति	देवयाज्ञिक प्रजापतिमुत्त	१७८२	२६	लि. क.—नन्दिकेश्वर
३८	५७४१	,,	देवकीनन्दन जीवानन्दमुत्त	१६वीं श.	११	
३९	५७२६	ग्रहजपदानविधि		१६१०	२१	लि.क. राधाकिशन, मूडोता ग्राम
४०	४४८०	ग्रहशान्ति	वृद्ध वशिष्ठ	१६वीं श.	१२	
४१	४१८५	ग्रहशान्तिप्रकारः (पद्धतिः)	योद्धराज	१६वीं श.	८३	पत्र ८ से १६ तक अप्राप्त
४२	४१२५	ग्रहशान्तिपद्धति		१८६३	२८	
४३	५७६५ (१)	,,	हेरम्ब शिष्य	१६वीं श.	१-८२	
४४	५०४४	,,		,,	१६	
४५	४६१४	गयापद्धति	नारायणभट्ट रामेश्वरमुत्त	१७५१	१३	लि. क.—वामदेव
४६	५७१६	,,	,,	१८वीं श.	२२	
४७	४६३६	गृह्यसूत्र		१६वीं श.	३१	
४८	४६६१	गृह्यसूत्रपद्धति	वसुदेव दीक्षित	१८वीं श.	६३	
४९	५७६५ (२)	गोदानपद्धति		१६वीं श.	८२-८८	
५०	४१३०	घृततुलादान विधि		१८६३	३	लि. क.—ब्रजवासोसिल्लुः, काशी
५१	४५६०	जन्मदिवसकृत्यम्		१८४०	४	लि.क.—भट्टराजा यज्ञदत्त, जयपुर
५२	४६३२	तर्पणविधि		१६वीं श.	५	
५३	४६३४	,,		१८६५	२	
५४	५६८१	तिलादिघेनुदानविधि	विविधपुराणोक्तसंग्रह	१६वीं श.	६	
५५	४६२७	तीर्थयात्राविधि	,,	,,	१४	
५६	४६८०	तीर्थश्चाद्धविधि	भट्टोजिदीक्षितकृतत्रिस्थलीसेतुगत	१८७६	२२	लि. क.—सदासुख शुक्ल
५७	५०५१	तुलादानविधि		,,	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५४५१	तुलादानविधि	गणपति रावल हरिशंकरसुत	१९९०	६	लि. क.—माणिकराम भट्ट
५९	६६८६	तुलापुरुषपद्धति		१९वीं श.	८	
६०	४११२	द्वादशीलिगीमण्डलदेवतापूजनविधि		१९वीं श.	७	
६१	४९७५	दशकर्मपद्धति		१७१८	३६	
६२	४१२०	दशरात्र	आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	१९वीं .	१०३	रचना १७१६ लि. क.—भट्ट शंकरदत्तजी, जयपुर
६३	६५७३	दशहराकृत्य			४	
६४	६७१३	नवग्रहजाप्यविधि		१८३४	७	
६५	६७१४	नवग्रहन्यास		१८९३	७	
६६	४६३३	नवान्नेष्टि	आश्वलायनगृह्यसूत्रपरिशिष्ट शिवप्रसाद पुष्करवल्लीवास्तव्य	१९वीं श.	४	लि. क.—हरगोविन्द दाधीच, सवाई जयपुर
६७	४९४०	नागबलिप्रयोग		"	२१	
६८	५८६९	नरदाहकर्तव्यता		"	५	
६९	४९३९	नारायणबलि		"	१०	
७०	४९८९	नीलोद्वाह पद्धति	नीलकण्ठ शंकरभट्टात्मज	१७९०	१९	प्रयोगसारान्तर्गत जीर्णप्रति, लि. क.—नन्दिकेश्वर
७१	५००२	"		१९वीं श.	१५	
७२	४१०६	प्रतिष्ठाकर्म		१८५२	४५	
७३	४१११	प्रतिष्ठामयूख		१८वीं श.	३७	
७४	४९५७	"	"	१८८६	३०	लि. क.—सम्पतराम शुक्ल, जयपुर
७५	४९९२	प्रयाणशान्ति		१८८८	९	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	५५६१	प्रयोग	अनन्त भट्ट	१८४१	१६०	यज्ञोपवीतविधि पत्र २७ से ५६ व १५५ से १५७ तक अप्राप्त
७७	४०६३	प्रयोगदीपिका	संचनाचार्य	१९वीं श.	६६	आश्वलायन सूत्रोक्त
७८	५५५४	प्रयोगरत्न	नारायण रामेश्वरभट्टात्मज	१८४२	२१४	लि. क.—काशीनाथ, पुस्तकमिदं नारायणभट्टसूनोर्देवभट्टस्य ।
७९	५५७२	प्रयोगरत्नाकर	„	१९वीं श.	११२	पत्र १, ३९, ४०, ७५, ९४ व ९५ वां अप्राप्त ।
८०	६५९५	प्राणप्रतिष्ठाविधि		१८८१	२	लि. क. रामनारायण, सामरघाग्राम
८१	६४११	प्रायश्चित्तधेनुदानविधि		१९वीं श.	८	अपूर्ण ।
८२	४६०४	प्रायश्चित्तप्रयोग		१८३९	२	लि. क.—करुणालंकर जोशी
८३	४९७७	प्रासाददेवताप्रतिष्ठा		१८१३	२०	लि. क.—आशाराम व्यास, मालपुरा
८४	४९४२	प्रेतबलि		१९वीं श.	१६	
८५	४९८६	पशुबन्धप्रयोग		१७९४	६	लि. क.—ऋषीश्वर ।
८६	५३३१	पापघटनविधि		१९वीं श.	८	लि. क.—गोविन्द शर्मा
८७	४१७४	पार्थिवपूजा		„	९	
८८	६६८४	पार्थिवेश्वरचिन्तामणिपद्धति		१८७३	६	
८९	४११४	पार्थिवेश्वरपूजापद्धति	चन्द्रचूड	१९वीं श.	७	
९०	४२१२	पार्वणश्राद्धविधि		„	११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६७५	पार्वणश्राद्धविधि	हलायुध	१६०३	६	जीर्ण, खण्डित रामानुजसंप्रदायानुसार
६२	६७२७	पिण्डप्रमाण		१८०५	७	
६३	४२११	पितृकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग		१६वीं श.	८	
६४	७८११(४)	पुरुषसूक्त (षोडशोपचार)		१८वीं श.	८१-८६	
६५	६५०६	ब्राह्मणसर्वस्व		१८०४	१६६	
६६	६६३३	भगवदाराधनप्रकार		१६वीं श.	७	
६७	४६४१	भूतबलि		"	१५	
६८	४६६३	महालक्ष्मीव्रतोद्यापनविधि		"	१३	
६९	४२१०	मातृकैकोद्दिष्टप्रयोग		"	७	
१००	४६४६	मूर्तिप्रतिष्ठाविधि		१८१०	५	
१०१	७६६७	यजमानपद्धति	गंगाधर रामचंद्रपाठकसुत	१७६४	१७	* लि. क.—गिरिधारी
१०२	४६६२	यजुर्गृह्यसूत्र	पारस्कर	१८५६	४८	लि. क.—इच्छाराम व्यास
१०३	४६६६	"	"	१८वीं श.	४०	लि. क.—गोविन्दराम, आम्बेर
१०४	४६६६	" (डोढकाण्ड)	"	१७६८	२४	
१०५	७६०१	यजुर्विधान		१६वीं श.	३५	
१०६	६४०८	यज्ञोपवीतविधि		१८वीं श.	११	अपूर्ण
१०७	४६४२	यात्राविधि		१६वीं श.	३	
१०८	५०६७	योगपट्टविधि		"	१	सन्यासी छत्र धारणविधि
१०९	४१२१	योगिनीपूजनविधि			१६	लि. क.—अम्बाशंकर सामग
११०	६६०२	राधाकृष्णषोडशोपचारपूजा		"	५	
१११	५८८८	रामोद्यापनपूजाविधि	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१६०८	११	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११२	७८११(१)	रात्रिसंध्याविधान आदि		१८वीं श.	११८	
११३	४६६२	रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमंजरी)	मालजी त्यागलाभट्टसुत	१७१४	५७	रचना १६६५, लि.क.—बालकृष्ण
११४	४६०७	रुद्राभिषेककर्म		१६१३	१४	न्यासाम्बुकर्म
११५	४६२०	रुद्राभिषेकपद्धति	महानन्द पाठक	१८१४	१८	
११६	६४२७	लघुकारिका	कर्काचार्य	१६४७	१८	लि. क.—जानकीलाल
११७	४६७६	व्यासपूजापद्धति		१६७६	१०	लि.क.—सदासुख शुक्ल, बीकानेर
११८	५७६५(३)	वर्द्धापनविधि		१६वीं श.	८८-६६	
११९	७६६६	वास्तुशांति		"	२६	
१२०	४६२४	विद्यारत्नसमुच्चय		"	२७	
१२१	४५१७	विनायकशांति		१८५८	६	
१२२	७१४६	विवाहचतुर्थीकर्म	गर्गोक्त	१६४३	१७+१३=३०	लि. क.—रामचन्द्र
१२३	४८८८	विवाहपद्धति		१७२५	६	लि.क.—सदाफूल
१२४	५७६५(४)	"		१६वीं श.	६६-११७	
१२५	४५८२	विवाहविधि (यजुर्वेदीय)		१८६१	१५	लि. क.—रत्नेश्वर व्यास, जयपुर
१२६	७१४७	"		१६४३	२३	राजस्थानी में अर्थ सहित
१२७	४१८६	वेदोक्तस्नानादिकर्म		१६वीं श.	२२	
१२८	४६४१	वैतरण्यादिदान		१८४५	८	
१२९	४६६१	वैधव्यशान्ति		१६वीं श.	५	
१३०	५३२०	आहुप्रयोग	नारायणभट्ट	१८२५	८	लि. क.—चुष्मीलाल
१३१	५५६५	"	नारायणभट्ट	१६वीं श.	२५	प्रयोगरत्नाकरगत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	४५६५	श्राद्धपद्धति (यजुर्वेदीय)		१६वीं श.	२५	
१३३	४६१५	"		१७६७	७	लि. क.—शंकरदत्त
१३४	५५१५	" (सांवत्सरिक)		१६वीं श.	१६	
१३५	५७२६	"		१६१५	७	
१३६	५०५५	श्राद्धविधि		१८२७	३१	लि. स्था.—सवाई जयपुर
१३७	७२६५	श्राद्धविधिवृत्ति (कौमुदी)	रत्नेश्वरसूरि	१६वीं श.	१२५	
१३८	५२५२	श्राद्धविवेक	रुद्रधर	१६वीं श.	५१	२० वां पत्र अप्राप्त
१३९	४१८८	श्रावणोविधि (ऋषिपूजन)		१६वीं श.	६१	
१४०	४२२१	"		१८७२	२१	लि. क.—केसोराम, नगर बौली
१४१	७६६१	श्रीताधानपद्धति	गणपति रावल	१६वीं श.	३३	
१४२	५६३७	शान्तिकर्म	कमलाकर रामकृष्णसुत, नारायण पौत्र	"	१५८	
१४३	४१२३	शान्तिपद्धति	दुर्गाशंकर शुक्ल	१८वीं श.	२०	
१४४	४८७२	शान्तिविधान (पत्नीसरटपतन)	गर्गोवत	१८४४	३	लि. क.—रेवादत्त
१४५	५१७०	शान्तिभाष्य	वशिष्ठोक्त	१८०६	६	लि. क.—केवलजी, जयपुर, माधवसिंह राज्ये
१४६	५५६४	शान्तिविधि	"	१८वीं श.	६८	३७ वां पत्र अप्राप्त ।
१४७	४६५२	शुल्कसूत्र	कात्यायन	१६वीं श.	५	
१४८	४५६६	षट्पिण्डकर्म		"	७	
१४९	५००८	षष्ठीपूजा		१८७०	११	लि. क.—उमाशंकर
१५०	७६१३	षोडशोपचारपूजा		१८४६	६	लि. क.—रणछोड़दास, गढ़- बदनोर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४२०८	स्त्रीकर्तृ कथाद्व प्रयोग		१६१७	५	लि. क.—नारायण शर्मा
१५२	४१६५	स्वस्तिवाचन	दानखण्डोक्त	१६वीं श.	१३	
१५३	५७१६	"	"	१७३६	१०	
१५४	६६८१	"	युजुर्वेदीय	१६वीं श.	६	
१५५	६६६२	"	"	१८६२	८	
१५६	५२५५	संघ्या (यजुर्वेदीया)		१६वीं श.	११	
१५७	५६६५	संघ्या टीका "		१८६६	१५	लि. क.—मुरलीधर शरण
१५८	६६००	संघ्यापद्धति (सामवेदीया)		१६वीं श.	५	
१५९	६५७२	संघ्याभाष्य	नारायणमुनि शठकोपमुनि	१६वीं श.	६	
१६०	७७७५	संघ्यामंत्रव्याख्या	भट्टोजिदीक्षित	१६४२	१६	लि. क.—मगनराज जोशी
१६१	७६६५	संघ्या सटीका (यजुर्वेदीया)		१६०१	४	
१६२	४५८१	संघ्यासपद्धति		१६०८	४	लि. क.—रघुनाथाश्रम, काशी
१६३	६६४८	सपिण्डीकरणविधि		१६वीं श.	४०	लि. क.—वसुदेवराम, मथुरा
१६४	५७४०	सर्वतोभद्रमण्डलपूजाविधि		"	४	
१६५	५७६५ (५)	सर्वदेवतास्थापनपूजाविधि		"	११७-१३१	
१६६	४५६४	सिद्धिविनायकव्रतपद्धति		"	४	
१६७	४६८५	सूर्यव्रतविधि		१८१२	४	लि. क.—सदाशिव शुक्ल
१६८	४६३८	हरतालिकाव्रतविधि		१७२८	७	लि. क.—म. सुर
१६९	५१८२	हेमाद्रिप्रयोग		१८वीं श.	१२	
१७०	४७०७	हेमाद्रिविधि (स्नान संकल्प)		१८४४	८	
१७१	४५६८	त्र्युचाकल्प (अर्घ्यदान)	हंसवतीविधानोक्त	१६वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७२	७७८८	त्र्युचाविधानम्		१६वीं श.	७	अपूर्ण
१७३	७७७४	त्र्यम्बकमंत्रविधि		१८६३	१६	लि. क.-बालमुकुन्द व्यास
१७४	५०५८	त्रिकालसंध्या (सामवेदीया)		१६२३	१३	
१७५	५७६१	” (यजुर्वेदीया)		१६२५	१२	
१७६	६४२४	”		१८२५	८	लि. क.-चैनराम मिश्र, भरतपुर

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ४-तन्त्रमन्त्रादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५७८१	अमरनाथपटल	भृङ्गीशसंहितान्तर्गत	१६वीं श.	२६	एकादशपटलांत, अमरनाथकी यात्राका फल
२	५२२७	अष्टादशाक्षरमहामंत्रपद्धति		१८वीं श.	१७	गोपालमंत्रपरक
३	५७८३	उच्छिष्टगणपतिचतुरङ्ग	रुद्रयामलप्रोक्त	१६वीं श.	१५	आदि में गणपतिग्रन्थ है ।
४	४१५२	उड्डीशकल्प		१६२७	६४	लि. क.—रामनारायणमिश्र लि.स्था.—बयाना
५	५७६३	उद्धारकोश	सकलागमसारोक्त	१६वीं श.	२४	
६	५८२०	"	"	"	२	
७	४४५२(५७)	श्रीषधिकल्प (चक्र)		१८वीं श.	११४-११६	
८	५७६७	कक्षपुटो	सिद्धनागार्जुन	१८७७	५०	लि. क.—कृपाराम
९	५६५०	कामकलाङ्गनाविलास	पुण्यानन्दमुनीन्द्र	१६१६	३३	
१०	५७६६	कार्तवीर्यदीपकमंरहस्य	उड्डामरतंत्रोक्त	१६५१	५	लि. क.—गदाधर देवज्ञ, लि.स्था.—वाराणसी
११	६६६२	कार्तवीर्यनित्यदीपविधि		१६०३	५	
१२	५२२८	कालाग्निरुद्रपटलोपनिषत्		१८५०	७	लि.स्था.—पुष्कर
१३	६७५१	कालाग्निरुद्रोपनिषत्	नन्दिकेश्वरपुराणोक्त	१६०६	१०	लि. क.—रामदास
१४	५६१७	कुलाचनदीपिका	जगदानंद महामहोपाध्याय	१६वीं श.	२४	
१५	५६२३	कुलार्णवतंत्र		"	७८	
१६	५७६२	"		"	८७	
१७	४३२६	कृष्णचरित	सम्मोहनतंत्रगत	१७६२	१६	*
१८	४८८६	कौतुकचिंतामणि	प्रतापरुद्रदेव	१८०६	६८	लि. क.—आशाराम ज्ञानी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६३५	कौलरहस्य (शतक)	तरुणीवीरेंद्र नरोत्तमारण्यमुनीन्द्र- शिष्य	१८८६	१०	लि. क.—रामसुख, जयपुर
२०	७६६०	गणेशपूजा		१८८१	४	लि. क.—शिवनाथव्यास, जयनगर
२१	६७३२	गणपत्युपनिषत्		२०वीं श.	३	
२२	६३४८	गायत्रीपद्धति		१८८७	३५	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३	६७७३	गायत्रीपंचांग	रुद्रयामलोक्त	१६०७	२०	लि. क.—रामदास कबीरपंथी
२४	६२४७	गंधोत्तमानिर्णय	गुरुसेवक (श्रीकाल)	१८वीं श.	२२	* रचना—१७०२
२५	५७१०	गुरुकीलकपटल	(गुप्तवतीरहस्यतंत्रोक्त)	१६वीं श.	२	
२६	७८११(२)	गौरीकल्प		१८वीं श.		
२७	५१६८	घंटाकर्णकल्प		१६वीं श.	२०	आपदुद्धारणमंत्रयुक्त, अपूर्ण
२८	५७०२	चण्डिकार्चनदीपिका	काशीनाथभट्ट जयरामसुत	१८६६	२३	लि. क.—ब्रजवासी ज्योतिर्वित्
			वाराणसीगर्भसंभव			लि. स्था.—काशी
२९	५८१४	चंडीप्रयोगविधि	नागोजीभट्ट	१६००	२७	लि. क.—दामोदरदास, सिउलपुर ग्रामवासी
३०	५८८६	चंडीपाठप्रयोगविधि		१६वीं श.	२३	
३१	७५०६	चंडीस्तोत्रव्याख्या	नागोजीभट्ट	१८११	६१	
३२	४८६७	तंत्रलीलावती	कर्णसिंह	१८वीं श.	१६	* तृतीयपटलांत
३३	७७११	तंत्रस्थहृदय (स्वोपज्ञटीकोपेत)	काशीनाथभट्ट अनन्तशिष्य	„	१८	* लि. क.—बालमुकुंद
३४	७६०८	तुम्बादिबीजमंत्र	नागपुरवास्तव्य जयरामसुत	१६वीं श.	१	लि. क.—केशवदास

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	५७२२	तुरीयोपस्थानविधि		१६१५	५	लि. क.-घनश्याम ब्राह्मण लि. स्था.-राजपुर, मेवाड़
३६	५१२६	नवार्णन्यासविधि		१६वीं श.	२	
३७	४६००	नित्ययात्रा (षोडशयात्रा)		"	६	
३८	४६२६	"	काशीखण्डोक्त	१८४७	१४	
३९	५७६५(२)	नित्यापारायण	बुद्धिराज	१६वीं श.	१-२०	
४०	५५१६	नृसिंहमालामंत्र		"	२०	
४१	७६४४	प्रत्यंगिरासूक्तमंत्र		१६१२	१६	लि. क.-ब्रजवासी सिल्लू लि. स्था.-अलवर
४२	४४५२(८६)	प्रभातगायत्री तथा त्रिकाल-ब्रह्म-गायत्री		१८वीं श.	१२८वां	
४३	५१२३(५)	पंचदशीयंत्रविधान		,	२७-२८	
४४	७७०८	परशुरामकल्पसूत्र		१८वीं श.	४८	* आदिके ११ पत्र कीटविद्ध ।
४५	५७५७	पात्रस्थापनविधि		१६वीं श.	६	
४६	५६५४	पुरश्चर्यार्णव	प्रतापशाहदेव	"	२४	प्रथम तरङ्ग
४७	५६५५	"	"	"	२५२	द्वितीयसे नवमतरङ्गपर्यन्त
४८	५६५६	"	"	"	११७	दशमैकादशद्वादशतरङ्ग रचना सं० १८३१
४९	५६६१	पुरश्चरणचंद्रिका	देवेंद्राश्रम	"	११२	
५०	५६३८	पूजास्तन	सत्यानन्द	१६२८	२१२	
५१	५७६५(१)	"	"	१६वीं श.	१-६	प्रथम मयूख

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२	५१६५	पूर्णाभिषेक षडाम्नाय मन्त्रादि		१८वीं श.	स्फुट पत्र	इन पत्रोंमें नृसिंहमुन्दरी महामन्त्र, दशमहाविद्या, दशावतार दश-श्लोक, शिवाबलि विधि नाभि-विद्योद्धार और तन्त्रोक्त अपूर्ण-हवनपद्धति लिखी हुई है।
५३	६८७८	ब्रह्मकल्प (कायाकल्प)		१६वीं श.	६	
५४	५००४	बटुकभैरवपद्धति	मन्त्रचितामणिप्रोक्त	१६वीं श.	२३	
५५	४१३५	बटुकभैरवपूजापद्धति	विश्वसारोद्धारतन्त्रोक्त	१६वीं श.	२७	
५६	६७६०	बालास्तोत्रादि		१७२८	१६-२४	बालास्तोत्र, ईश्वरीस्तुतिपूजा, भारतीस्तोत्र, अन्नपूर्णस्तोत्र, श्रीवार्तिकसंस्कृतपाद्वनाथस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र।
५७	७०५६	भुवनेश्वरीपद्धति (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलतन्त्रांतर्गत	१८वीं श.	६६	पत्र ६ से १५ अप्राप्त
५८	५४२६	भूत-भूतिनीसाधनविधि	भूतडामरतन्त्रोक्त	१६वीं श.	७४	प्रथमपत्र खंडित।
५९	६४१६	भूतशुद्धि		,,	११	
६०	७००३	,,		,,	७	लि. क.—भट्ट दयादत्तशर्मा
६१	४१८१	भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा मातृकान्यास		,,	२०	
६२	५००५	भैरवपुरश्चरणविधि	शिवागमसारोक्त	,,	६	लि. क.—रामचंद्र शुक्ल
६३	६४४६ (१)	भौमपूजाप्रकार		,,	३६-४०	
६४	६७२३	मंगलव्रतपूजाविधि		१६१७	६	लि. क.—विद्याधर
६५	४४४४	मंत्रमहोदधि	महोदधर	१६०३	१४६	

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	५७४८	मंत्रमहोदधि	महीधर	१८वीं श.	८२	रचना सं० १६४५
६७	५७४४	"	"	१९वीं श.	७४	नौकाटीकासहित
६८	६६५६	"	"	१८७६	२११	लि. क.—शिवदत्त शक्ल सनाढ्य माधोपुर काशी
६९	४८५८	मंत्रसिद्धिलक्षण	गौतमतन्त्रोक्त	१९वीं श.	३	
७०	५०४९	महागणपतिविधान (पञ्चाङ्ग)	रुद्रयामलोक्त	"	३२	
७१	६२६२	महानिर्वाणतन्त्र (पूर्वकाण्ड)		१९४२	१४९	
७२	५८३२	महाविद्या		१८वीं श.	५५	४१वां पत्र अप्राप्त
७३	४२९६	महाविद्यादशश्लोकीविवरण		१४९१(?)	४	* लि. स्था.—सिरोही, लि. सं.—१८९१ प्रतीत होता है।
७४	५३३६	महाविद्यापारायणविधि		१९००	२७	
७५	५०००	मातृकानिघण्टु	नृसिंह	१९वीं श.	६	
७६	५६११	मानसोल्लास सटीक	टी. रामतीर्थ	१९१६	७७	
७७	६४१३	मायाबीजकल्प (ह्रींकारकल्प)		१९७५	३	लि. क.—भक्तिसुन्दर, लि. स्था.—विक्रमपुर
७८	५७८०	मार्तण्डमाहात्म्य	भृंगीशसंहितान्तर्गत	१९वीं श.	१५	
७९	४११८	रामपद्धति (वेदोक्ता)	श्रीरामानुज	१८६७	८	* लि. क.—विप्र जयराम
८०	४२३९	"	"	१८वीं श.	२६	
८१	४२५५	"	"	"	३९	
८२	५८७८	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७७१	१८	लि. क.—पुरुषोत्तमदास वैष्णव, लि. स्था.—गलता, जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६७४२	रामपूजापद्धति	श्रीरामोपाध्याय	१६५६	१६१	# पत्र १६०वां अप्राप्त
८४	६८०४	"	लक्ष्मीनिवास नृसिंहाश्रमशिष्य	१७६४	२६	
८५	४११७	राममंत्रपटल		१६वीं श.	७	
८६	७७१६	राममंत्रविधिपटल		"	१७	लि.क.—वैष्णव रामप्रसाद वैष्णव
८७	४१६६	राममंत्रविधिपद्धतिपटल		"	१५	लि. क.—अमरदास, खेतड़ी
८८	५७६२	रामार्चनदर्पण (त्रिपुरसुंदरीपूजाविधान)		१६१०	१२२	
८९	४१६७	लक्ष्मीपञ्चाङ्ग	ईश्वरतन्त्रोक्त	१८२४	३१	लि. क.—भवानीदत्त
९०	७०५४	ललितोपाख्यान	ब्रह्माण्ड पुराणोक्त	१८वीं श.	४२	अपूर्ण
९१	५१२६	वरदगणेशपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलान्तर्गत	१६वीं श.	२६	
९२	४४५२ (५६)	वश्ययंत्रादि		१८वीं श.	११४वां	
९३	५२३६	वसुधारा (आर्यवसुधारा)	बौद्धकल्प	१६वीं श.	७	#
९४	५२२५	वसुधारानाम धारणीकल्प	बौद्धकल्प	१८६६	६	#
९५	५८०६	श्यामापद्धति		१६वीं श.	८	अन्तमें भैरवतन्त्रोक्त जगन्मंगल कवच भी है।
९६	५६२७	श्यामार्चनमंजरी	लालभट्ट अनारगिरिशिष्य	१६१६	६३	
९७	५६०५	श्यामारहस्य	पूर्णानन्दगिरि	१८वीं श.	१०४	
९८	६२२१	"	"	"	२२	पत्र २० से २२की लिखावट अर्वाचीन प्रतीत होती है।
९९	५५६२	"	"	"	६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१००	५८०५	श्रीचक्रार्चनविधि	पृथ्वीधरमिश्र शांडिल्यगोत्रज	१९वीं श.	६	परशुरामकल्पसूत्रानुसार
१०१	५७५४	श्रीविद्यापटल	जगन्नाथसुत हरपुरनिवासी	१९वीं श.	१५	
१०२	७५०२	श्रीविद्यार्चनपद्धति	दक्षिणामूर्तिसंहितोक्त	"	४७	मंत्रमहोदध्यनुसारिणी
१०३	५४६८	श्रीविद्यार्चनसंक्षेपपद्धतिः	मंत्रमहोदध्युक्त	"	३७	
१०४	५७६८	श्रीविद्यामालामंत्र	ललितापरिशिष्टतंत्रोक्त	"	१०	
१०५	५६६५	श्रीविद्यारत्नसूत्रदीपिका	विद्यारण्य	"	४४	
१०६	४६५८	शतचण्डीविधान		१८६६	५२	लि. क.—सदाशिव शुक्ल
१०७	४६६८	" "		१९वीं श.	११	भट्टविश्वनाथस्य पुस्तकम्
१०८	७१२६	शतचंडी-सहस्रचंडी-प्रयोगपद्धति		"	५२	(अपूर्ण)
१०९	५६४१	शरभार्चापारिजात	रामकृष्णदेवज्ञ नीलकंठवंशीय	१९२६	१२२	
११०	५६६७	शिवताण्डवतंत्र	आपदेवसुत भवानीगर्भज			
१११	६४४४	" "	दक्षिणामूर्तिप्रोक्त	१९११	६४	लि. क.—जीवणराम, द्वादश-
११२	६४६६	" " (सटीक)	"	१९वीं श.	२५	पटलसेचतुर्दशपटलान्त
११३	४४६६	शिवपंचाक्षरीन्यासविधि	टी० नीलकण्ठ गोविंदसूरिसूनु	१८४०	४२	लि. क.—गंगाधर
११४	६७३३	शिवाम्बुकल्प		१९वीं श.	६	*
११५	७७४१ (२)	स्फुटमंत्र		"	१७	
११६	५००६	सर्वदेवप्रतिष्ठाविधि		१७वीं श.	१२-१३	
११७	५५८५	सांख्यायनतंत्र		१८६१	१५४	लि. क. सदाशिव शुक्ल ।
				१९वीं श.	५१	पंचत्रिंशत्पटलान्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११८	७७७३	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	गोरक्षनाथ	"	२६	
११९	४२०५	सिंहसिद्धान्तसिंधु	गोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट	१८२५	६०२	*रचना सं० १७३१
१२०	७६६२	सुमुखीविधान	रुद्रयामलोक्त	१७३४	३	लि. स्था. जयपुर
१२१	५६५८	सौभाग्यरत्नाकर	श्रीविद्यानन्दनाथ (श्रीनिवास-भट्ट गोस्वामी)	१९२७	२७२	लि. क. गंगपुरी लि. स्था. मांगलोर ग्राम हाडोती प्रदेश
१२२	६३७१	हनुमत्पताकासिद्धि		१८वीं श.	४६	
१२३	५१३८	त्रिकूटारहस्य	रुद्रयामलोक्त	२०वीं श.	६	अपूर्ण
१२४	६१२१	"	रुद्रयामलगत	१७५०	५६	प्रथमपत्र अप्राप्त
१२५	५७७७	त्रिपुरार्चनमंजरी	भट्टगदाधर(ज्ञानानन्दापर नामधेय विमर्शशिष्य शिवशंकरसुत अम्बागर्भसंभूत)	१९१९	७१	लि. क. सुखराम
१२६	५८१२	"	"	१९वीं श.	२९४	प्रतिके कोण खण्डित हैं
१२७	५६५९	त्रिपुरारहस्य	"	१९वीं श.	१०६	
१२८	५६००	त्रिपुरासारसमुच्चय	नागभट्ट	"	५१	
१२९	५८०६	त्रिशतीनामार्थप्रकाशिका	शंकराचार्य	१९३४	८६	लि. क. नानूराम ब्राह्मण
१३०	५८२९	ज्ञानार्णवतंत्र		१६वीं श.	११६	लि. स्था. जयपुर
१३१	६६५९	"		१९वीं श.	८६	८१वां पत्र अप्राप्त

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ५ धर्मशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३७८	अत्रिस्मृति	स्कन्दपुराणोदत	१६वीं श.	११	
२	४५३४	"		१८४०	४	
३	४६२७	अथर्वणशांतिप्रयोग		१८६३	७३	लि. क. देवकृष्ण दाधीच लि. रथा. जयनगरमध्ये सीता- रामजीका मन्दिर
४	४५८६	आचारदीप	नागदेव उपाध्याय	१८वीं श.	६५	
५	४६१६	"	"	"	८८	ज्योतिर्विक्केवलरामजीकस्य पुस्तकमिदम्
६	४६४३	"	"	१६वीं श.	६३	पत्र ५८, ५९ अप्राप्त
७	६५५६	आचारप्रदीप	"	१६१५	४०	लि. क. रामनारायण मिश्र दाधीच
८	५२२६	आचारप्रदीप	कमलाक र कूर्परग्रामवासी	१७६०	६२	पत्र १ से ३ तथा ५४, ५५वें अप्राप्त । लि. क. किशोरदास लि. रथा. सागवाटकपुर
९	४३८२	आचारमयूख	नीलकण्ठभट्ट शंकरसुत	१८वीं श.	८४	७४वां पत्र अप्राप्त
१०	६५१३	"	"	१८३८	७२	
११	४५२६	आशीर्चित्रशच्छलोकी		१६वीं श.	५	
१२	५२५८	"		"	२३	
१३	४५३०	आशीचनिर्णय		१६७०	६	लि. क. शीवजी केशवसुत
१४	४५३१	" वृत्ति	श्री भट्टाचार्य ?	१८वीं श.	१६	त्रिशच्छलोकी व्याख्या

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	४११३	आशौचदशक सभाष्य	मू. विज्ञानेश्वर, टी. हरिहर	१८४२	११	*
१६	७७६१	"		१६वीं श.	१०	
१७	४६०२	आशौचसंग्रह सटीक (त्रिशच्छ्लोकी भाष्य)	टी. भट्टाचार्य	१६वीं श.	३७	
१८	४६०३	"		"	६	शिवनंदनजीलिखापित, जयपुर
१९	६२२८	"		१८६६	१६	
२०	५२२०	उत्सवप्रतान	पुरुषोत्तम	१८वीं श.	३८	लि. क. मोरेश्वर
२१	४५५६	कालनिर्णयदीपिका	श्रीरामचन्द्राचार्य गोपालगुरुशिष्य	१८१३	२०	लि. क. दयाराम, जयनगर
२२	४६७१	"	"	१८११	३०	लि. क. गोविंदराम महाशंकर टोडा मध्ये
२३	६६६५	कालनिर्णयप्रकाश	रामचन्द्रभट्ट विठ्ठलभट्टसुनु बालकृष्णभट्टपौत्र	१८६१	१४१	लि. क. अनिरुद्ध प्रश्नोरा, प्रति अपूर्ण ।
२४	४३५१	कालनिर्णयसिद्धांत सटीक	मू. रघुराम, टी. महादेव	१७४०	१४७	*पत्र ४७, ८१ से ८४तक अप्राप्त लि. क. हरिराम हलवद्रवासी रचना सं. १७०६, १० स्थान भुजपुर । ५८वां पत्र अप्राप्त ।
२५	६२४६	कृत्यरत्नावली	रामचन्द्रभट्ट, विठ्ठलभट्टसुनु	१८वीं श.	६२	
२६	६३८०	गोदानत्रिधिः		"	१६	
२७	६५८७	चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिर्णय	जयसिंहकल्पद्रुमान्तर्गत	१६वीं श.	८	लि. क. गोपीनाथ ।
२८	६६२४	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर पुण्डरीक	१८वीं श.	७५५	

॥ तिथि-य ॥
 ॥ ३७ ॥
 संवत् १७३२ श्रवण मास पक्ष शुद्धि १२ नवम्यां शनि ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीगोविं
 दायनमः ॥ श्रीरामो जयति ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ गंगाये नमः ॥
 असंगे जोरधस्ताने दौरकर्मणि मैथुने ॥ जाते च मरणे चैव तत्काले व्यापिनी तिथिः ॥ १ ॥ मन्वादे
 च युगादौ च ग्रहणे च दस्यते ॥ व्यतीपात्रे चैव धनो न तत्काले व्यापिनी तिथिः ॥ २ ॥ राहुदशनि
 संकोतो विवाहाः त्यज्य वृद्धिषु ॥ स्नान दानादिकं कुर्यान्निशि काम्यवतेषु ॥ ३ ॥
 दीपोऽसंक्रान्ता रात्र्यां दुर्गा चैव श्रावणी ॥ एकादशी अगस्त्यर्चकैर्न संसृतके सदा ॥ ४ ॥ अं
 मध्यगवांगोष्ठे विवाहे यत्नमउपे ॥ राहोदशने काले दुस्तकं न विधीयते ॥ ५ ॥ विवाहे
 तवंधे च वृद्धोपकरणे तथा ॥ दुर्गा होम सुते जाते अग्निवर्कैर्न दूष्यति ॥ ६ ॥
 ॥ निबंधो ॥ संध्याकाले त्वत्किं ते स्नात्वा च मयथा विधौ जपेदक्षरात्तदेचीततः स
 ध्यां समाचरेत् ॥ यमः ॥ प्राणायामत्रयं प्रातः संगवेदिगुणं चरेत् ॥ मध्याह्ने त्रिगुणं च
 ॥ मध्याह्ने चतुर्गुणं ॥ सायाह्ने पंचगुणं संध्याति कर्मणो न वेत् ॥ १ ॥ निबंधो ॥

संवत् १७३२ श्रवण मास पक्ष शुद्धि १२ नवम्यां शनि ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीगोविं
 दायनमः ॥ श्रीरामो जयति ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ गंगाये नमः ॥
 असंगे जोरधस्ताने दौरकर्मणि मैथुने ॥ जाते च मरणे चैव तत्काले व्यापिनी तिथिः ॥ १ ॥ मन्वादे
 च युगादौ च ग्रहणे च दस्यते ॥ व्यतीपात्रे चैव धनो न तत्काले व्यापिनी तिथिः ॥ २ ॥ राहुदशनि
 संकोतो विवाहाः त्यज्य वृद्धिषु ॥ स्नान दानादिकं कुर्यान्निशि काम्यवतेषु ॥ ३ ॥
 दीपोऽसंक्रान्ता रात्र्यां दुर्गा चैव श्रावणी ॥ एकादशी अगस्त्यर्चकैर्न संसृतके सदा ॥ ४ ॥ अं
 मध्यगवांगोष्ठे विवाहे यत्नमउपे ॥ राहोदशने काले दुस्तकं न विधीयते ॥ ५ ॥ विवाहे
 तवंधे च वृद्धोपकरणे तथा ॥ दुर्गा होम सुते जाते अग्निवर्कैर्न दूष्यति ॥ ६ ॥
 ॥ निबंधो ॥ संध्याकाले त्वत्किं ते स्नात्वा च मयथा विधौ जपेदक्षरात्तदेचीततः स
 ध्यां समाचरेत् ॥ यमः ॥ प्राणायामत्रयं प्रातः संगवेदिगुणं चरेत् ॥ मध्याह्ने त्रिगुणं च
 ॥ मध्याह्ने चतुर्गुणं ॥ सायाह्ने पंचगुणं संध्याति कर्मणो न वेत् ॥ १ ॥ निबंधो ॥

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६९६३	जयसिंहकल्पद्रुम	रत्नाकर गुण्डरीक	१९वीं श.	४४१	अपूर्ण, त्रुटित
३०	६६५८	जातिविवेक	विश्वम्भरीयवास्तु शास्त्रान्तर्गत	१९०२	२०	विविध कर्मकार जातियोंका वर्णन
३१	७०४१	जीवन्पितृक कर्त्तव्यनिर्णय	रामकृष्णभट्ट, नारायणसूनु, रामेश्वर पौत्र	१७४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२	४१२९	तिथिनिर्णय (तिथि दीधिति)	अनन्तदेव	१७५७	४८	*स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३३	४६१८ (१)	"	भट्टोजी दीक्षित	१८वीं श.	२७	
३४	४९०१	"	गंगाराम भट्ट	१८३४	१२	लि. क. वीरदेव संवत् (त्) नेपाले ८३४
३५	७५९५	"	शिवानन्द भट्ट	१७३२	३७	कर्त्ताके जीवनकालमें लिखित प्रति ज्ञात होती है
३६	४५३८	दत्तकदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श.	१४	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत
३७	४९२९	दानचंद्रिका		१८९८	६८	लि. क. सदासुख शुक्ल
३८	७५९५	दानधर्म प्रकरण	भविष्योत्तरपुराणोक्त	१९वीं श.	३०१	आद्य १५ पत्र अप्राप्त
३९	४९४७	" खण्ड	हेमाद्रि	१७६६	३३९	चतुर्वर्गचिंतामणिगत लि. क. भगवतीदास
४०	४९८४	दानवाक्यसमुच्चय	पुरुषोत्तम	१६१९	८७	*लि. क. वासनशुक्ल
४१	४५४०	देवालयगृहादियास्तुदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं श.	४२	
४२	५११३	धर्मप्रवृत्ति	रामेश्वरभट्ट, सूनु श्रीनारायणभट्ट	१८७९	१७५	लि. क. वैष्णव रामप्रसाद तक्षकपुर
४३	४६०५	धानतपद्धति (द्वादश्यादिव्रत- निर्णय)		१९वीं श.	९	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	६६५७	निर्णयसिधु	कमलाकरभट्ट	१८८२	३५०	लि. क. हरिदास वैष्णव, जयपुर
४५	४५५३	निर्णयामृत	गोपीनारायणश्रीसूर्यसेन	१५३५	२३०	लि. क. पाठक वानरसुत
४६	४५८३	"	महीमहेन्द्र			पाठक परमात्मा
४७	५१६४	नीतिमयूख	बल्लालदेव	१६७०	१८०	(अपूर्ण)
४८	५७०६	प्रायश्चित्तकदम्बनिर्णय	नीलकण्ठभट्ट शङ्करसूनु	१८वीं श.	५०	
४९	४१८४	प्रायश्चित्तमयूख	गोपाल न्यायपंचानन भट्टाचार्य	१६०७	५३	
			नीलकण्ठ	१९वीं श.	१०६	* पत्र ७, ६१, ६२, ७० से ७३
५०	६४५४	पाराशरस्मृति सविवृतिक	विवृतिकार माधव	१५वीं श.	१५६	तथा अन्य पत्र अप्राप्त
५१	४६२६	"	"	१८३३	५०८	६६वां पत्र अप्राप्त
५२	७७७९	"	"			लि.क.—रामनारायण मिश्र
५३	४५६३	"	"	१७७१	१८६	शाकंभरीवासी
५४	४४४६	मदनपारिजात	भट्ट विश्वेश्वर कौशिक (?)	१७वीं श.	१६०	अपूर्ण
				१७८६	३८४	* लि.क.—वीरेश्वर शुक्ल
५५	६५७५	मलमासनिर्णयादि		१९वीं श.	६	
५६	६००८	महादानपद्धतिः	रूपनारायण	१५७२	१४०	प्रथम पत्र अप्राप्त
५७	४६६०	महाव्रत		१८वीं श.	१२	लि. क.—ऋषीश्वर
५८	६१२६(१)	महाव्रतकथा		१५४३	१३	जीर्ण, फटी हुई
५९	४४४४	महाव्रतभाष्य	गोविन्दपण्डित	१७४१	३४	*
६०	४६८२	महाशान्ति	नीलकण्ठ	१६६६	६	लि.क.—सदासुख

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	६६८५	माधवीयकालनिर्णयकारिका	माधव	१८वीं श.	१२	
६२	४५१६	मानवधर्मशास्त्रसंहिता	भृगुप्रोक्त	१८वीं श.	१३१	*
६३	४५३७	यमप्रणीतधर्मशास्त्र		१८वीं श.	४	
६४	४३८३	याज्ञवल्क्यस्मृतिटीका (मिताक्षरा- प्रथमाध्याय)	विज्ञानेश्वर श्रीपद्मानभ भट्टो- पाध्यायात्ज	१५७८	६२	१ से ६ पत्र अप्राप्त
६५	४३८४	„ द्वितीयाध्याय	„	„	१६३	४४ से ५४ पत्र अप्राप्त
६६	४६४५	„	„	१८वीं श.	४०	
६७	४३८५	„ तृतीयाध्याय	„	१८वीं श.	१४१	
६८	५१६३	„	„	१८११	१४३	आदितस्तृतीयाध्यायान्त
६९	६४५१	„ प्रथमाध्याय	„	१७वीं श.	७५	
७०	६४५२	„ द्वितीयाध्याय	„	„	१३२	‘शुक्लविश्वेश्वरस्येदंपुस्तकम्’
७१	६४५३	„ तृतीयाध्याय	„	„	१७६	„
७२	६५४६	„	„	१८६६	८८	१५०वां पत्र अप्राप्त लि.क.-वैकुण्ठनाथ, व्यवहार- खण्ड मात्र
७३	४६१६	„ मूल		१७८२	४७	लि. क. उद्धवजी नागोर
७४	४५४१	रजोदर्शनजातकशांतिदीधिति	अनन्तदेव	१६वीं श.	६७	स्मृतिकौस्तुभान्तर्गत प्रथम पत्र तथा पृ. ६७ से आगे पत्र अप्राप्त, अपूर्ण प्रति
७५	४६३८	रजोदर्शनशांति		१८६५	७	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर
७६	४३५०	रत्नसंग्रह	गोविन्दपण्डित	१७१२	५०	*

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	६५०७	लघुपाराशरस्मृति	पराशरमुनि	१८वीं श.	३३	तृतीयाध्यायपर्यन्त लि. क. गङ्गाराम । लि. स्था. जयपुर । पत्र ५२ व ३८६ से ३९४ तक अप्राप्त । प्रति में दो तरहके पत्र हैं । ५१४ से ५७० तकके पत्र दूसरी प्रकारके व छोटे हैं तथा इनमें पत्र सं. १७० तक स्वतन्त्र संख्या भी लगी है ।
७८	४५४२	व्यासस्मृतिः		१८वीं श.	५	
७९	६६१५	„ „ गृहस्थाल्लिकम्		„	११	
८०	४६२६	व्रतार्क	शङ्कर नीलकण्ठ (तनय)	१८६२	५८३	
८१	५८२१	वार्षिककृत्य		१९वीं श.	५५२	पत्र ४७, ४८, १८६ व २२० से २२३ तक अप्राप्त
८२	४५८४	विश्वादर्श	कविकान्तसरस्वती आदित्याचार्य- सुत	१६७५	२०	११वां पत्र अप्राप्त
८३	६७१६	विश्वेश्वरस्मृति	कैवल्येन्द्र सरस्वतीशिष्य	१८वीं श.	७	रामार्चनचंद्रिकादिके आधार पर संगृहीत
८४	४५३६	वृद्धशातातपधर्मशास्त्र		१८वीं श.	३	
८५	६६१५	वैष्णवचर्चा		१९वीं श.	४	
८६	६१६७	वैष्णवधर्मतत्त्वचिन्तामणि	श्रीनिवासाचार्य	१८वीं श.	४	
८७	६२६६	वैष्णवोपयोगीनिर्णय		१९०५	२०	
८८	४५३३	शङ्खस्मृति (शांखशास्त्र)	शंखप्रोक्त	१८४१	११	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	४४४७	शांखायनसूत्रभाष्य	वरदत्तसुत ?	१६०६	१५४	*
९०	४६४८	शान्तिमयूख	नीलकण्ठ	१७७६	१५८	कीटविद्ध । 'ठाकुर नाथूरामस्य- पुस्तकम्' ।
९१	६०७५	"	"	१८७७	८७	पत्र ४६ से ५० व ८१वां अप्राप्त
९२	४६३१	शांतिसार	दिनकरभट्ट रामकृष्णात्मज	१८८७	६१	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयनगर
९३	४३८०	"	"	१९वीं श.	१२३	
९४	५००३	शिवरात्रिपूजनविधि		१९वीं श.	१५	जयसिंहकल्पद्रुमोक्त
९५	५१४२	शुद्धिविवेक	रुद्रधरलक्ष्मीधरात्मज हल- घरानुज	१७६६	१४	लि. क. रामभक्त सारस्वत
९६	४६३४	शूद्रधर्मकमलाकर	भट्ट कमलाकर	१८६०	६५	लि. क. सदासुखशुक्ल, जयपुर
९७	५५७८	स्मार्तनिष्कृतिपद्धति	दिवाकर भट्ट	१७०६शक	७१	पत्र ६ से १५, २३, २४ तथा ५२ से ६२ तथा ८७वां पत्र अप्राप्त लि. क. सखारामभट्ट उल्लप नामक भाई भट्ट सूनु
९८	४६६८	स्मृत्यान्विक (स्मृतिसमुच्चय)		१७५८	२४	लि. क. ठा. लीलाधर लि. स्था. कोटा
९९	४५३६	स्मृतिकौस्तुभ-संस्कारदीधिति	अनन्तदेव	१८वीं	६७	
१००	४६१७	स्मृतिसार	याज्ञिकदीक्षित	१८१२	२२	लि. क. तिवाड़ी शिवजीराम दायमी, लि. स्था. आमेर
१०१	४६३६	"	"	१७६७	२०	
१०२	६०६३	संस्कारकौस्तुभ	अनन्तदेव	१८वीं	१३५	पत्र ३४, ३५, ३६ अप्राप्त लि. लट्ठू गदाधरसुत जयकृष्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७०४४	संस्कारप्रयोगसंग्रह		१८वीं श.	८१	अपूर्ण
१०४	७०४५	संस्कारपद्धतिसंग्रह		"	२५	
१०५	५२५३	संग्रहश्लोकाः		१६२३	२१	
१०६	४५३५	संवत्तस्मृति	संवत्तऋषिप्रोक्त	१८४०	८	
१०७	४६७६	सार्पिड्यविवेक	श्रीशूलपाणि	१७१६	५	लि. क. श्रीरत्नाकर भट्टात्मज
१०८	५५४६	हारीतस्मृति	हारीतऋषिप्रोक्त	१८१०	६८	भट्ट शंकर । लि. स्था. काशी
१०९	४५८६	हेमाद्रिकालनिर्णय	भट्टोजीदीक्षित	१८वीं श.	४५	५१वां पत्र अप्राप्त ।
११०	७७७०	त्रिशच्छलोकीभाष्य		१८८४	३१	लि. क. आशानन्द व्यास
१११	५३४२	त्रिशच्छलोकीसटीक		१८५४	१८	लि. क. नाथूराम भालूक
११२	४६३५	"		१८६६	१७	
११३	६६०३	ज्ञानभास्कर		१९वीं श.	१३८	लि. क. सम्पतराम

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६-पुराण कथा-माहात्म्यादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६२८	अक्षयतृतीयाकथा	पद्मपुराणोक्त	१६३१	२	लि. क. देवकृष्ण दाधीच पुरो- हित चक्षुपुरे (चाकसू ?)
२	४४६१	अगस्त्यकथा	पद्मपुराणोत्तरखण्डोक्त	१६वीं श.	८	
३	४६६४	„ (अर्घ्यदानविधिः)	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	८	
४	६६७३	„	„	१८३१	४	लि. क. रामचन्द्र
५	४२२०	अगस्त्यार्घ्यपूजाकथा	„	१८१४	८	लि. क. केसोराम कान्यकुब्ज ब्राह्मण नगर बोंली
६	५३७६ (१४)	अनन्तनाथकथा	गोतमप्रोक्त	१८वीं श.	१६६ से २०२	
७	४१२२	अनन्तव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	१०	
८	६६७०	„	„	१८३२	८	
९	६६५४	अर्बुदमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६०५	१३१	
१०	६८११	इतिहाससमुच्चय		१६४३	४६	
११	४१६०	एकलिंगमाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१६१३	१०४	लि. स्था.—उदयपुर
१२	४०४४	एकादशीमाहात्म्यकथा सार्थ	विविधपुराणसंकलित	१८१३	२८	अर्थ राजस्थानीमें है लि. क. रामचन्द्र ग्राम कांगणी मेवाड़देशे
१३	५५५२	एकादशीकथासंग्रह	„	१६०८	६१	लि. क. यज्ञेश्वरदेव, आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४	६४०६	„ (अपूर्ण)	„	१६वीं श.	१६	भाद्रपद से फाल्गुन कृ. एका- दशी कथापर्यन्त
१५	६७२६	ऋषिपञ्चमीकथा	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१८१६	७	
१६	६६६६	ऋषिपञ्चमीव्रतोद्यापन	भविष्योत्तरपुराणगत	१६वीं श.	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	६५६६	कमलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्डपुराणोक्त	१९वीं श.	४	
१८	६७०४	कामदेकादशीकथा	भविष्योत्तरपुराणोक्त	"	४	कामदा एकादशी पुरुषोत्तममास की एकादशी होती है
१९	५४४४	कार्तिककृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्तपुराणोक्त	१८४५	८	'रमा' एकादशी
२०	४०६७	कार्तिकमाहात्म्य	स्कन्दपुराणोक्त	१६७७	४७	लि. क. घनश्याम
२१	४१०७	"	पद्मपुराणोक्त	१८५६	४५	लि. क. नन्दुभाट्ट विद्यार्थी
२२	४२०६	"	"	१८५१	५१	लि. क. गंगाविष्णु कान्यकुब्ज, बौली नगर
२३	४५५४	" (एकादशी कथा संग्रह)	मत्स्याद्यनेकपुराणोद्धृत	१८६१	७१	२०वां पत्र अप्राप्त
२४	६५४८	"	पद्मपुराणोक्तपुराणोक्त	१९वीं श.	३८	लि. क. रत्नेश्वरव्यास, जयपुर
२५	६५६७	"	"	"	५१	
२६	६६०७	"	ब्रह्मनारदीयपुराणोक्त	१८७६	५७	
२७	६६०८	"	पद्मपुराणोक्त	१९वीं श.	२२	
२८	६५७८	कार्तिकशुक्लानवमीमाहात्म्य	"	१९वीं श.	६	अक्षयनवमीमाहात्म्य
२९	४४४१	कूर्मपुराण	देवव्यास	१८४८	२००	१९५५वां पत्र अप्राप्त
३०	४४४३	केदारखण्ड	स्कन्दपुराणोक्त	१७६६	६७	लि. क. मोतीराम
३१	४६०१	गङ्गामाहात्म्य	"	१९वीं श.	७	शैवप्रकरण
						जागेश्वरस्थपुरतकम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४६०	गणेशचतुर्थीकथा	स्कन्द०	१६०४	५	लि. क. नन्दरामव्यास
३२	४२५४	गयामाहात्म्य	वायुपुराणोक्त	१७४१	२८	लि. क. नृसिंह भट्ट तर्ककेशरी
३३	४५५५	गरुडपुराण	वेदव्यास	१६वीं श.	८१	
३४	६६०६	गरुडपुराणसारोद्धार	,,	,,	६६	प्रेतमञ्जरी
३५	६४१०	,,	,,	१६१६	३६	,
३६	६६१०	गोपाष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१६वीं श.	१	
३७	६६८५	गोत्रिरात्रव्रतकथा	स्कन्द०	१८६६	४	
३८	५५०	चातुर्मासमाहात्म्य (अपूर्ण)	,,	१६वीं श.	३३	
३९	६६१८	चान्द्रायणव्रतकथा	भविष्योत्तर०	,,	२	
४०	६७०८	ज्येष्ठकृष्णैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्माण्ड०	,,	२	
४१	४४८६	जन्माष्टमीकथा	भविष्योत्तर०	१८५७	७	लि. क. व्यास रतनेश्वर, श्रीभिनमालमध्ये
४२	५४४२	जन्माष्टमीजयन्तीनिर्णय	,,	१६०७	६	लि. क. रामनारायण, हरि- वल्लभजीभट्टस्य
४३	६५८०	जन्माष्टमीव्रतकथा	,,	१८६४	४	लि. क. देवकृष्णभट्ट
४४	५६६१	तत्त्वदीपभागवतम् (पूर्वखण्ड)	वल्लभ (विष्णुस्वामिमतवर्ती)	१७६४	११०	नवानगरे लिखितम्
४५	५६६२	,, (उत्तरखण्ड)	,,	,,	८६	,,
४६	७११६	तुलसीमाहात्म्य	पद्य०स्कन्द०विष्णुधर्मोत्तर०	१६वीं श.	३१	
४७	६७२२	तुलसीविवाहमहिमा	विष्णुपुराणोक्त	१६वीं श.	६	
४८	६६२६	द्वादशीमाहात्म्य	गरुड०	१७७६	५	
४९	६६१२	दशादित्यव्रतकथा	स्कन्द०	१६वीं श.	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	६४८६	दानभागवत	कुबेरानन्दवर्णि	१६वीं श.	११२	
५१	४२१८	देवप्रबोधिनीएकादशीव्रतकथा	विष्णु०	१८५३	१२	लि. क. गङ्गाविष्णु कान्यकुब्ज बौलीनगर (जयपुर राज्यान्तर्गत)
५२	५२०५ (१५)	घरणीशेषसंवाद	ब्रह्माण्ड०	१८वीं श.	६४-६६	
५३	६८३६	नासिकेतपुराण		१८६५	६२	गुटका—जिसमें रामगीता, राम- स्तोत्र, कर्मविपाक व पाण्डवगीता भी हैं
५४	५६५२	नित्यविहारलीला	लक्ष्मीधरपुत्र रामशिष्य ?	१६४५	१०१	माथुरराजद्वारकादास कारायित टिप्पणी
५५	६७०६	निर्जलैकादशीमाहात्म्य	ब्रह्मवैवर्त०	१८६१	४	
५६	४४८७	नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा	पद्मपुराणोक्त	१६वीं श.	७	
५७	६६०१	"	"	१८७७	४	लि. क. रामलाल
५८	६६७१	प्रदोषव्रतकथा	स्कन्द०	२०वीं श.	११	
५९	४५४८	पञ्चपर्वमाहात्म्य	गरुड० वराह० नारदीय०	१६२३	११	लि. क. घनश्याम ब्राह्मण पाराशर
६०	५५४२	पद्मपुराण (पातालखण्ड)		१८३८	४३	१४वां पत्र अप्राप्त
६१	६५६०	पुरुषोत्तममासमाहात्म्य	स्कन्द०	१८६६	४१	लि. क. रामनारायण मिश्र
६२	६८०७	पुरुषोत्तमसहस्रनाम टीका (अपूर्ण)	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	४३	विष्णुसहस्रनाम
६३	७७७७	पुष्करणीपाख्यान	स्कन्द०	"	६	
६४	४६२२	पुष्करप्रादुर्भाव (सटीक)	टी. विश्वेश्वर	१७६५	८३	'गौड़ज्ञातीयभट्टरामनन्दनात्मजेन वीरनन्दनेन लिखितं व्यास क्षेत्रे' ३६वां ६२वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५	६५८६	पुष्करमाहात्म्य	पद्म०	१७६६	६६	
६६	७०१७	"	"	१८३७	५६	लि. क. मोतीराम मथ, रूप- नगरमध्ये लालदासजीपठनार्थ सलेमाबाद
६७	७०३३	"	"	१८वीं श.	२१	आद्यपत्र अप्राप्त
६८	७६०६	"	"	१७६५	६०	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६९	४१०१	ब्रह्मवैवर्तपुराण (गणपतिखण्ड)		१८६१	६६	
७०	६९६०	"		१९वीं श.	१०१	
७१	६९६३	"		"	६६	
७२	६९५६	" (प्रकृतिखण्ड)		"	१७४	
७३	६९६१	" (ब्रह्मखण्ड)		"	७७	
७४	६५१२	बृहन्नारदीयपुराण		१७६८	१३३	लि. क. जतीलालजी सवाई जय- पुरे महाराजाधिराज सवाई जय- सिंहराज्ये
७५	५२१२	भागवत (प्रथम से दशमस्कन्धपर्यन्त) सचित्र		१८वीं श.		चित्र सं० ६
७६	५४६५	भागवत (प्रथम तीन स्कन्ध)		"	६७	
७७	४२३०	" (द्वादशस्कन्ध)		१८७१	११३	*लि. क. घनश्यामपल्लीवाल
७८	४३१७(१)	" सजित्द सटीक (प्रथम-द्वितीयस्कन्ध)	श्रीधर स्वामी	१९वीं श.	५२	लिपि सुन्दर, आद्यन्त पत्रोंपर चित्र
७९	४३१७(२)	" (तृतीयस्कन्ध)		"	१४०	"

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	४३१७(३)	भागवत (चतुर्थस्कन्ध) (पञ्चम ,)		१६वीं श.	१-१२१	लिपि सुन्दर. आद्यन्तपत्रों पर चित्र
८१	४३१७(४)	,, (षष्ठस्कन्ध) (सप्तमस्कन्ध)	टी. श्रीधरस्वामी	"	१-६४ १-७८	" आद्यन्त पत्र सचित्र; लिपि सुन्दर एक जिल्दमें
८२	४३१७(५)	,, (अष्टमस्कन्ध) (नवमस्कन्ध)	"	"	१-७२	"
८३	४३१७(६)	,, (दशमस्कन्धपूर्वाद्धं)	"	"	१-६२	"
८४	४३१७(७)	,, (दशम उत्तराद्धं)	"	"	१७७	"
८५	७०२१	,, सटीक	टी०श्रीधरस्वामी	"	१६१	"
८६	७०३२	,, "	"	१७६८	११	लि. स्था. मालपुरा
८७	७०२७	,, (दशम पूर्वाद्धं)	"	१८वीं श.	६५	प्रथम स्कन्ध (अपूर्ण)
८८	७०२८	,, (दशम उत्तराद्धं)	"	१८२६	८८	प्रति कीटभुग्न
८९	६४७७	,, क्रमसन्दर्भटीका (प्रथमस्कन्ध)		,	८६	
				१८वीं श.	२४	"तो सन्तोषयता सन्तो श्रीलरूप-सनातनो । दाक्षिणात्येन भट्टेन पुनरेतद्विचिच्यते ,,"
९०	६४७८	,, क्रमसन्दर्भटीका (द्वितीयस्कन्ध)		"	१७	"
९१	६४८६	,, (चतुर्थस्कन्ध)		"	२१	"
९२	६४८०	,, (सप्तम ,)		"	६	"
९३	६४८१	,, (अष्टम ,)		"	६	"
९४	६४८२	,, (नवम ,)		"	६	"
९५	६४८३	,, (दशम ,)		१७६८	१०६	"

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६	६४८४	भागवत (एकादशस्कन्ध)		१८वीं श.	३६	
६७	६४८५	भागवतक्रमसन्दर्भटीका द्वादशस्कन्ध		"	८	#
६८	७८२२	भागवतके सचित्र पत्र		१६वीं श.	१४०-१४६	चित्र सं० १२
६९	६६२५	भागवत सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.		
१००	६६६४	" "	"	१६वीं श.	५६६	
१०१	६७०६	" मूल		"	१५३	पञ्चमस्कन्धके चतुर्थ अध्याय तक
१०२	६४७४	" (प्रथमस्कन्ध) सुबोधिनीटीका	टी० वल्लभाचार्य	१७६७	११६	
१०३	६४७५	" द्वितीयस्कन्ध "	"	१७६८	६०	
१०४	६४७२	" सटीक द्वितीयस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१८वीं श.	५७	४८वां पत्र अप्राप्त
१०५	६५४६	" तृतीयस्कन्ध	"	१६वीं श.	११८	
१०६	६५५०	" चतुर्थस्कन्ध	"	१८०६	६७	लि. क. भूधरमहाजन भानपुर-मध्ये
१०७	६५५१	" पञ्चमस्कन्ध	"	१७८६	८३	लि. क. खुश्यालचन्द बधवाड़ा-ग्रामे राजश्री वेदला डूंगरसिंहजी राज्ये
१०८	६५५२	" षष्ठस्कन्ध	"	१६वीं श.	६२	पत्र २८ से ३० तक अप्राप्त
१०९	६५५३	" सप्तमस्कन्ध	"	१८१०	६७	२१वां पत्र अप्राप्त
११०	६५५४	" अष्टम स्कन्ध	"	१६वीं श.	५८	लि. क. गोवर्द्धनदास जती सवाई जयपुर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	६५५५	भागवत नवमस्कन्ध	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श.	५१	
११२	७८३४	„ दशमस्कन्धके सचित्रपत्र		„	६	६ पत्रोंमें ११ चित्र
११३	५१७८	भागवत दशमस्कन्ध		१६६८	४०	जीर्ण
११४	६४५०	„ „		१६८५	२६२	लि. क. देवजी रूपपुरनिवासी
११५	५१७९	„ „		१९वीं श.	३	३१वां अध्यायमात्र
						लि. क. दुर्लभराय जगन्नाथभट्ट
११६	५१८४	„ „		१८वीं श.	३६२	सुत
						अन्तमें श्रीकृष्णसहस्रनाम और
११७	६४७३	भागवत दशमस्कन्ध रासपञ्चाध्यायी	टिप्पणिकार विद्याभूषण	१९वीं श.	५०	अष्टकादि भी हैं
		वेण्णवनन्दिनीटीका				
११८	६४९०	„ दशमस्कन्ध धप्रकरणद्वयविवृति-	विठ्ठलदीक्षित	„	३९	
		प्रकाश				
११९	६४७६	„ दशमस्कन्ध सुबोधिनीटीका	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	१८२	
१२०	६८१५	„ भागवत दशमस्कन्धपूर्वाद्धं सटीक	टी० श्रीधरस्वामी	१९वीं श.	१११	
१२१	६८१६	„ उत्तरार्द्ध	„	१९४५	६८	लि. क. लक्ष्मीनारायण
१२२	६४४९	„ दशमस्कन्ध (उत्तरार्द्ध) सटीक	टी० परमानन्द	१७५८	१३०	बुन्देलखण्डे कोंचसमीपे
१२३	६५५६	„ „ (उत्तरार्द्ध)		१९वीं श.	९८	
१२४	६५५७	„ एकादशस्कन्धसटीक	ट० श्रीधरस्वामी	„	१५५	
१२५	६५५८	„ द्वादश „ „	„	१८वीं श.	४८	
१२६	६४९५	„ दशमस्कन्धे जन्माद्यस्यार्थ-		१९वीं श.	११	“जन्माद्यस्य”—इस एकही
		प्रकाश				श्लोकके अनेक प्रकारसे अर्थ
						किए गये हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७	६६१७	भागवतपुराणविषयशंकरानिरास	पुरुषोत्तम(वल्लभाचार्यचरणानुचर)	१६वीं श.	४	
१२८	४१०२	भागवतमाहात्म्य	पद्मपुराणोक्त	"	१८	लि. क. ब्रजलालगौड़, ब्राह्मण गुर्जरगौड़, ग्राम खंडारी
१२९	५५४१	भागवत माहात्म्य	पद्म०	१८वीं श.	६	
१३०	५५५७	"	"	१६वीं श.	२८	पत्र १० से १३ तक अप्राप्त
१३१	६५६८	"	"	१८५५	१५	लि. क. कंवर कालूराम जयपुर मध्ये
१३२	७५=१	"	"	१८४५	२५	३रा पत्र अप्राप्त लि. क. लिषमीराम जोसी नेवटा नगरमध्ये
१३३	६४८८	भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भः (प्रथम)	जीवक	१८२५	१३	*
१३४	६४८७	" , भगवत्सन्दर्भः (द्वितीयः)	"	१६वीं श.	७८	
१३५	६४८६	" , कृष्णसन्दर्भः (तृतीयः)	"	"	८०	
१३६	५२०५ (११)	भागवतानुक्रमणिका		१८वीं श.	४२-४७	
१३७	५७३७	भौमव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१८६६	३	लि. क. ब्रजवासी ज्योतिर्विद् सारस्वतकुलोत्पन्न रीमा (रीवां)
१३८	६७३६	मत्स्यदेशमाहात्म्य	"	१६वीं श.	१७	
१३९	७५६३	मथुरामाहात्म्य	आदिवराहपुराण०	१८६६	५०	आद्य ४ पत्र अप्राप्त
१४०	७३०७	" (अपूर्ण)	"	१६वीं श.	४६	
१४१	६६११	महालक्ष्मीव्रतकथा	भविष्योत्तर०	१६१६	६	
१४२	४५४६	माघमाहात्म्य	पद्म०	१८६२	६४	वसिष्ठ दिलीपसंवाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३	६५६३	माघमाहात्म्य	पद्म०	१६वीं श.	३६	
१४४	६५६६	"	"	१८८६	४१	लि. क. राममुख रामनारायण
१४५	५५७५	मार्गशीर्षमाहात्म्य	स्कन्द०	१८३१	३८	सवाईजयपुरमध्ये पत्र ३५, ३६ अप्राप्त
१४६	६५६७	"	"	१६वीं श.	५४	लि. क. लालबिहारी
१४७	६७११	यमद्वितीयाकथा	"	१८८७	१	लि. क. गिरिधारी
१४८	५८७२	रामनवमीव्रतकथा	लिङ्गपुराणोक्त	१८८६	६	लि. क. शंकरप्रधान खण्डेला
१४९	६६६७	"	अगस्त्यसंहितोक्त	१८६२	४	लि. क. रामनारायण
१५०	६५६५	रामायणमाहात्म्य	स्कन्द०	१८८६	८	लि. क. राममुखरामनारायण
१५१	६७७८	रासक्रीड़ा	भागवतोक्त	१६१६	२	
१५२	५१७३	रासपञ्चाध्यायी	"	१८वीं श.	३४	
१५३	४६३७	लिङ्गपुराण	वेदव्यास	१८१४	३७	लि. क. कृपाराम
१५४	६४६६	"	"	१६वीं श.	१८६	
१५५	६७४०	लोहागंलमाहात्म्य	वराहपुराण	२०वीं श.	३	
१५६	६६६८	वटत्रिरात्रिकथा	भविष्योत्तर०	१७६६	६	
१५७	५४६५	विष्णुपुराण (६ खण्ड)	वेदव्यास	१६वीं श.	१८१	
१५८	६५६४	वंशाखमाहात्म्य	स्कन्द०	१६१५	४६	लि. क. रामनारायणमिश्र
१५९	६६४७	"	पद्म०	१८४२	६३	लि. क. जैजैराम सवाई जयपुर- मध्ये सवाई प्रतापसिंह राज्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	५४८५	शिवपुराण	वेदव्यास	१८१७	२०६	ग्राम खाचरोद में लिखित
१६१	४४८८	शिवरात्रिकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१८वीं श.	४	लि. क. संभूकचन्द
१६२	६६०६	"	स्कन्दपुराणान्तर्गत	१९वीं श.	२	लि. क. कँवर कालूराम
१६३	५४४५	शिवरात्रिव्रतकथा	लिंगपुराणोक्त	१८१६	१४	लिखित जयपुर मध्ये
१६४	६६१४	संक्रान्तिमाहात्म्य		१८६०	१	लि. क. कँवर कालूराम
१६५	६६४६	संकष्टचतुर्थीकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१९३७	४	लि. क. जोशी मोडराम पाटोद्यो बूंदी मध्ये
१६६	६७१२	संकष्टचतुर्थीव्रतकथा	नारदीयपुराणोक्त	१७३०	५	
१६७	५२५७	सत्यनारायणव्रतकथा	स्कन्दपुराणोक्त	१९३४	१२	
१६८	४१००	सत्योपाख्यान	श्रीव्यास	१९वीं श.	६५	
१६९	५६७८	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्यरोत्तरपुराणान्तर्गत	१८६५	४	लि. क. ब्रजवासी सिल्लुः काश्याम्
१७०	६४०३	हरितालिकाव्रतकथा	भविष्योत्तरपुराणान्तर्गत	१९वीं श.	३	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७१	४६३८	हरिवंशपुराणरसकुल्याख्याव्याख्या	हितहरिवंशगोस्वामी	१८३५	५२६	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ७-वेदान्त]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४५४५	अध्यात्मविद्योपदेशविधि (गीतागूढार्थ-दीपिका)	शंकराचार्य	१७६०	६	लि. क. मयाराम
२	४५६४	अन्तःकरणबोधसविवृत्तिकविवृति	वल्लभ	१८वीं श.	१६	लि. स्था. मालपुरा
३	४२४४	अनुस्मृति	महाभारतगत	"	१३	
४	४६४६	अनुस्मृति	महाभारतशान्तिपर्वोक्त	१६वीं श.	६	
५	४५८८	अपरोक्षानुभूति	शंकराचार्य	१८वीं श.	७	
६	५२३२	"	"	"	१०	
७	६७१०	"	"	२०वीं श.	६	
८	७७५७ (४)	"	"	१८५०	१७०-१८६	
९	५३५१	अभयप्रदानसार	वरदाचार्य वैकटनाथाचार्यशिष्य	१८६१	१५	
१०	६६४२	अर्जुनगीता		१८६६	१२	लि. क. शिवराजगिरि
११	५५४७	अर्थपञ्चकम् (रामानुजसम्प्रदायस्य)	गोपदास	१८३७	१०	लि. क. तुलसीदास वैष्णव पुष्कर मध्ये
१२	५५४३	अष्टावक्रटीका	विश्वेश्वर	१७१४	७४	लि. क. गोकुल वैरागी शाहगंज
१३	५२९४ (२)	अष्टावक्रटीका (अवधूतानुभूति)	विश्वेश्वर	१८६०	३२	लि. क. हरिदेव
१४	६५६६	अष्टावक्रटीका (वाक्यसुधाख्या)	"	१६वीं	४४	
१५	४६०४	अष्टावक्रसूक्त	अष्टावक्र	"	४३	
१६	४६०६	अष्टावक्रसूक्तसटीक (त्रिपाठ)	टीका—विश्वेश्वर	१८०५	२७	लि. क. रामेश्वर शिवात्मज
१७	७७५७ (७)	आत्मनिरूपण	शंकराचार्य	१८५०	२२०-२२२	
१८	४५६१	आत्मबोध	"	१७६६	७	
१९	४६११	"	"	१८वीं श.	६	लि. क. दयादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०	७७५७(६)	आत्मबोध	शंकराचार्य	१८५०	२१०-२१६	लि. क. रामकृष्ण
२१	६६७६	आत्मबोधप्रकरण	"	१६वीं श.	१७	
२२	६६२७	आत्मबोधव्याख्या (विद्वज्जनानन्ददा- यिनी, बालबोधिनी)	शंकराचार्यनारायणतीर्थ	१७७४	२३	
२३	४१४१	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१८वीं श.	१७	
२४	४६१२	आत्मबोधसटीक (प्रकाशिकाख्या)	टीका गोविन्दाचार्य	"	१६	रचनाकाल सं. १६३५
२५	५६१२	आत्मबोधसटीक	शंकराचार्य	१६वीं श.	१२	
२६	६३५४	आत्मानात्मविवेक		१८वीं श.	६	
२७	६१५४(२)	उज्ज्वलनीलमणि विवृतिः	रूपसनातन	१८१४	१७६	
२८	४५७८	उत्तरगीता	अश्वमेधपर्वगत	१६वीं श.	१४	लि. क. व्यास हरिलाल जूनिया- वासी; पत्र २१, २२ अप्राप्त
२९	५६१६	उपदेशपञ्चकव्याख्या	शंकराचार्य, टीका-भूधर	"	४	
३०	५५०३	कर्णानन्दसटीक (अर्थकौमुदीनाम्नी)	कृष्णदास, टीका-प्रबोधानन्द सरस्वती	१८०६	६३	
३१	४५७७	कुम्भकपद्धति	रघुराम शिवरामसुत	१६वीं श.	२१	
३२	७०६६	कृष्णसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२४३	लि. क. केशवदास
३३	५६८५	"	"	१८वीं श.	१५६	
३४	४५६७	गर्भगीता	ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार	"	६	
३५	७६१०	गीतासारोपनिषत्		१६वीं श.	४	
३६	६७८२	गोरक्षशतक		"	१२	
३७	५४०४	गोविन्दगुणानुवादसटीक	कृष्णदास	१६४६	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	४५८७	चन्द्रोदयविलास	चन्द्रसिंह	१८वीं श.	६४	रचनाकाल १६६५
३९	६२०१	चित्रदीपव्याख्यान	रामकृष्ण	"	३०	प्रति जीर्ण व कीटविद्ध है
४०	६०६६	चित्रदीपसटीक	"	१९वीं श.	३०	
४१	६५६०	चैतन्यचरितामृत	"	१९०१	४१	
४२	५२०५ (८)	जलभेदः	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४०-४१	
४३	६५०६	जलभेदटीका	कल्याणराम	१७२८	८	
४४	४३८१	तत्त्वभागवत	"	१८वीं श.	१२७	अपूर्ण
४५	५५२६	तत्त्वमुक्तावली	पूर्णानन्द श्रीगोड़	१८४६	६	
४६	५५६६	तत्त्वयाथार्थदीपनम्	गणेशदीक्षित	१९वीं श.	२३	
४७	७१६१	तत्त्वसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८वीं श.	१८	
४८	७७५७ (५)	तत्त्वसार	ब्रह्मचैतन्यमुनि	१८५०	१८६-२०६	
४९	५३८५ (१)	"	"	१६वीं श.		
५०	६०५६	तत्त्वत्रयचूलिका	वरदार्यः	१८४७	१३	
५१	४५४६	तत्त्वानुसंधान	महादेव सरस्वती मुनि	१७६५	१५	लि. क. मयाराम
५२	६०७०	"	"	१९०१	३६	
५३	६१७३	"	"	१८वीं श.	४६	
५४	६४६२	"	"	१८८६	८०	
५५	६७०५	द्वादशमहावाक्यविवरण	"	१८७५	३८	लि. क. हरीराम दवे, भावनगर
५६	७७५७ (२)	द्वादशमहावाक्यसिद्धांत	"	१८५०	५६-१४०	
५७	६८०६	दशश्लोकीटीका (तत्त्वसारप्रकाशिनी)	नन्ददास	१८२१	८	लि. क. हरचन्द्र, जयपुर
५८	६०६१	नाटकद्वीपाख्याव्याख्या	रामकृष्ण विद्यान	१९वीं श.	५	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६	७११७	नारदगीता		१६वीं श.	२	
६०	५२०५ (१०)	निरोधलक्षण	बल्लभाचार्य		४२वां	
६१	७५७६	निरोधलक्षणटीका	„ टी० हरिराय	१७७६	२७	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
६२	५२०५ (४)	प्रब घः	विठ्ठलदीक्षित	१८वीं श.	३६-३७	
६३	५६५२	प्रज्ञावली	जड़भरत (माधवानंदशिष्य)	१६वीं श.	८	
६४	५७२५	प्रस्थानभेद	मधुसूदनसरस्वती	„	१८	
६५	५४७२	प्रीतिसन्दर्भ (षष्ठः)	जीवगोस्वामी	१८२१	७१	लि. क. मोतीरामजोशी, जयनगर
६६	५४६६	प्रेमपतनाख्यसन्दर्भसटीक	रसिकोत्तंस	१८वीं श.	८०	
६७	६७१६	पञ्चधाटीव्याख्या		१६वीं श.	१२	
६८	७०३१	पञ्चदशीटीका	टी० रामकृष्ण	१८६०	४१	
६९	७७८७	पञ्चदशीसटीक	„	१८वीं श.	१२५	
७०	५२६४ (१)	पञ्चीकरणप्रकरण (अवधूतानुभूतिः)	टी० विश्वेश्वर	१८६०	१५	लि. क. हरिदेव
७१	५७८२	पञ्चीकरणसटीक	टी० आनन्दगिरि	१९१६	१६	
७२	६१५५	पद्यावली	योगेश्वर	१८८८	४२	
७३	५३८५ (२)	परमात्मप्रकाश		१६वीं श.		
७४	७०६८	परमात्मसन्दर्भ	जीवगोस्वामी	१८२०	२७	लि. क. हरिलाल व्यास
७५	६१३४	परिभाषावृत्तिः	विद्याविलास	१७२४	१३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
७६	४२१४	पाण्डवगीता		१६वीं श.	१७	
७७	४२४०	„		१८वीं श.	१७	
७८	४५५६	„		१६वीं श.	८	लि. क. जयकृष्ण
७९	५११२	„		„	११	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८०	७७०६	पाण्डवगीता		१८०४	६	लि. क. परशुराम व्यास
८१	७८१६(४)	"		१८३३		लि. क. बाबा कृपाराम
८२	५२०५(५)	पुष्टिप्रवाहमर्यादा	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३७-३८	
८३	५४७०	ब्रह्मसंहितासटीक (पञ्चमाध्याय)	रूपगोस्वामी	१८२८	१६	लि. क. हरिलाल व्यास
८४	४५६८	ब्रह्मज्ञान	महादेव	१६वीं श.	१३	
८५	५२०५(३)	भक्तिप्रकरण	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३३-३६	
८६	४२६६	भक्तिरत्नावली	परमहंस विष्णुपुरी	"	६४	
८७	४२८६	" सटीक	"	१७५४	१२३	रचना १५५१
८८	६१५०	"	"	१८२८	३०	लि० स्था० जोधपुर
८९	४२६८	भगवद्गीता		१८वीं श.	१२६	आद्यन्त पत्र सचित्र
९०	४२६५	" सचित्र		"	६७	चित्र संख्या ६
९१	५०८६	"		१८०५	६६	
९२	५११०	"		१७११	८३	काशीमें लिखित
९३	६२६४	" (सभाष्य)	रामानुजाचार्य	१८वीं श.	१०२	अंतिम अध्याय के ३६वें श्लोक तक है
९४	४५८५	" सटीक		१५३८	८३	पत्र १, २८, ३३, ३४ अप्राप्त
९५	४५४३	" गूढार्थदीपिकासहित	विश्वेश्वर सरस्वती	१७६०	२०५	लि. क. वैष्णव मयोराम
९६	५४८०	" सुबोधिनीटीका	श्रीधरस्वामी	१६२७	१०६	लि. स्था. श्री द्रव्यपुर
९७	६३५६	"	"	१७६६	१२५	लि. क. गौरीशंकर पत्र ३, ४, ६, ८, ४६ अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८	७०६६	भगवद्गीता (पञ्चोली)		१६वीं श.	१४१	
६९	४३१०	भगवद्गीता (भाषापद्यानुवाद सहित)	हरिवल्लभ	१८२०	१८८	लि. क. पिरागदास
१००	६०७७	„ सुबोधिनी व्याख्या	श्रीधर	१८४६	११३	स्था० नटवाड़ा
१०१	६०६५	भगवद्भक्तिरत्नावलीसटीकत्रिपाठ	विष्णुपुरी	१८३४	६७	लि. क. काशीनाथ भरतपुर
१०२	६३२४	„	„	१८७६	२६	पत्र ६६वां अप्राप्त
१०३	६६१६	„	„	१८८०	३५	लि. क. नरोत्तमदास वैष्णव
१०४	७५२०	„	„	१६वीं श.	७४	लि. क. मनलाल
१०५	६५६२	„ सटीक	„	१६वीं श.	७४	लि. क. जमुनादास, नाथद्वारा
१०६	७०१६	„	„	१८वीं श.	६७	लि. क. वैष्णव गंगादास, पल-सरा ग्रामे
१०७	६१५४(१)	भक्तिरसामृतसिन्धुटीका (दुर्गम संग-मनी)	रूप सनातन	१८१५	१४७	प्रथमपत्रसचित्र
१०८	६२३१	भक्तिरसामृतसिन्धुसटीकपूर्वविभाग	„	१६२४	३३	
१०९	६४६४	भक्तिरसामृतसिन्धुबिन्दु	„	१६वीं श.	८	
११०	६७६७	भक्तिरहस्य	मल्लिनाथ	१७७६	३४	लि. क. सहजराभवैष्णव साहिपुरा
१११	७०७०	भक्तिसन्दर्भ	जीवगोस्वाम	१८२०	६३	लि. क. व्यास हरिलाल
११२	७०६७	भगवत्सन्दर्भ	„	„	५०	„ „
११३	५२८१	भगवद्गीता	„	१८११	५६	लि. क. गोविन्द लक्ष्मी
११४	६६६६	„	„	१७७६	७२	लि. क. शिवनाथ

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५	६७५७	भगवद्गीता				
११६	७६०२	"		१८८६	५४	लि. स्था. डेराबसी
११७	७८०५	"		१८५७	३५	लि. क. गोडजी शोभजी
११८	७७८५	" (पंचोली टीका)		१८वीं श.	११७	
११९	५७०७	भगवद्गीतासभाष्य	शंकराचार्य	१९४१	४४	एकादश अध्यायपर्यन्त
१२०	४५५१	"	"	१८वीं श.	११७	
१२१	४३७२	भगवद्गीतासटीक	श्रीधर	"	११	अपूर्ण
१२२	६६४०	"	"	१८७५	११३	
१२३	६६५८	" (अर्थसंग्रहटीक)	"	१८७३	१०६	लि. क. रामचन्द्र
१२४	६६६२	" सुबोधिनीटीका	श्रीधर		११२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१-५	६५०५	भगवद्भक्तिविलासटीका	गोपालभट्ट	१८वीं श.	११२	
१२६	६५२०	महावाक्यार्थविवरण		१८६७	६७१	लि. क. गोविन्दराम, जयनगर
१२७	६०६६	मीमांसा परिभाषा	कृष्णयाजी	१९वीं श.	८१	अन्तिम पत्र खण्डित
१२८	६२८० (१)	मूलसूत्र	ब्रह्मसंहितान्तर्गत	१९१७	१७	लि. श्यामदास, मथुरा
१२९	६२६५	यतीन्द्रभक्तदीपिका	श्रीनिवासदास	१९०६	१-६	लि. पुजारी हरदेवदास
१३०	५२६३	"	"	१८वीं श.	२१	
१३१	५६५१	याज्ञवल्क्योपनिषत्	"	१८२३	५५	
१३२	५५५१	युगलचरितामृतकथा	वंशीधर	१९वीं श.	२८	
१३३	७३३६	योगदृष्टिसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रश्वेतभिक्षु	१९वीं श.	५८	पत्र २५, ४५, ४६वां अप्राप्त
१३४	७७५७ (३)	योगवासिष्ठसार		१७१६	२३	
१३५	४५५२	" (सटीक त्रिपाठ)	महीधर, टी० विश्वेश्वर	१८५०	१४०-१७०	
				१७८८	२७	लि. क. नारायणदास वैष्णव स्थान वृन्दावती

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६	४४३०	योगशास्त्र	श्री पतञ्जलि	१८११	१२०	
१३७	७३४६	योगशास्त्रप्रकाश	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१०	
१३८	५६०१	योगशास्त्र (वृत्ति)	"	१६वीं श.	२८	
१३९	७३२८	योगशास्त्र (चतुर्थ प्रकाशपर्यन्त)	"	१७वीं श.	२९	
१४०	४३५३	योगशास्त्रद्वादशप्रकाश	"	१५३९	२४	
१४१	४३-६	"	"	१५६७	२०	
१४२	७४०६	योगशास्त्रप्रकाश (चतुर्थ)	"	१६७७	१४	लि. स्था. इलदुर्ग
१४३	५५६५	योगसूत्र (अभिनवभाष्य)	भवदेवमहोपाध्याय	१९१६	३६	
१४४	५५६८	योगसूत्रभाष्य	पतञ्जलि	"	४३	
१४५	५६२०	योगसूत्रभाष्यवृत्ति	वाचस्पति	१९२३	०	लि. क. साधु श्रीराम, जयनगर
१४६	५५६६	योगसूत्रवृत्ति	धारेश्वर	१९१६	३५	
१४७	४४२९	योगाख्यान (योगतत्त्व)	यान्नवल्लभ	१९वीं श.	४८	
१४८	४२५२	रामगीता		१८वीं श.	१५	
१४९	६६६५	"		१८३६	६	लि. पुरोधा देवकृष्ण
१५०	६२२४	रामगीताविवृति	महीधर	१९००	१७	लि. रामचरण
१५१	६५०३	"	"	१८१८	१७	लि. शुभराम
१५२	७७५७ (१२)	वज्रसूची	शंकराचार्य	१८५०	२३३-२४४	लि. भट्ट भाष्कर काश्मीरनिवासी
१५३	६२८० (३)	"		१९०९	१९-२०	लि. पुजारी हरदेवदास
१५४	५३००	वज्रसूचीसंदर्शिनी	श्रीनिवासदास	१८५१	३	लि. घासीराम
१५५	५७३३	वाक्यसुधाप्रकरण		१९वीं श.	२७	
१५६	४५८०	" सटीक	शंकराचार्य	१८३९	१४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	५३२३	वाक्यार्थसंग्रह (प्रमाणसार)	शठारि ?	१६वीं श.	५७	
१५८	५३६३	वातमाला			३१	
१५९	५२१४	विद्वच्चित्तप्रसादिनीषट्पदीटीका	कविराज भिक्षु	१८ वीं श.	१७	
१६०	५४०५	विद्वन्मण्डन	श्रीविठ्ठल	१६०८	६४	लि. साखनलाल
१६१	६०७९	"	"	१६००	४९	लि. शालिग्राम
१६२	४१०९	विद्वन्मोदतरंगिणी	श्रीचिरंजीव भट्टाचार्य	१८४६	३४	लि. जोशी जीवनराम
१६३	५५९७	"	"	१६वीं श.	४०	
१६४	५९५३	विरोधिपरिहार	लक्ष्मणाचार्य	१८४३	३२	
१६५	५८८९	विवेकत्रयरत्न	श्रीरामानुजदास	१८वीं श.	२२	प्रथम दो पत्र अप्राप्त
१६६	५६१५	विज्ञाननौका	शंकराचार्य	१६वीं श.	६	
१६७	५५४५	वेदान्ततत्त्वबोध	अनन्तराम	१६२१	३२	लि. ललिताप्रसाद पारीक
१६८	७५८०	वेदान्ततत्त्वसार	रामानुजाचार्य	१६वीं श.	२५	
१६९	७७०७	वेदान्तप्रश्नोत्तररत्नमाला	शंकराचार्य	"	४	
१७०	४६३१	वेदान्तपरिभाषा	धर्मराजाध्वरीन्द्र	"	४७	
१७१	६४९३	वेदान्तरत्नावली	परमानन्ददेव	१८८८	२५	लि. रामनारायण
१७२	७७५७ (११)	वेदान्तषट्पदी	शंकराचार्य	१८५०	२३२-२३३	
१७३	४१०३	वेदान्तसार	सदानन्द	१६वीं श.	१४	
१७४	४११९	"	"	१८वीं श.	१७	
१७५	४५७५	"	कृष्णानन्द	१६वीं श.	११	पत्र २, ३ अप्राप्त
१७६	४५९९	"	सदानन्द	"	१६	
१७७	४६२३	"	"	१८४१	११	लि. दुर्गादत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	५७०१	वेदान्तसार	सदानन्द	१६वीं श.	१३	लि. ठक्कुर नरहरवल्लाल
१७९	६२५१	"	"	१८३६	२३	लि. रूपराममिश्र वल्लभगढ़
१८०	६२८३	"	"	१८वीं श.	१३	
१८१	६५१८	"	"	१७९७	२४	लि. पण्डा शिवदत्त
१८२	७६१७	"	"	१६वीं श.	१४	
१८३	४६२१	"	शंकराचार्य	१८वीं श.	१४	
१८४	४६४०	"	"	१६वीं श.	२५	
१८५	४२७८	" (सुबोधिनीटीकायुक्त)	नरसिंहसरस्वती	१७२६		लि. श्यामदास स्थान उरपत्तनग्राम
१८६	६१७२	वेदान्तसारटीका (सुबोधिनी)	"	१७४०	५१	
१८७	६५७९	वेदान्तसारटीका	"	१८८६	२९	लि. रामसुख रामनारायण
१८८	६१५९	वेदान्तसिद्धांतसंग्रह (सटीक)	वनमाली	१८वीं श.	१२३	
१८९	४५७९	वेदान्तसूत्र		१६वीं श.	१९	
१९०	४५९३	वेदार्थसारसंग्रह	ब्रह्मानन्द	"	४३	
१९१	६१६५	वैकुण्ठगद्य		१८९०	१६	
१९२	५७७३	वेराग्यप्रकरणम् (रामायणान्तर्गत)	वाल्मीकि	१८वीं श.	१२९	
१९३	४५५०	शतसूत्रीयभाष्य	मू०शाण्डिल्यभाष्यस्वप्नेश्वराचार्य	१८३९	३१	लि. व्यास रामरत्न
१९४	७६००	शारीरकमीमांसा		१८४८	१३	
१९५	५९६४	शारीरकमीमांसाभाष्य (प्रथमअध्याय)	शंकराचार्य	१६वीं श.	१४२	
१९६	५९६५	" (द्वितीय अध्याय)	"	"	१२८	
१९७	५९६६	" (तृतीय अध्याय)	"	"	१३२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८	५६६७	शारीरकमीमांसाभाष्य (चतु.अध्याय)	शंकराचार्य	१८७४	५३	
१६९	६२२३	"	"	१७३१	२१८	
२००	६२३८	"	"	१८५१	२३७	लि. गिरधारीरामशर्मा गौड़
२०१	६७८३	स्वयम्बोध	ईश्वरप्रोक्त	१९वीं श.	१०	
२०२	६५८१	स्वरूपप्रकरण	शंकराचार्य	"	३	लि. रामनारायण
२०३	६३६७	स्वरोदय	तन्त्रोक्त	१९१३	६	लि. बलूराम, दीर्घपुर
२०४	६७३०	स्वात्मनिरूपण	नारदपांचरात्रतन्त्रोक्त	१९वीं श.	२०	
२०५	५७८६	स्वात्मनिरूपणप्रकरणार्थाशतक	शंकराचार्य	"	११	इस ग्रन्थमें १५६ आर्या छंद हैं
२०६	४६४४	स्वात्मबोध			२१	
२०७	५२०५ (६)	सन्न्यासनिर्णयः	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३८-३९	
२०८	७५७७	सन्न्यासनिर्णयविवरण	पुरुषोत्तम	१९१३	२४	
२०९	७५८३	सन्न्यासनिर्णयविवृति	गोपेश्वर	१९वीं श.	२३	
२१०	५२०५ (७)	सर्वसिद्धान्तबालबोध	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३९वां	
२११	६२६६	सर्वोत्तमविवृति	श्रीवल्लभ	१९३६	४६	
२१२	५६२६	समाधितन्त्र (बालावबोधिनीटीका)	पर्वतधर्मार्थीकुन्दकुंदाचार्यशिष्य	१७४६	७०	
२१३	४४६८	सांख्यवृत्ति	कपिलोक्त	१८वीं श.	१५	
२१४	६७६६	सामवेदरहस्योपनिषत्		१८०३		पत्र १-३ अप्राप्त
२१५	६५६१	सिद्धांतदर्पण	विद्याभूषण टी० नन्दमिश्र	१९वीं श.	२१	
२१६	४५४७	सिद्धांतबिन्दुः	मधुसूदनसरस्वती	१७६५	१२	लि. साधरामदास स्था. मारोठ
२१७	७३७०	"	"	१७७६	५५	
२१८	५२०५ (२)	सिद्धांतमुक्तावली	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	३२-३३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१६	७०७१	सेवाप्रकाशशतकव्याख्या	गोस्वामी श्रीव्रजलाल	१८२४	६३	रचनाकाल १७५५, लि. क. श्वेताम्बर नानिगराम पत्र ७ से २६ तक अप्राप्त
२२०	५२०५ (६)	सेवाफलम्	वल्लभाचार्य	१८वीं श.	४१-४२	
२२१	४५६७	हठप्रदीपिका	स्वात्माराम योगीन्द्र	१९वीं श.	२२	
२२२	५८७३	"	"	१८६४	२६	
२२३	६०७६	"	"	१८६७	२७	
२२४	६७५६	"	"	१७६५	१७१	लि. तुलाराम
२२५	७७५७ (१)	"	"	१८५०	१-५६	लि. काश्मीरनिवासीभास्करभट्ट
२२६	५८३३	हठरत्नावली	भट्ट श्रीनिवास	१९०४	३१	पत्र ३०वां अप्राप्त लि. व्रजवासी रोमापुरे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; द-न्याय-दर्शन]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६४०	अनुमानमणिदीधिति	रघुनाथ	१६०८	२१५	लि. मथुरानाथ शर्मा
२	६५१५	अनुमितिपरामर्श	रघुदेवभट्टाचार्य	१८४६	३४	
३	६१५२	आप्तपरीक्षा	विद्यानन्द	१६७८	१३३	लि. जीवेश्वर
४	४४६६	कारिकानिबन्ध	विश्वनाथ	१८वीं श.	१३	
५	५६२२	किरणावलीसूत्र	उदयनाचार्य	१७०५	५२	
६	५६५६	खण्डनखण्डकाव्य	श्रीहर्ष	१६वीं श.	३४१	अपूर्ण
७	५६८६	"	"	"	२३२	
८	६६३६	जागदीशोन्यायव्याख्या		१६०६	११६	लि. मथुरानाथशर्मा
९	४३४३	तत्त्वचिन्तामणि शब्दखण्ड	श्रीगंगेश्वर	१७वीं श.	१४५	
१०	६१८१	तत्त्वदीपिका	अमृतचन्द	१८वीं श.	१०२	
११	४४६६	तर्कचन्द्रिका	विश्वेश्वराश्रम	१८१४	२१	लि. शम्भूराम
१२	६८७४	तर्कप्रदीप	भवदेव	१६वीं श.	६	
१३	६०२१	तर्कभाषा	केशवमिश्र	१८११	२६	पत्र १६वां अप्राप्त
१४	६०४२	तर्कभाषाटीका(भावार्थदीपिका)	गौरीकान्तभट्टाचार्य	१८वीं श.	६२	
१५	४४६५	तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	१६वीं श.	६	
१६	४५००	"	"	१८०५	११	लि. चैनराम, गीजगढ़
१७	५३२५	"	"	१८३६	३	
१८	६०३७	"	"	१८वीं श.	७	
१९	६३६५	"	"	१६००	८	पत्र ६ठा अप्राप्त
२०	६८६७	"	"	१६००	२३	लि. पं. पन्नालाल, लश्कर
२१	६६६४	"	"	१७३२	६	लि. श्रीगोविन्दभट्ट

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	७७१२	तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	१८६२	६	लि. ब्रजवासी सिल्लु:
२३	६१७१	तर्कसंग्रहतत्त्वदीपिका	मदनभट्टोपाध्याय	१८६४	२४	लि. गोस्वामी बलदेव
२४	६८६२	तर्कसंग्रहन्यायबोधिनीटीका	गोवर्द्धनसुधी	१८६१	२३	
२५	४४३६	तर्कामृत	जगदीशभट्टाचार्य	१०१५	१३	लि. रामनारायण मिश्र
२६	४३४१	न्यायरत्नप्रकरण	शशधर	१६वीं श.	३८	
२७	६६६६	न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	चूडामणिभट्टाचार्य	१८८४	३१	
२८	५३३५	न्यायसिद्धान्तमञ्जरीतर्कप्रकाशाख्य- दीपिका	टी० शितिकंठशर्मा	१८वीं श.	६२	
२९	५६०४	न्यायार्थमंजूषा (न्यायब्रह्मवृत्ति)	हेमहंस	१५१५	६७	
३०	७२४५	नयचक्र	देवसेनपण्डित	१८१५	११	पथम पत्र अप्राप्त लि. साधु सुखरामदास शहर बेथममध्ये
३१	७३५७	नयचक्र (सुखबोधार्थमालापद्धति)	देवसेन	१८१३	६	लि. सुज्ञानसागर
३२	७५८६	नयचक्र	,,	१६०३	४	लि. हमीरविजय
३३	७४१४	,,	सिद्धसेन	१७८६	५	लि. ऋषिसुखदेव
३४	६५१६	निश्चयतत्त्वनिश्चित	रघुदेव तर्कालंकार	१६वीं श.	८	
३५	५६२६	प्रमाणमंजरी	सर्वदेव	१७वीं श.	७	
३६	५६२३	प्रमाणमंजरीटीका	टी० अद्वयारण्य	१६वीं श.	७	
३७	४४३१	पदार्थमाला	जयराम न्यायपंचानन	१६६६	१५६	
३८	५१७२	भाषापरिच्छेद	भट्टाचार्य सिद्धान्तपंचानन	१८२३	२८	
३९	६६५१	,,	सिद्धान्तवागीश	१६वीं श.	८	
४०	६७१८	भाषारत्न	श्रीकणाद	,,	४७	११वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१	७७१४	मुक्तावलीकारिका	पंचानन भट्टाचार्य	१८६२	६	लि. ब्रजवासी सिल्लुः
४२	५६३६	रत्नाकरावतारिकापंजिका	देवसूरि	१७००	२५	लि. तीर्थचन्द्रगणि
४३	४४३८	शब्दनिरूपण पूर्वार्द्ध		१७वीं श.	१३१	
४४	७२५५	षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति	हरिभद्रसूरि	१६१२	२०	
४५	७३६०	षड्दर्शनसमुच्चयटीका	हरिभद्रसूरि	१७वीं श.	२६	
४६	४३५०	षड्दर्शनसमुच्चयसावधूरि	हरिभद्र	१७१०	६	लि. मुनिप्रकाशपाल स्थान-सिरोही
४७	७४८६	स्याद्वादमंजरी	हेमचन्द्राचार्य	१५२१	६६	
४८	७३४८	"	"	१५वीं श.	५३	
४९	४४१६	सन्द्देहदोलावलीसटीक	जिनदत्तसूरि	१६वीं श.	२०	लि. नयनसुन्दरगणि
५०	४३४२	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	७ व श.	७	
५१	५१८८	"	"	"	६	
५२	५६००	सप्तपदार्थीटीका	शेषानन्तपण्डित	१७०४	२५	प्रथम पृष्ठ शोभन
५३	७१६०	सप्तपदार्थीवृत्ति	वलभद्र	१७वीं श.	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
५४	५४४६	समासवाद	जयराम भट्टाचार्य	१६वीं श.	११	
५५	५१३३	सिद्धान्तचन्द्रोदय (तर्कसंग्रहटीका)		१८वीं श.	५६	प्रथम पत्र अप्राप्त
५६	४४३७	सिद्धान्तमुक्तावली	विश्वनाथ पंचाननभट्टाचार्य	१६वीं श.	१२०	
५७	६६५५	"	"	१८८४	७३	
५८	५६६४	"	प्रकाशानंद	१८१०	५७	
५९	६६३८	"	विश्वनाथ	१८६४	६५	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; ६--व्याकरण]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१०२	अनिट्कारिका		२०वीं श.	३	
२	६११७	"		१६वीं श.	३	
३	६११२	"		"	३	
४	५६८१	अनुबन्धफलसावचूरिपंचपाठ	हेमचन्द्र	१८वीं श.	१	
५	६६१६	अव्ययव्याख्या			५	लि.नन्दराम ब्राह्मण सवाईजयनगर
६	४३६३	अव्ययव्याख्यान		१६वीं श.	४	
७	६७००	अव्ययार्थप्रकाश	पतञ्जलि	१८४०	७	लि. गंगाविष्णु
८	५०३२	अष्टाध्यायी व्याकरण	पाणिनि	१७६६	११२	लि. महता नागेश्वर श्रीदीच्य
९	४३७३	आख्यातवादटीका	रघुदेव	१८८३	३५	लि. रामलाल
१०	४३७७	आख्यातविवेक	भट्टाचार्य शिरोमणि	१६वीं श.	७	
११	७४३१	उणादिगणसूत्रविवरण	हेमचन्द्र	१५वीं श.	४०	
१२	५२१६	उणादिवृत्ति (पंचमपादान्त)	उज्ज्वलदत्त	१७वीं श.	३२	
१३	७४७१	उणादिसूत्रसटीक		१७६२	१२	लि. रत्नसुन्दर
१४	४३६६	ऊष्मभेद	महेश्वर कवि	१८४७	१७	लि. चिमनराम तेरापंथी
१५	५३८५ (४)	कातन्त्रव्याख्या (दौर्गसिंहवृत्ति)		१६वीं श.	१७७-१८६	
१६	५६५८	कातन्त्रविभ्रम		१७वीं श.	६	
१७	५८७१	कारकखण्डनमण्डन	तर्कसिंह भट्टाचार्य	१६वीं श.	६	लि. शालिग्राम
१८	६१६८	"	"	१७१६	४	लि. ज्ञानकल्लोल
१९	७४५६	"	मणिकण्ठ भट्टाचार्य	१८४७	८	लि. दीपचन्द्र
२०	६१६१	कारकचक्रम्	वररुचि	१८वीं श.	१३	
२१	६०३१	कारकपरीक्षा	पद्मपति राठीय	१८वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२	४२८१	कारकविलास		१६२०	५४	
२३	७४७३	कारकविवेचन		१८वीं श.	४	
२४	५४६२	कृदन्तप्रक्रिया (चन्द्रिका)	रामचन्द्राश्रम	१८६६	२४	लि. बलदेव
२५	४३६४	गणरत्नमहोदधिसवृत्तिक	वर्द्धमान सूरि	१७वीं श.	६६	१ से ६ पत्र अप्राप्त, रचनाकाल सं० ११६७
२६	६५८३	गणपाठ (पाणिनीय)		१८६६	१४	
२७	५०८६	दशबलकारिकारूपोधातुपाठः		१७५६	२	
२८	७३११	धातुतरंगिणी (स्वोपज्ञधातुपाठ- द्विवरण)	हर्षकीर्ति सूरि	१७वीं श.	८५	
२९	६१००	धातुपाठ		१८६०	२१	
३०	६२७०	धातुरूपावली		१९वीं श.	६	
३१	५४८६	प्रक्रियाकौमुदी (प्रथमभाग)	रामचन्द्र	१७वीं श.	६३	पत्र ६३, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२ अप्राप्त
३२	७४६२	"	"	१७०१	१६०	
३३	५१४५	„ सटीक (द्विरुक्तप्रक्रियान्त)	श्रीकृष्णनरसिंह सूरिसूनु	१८वीं श.	३२१	
३४	५४८६	„ सुबन्तप्रकरण	रामचन्द्र	१७वीं श.	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त
३५	५४८८	„ तद्धितप्रक्रिया	रामचन्द्र	„	११४	पत्र ४२, ४६, ६१, ७३, ८१ से ८६ तक, ९३ वां अप्राप्त
३६	५४८७	„ कृदन्तप्रक्रिया	„	„	८८	पत्र ७६ से ८६ तक अप्राप्त
३७	५००६	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१९०६	४२	
३८	५२५१	„	„	१६२०	४५	लि. श्री नृसिंह गुसाई

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९	६५७०	प्रबोधचन्द्रिका	वैजलभूपति	१९वीं श.	१६	
४०	५१५३	प्रौढमनोरमा (पूर्वाद्धिबृत्ति	भट्टोजी दीक्षित	"	४४९	
४१	५१५४	" (तिङन्तकाण्ड)	"	"	१५३	
४२	५१४७	"	"	"	१४४	अपूर्ण
४३	४४७१	परिभाषासूत्र (सिद्धान्तकौमुद्याः)	"	"	२	
४४	६६६४	परिभाषासूत्राणि	"	१९१९	८	लि. गोपीनाथ
४५	५१५५	परिभाषेन्दुशेखर	नागेश भट्ट	१८००	१०३	
४६	५९२४	पाणिनीयव्याकरणसूत्रपाठः	पाणिनि	१७वीं श.	२१	
४७	५५७९	पाणिनीयशिक्षा	"	१८वीं श.	२७	अपूर्ण
४८	६१६९	भाष्यप्रदीपव्याख्यान (प्रथमखण्ड)	नागोजी भट्ट	१८५५	१८९	
४९	६१७०	" (द्वितीयखण्ड)	"	"	११२	
५०	६०५१	भीमसेनधातुपाठः	भीमसेन	१९३०	६	
५१	५९६९	भूधातुवृत्ति	क्षमा कल्याण	१८२९	३४	राजनगरे लिखितम्
५२	५१५०	मध्यकौमुदी (पूर्वभाग)	वरदराज	१८वीं श.	६८	
५३	५१५१	" (उत्तरभाग)	"	१८१२	९३	
५४	६४५९	" (विलासनाम्नीटीकासहित)	" टी. जयकृष्ण	१९वीं श.	११३	
		अव्ययपर्यन्त				
५५	६४६०	" (ग्राह्यातप्रक्रिया)	"	"	८९	
५६	६४६१	" (कृदन्तप्रक्रिया)	"	१८३४	६८	पत्र ६६, ६७वां अप्राप्त
						लि. जती चैनसागर, जैनगर
५७	५१४६	महाभाष्य (तृतीयचतुर्थाध्यायो	पतञ्जलि	१८वीं श.	१९८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	५५४८	लघुकौमुदी (उत्तराद्धं)	वरदराज	१६१२	५७	लि. नन्दलाल
५९	६६७०	लघुशब्देन्दुशेखर	नागेश	१८वीं श.	१६५	
६०	५१४८	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६१०	७६	
६१	६१०३	लघुसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१६०४	६८	
६२	७६८६	"	"	१८७४	६०	लि. उमाशंकर
६३	६८६५	लिङ्गानुशासन	हेमचन्द्र सूरि	१८वीं श.	८	
६४	७२०५	लिंगानुशासनविवरण (स्वोपज्ञ)	हेमचन्द्राचार्य	१६४५	७४	लि. शोभा रुद्र
६५	६५२१	व्याकरणलघुभाष्य (पूर्वखण्ड)		१६वीं श.	२८२	
६६	५३१०	वाक्यप्रदीप		१७वीं श.	२५	अपूर्ण
६७	६३३२	विदग्धबोध	भूपतिमिश्र	१८६०	१४	वैरिनगरमध्ये लिखितम्
६८	६११५	विपरीतग्रहणप्रकरण		१६वीं श.	२	
६९	७४५७	वैयाकरणभूषणटीका	कृष्णमिश्र	१८वीं श.	१७	
७०	५१५२	वैयाकरणभूषणसार (स्फोटवाद)	कौण्डिभट्ट	"	५०	
७१	५१७४	वैयाकरणसार (शक्तिनिर्णय)		"	७	
७२	७४५१	शब्दप्रभेदटीका	मू. महेश्वर टी. ज्ञानविमल	"	११०	
७३	६०१४	शब्दभेदप्रकाश	पुरुषोत्तमदेव	१८७६	२	
७४	५६२८	शब्दशोभा	नीलकंठ शुक्ल	१७२१	२६	रचनाकाल १६८६ सांगानेर- मध्ये लिखितं
७५	५२१७	शब्दसंचयः	केनचिज्जैनमुनिना संकलितः	१७वीं श.	१६	अपूर्ण
७६	७५१८	शब्दार्थसंग्रह		१८६१	३	लि. ब्रजवासी सिल्लुः
७७	६५०८	षट्कारकव्याख्यान	भैवानन्द	१८५२	११	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७८	७४४४ (१८)	सारस्वत (पञ्चसन्ध्यन्त)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८६	३०३-३१०	लि. ऋषिचतुर्भुज उदपुरमेंलिखित
७९	५१४४	सारस्वतसूत्रपाठ	"	१९वीं श.	८	
८०	६७८०	"	"	१९२५	८	लि. किसोरदास हभीरगढ़मध्ये
८१	७६६४	"	"	१८५६	११	
८२	४४७०	" (क्रम)	"	१९वीं श.	८	
८३	४३६५	सारस्वत प्रथमावृत्ति (तद्धित प्रक्रियान्त)	भाषव	१८४२	६६	लि. मथेरण सरूपचन्द्र मेड़तानगर
८४	६६४१	सारस्वत (द्वितीयावृत्ति)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१७वीं श.	४६	लि. रघुनाथ
८५	६६४२	" (तृतीयावृत्ति)	"	१६६८	१२	
८६	७६४६	" प्रथमसन्धिभाषाटीका	"	१९वीं श.	४	अपूर्ण
८७	४४७२	सारस्वतप्रक्रिया	"	१७६१	५६	लि. स्था.-सुदामापुर
८८	५२४१	" (पंचसन्ध्यन्त)	"	१९वीं श.	२३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८९	५०४५	" (विसर्गसन्ध्यन्त)	"	"	१२	
९०	६११६	"	"	"	७३	अपूर्ण
९१	६८२३	सारस्वतप्रक्रिया (सार्य)	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८वीं श.	६	अपूर्ण
९२	६९२३	"	"	१७वीं	१४	
९३	६५०४	सारस्वत (आख्यातप्रक्रिया)	महीदास	१८५७	५६	लि. महात्मा रामलाल नेवटा निवासी
९४	६९६५	" "	अनुभूति स्वरूपाचार्य	१८८८	५८	
९५	६८६३	" तद्धितप्रक्रियान्त	"	१७४२	४४	
९६	७५६६	" तद्धितप्रक्रिया	"	१९वीं श.	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७	६८८६	सारस्वत (कृत्प्रक्रिया)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७४७	४६	लि. मुनि तेजपाल सिलीवदग्रामे
६८	७५८८	„ (कृदन्तप्रक्रिया)	„	१८५७		लि. महात्मा रामलाल नेवटा
६९	७५९८	„ „	„	१८१६	५५	
१००	७६३६	„ „	„	१९वीं श.	२७	
१०१	६००४	सारस्वतमाधवीवृत्तिः (सिद्धान्तरत्नावली)	माधव भट्ट	१८२५	११२	लि. देवचन्द्र
१०२	४१६५	सारस्वतसटीक	अनुभूति स्वरूपाचार्य टी. पुञ्जराजनरेन्द्र	१६५४	६२	
१०३	४६५६	„ पूर्वाद्धि	„	१७वीं श.	५१	पत्र सं० ३६ से ४२ तक अप्राप्त
१०४	६८६८	सारस्वतटीका	पुञ्जराज	१८वीं श.	१००	
१०५	५५०२	सारस्वतचन्द्रिका	चन्द्रकीर्ति	„	२०८	आद्य २ पत्र अप्राप्त लि. भैरवबकस व्यास केकड़ी में लिखित
१०६	६६५५	सारस्वत (चन्द्रकीर्तिव्याख्या)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१७वीं श.	१८४	पत्र ६३, ६४, ६५ अप्राप्त
१०७	६८८३	सारस्वतटीका	चन्द्रकीर्ति	१७४५	१७०	
१०८	६८८७	„	„	१८वीं श.	२४६	आद्य पत्र १ से १० तक, ११८, १३३वां अप्राप्त
१०९	७४२२	सारस्वतसटीक	„	१७वीं श.	१८७	
११०	७२३६	„	„	„	१२८	
१११	७५११	सारस्वतदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि	१६४४	६५	
११२	४१६६	सारस्वत (प्रसादटीकोपेत)	वासुदेवभट्ट	१८वीं श.	७६	
११३	७४६०	सारस्वतवृत्ति (आख्यातपर्यन्त)	गोपाल		११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	६०४७	सारस्वत (पूर्वार्द्ध) भाषाटीकासह	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१६वीं श.	५२	
११५	६०४८	,, (कृदन्तप्रक्रिया)	"	"	६०	
११६	५१४६	सारस्वतधातुपाठ	हर्षकीतिसूरि	१८०४	४२	
११७	५६५१	"	"	१६६३	६२	लि. स्था.-मौलब्राण
११८	५६८७	"	"	१७४५	४१	लि. मंगलपुर
११९	६०२३	सारस्वतरूपमाला	पद्मसुन्दर	१८६०	६	लि. दानतमुनि
						सावतगंजमध्ये लोहमण्डवी
१२०	६७६३	सारस्वतीप्रक्रिया	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८वीं श.	५३	
१२१	६६६८	सारस्वतीप्रक्रिया (कृदन्त)	अनुभूतिस्वरूपाचार्य	१८८८	१७	लि. रामदास
१२२	६७५८	,, तृतीयावृत्ति	नरेन्द्रपुरी	१६०७	६३	लि. "
१२३	४२०१	सारसिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	१८६६	२१	
१२४	४२०२	"	"	१८वीं श.	४६	
१२५	७२०८	सिद्धहैमशब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	२५	
१२६	४३६८	,, (दुर्गपदव्याख्या)	"	"	८	
१२७	५६१७	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति (अष्टमोऽध्याय)	"	१६४५	३४	लि. पं. सुखनिधानमुनि
१२८	५६२०	सिद्धहैमशब्दानुशासनाध्याय चतुष्कावचूरि	"	१६वीं श.	२०	
१२९	५६१६	सिद्धहैमशब्दानुशासनषट्पादावचूरि	"	"	२७	
१३०	५६२१	सिद्धहैमशब्दानुशासनधातुपाठः	"	१८वीं श.	८	
१३१	५६७६	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	"	"	११३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	५६१४	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	१५वीं श.	१८	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्तम्
१३३	५६१८	" "	"	१६वीं श.	१५	
१३४	५६१५	" " पंचमाध्यायः	"	"	२६	
१३५	५६१६	" " षष्ठसप्तमाध्यायौ	"	"	२५	
१३६	५८६८	सिद्धहैमशब्दानुशासनलघुवृत्ति	हेमचन्द्र	१५वीं श.	३६	तृतीयाध्यायस्यतृतीयपादादारभ्य चतुर्थाध्यायपर्यन्ता
१३७	५८६७	" "	"	"	४७	तृतीयाध्यायद्वितीयपादान्त
१३८	७१६०	" "	"	"	२५	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादपर्यन्त
१३९	७१६४	सिद्धहैमशब्दानुशासनसूत्रपाठ	"	१५३३	१०	लि. पं. धर्मसंगलगणि देलुलिग्राम
१४०	७१६८	" "	"	१६वीं श.	५	
१४१	५४६६	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	१८३४	३१२	
१४२	७०७४	"	"	१८वीं श.	३५	
१४३	४३७५	"	"	"	१२३	द्विरुक्तप्रक्रियान्त
१४४	५५३६	"	"	"	७३	तिङन्तप्रकरण
१४५	४३२१	"	"	"	३०८	कृदन्तपर्यन्त
१४६	६७६०	"	"	१८५४	४१	कृतप्रक्रिया
१४७	६८०८	"	"	१९वीं श.	२०६	
१४८	४२७६	" तत्त्वबोधिनीव्याख्या	ज्ञानेन्द्र सरस्वती	"	१२६	तिङन्तवाण्ड
१४९	६४६२	" "	"	१८३०	८७	कृदन्तमात्र
१५०	७१२४	" व्याख्या	भट्टोजीदीक्षित	१९वीं श.	३-६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	४३७४	सिद्धान्तकौमुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टो ज नागेश	१६वीं श.	३१२	समासाश्रयविधिपर्यन्त
१५२	४३७६	सिद्धान्तकौमुदी लघुपरिभाषेन्दुशेखरसहित (त्रिपाठ)	भट्टोजि नागोजी	"	१२६	तद्धितप्रक्रिया द्विरुक्तप्रक्रिया
१५३	६८६५	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	१७८०	६५	लि. क. पं. नरसिंह
१५४	६८६६	"	"	१६२३	१४५	लि. क. लक्ष्मीचन्द्र बलदेव
१५५	७०६२	"	"	१६वीं श.	५६	
१५६	६७६८	„ चुरादिप्रकरण	चन्द्रकीर्ति	१८वीं श.	२५	
१५७	६८८८	„ (कृतप्रक्रियान्त)	रामचन्द्राश्रम	१६२५	११२	लि. लक्ष्मीचन्द्र
१५८	५८८२	„ सटिप्पण	"	१८७६	१४०	लि. चक्रपाणि
१५९	५८८३	„ पूर्वाद्धि	"	१६वीं श.	६४	
१६०	७३५०	„ सटीक	"	१८वीं श.	३०३	अपूर्ण
१६१	६५२२	„ सुबोधनाम्नीव्याख्यापूर्वाद्धि	सदानन्दगणि	१६वीं श.	१४२	
१६२	६२६५	„ "	"	१८८३	६	
१६३	५६७१	सिद्धान्तरत्नशब्दानुशासन	जिनचन्द्र	१८८३	४३	
१६४	५३८५ (५)	'सिद्धोसूत्र' (पंचसंधिपर्यन्त)		१६वीं श.		
१६५	५८६६	हैमधातुपारायण	हैमचन्द्र	१७वीं श.	१००	
१६६	५६०८	हैमलिगानुशासनम् (दुर्गपदप्रबोध)	श्रीवल्लभगणि	"	४४	संवत् १६६१ में जोधपुरमें श्री सूरसिंहके राज्यमें रचित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १०-कोषग्रन्थ]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४८३	अनेकार्थध्वनिमञ्जरी		१६वीं श.	१३	
२	४४८४	"		१७१४	२१	
३	६३२५	"	कादमीरक महाक्षणक	१८२५	१३	
४	६३३३	"	"	१६वीं श.	१६	
५	६२२६	"	"	१८४७	१७	लि. क. कन्हौराम मिश्र
६	७००२	"	अमरसिंह ?	१८७४	१७	लि. क. नाथूराम त्रवाड़ी
७	६५६६	"		१८८१	६	पल्लीवाल
८	४३०५	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्र	१७वीं श.	७०	लि. क. रामनारायण
९	४३२२	"	"	१५३८	८१	आद्य पत्र नहीं । तृतीयसे
१०	४३२३	" टीका	टी. वल्लभगणि	१७वीं श.	२१४	षष्ठकाण्ड तक
११	४४८१	"	हेमचन्द्र	१८वीं श.	३१	सारोद्धार टीका
१२	६११८	" सटीक	"	१६२७	१४८	तृतीय काण्डान्त
१३	७२१०	"	"	१६०२	२०७	स्वोपज्ञ टीका
१४	५७३४	" (शेषसंग्रह)	"	१८५२	५६	श्री पत्तनमें लिखित
१५	७१६५	" (सशेषसटिप्पण)	"	१८वीं श.	४७	लि. यशोविजय
१६	७२३७	" (बीजकसह)	"	१७८०	७०	लि. क. रामकृष्ण ज्योतिर्विन्
१७	७३३५	अभिधानचिन्तामणिटीका	"	१६वीं श.	१६६	विष्णुदुर्गे (कृष्णगढ़ ?)
१८	७४५६	" (व्युत्पत्ति रत्नाकर- नमिनीवृत्ति)	टी. देवसागर रविचन्द्रशिष्य	१६वीं श.	४०७	स्वोपज्ञ टीका

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३२४	अमरकोश (अमरचन्द्रिकाटीका)	टी. परमानन्द विष्णुपुरी दण्डिपुत्र	१७८३	८७	
२०	४४७३	अमरकोश (प्रथमकाण्ड)	अमरसिंह	१८२६	३८	
२१	४४७४	„ (द्वितीयकाण्डान्त)	„	१९वीं श.	६३	
२२	४४७५	„ (तीनों काण्ड)	„	१८६३	२६	
२३	५४४६	„ सटीक	टी. क्षीरस्वामी	१६५६	८१	मधुपुरीमध्ये केशवराज्ये कालिन्दीतटे
२४	५४६३	„	अमरसिंह	१९वीं श.	१६७	१५२ वां पत्र अप्राप्त
२५	६१२६	„ द्वितीयकाण्डान्त	„	१८वीं श.	३६	
२६	६०२६	„ सुधाख्याटीका	टी. भानुजी दीक्षित	१९वीं श.	२७७	
२७	६२६८	„ „	„	१८६५	११४	लि. बलदेव गोस्वामी
२८	६४५६	„ अमरविवेकाख्या	टी. महेश्वर शर्मा	१९वीं श.	४८	प्रथमकाण्ड
२९	६४५७	„ „	„	„	१४२	द्वितीयकाण्ड
३०	६४५८	„ „	„	„	१०८	“पुण्यपत्तने पाठशालायां शिलाक्षरयन्त्रे मुद्रितम् १७७३ शाके” ऐसा अन्तमें लिखा है
३१	६५१७	„ तृतीयकाण्ड	अमरसिंह	१८६८	६६	लि. क. वंशीधर कवीश्वर
३२	६६१३	„	„	१९वीं श.	४४	
३३	६७४४	अमरकोषटीका (द्वितीयकाण्डान्त)	टी. बृहस्पति	१७वीं श.	४२१	५२वां व ६५ वां पत्र अप्राप्त जीर्ण प्रति
३४	६८८१	„ सटिप्पण „		१७वीं श.	६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५	६८८६	अमरकोषटीका सटिप्पण (द्वितीयकाण्डान्त)	अमरसिंह	१८वीं श.	५३	पृथ्वीवर्ग से द्वितीयकाण्डान्त
३६	६८९१	„ (अव्ययवर्ग, सविवरण)	„	१७४२(?)	३३	अपूर्ण
३७	७००४	„	„	१९वीं श.	७९से१०६	
३८	७००५	„ (द्वितीयकाण्ड)	„	१८६४	११९	
३९	७१३०	„	„	१८९३	११२	
४०	७७६९ (३)	अमरकोश	अमरसिंह	१८५६	९७	चित्र सं० २
४१	७४६१	अमरकोशोद्धाटन	क्षीरस्वामी	१६वीं श.	१५१	
४२	५९६८ (१)	एकाक्षरनामकोश	क्षपणक	१९वीं श.	१-३	प्रदर्शनीय; चित्र २
४३	५४१४ (१)	एकाक्षरीकोष		१९वीं श.	१-४५	
४४	५९४८	धनञ्जयनाममाला	धनञ्जय	१६१५	१७	
४५	५३८५ (३)	„	„	१६वीं श.	१६६-१७७	
४६	६११४	शारदीया नाममाला	हर्षकीर्ति	१८वीं श.	२३	लि. क. मोतीगरु गांव लाभूडामध्ये
४७	६७५४	„	„	१८९९	२८	
४८	७३७०	„	„	१८९४	१९	
४९	५९५०	शिलोञ्छनाममाला	हेमचन्द्र	१६४५	३	लि. क. कुशलगणि वाचनाचार्य
५०	५९१०	शेषनाममाला	„	१६वीं श.	६	
५१	५९३७	हैमलिङ्गानुशासन सविवरण	„	१७वीं श.	८०	स्वोपज्ञ
५२	६१७९	हैमलिङ्गानुशासन	„	१८वीं श.	९	
५३	६९८३	हैमीनाममाला	„	१७६३	६०	लि. मोहनमुनि बाडोलीग्रामे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; ११-ज्योतिष]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७१(२)	अङ्कनिघण्टु	दैवज्ञविलासगत		४५-४६	
२	६८३३(६)	अक्षतजोवानाश्लोक		१८५०	५०-५१	
३	६२८१	अक्षरचिन्तामणि		१८३०	८	
४	४४५२(७२)	अग.यादिचतुर्मुखलफल		१-वीं श.	१२२ वां	
५	४४४२	अद्भुतसागर	बल्लालसेन	१७८७	१७६	* प्रथम पत्र अप्राप्त लि. क. पुरोहित सदाराम लि. स्था. शिवपुरी
६	४६३०	अद्भुतसागर प्रथमखंड	,,	१६वीं	१८४	
७	४३१४	अयनांशादिकरणविधि		१७३३	२४	
८	४७६६(१)	अर्घकाण्ड (साठसंवत्सरीफल)	दुर्गदेव	१७७५	१०(११)	
९	५०६६	अर्घकाण्डम्		१६४२	२	
१०	५३१५	अष्टमलग्नपरिसर		१६वीं श.	५	
११	७०६६	अष्टादशयोगाः		१८वीं श.	५	
१२	४८५२	अष्टोत्तरीदशाफल	गौरीजातकगत	,,	६	लि. क. जीवन
१३	४८७८	,,		१६५८	११	
१४	७०६१	आकाशपुरुषचित्र	हर्षसौभाग्य सूर्यसौभाग्यशिष्य	१८६३	१	
१५	४८६१	आयप्रश्नग्रन्थ	विघ्नराज	१६वीं श.	५	
१६	५६३८	आरम्भसिद्धिबार्तिक	उदयप्रभ वार्तिककारहेमहंसगणि वाचनाचार्य	१७वीं श.	६७	
१७	५६२७	आरम्भसिद्धि सावचरि	उदयप्रभ	१६वीं श.	१४	
१८	५२६२	इष्टशोधनप्रकार		१६वीं श.	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	५८२७	उडुदायप्रदीप (लघुपाराशरी)	टी.—लक्ष्मीपति कृष्णानन्दसुत	१९२१	५५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२०	४७५३	उपदशाकोष्ठकानि	गौरीजातकान्तर्गत	१९८०	१०	लि. क. नरहरि
२१	७१०२	उपदशाफलम्		१८वीं श.	२	
२२	६२८५	कर्मप्रकाशिकावृत्ति	समरसिंह वृत्तिकार अज्ञात	१८६३	१३	
२३	७६११	कर्मविपाक (भर्तृहरिराजेश्वरसंवाद)		१८४४	४	लि. क. केशवदास
२४	७६१५	कर्मविपाक (सूर्यार्णवगत)	ब्रह्मानन्दसंवाद	१८०६	५१	गढ बदनोरमध्ये लि. क. शिवशङ्करव्यास
२५	६२३५	कर्मविपाक	"	१८३२	४१	हरिदुर्गमध्ये
२६	४६६०	करणकुतूहल सस्तबक		१८५०	२१	लि. क. चतुरविजयगणि
२७	४८७३	करणकुतूहल	भास्कराचार्य	१७७८	११	पुष्पावतीनगरे प्रथमपत्र अप्राप्त लि. क. श्रीदुम्बरजातीय
२८	४८८४	"	"	१७०२	२२	विश्वेश्वरात्मज केवल श्रीपाटणनगरे हरजीसुत
२९	५७०५	"	"	१९वीं श.	१९	सुरजीलिखितम्
३०	६४३५	" (मूल)	"	१८४४	१०	लि. क. अजबसुन्दर खेरवामध्ये
३१	६२२४	करणसारिणी (ब्रह्मतुल्य)		१८वीं श.	१९	प्रथमपत्रअप्राप्त
३२	५७११	कल्पवल्लीहोरा	विठ्ठल	१८६४	५	लि. क. ब्रजवासी
३३	४८५६	किरणावली	सूर्यसिद्धान्तगत	१९वीं श.	३६	सिल्लुः, ललिताघट्टे काश्याम् प्रथम ४ पत्र खंडित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	६०६४	कामधेनुपद्धति (कामधेनुजातक)	जयराम भट्ट	१८७६	७६	लि. क. जगन्नाथ व्यास पत्र ६६, ६७ अप्राप्त
३५	४६६२	कामधेनुसारिणी		१८४४	१६	लि. क. चतुरविजयगणि पोहकरणमध्ये
३६	५२४६	कालज्ञान		१६वीं श.	५	
३७	५५२६	केरलजातकरत्नावली		१६२५	२१	
३८	५७५८	केरलप्रश्न		१८वीं श.	५	
३९	६३७७	केरलप्रश्नशास्त्र	नन्दराम	१८२४	२७	
४०	७०३५	केशवीयजातकपद्धत्युदाहरण	विश्वनाथ देवज्ञ	१८वीं श.	२६	रचनाकाल १५४०
४१	६५४०	केशवीयपद्धत्युदाहरण	"	१७६०	२५	लि. क. उदयविजय
४२	५३१४	केशवीयपद्धति:	केशव	१८२८	२२	लि. क. स्वामीबालचन्द्र ग्वालियरमध्ये
४३	७१००	केशवीयसूत्राणि (जातकपद्धति:)	"	१८वीं श.	४	
४४	६०६५	कोष्ठक (नरपतिजयचर्यागत)	नरपति कवि चन्द्र	१६वीं श.	२	
४५	४८८०	खेटकर्म (करणकुतूहलान्तर्गत)	भास्कराचार्य	१७६८	६	लि. क. गणि भाग्य सौभाग्य
४६	५७६६	खेटकुतूहलोदाहृति	विश्वनाथ	१६वीं श.	६६	रचनाकाल १५३४ शाके
४७	६३८४	खेटकौतूहलम्	सूरविप्र	१८वीं श.	२	रचनाकाल सं० १६७६
४८	४७३१	खेटसिद्धि	दिनकर	१६वीं श.	३०	रचनाकाल संवत् १६३५
४९	५७१२	ग्रहगोचरफल		१६वीं श.	३	
५०	४१०४	ग्रहणपद्धति	मिश्र नन्दराम	१८३२	५	* रचनाकाल संवत् १८२० स्थान-काम्यकवन

क्रमाङ्क.	ग्रथाङ्क.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	४७६१	ग्रहणपद्धति	मिश्रनन्दराम	१६वीं श.	६	
५२	५३२४	ग्रहभावविचार		१८वीं श.	१०	
५३	४८५४	ग्रहलाघवटीका	विश्वनाथ	,,	५०	
५४	४६७७	ग्रहलाघवटीकोदाहरण	गणेशदेवज्ञ टी. विश्वनाथ	१८४२	४१	लि.क. ऋषि भाणजी
५५	७६६३	ग्रहलाघवसिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१६३०	१४१	
५६	५२१६	ग्रहलाघवविवरण	,,	१६२४	६२	पत्र १७वां अप्राप्त
५७	५५३८	ग्रहलाघवाख्यसिद्धान्तरहस्यांदाहृति	विश्वनाथ देवज्ञ	१८००	३८	लि.क. कल्हा केसोराय श्री रूपनगरमें लिखित
५८	४८६२	ग्रहसिद्धि	महादेव	१८वीं श.	३	
५९	७६७१	ग्रहान्तर्विचारतत्त्व	दुर्गाशङ्कर पाठक	१६वीं श.	१	
६०	५१७१	गणकमण्डन	नन्दिकेश्वर	१७६४	५२	
६१	४३६२	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	४	* लि.क. जीवकीर्तिगणि लि. स्था.—तलवाड़ा
६२	४७२०	गणितकौमुदी	नारायणपंडित (नृसिंह देवज्ञसुत)	१६वीं श.	३७	
६३	४७७१(१)	गणितलीलावती आदि	भास्कराचार्य	१८०५	५४१-४५	*
६४	७१११	गणितनाममाला	हरिदत्त	१८वीं श.	६	
६५	६७६४	,,	,,	१६०६	८	
६६	७६१८	गर्गमनोरमा	गर्गऋषि	१६वीं श.	१०	
६७	६६०४	गर्गमनोरमा टीका	,,	,,	१४	लि.क. गोपीनाथ
६८	७०७८	गुरुचार		१८८०	३७	,, भगवानदास विक्रमपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	५६३९	गूढार्थप्रकाश पूर्वखण्ड (सूर्यसिद्धान्तकी टीका)	रङ्गनाथ	१९०६	१८६	
७०	५७७५	गृहप्रवेशप्रकरण (अमिताक्षरा व्याख्यासहित, मुहूर्तचिन्तामण्यन्तर्गत)	रामदेवज्ञ	१९वीं श.	१२	र. का. भुज-भुजेषुचन्द्रमिमे शके (१५२२)
७१	६७६१	गोचरग्रहप्रकाश	श्रीपति भट्ट	१९वीं श.	४	
७२	५६४९	गौतमीयजातक सटीक (त्रिपाठ)	गौतम मुनि टीका-लक्ष्मीपति	१८८४	६	
७३	५८०८	चन्द्रसूर्यग्रहणविधि		१९वीं श.	१९	
७४	४७४५	चन्द्रार्की		१८वीं श.	१४	
७५	४८७०	"	दिनकर	१८३९	३	लि.क. श्रीदुम्बर शिवानंद वाटेजाख्ये ग्रामे रचना
७६	४८९३	चन्द्रार्की पद्धति		१८वीं श.	३	
७७	५२६३	चन्द्रोन्मीलनदीपिका		१९२१	४३	
७८	४६७२	चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	१९००	७	
७९	६८३३(८)	"		१८५०	४०-५०	गोस्वामी भोलानाथजीकी पोथीसू लिली
८०	५५४४	" (त्रुटित)		१८३०	८	कृष्णगढ मध्ये
८१	४६६८	चमत्कारचिन्तामणिटीका अन्वयार्थदीपिका	नारायण, टी० धर्मेश्वरमालवीय	१९०१	२८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण लि.क. सायलपुर वास्तव्य श्रीदीच्यज्ञातीय व्यास श्रीकेशवजी यादवजी, सरधर मध्ये
८२	५७७१	चमत्कारचिन्तामणिव्याख्या	म० नारायण	१८४०	१६	लि.क. चन्द्र मिश्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८३	६६२६	चमत्कारचिन्तामणि सटीक	नारायण	१८२८	३०	लि.क. कंवर विजयलालराम
८४	४६६४	„ सस्तवक		१८२४	१२	„ प्रमोद विजय
८५	४६७२	„ सार्थ	राजर्षिभट्ट	१८२१	२१	प्रति कीटविद्ध है
८६	५०५१	चौरयोगप्रकरण		१६०६	११	लि.क. महात्मा जोशी पन्नालाल
८७	६७७७	चौरासीदोषनामानि		१६वीं श.	१	
८८	५६२४	ज्योतिर्विदाभरण	कालिदास	१६०३	१००	रचनाकाल सं० २४ (?)
८९	६६०४	ज्योतिर्विदाभरणटीका	„ टीका-भावमुनि	१६वीं श.	२१८	अपूर्ण
९०	५७२१	ज्योतिःशास्त्रभाष्य	शेषनाग	१८७५	३२	
९१	६८३३ (७)	ज्योतिष के स्फुट श्लोक		१६वीं श.	३७-३९	
९२	४६६६	ज्योतिश्चन्द्रार्क	महादेव (हीरामणिसुत, हेरम्बपौत्र)	१८३६	५१	रचनाकाल सं० १७८३
९३	५२६६	ज्योतिषनिबन्ध		१८वीं श.	४५-७५	लि.क. नन्दराम
९४	४८६६	ज्योतिषमकरन्द	अमररसिहसूनुनन्दन	„	६	अपूर्ण
९५	७०६७	ज्योतिषमाला		१८वीं श.	२	लि.क. यति भवानोराम
९६	४२८६	ज्योतिषरत्नमाला	श्री श्रीपति	१७वीं श.	१६	ग्रामभर्रा मध्ये
९७	४४०५	„	„	१६४६	३३	*
९८	४७६८	„	टीका-वैजापंडित	१७५७	१०७	* प्रथम पत्र अश्राप्त
९९	६८७७	„	श्रीपतिभट्ट	१७५५	१७	लि.क. राजसोम
१००	७०४६	„	„	१७४६	५७	„ व्यास चतुर्भुज
१०१	७०६६	ज्योतिषरत्नमाला (वृन्दावनशास्त्र)		१८वीं श.	३	विवाह सम्बन्धी लग्नदोषादि का वर्णन

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	६३५०	ज्योतिषरत्नमाला षट्पञ्चाशिका ज्योतिषसार भुवनदीपक आदि		१६२०	८२	योगिनीपुरमध्ये लिखित
१०३	६२७८	ज्योतिषरत्नमालाव्याख्या	श्रीपति	१६वीं श.	४४	
१०४	७८२५	ज्योतिषरत्नमाला	"	१८७१	६४	लि.क. गम्भीरचन्द खिलचीपुर
१०५	६६७२	ज्योतिषसंग्रह गुटका		१६वीं श.	१५५	
१०६	५८१३	ज्योतिषसार		१६वीं श.	६८	अपूर्ण
१०७	४८६१	" सस्तबक		१८वीं श.	२०	
१०८	४४०७	ज्योतिषसारसंग्रह (सस्तबक)	अज्ञात	१७८६	२५	# लि.क. पं० श्री खुसालसागर गुणविजय स्थान-नरायणानगर
१०९	४४१०	" (सार्थ)		१८वीं श.	२६	#
११०	६५३७	" (सस्तबक)		१८१७	३३	लि.क. नवनिधविजय महिमापुरमध्ये रचनाकाल शके १७०४
१११	५६३१	ज्योतिषसिद्धान्तसार	मथुरानाथ मालवीय शुक्ल			डालचन्द्र नृपाज्ञया ग्रन्थ रचना महाराणा जगतसिंह नामाङ्कित जगद्भूषण । रचनाकाल-सं० १६६५
११२	४८६४	जगद्भूषण	हरिदत्त भट्ट	१७वीं श.	४	
११३	४७१०	जगद्भूषणसारिणी		१८२६	६५	
११४	४७२७	"		१६वीं श.	६०	
११५	४७८७	"		१८वीं श.	५५	रचनाकाल सं० १७६८
११६	४८८२	"		१७३७	५३	लि.क.माणिक्यविजय ज्ञान- विजयशिष्य चन्देलाग्राममध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११७	४४५२ (३७)	जन्मग्रहफल		१८वीं श.	४०-४१वां	लि.क. प्रोतसोभाग्य
११८	६३६६	जन्मपत्रीप्रकार	जयगणि	१६वीं श.	५१	* प्रथम पत्र अप्राप्त
११९	४६६५	जन्मपत्रीपद्धति	गोपाल ?	१८२०	८	लि.क. चतुरविजय
१२०	५२१५	"		१८वीं श.	८	*
१२१	५६७७	"				आद्य के ४ पत्र खंडित
१२२	६४२६	" (स्त्रीजातक) (अन्तर्दशाध्याय)	लब्धिचंद्र	१७५१	१०	स्त्रीजातक ६ पत्र अन्तर्दशाध्याय ४ पत्र अपूर्ण
१२३	७०३६	जन्मपत्रीपद्धति		१८वीं श.	६८	कीटविद्ध प्रति है। इसमें सभी विषय संगृहीत हैं।
१२४	७०८२	"	हर्षकीर्तिसूरि	"	४५	अपूर्ण
१२५	४७५१	जन्मपत्रीपद्धतिसारोद्धार		१६वीं श.	१४६	
१२६	६३८६	जन्मपत्रीविचारेकालदण्डाचक्रादि		१८वीं श.	३२	
१२७	४४४०	जातककर्मपद्धति	श्रीपति	१४८७	१६	लि.क. विश्वनाथ
१२८	४६७४	"	"	१६००	७	" लीलाधर देराश्री पुरुषोत्तमसुत
१२९	४७०४	"	"	१८३७	१५	
१३०	४८६६	"	"	१६६१	६	
१३१	५५१३	"	"	१८वीं श.	४४	अपूर्ण
१३२	६४३०	" (सव्याख्या)	"	१७४१	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.स्था. बीकानेर
१३३	५८२५	" (प्रोढमनोरमाटीकासहित)	केशवदेवजी टी. दिवाकर सुनिहाराणकसुत	१६वीं श.	१४१	आद्य २ पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३४	५५०६	जातकग्रहफल (जातकपद्धति)	महादेवदैवज्ञ	१७५२	२४	लि.क. कल्याणहंसगणि अवरंगाबाद
१३५	४६६१	जातकदीपिका	हर्षविजय	१८८६	७	लि.क. नरेन्द्रविजय राजस्थानी भाषार्थसहित
१३६	४६६६	"	"	१८४९	६	
१३७	४८४२	" (सस्तबक)	"	१८२२	१८	लि.क. त्रीकमजीशिष्य
१३८	४५२२	जातकदीपिकाभिधानपद्धति (सस्तबक)	"	१८६२	११	रचनाकाल सं० १७६५ रचनास्थान नराकरपत्तन लि.क. ऋषि मेघजी स्थान पीचुमंदपुर लि.क. शिवलाल
१३९	४७०५	जातकपद्धति	केशव	१८१४	५	
१४०	४६६३	"	"	१८६६	६	
१४१	७१६२	" (उवाहरण)	विश्वनाथ	१८३६	३७	
१४२	५४३३ (२)	जातकरत्न (जमिनीयसूत्रसार)		१९वीं श.	५५-५६	अपूर्ण
१४३	५६१३	जातकसंग्रह	मदनस्वामी	१९वीं श.	२१३	रचनाकाल सं० १९००
१४४	५०४७	जातकसार		१८वीं श.	३ से १६४	अपूर्ण
१४५	६३६१	" (चमत्कारचिन्तामणिभाषाटीका)	विद्वन्नारायण	१८१७	११	राजस्थानी भाषासहित श्रीकृष्णगढ में लिखित
१४६	६३६३	" "	"	१८२७	१७	राजस्थानी भाषासहित
१४७	६७६४	जातकाभरण	दुण्डिराज	१८७८	६०	लि. कल्याणपुरीमध्ये लि.क. रामवल्लभ
१४८	५३०६	जातकालङ्कार	सणेशदेवज्ञ	१९०६	३७	अपूर्ण

[६४]						
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४९	६८३३(३)	जातकालङ्कार	गणेशदेवज्ञ	१८८१	७-२५	लि. क. अमृतारामजी
१५०	६८३३(५)	जातकत्रिशती	हिल्लाज	१९वीं श.	३३-३५	
१५१	५५३३	जैमिनीयसूत्रव्याख्या	नीलकण्ठ	१९२४	४२	लि. क. पुरुषोत्तममिश्र
१५२	६२९०	"	"	१९११	२७	लि. क. गुसाई बालमुकुन्द
१५३	७५१०	जैमिनीसूत्रवृत्ति	वृ० बालकृष्णानन्दसरस्वती	१८२१	५९	लि. क. रामनारायण ब्राह्मण
१५४	६३९५	जोतिकरा छुटकसिद्धोक्त		१९वीं श.	९	राजस्थानी भाषासहित
१५५	५२९०	तत्त्वप्रदीपजातक	श्रीपतिपण्डित	१८७१		लि. क. बालमुकुन्द
१५६	५३४०	"	"	१९१७	९	लि. क. रघुनाथ द्योसावासी
१५७	५५२२	"	"	१९१४	९	स्था. भरथपुर
१५८	६९०५	"	"	१८५३	७	लि. क. रामगोपाल दाधीच
१५९	५८८४	ताजिककल्पलता	जयराम	१८२६	३५	मनोहरपुर
१६०	६२३७	ताजिकतन्त्रसार	समरसिंह	१७१०शाके	१०	लि. क. व्यास मन्त्रालाल
१६१	४७३८	ताजिकनीलकण्ठी	नीलकण्ठ	१८३७	३४	लि. क. मनसाराम शर्मा
१६२	५१२८	"	"	१८३५	२६	लि. क. चिमनलाल ब्राह्मण,
१६३	७६५७	ताजिकपद्मकोश		१९वीं श.	९	सवाई जयपुर
१६४	५२६५	ताजिकफलतन्त्र	नीलकण्ठ	१७६८	५-५८	लि. क. ज्ञानसुन्दर ऊर्जपुर
१६५	६१०१	ताजिकभूषण	गणेशगणक दुर्द्विराजात्मज	१८९५	२६	रचनाकाल सं० १६४४
						लि. क. आशानन्द
						लि. क. किशोरीलाल
						लि. क. बिहारी सबोरानगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	६२४२	ताजिकभूषण	गणेशगणक ढुंढिराजात्मज	१८२१	३१	लि. मनसाराम उपाध्याय
१६७	७०५३	"	"	१७४३	४२	लि. चतुर्भुज व्यास
१६८	७१२७	"	"	१८६१	४३	कृष्णगढमध्ये लि. आत्माराम तिवाड़ी
१६९	५४५३	ताजिकभूषणटीका बालबोधिकाख्या	मुञ्जादित्य	१९वीं श.	४२	पत्र ६ से १३ अप्राप्त
१७०	४७७०	ताजिकसार जिणरस	हरिभट्ट	१८७१	६४	भाषार्थसहित अपूर्ण
१७१	४८४६	ताजिकसार	"	१८०५	१६	लि. क. मुनि गांगजी
१७२	६०५५	"	"	१७३६	२६	मुनिजी धनजीशिष्य
१७३	६८७८	"	"	१७६५	२३	
१७४	६४२०	ताजिकसारवृत्ति	सामन्तहर्षरत्नशिष्य	१८वीं श.	२३	*
१७५	७४५५	ताजिकसिद्धान्तसार	समरसिंह	१८६४	२५	लि. फतेहचन्द मारोठ
१७६	४६६०	ताजिकालंकार	सूर्यकवि	१८४१	१०	स्था. सीकर
१७७	७०६५	ताजिकालङ्कार	"	१८४६		लि. उदयराम ब्राह्मण
१७८	५३५०	ताजिकोदाहरण	नीलकण्ठ	१९वीं श.	२३	लि. क. शिवशङ्कर
१७९	५१२७	तात्कालिकऋजुचक्रविवरण		१९००	१२	अपूर्ण लि. अखेराम
१८०	७५७६	ताराविलास	शाम्भवदेवनाथ	१९वीं श.	२	लि. रामगोपाल
१८१	४७४४	तिथिकल्पद्रुम		१८वीं श.	१५	राजस्थानी भाषासहित
१८२	४७६२	तिथिचिन्तामणि	गणेशदेवज्ञ	"	१८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	४७४२	तिथिमञ्जरी	(ताजिकरत्नान्तर्गत)	१८वीं श.	२२	राजस्थानी भाषासहित
१८४	७५६६	द्वादशभावफल		१८२३	३६	१६०३ शाके का उदाहरण है।
१८५	४७७२	द्वादशभावश्लोक		१६वीं श.	१४	लि.क. सीताराम चांदसेनमध्ये
१८६	४७१३	दशाफल		"	३	
१८७	४८६७	दीपप्रकाश (वृद्धपाराशरीय)		१६२६	४५	लि.क. बाछूराम व्यास
१८८	७३८०	दोषपृच्छा	नर्मदाप्रसादसुत	१८वीं श.	१	जाट का कूवा जयपुर
१८९	५७५१	ध्रुव भ्रमयन्त्र		१६१४	६	राजस्थानी अर्थ सहित
१९०	५५५५	नरपतिजयचर्या (जयलक्ष्मीनाम्नीटीकासहित)	नरपतिकवि	१८वीं श.	१७७	लि.क. ब्रजवासी, जयपुर
१९१	५८३०	नरपतिजयचर्या	"			प्रथम पत्र अप्राप्त
१९२	५९४०	"	"	१८६६	१२६	* ७३वां पत्र अप्राप्त
१९३	६०६१	" (भूत्रलयपर्यन्त)	"	१७५८	६०	लि. परमानन्द मिश्र
१९४	६९१०	"	"	१६वीं श.	४३	चित्रयन्त्रयुक्त
१९५	७१३२	"	"	१८वीं श.	६१	१ से १६ व ८४ से ८८ तक अप्राप्त
१९६	७८३६	"	"	१८वीं श.	३६-८०	अपूर्ण
१९७	७५८७	नरपतिजयचर्याटीका	"	१८४६	१२४	अपूर्ण, रचना १२३२ (?)
१९८	४७७१ (३)	नवग्रहयन्त्रविधि	महाभारतान्तर्गत शिवलालपाठक	१६वीं श.	६७	पत्र ३, ६, २७, अप्राप्त
१९९	४८५१	नवरौजप्रकाश		१८०५	४६-५२	
				१६वीं श.	३	*

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२००	७८१८	नष्टजातक	(रुद्रसंहितान्तर्गत)	१८वीं श.	७६	
२०१	७०८८	नष्टोद्दिष्टविधिः		"	२	*
२०२	४७७१ (४)	नक्षत्रनिघंटु, ग्रहनिघंटु		१८०५	५३-५४	
२०३	७६५२	न ड समुच्चय		१६वीं श.	३	
२०४	७६६६	नारचन्द्र	नारचन्द्र	१८६६	१८	लि.क. अमृतविजय
२०५	६८२१	" प्रथम प्रकरण	"	१७५६	११	लि.क. रतना तिलकधीरशिष्या जैतारणमध्ये
२०६	४७४७	" "	"	१८वीं श.	१४	
२०७	७०१०	" द्वितीय प्रकरण	"	१८०६	२७	*
२०८	४३५२	नारचन्द्रयंत्रकोट्टार सटिप्पण	" टी. श्रीसागरचन्द्रसूरि	१६५१	३०	लि. स्था. कोरंटानगर
२०९	६६५०	नारचन्द्र सटिप्पण (प्रथम प्रकरण)	टी. सागरचन्द्रसूरि	१८वीं श.	२६	
२१०	६७७६	नारचन्द्रसूत्र	नारचन्द्र	१७६६	१६	राजस्थानी भाषासहित
२११	५३३६	निबन्धचूडामणि	मिश्र यशोधर	१६वीं श.	६६	अपूर्ण
२१२	६२५२	"	फंसारिमिश्रात्मज			
२१३	६७०३	प्रश्नकौमुदी (ताजिकमतानुसार)	"	१७५१	२०	
२१४	४८६८	प्रश्नग्रन्थ		१६२५	४८	
२१५	५०६३	प्रश्नचूडामणि		१८वीं श.	२२	
२१६	४६८३	प्रश्नचूडामणिसार		१६वीं श.	२३	
				१६४३	७	लि. बुद्धिसागरगणि
२१७	५८११	प्रश्नतत्त्व	चक्रपाणि सत्यधरात्मज	१६वीं श.	१६	वाच्छदेशमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१८	५५६७	प्रश्नतन्त्र	दुर्योधन	१८३८	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१९	५२६०	प्रश्नप्रकरण		१९वीं श.	५	
२२०	५७६८	„ (ज्योतिषकौमुदीगत)	नीलकण्ठ	१८८८ से पूर्व	२८	
२२१	४८६४	„ „	„	१९वीं श.	४४	आद्य पत्र खंडित
२२२	४७१४	प्रश्नप्रदीपक	काशीनाथ	„	११	
२२३	५२६७	„	„	१८वीं श.	८	
२२४	४७५५	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	„	२	
२२५	५२६१	„	„	१९वीं श.	४	
२२६	५७२४	„ सटीक	„	१८वीं श.	५	लि.क. विद्यार्थी लोकमणि, काश्याम्
२२७	७५०१	प्रश्नमाणिक्यमाला	परमानंद शर्मा	१९वीं श.	१७८	अपूर्ण
२२८	४१८३	प्रश्नमार्ग	अज्ञात	„	१९६	* अपूर्ण
२२९	५६३५	प्रश्नरत्न (सटिप्पणं) (त्रिपाठ) (स्वोपज्ञ)	नन्दराम कामानिवासी	„	४९	रचनाकाल १८२४ टीका रचना १८२७
२३०	५३३८	प्रश्नरत्न (केरलीय)	नन्दराम मिश्र	१८३७	८	
२३१	५२३९	प्रश्नविद्या		१९वीं श.	८	द्वितीय पत्र अप्राप्त
२३२	४७१९	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदासमुत	१९१५	४७	लि.क. केवलचन्द्र गोविन्दजी
२३३	५२६९	„	„	१८वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३४	६४३२	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास सिद्ध ब्रह्मदाससुत	१६वीं श.	२६	अपूर्ण
२३५	७०५०	"	"	१८वीं श.	२७	
२३६	५५३४	"	"	१६वीं श.	३४	
२३७	४६००	प्रश्नशत		१७६७	२३	
२३८	४७३६	" (प्रश्नज्ञान)	भट्टोत्पल	१७६४	४	
२३९	६५११	प्रश्नशास्त्र (बादरायण) टीका चिन्तामणिनाम्नी	उत्पल भट्ट	१८५३	६	यह ग्रन्थ ७० आर्या छन्दोंमें आबद्ध है।
२४०	४७४०	प्रश्नशास्त्रटीका		१७१०	७	
२४१	५५०५	प्रश्नशिरोमणि	रुद्रमणि	१६२४	१५	आद्य दो पत्र अप्राप्त
२४२	४६६५	प्रश्नसंग्रह		१६वीं श.	८	
२४३	४८८३	प्रश्नसंग्रहसार, हंसचक्र- अवधिविचार		१८८१	८	
२४४	५२६६	प्रश्नसंग्रह		१६वीं श.	१७	लि.क. पुरुषोत्तम मिश्र लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः राजस्थानी भाषा सहित
२४५	५५३२	प्रश्नसप्तति	भट्टोत्पल		१७	
२४६	७७१५	प्रश्नसार	जीवा गुर्जर याज्ञिक नरहरिसुत	१६०६	३	
२४७	६४६५	प्रश्नसार (सटीक)	गोविन्ददेवज्ञ विष्णुदेवज्ञसुत	१८६२	१३	
२४८	४६७०	प्रश्नसुधाकर	लालमणि (जगद्रामात्मज)	१६२७	८१	
२४९	५७४३	प्रश्नज्ञान (आर्यासप्तति)	भट्टोत्पल	१६वीं श.	४	
२५०	५४६४(२)	प्रश्नोत्तरीरत्नमाला		१८७०	४	
२५१	५७३१	प्रासादमण्डन	सूत्रधार मण्डन	१६२८	२८	
						लि.क. गोपाल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०६६	पञ्चतत्त्वविचार		१६वीं श.	४	राजस्थानी भाषा सहित
२५३	५५३५	पञ्चपक्षी सटीक त्रिपाठ	रुद्रोक्त	१६२४	१५	लि.क. पुरुषोत्तम
२५४	५७६३	पञ्चपक्षीसटिप्पण	टी. कल्याणकर	१६०८	२	लि.क. ब्रजवासी, मथुरा
२५५	४४५२ (३६)	पञ्चपक्षीप्रश्न	महादेव	१८वीं श.	४२-४३	# लि.क. पं. प्रीतसोभाग्य स्था. वणहेड़ा ग्राम
२५६	४५२३	पञ्चपक्षीशकुन		१८३१	२	लि.क. नापेश्वर
२५७	६५२४	"		१६२४	११	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५८	७६७२	पञ्चश्लोकीताजिक टीका	बालकृष्ण	१८६३	५	लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः वाराणस्यां ललिताघट्टं
२५९	६५२४	पञ्चशर (पञ्चस्वरा)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श.	६	
२६०	५७५३	पञ्चशरनिर्णय (पञ्चस्वर)	प्रजापतिदास	"	५	
२६१	५६४०	पञ्चशरविवृति (पञ्चस्वरा)	" अप्पय दीक्षित	१६७६-शाके	१४	
२६२	५७३०	पञ्चस्वरा (द्वितीयाध्याय)	परमसुखोपाध्याय	१६वीं श.	६	
२६३	५६८३	पञ्चसिद्धान्तमत (भास्वत्युदाहरण टीका)	शतानन्द गंगाधर	१८६२	१२	लि.क. ब्रजवासी सिल्लुः मण्डीमध्ये
२६४	५७६६	पञ्चाङ्गसिद्धि	बाबादेवज्ञ, रामपुत्र, शिवानुज	१६०७	५	सुज्ञजागेश्वरप्रोत्यं रचित
२६५	६७५६	पञ्चाङ्गाभिषपत्र (लग्नसाधनविधि)		१६वीं श.	७	लि.क. ब्रजवासी काश्याम् राजस्थानी सहित
२६६	७७१६	पञ्चाशत्प्रश्न	शङ्कराचार्य	१६वीं श.	६	
२६७	४७४८	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१८६२	६	लि.क. जोशी आशाराम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६८	४८६३	पद्धतिप्रकाश	दिवाकर	१६वीं श.	८	#
२६९	४८६६	पद्धतिप्रकाशोदाहरण (गणिततत्त्वचिन्तामणेः)	"	"	४९	
२७०	४८६५	पद्मकोश		"	१०	
२७१	७६९६	"	गोवर्द्धन कण्डोलक द्विजरामसुत	१८७२	९	रचनाकाल १६०१ लि.क. धोरा, रूपनगर
२७२	६३०९	पद्मताजिक		१६वीं श.	१६	
२७३	५८१५	पवनविजयग्रन्थ	ईश्वरप्रोक्त	१६०५	१८	
२७४	५७७६	पवनविजयस्वरोदय	शिवप्रोक्त	१६वीं श.	१२	
२७५	७०९१	पञ्चमार्गदर्शन, योगसंग्रह		१८वीं श.	८४	अपूर्णा/राजस्थानीअर्थसहित/पत्र १-१४ व १६वां. अप्राप्त
२७६	६२८४	पाराशरीहोरा		१६वीं श.	३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
२७७	४७३९	पाशाकेवली	गर्गाचार्य	१७९१	१०	लि.क. आ. नागरेण द्वारा लिखित हरिदत्तजी पठनार्थ
२७८	४७५२	"	"	१६वीं श.	६	
२७९	६२५७	"	"	"	१६	
२८०	६४३१	"	"	"	९	लि.क. अमरचन्द्र
२८१	६६२०	"	"	"	११	" गुरुदयाल सौदावादासी
२८२	४६७८	पैतामहीसारिणी	मधुसूदन देवज्ञ श्रीपतिशिष्य	१६२७	३	#
२८३	६४२८	फलकल्पलता (वार्षिक)		१६वीं श.	५	लि.क. पुण्यविजय श्रीमत्पत्तनपत्तने
२८४	४७३५	ब्रह्मतुल्यगणितक्रम	करणकुतूहलगत	१७७४	३५	लि.क. हेमसागरशिष्य गुमानसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८५	५६४२	ब्रह्मतुल्योदाहरण (कुलभाष्य)		१९वीं श.	५२	
२८६	५८२६	ब्रह्मसिद्धान्त	शाकल्यसंहितागत	,,	४५	आद्यपत्र अप्राप्त । लिपिस्थान काशी
२८७	६१७८	,, सटीक	टी. पद्मनाभ नर्मदात्मज	१७००	७८	लि.स्था.मथुरा। लि.क. जटमल गौड़
२८८	४८६५	वानबोणिनी	श्रीलान्हिदत्तद्विज	१९वीं श.	७	श्रीपतिपादपद्मभुपः श्रीलान्हिदत्तोद्विजः
२८९	४२७७	बालावबोध	मुञ्जादित्य	१७६९	१७	* लि.क. खरतरगच्छीय बालचन्द्र स्थान. पारापुर/प्रथम पत्र अप्राप्त
२९०	४२५८	बालबोध	,,	१८४७	३४	लि.क. गंगाविष्णुकान्यकुब्ज स्थान नगर बोली
२९१	४७२८	,,	,,	१९वीं श.	१२	
२९२	४८७६	,,	,,	१८७६	४८	बंकपुरमध्ये लिखितम्
२९३	७०३४	,,		१९वीं श.	२१	अपूर्ण
२९४	७११२	,,	हरिकर्ण	१८वीं श.	२	*
२९५	५६२६	बीजगणितबालबोधिनीटीका	भास्कराचार्य टी. कृपाराममिश्र	१८९४	९६	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः काशी रचनाकाल शाके १७१४
२९६	६२१२	बीजवासनाभाष्य	व्रजनाथसूनु	१७७६	१५४	* आद्य १९ पत्र अप्राप्त
२९७	५७४७	बृहच्चिन्तामणिवासनाभाष्य (संज्ञाध्यायमात्र)	मू. गणेश दैवज्ञ टी. विष्णु दैवज्ञ दिवाकरसुत	१९वीं श.	२१	
२९८	४१८६	बृहज्जातक	वराहमिहिर	१९वीं श.	६६	* पत्र ४३, ४४, ४५ अप्राप्त लि.क. जोसी जीवनराम
२९९	४६५८	,,	,,	१८६५	५८	
३००	४६६७	,,	,,	१८०१	२१	,, सारङ्ग नरपति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०१	४६६७	बृहज्जातक	वराहमिहि	१८३७	४६	लि.क. महाराजा प्रतापसिंहज राज्ये
३०२	४८८६	"	"	१७२३	५०	आद्यन्तपत्र खंडित
३०३	४६७४	"	"	१८६६	७२	लि.क. सदासुख
३०४	६१०५	"	"	१८३५	१६	लि.क. स्वामीबालचन्द्र स्थान—नरवर
३०५	६२०६	"	"	१८६३	१८६	
३०६	७०५५	"	"	१८४१	५५	
३०७	७०१३	" (उपसंहाराध्याय)	"	१७८५	१६	लि.क. स्थान—कृष्णगढ़
३०८	५३२६	बृहज्जातकटीका	भट्टोत्पल	१६वीं श.	६६	१, २, ३४, ४४ पत्र अप्राप्त
३०९	६२३६	बृहज्जातकविवरण	महीधर	१८५१	८४	
३१०	५५३१	बृहज्जातक (सटिप्पण)	वराहमिहिर	१६२२	३४	
३११	५८२८	"	"	१६वीं श.	४६	अन्तिम पत्र अप्राप्त
३१२	७६२२	बृहत्संहिता	"	१६वीं श.	१७४	
३१३	५५३६	बृहन्नारचन्द्रसारोद्धार	नारचन्द्र	१८वीं श.	१०	
३१४	५५४०	"	"	१७वीं श.	१८	
३१५	५६६८	बृहस्पतिकण्ड	शिवपार्वती संवाद	१६वीं श.	६	
३१६	४६८१	भ्रमणसारिणी		१६वीं श.	१३८	
३१७	५६४८	भावविवृति	माधव	१८६०	१८	लि. शिवदास वाराणसी
३१८	४७६४	भावाध्याय	ताजिकभूषणगत	१६वीं श.	५	
३१९	४७१८	"	रत्नसारान्तर्गत	१८१०	१६	लि.क. ऋषि नागजी
३२०	४८५३	भावशफल		१६वीं श.	१३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	५७३५	भावेशफलाध्याय	जातककामधेनुगत	१६०२		लि.क. ब्रजवासीसिल्लु:रीमापुरे
३२२	६८६६	भास्वती	शतानन्द	१६०२	१५	„ ऋषि लाला लक्ष्मीचन्द्र
३२३	४६६३	भुवनदीपक		१७०२	४	„ मुनि दामाख्य
३२४	५७०	„	पद्मप्रभसूरि	१६वीं श.	६४	रचनाकाल—शाके पंचरसाधनैः
३२५	४७५०	„ सस्तवक	„	१८वीं श.	१०	राजस्थानी भाषा सहित
३२६	४४११	„ सटीक	„ टी. सिंहलिलक	१६वीं श.	५३	* टीका रचनाकाल-१३२६
३२७	४४५२(८१)	भैरवीचक्र		१८वीं श.	१२३वां	स्थान—बीजापुर इस चक्रमें दिशानुसार भैरवीके बोलने पर शुभाशुभ फलका निर्णय किया गया है
३२८	६३०१	मकरन्दकारिका	कृपाराम	१६२२	६	लि.क. आनंदसिंह
३२९	७५१६	मकरन्दभावविवृति	नीलकण्ठ	२०वीं श.	५	
३३०	५७३२	मकरन्दविवरण	दिवाकर नृसिंहसुत	१८६४	६	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु: मणि- कर्णिकातीरे
३३१	७५१५	„	श्रीपतिभट्ट	१६३६	१२	
३३२	७५१६	„	दिवाकर नृसिंहसुत शिवगुरुशिष्य	१६३६	२१	
३३३	६२७५	मकरन्दसाधनप्रक्रिया	चूड़ा मणिचक्रवर्ती	१८६०	१२	
३३४	५७६४	मकरन्दोदाहरण (सूर्यसिद्धांतमतानुसार)	विश्वनाथ	१६वीं श.	१६	
३३५	५८२२	मकरन्दोदाहरण	„	१८६७	२७	पत्र १ व ८वां अप्राप्त
३३६	५८१०	मकरन्दोदाहृति	„	१६३६	५७	
३३७	६८५६	मकरसंक्रान्तिपत्रक (खरडा)		१६वीं श.	१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३८	६६४३	मयूरचित्र		१८६८	२०	लि.क. मिश्र भवानीदास, जयनगर
३३९	४२८४	„ (मयूरपदपूर्वक)	नारदप्रोक्त	१८६७	१९	* लि.क. शीरपाणिपुत्रः
३४०	६२२२	मयूरचित्रक	„	१८वीं श.	१०	
३४१	५७७२	मयूरचित्रकादि	वराहमिहिर	१९वीं श.	२९	
३४२	४८४९	महादशाफल	„	„	७	
३४३	७१३६	महादेवीवृत्तिदीपिका	धनराजगणि भुवनराजगणीन्द्रशिष्य	१८वीं श.	६ से ३२	
३४४	४६८०	महादेवीसारिणी		१९वीं श.	६१	
३४५	४७४१	„		१८१४	१२६	आद्य न्तपृष्ठ सचित्र शोभन
३४६	४७८६	„		१८४९	१५२	रचनाकाल अनुमानतः १२३८ शक लि.क. खरतरगच्छीय शोभा- चन्द्रजीशिष्य चन्द्रभाण स्थान—सुभटपुर
३४७	७४७०	मानसागरीपद्धति	नानाग्रन्थोद्धृत	१९वीं श.	७७	राजस्थानी भाषा सहित
३४८	६७१५	मासभावाध्याय	ताजिककल्पसूक्त	१७६८	८	लि.क. आचार्य किशोरदास श्रीदुम्बर मोढासावासी
३४९	४२८३	माससारिणी		१८वीं श.	१५	#
३५०	६४३९	मासेश—मासभावफल	ताजिकमतानुसार	१७८७	१०	लि.क. लब्धिसुन्दर कल्याण- सुन्दरशिष्य, फतेपुर
३५१	४७२३	मुन्थाफल		१९वीं श.	१	
३५२	७८२८	मुष्टिज्ञान		१८वीं श.	२	राजस्थानी भाषा सहित
३५३	४९७३	मुहूर्तगणपतिसार	गणपतिदेवज्ञ (रावल हरिशंकर सरिसुत)	१८७३	५१	२४ वां पत्र अप्राप्त रचनाकाल १७५०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५४	४८४३	मुहूर्तचिन्तामणि	रामवेवज्ञ	१८००	४०	रचनाकाल-१५२२ शाके
३५५	७०११	"	"	१७६२	२६	लि.क. रूपनारायण गोड़ रचनाकाल-१५२२ शाके
३५६	४११०	" (प्रमिताक्षराटीकोपेता)	"	१८६६	१५६	लि.क. पं० गुणमूर्ति
३५७	६२५८	" "	"	१८३२	८२	लि.क. रामसुख, जयपुर पत्र ११ से १६, ७५, ७६, ८१वाँ अप्राप्त लि.क. व्यास बालकृष्ण नरवर- मध्ये
३५८	४६४८	" सटीक	"	१६०३	२१५	
३५९	५६८६	" (पीयूषधारा सहित)	"	१६वीं श.	३६	शुभाशुभप्रकरण मात्र
३६०	५६८७	" "	"	"	३६	नक्षत्रप्रकरण मात्र
३६१	५६८८	" "	"	"	११	संक्रान्तिप्रकरण मात्र
३६२	५६८९	मुहूर्तचिन्तामणि सटीक (पीयूषधारा टीकोपेत)	"	"	८	गोचरप्रकरण मात्र
३६३	५६९०	" "	"	"	३६	संस्कारप्रकरण मात्र
३६४	५६९१	" "	"	"	६३	राज्याभिषेकप्रकरण मात्र
३६५	५६९२	" "	"	१६२०	८२	यात्राप्रकरण
३६६	५६९३	" "	"	१६२१	२४	गृहारम्भप्रकरण मात्र
३६७	५६९४	" "	"	१६२०	१७	गृहप्रवेशप्रकरण लि.क. भण्डाराम प्रश्नोरा (मधुपुर्या)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६८	६२६३	मुहूर्तचिन्तामणिः सट्बाथं	रामदेवज्ञ, टी. चतुरविजयगणि	१८३०	१०२	रचनाकाल सं० १७५७ पत्र १ से ८ तक अप्राप्त
३६९	४७११	„ सस्तबक	रामदेवज्ञ	१८२७	५०	लि.क. जीवनविजयगणि
३७०	५६६६	मुहूर्ततत्त्व दीपिकाटीकोपेत	केशवदेवज्ञ टी. गणेशदेवज्ञ	१७६३	१०८	
३७१	४६४७	मुहूर्तदर्पण	ज्योतिर्विलालमणि जगद्रामसुत गंगाराम पौत्र	१८२२		श्रीरक्षाग्रामवास्तव्यश्यामजू- लिखितम्
३७२	४८७६	मुहूर्तदीपक	महादेव कान्हजीबाड़वसुत	१६६२	१०	लि.क. परमानन्द
३७३	५७७०	मुहूर्तमञ्जरी	यदुनन्दन	१६०५		लि.क. अर्जुन पण्डित रचनाकाल १७०६ (?) „ १७२६
३७४	५३४८	„ सटीक	„ टी. मनसाराम रामकृष्णसुत	१८५६	२१	* लि.क. वृक्षाराम गढ़ भरतपुर मध्ये
३७५	४६६४	मुहूर्तमातृण्ड	नारायणदेवज्ञ अनन्ताख्य चातुर्मास्य पुत्र	१६००	२०	लि.क. श्रीदीच्यज्ञातीय देराश्री पुरुषोत्तमसुत लीलाधर
३७६	४७३२	मुहूर्तमातृण्ड (मूल)	नारायण	१८३७	२६	रचनाकाल १४६३ शाके
३७७	४८८७	„	„	१८६०	२३	लि.क. विजयलाल श्रीदुम्बरज्ञातीय
३७८	५२४६	„	„	१८५५	२७	संक्रान्तिप्रकरणान्त
३७९	६७६५	„	„	१६०३	३५	लि.क. मोती
३८०	७०४८	„	„	१८६२	२७	लि.क. दयाशङ्कर व्यास मोतीरामसुत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	४६७१	मुहूर्तमार्तण्ड सटीक	नारायण	१७८६	८२	लि.क. महाजन नरसिंह, जयपुर रचनाकाल सं० १६२६
३८२	४७०६	मुहूर्तमार्तण्ड टीका	"	१६वीं श.	७८	किञ्चिदपूर्ण
३८३	४७२६	"	"	"	१२१	रचनाकाल १६२६
३८४	६१३०	"	"	१८३७	५६	" १४६३ शाके
३८५	५५२५	मुहूर्तमार्तण्ड (वल्लभाख्या टीका सहित)	"	१६वीं श.	४७	अपूर्ण
३८६	७३७१	मुहूर्तमुक्तावली (सट्बार्थ)	हरिभट्ट	१८४६	१०	लछ्मनपठनार्थ करहेड़ा मध्ये
३८७	६३६४	" (सट्पण)		१६वीं श.	८	राजस्थानी भाषार्थ सहित
३८८	४७१७	" (सस्तबक)		१६६७	६	लि.क. ऋषि नानजी
३८९	४८७४	" (मुहूर्तप्रदीप)		१७०२	११	लि.क. मेदपाटज्ञातीय जोशी
३९०	७६५१	" (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित)	रघुवीर	१८४७	८	मुरजीकेन लिखितम् घोड़ेलावग्राम मध्ये
३९१	५७१४	मुहूर्तसर्वस्व		१८वीं श.	१६	लि.क. रत्नसागर समेणमध्ये रचनाकाल १५५७ शाके
३९२	७१०४	मूलजातकविधान		"	२	
३९३	६३६२	मेघमाला		१६वीं श.	१६	
३९४	५६४६	यन्त्रचिन्तामणि	दामोदर	१६१८	६१	
३९५	५३१७	" सटीक	जगद्देवज्ञ (?) टी. रामदेवज्ञ	१८४५	१६	लि.क. मनसाराम प्रथम पत्र अप्राप्त
३९६	५६१६	यन्त्रचिन्तामणि टीका (यन्त्रदीपिका)	"	१८६५	१३	लि.क. व्रजवासी मिश्र, ललिताघट्टे काश्यां

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६७	६१०८	यन्त्रचिन्तामणि सटीक	चक्रधर वामनात्मज टी. रामदेवज्ञ मधुसूदनात्मज	१८५४	२६	
३६८	६८८५	" सटीक	"	१६०३	३६	लि.क. लाला लक्ष्मीचंद
३६९	४१३२	यन्त्रराज	महेन्द्रसूरि	१८४७	१६	*
४००	५६८२	" सटीक	" टी. मलयेन्द्रसूरि	१६३६	५०	
४०१	६२५४	यन्त्रराज टीका	"	१६०१	४७	लि.क. सर्वेश्वर
४०२	७०१२	यवनजातक (जातकाभरण)	दुण्डिराज	१६१६	१०५	वृद्धयवनजातक
४०३	४४०६	यानयोगार्णव	शिवोदित	१८२५	२३	* लि.क. पं. लिखमीराम स्थान नेवय मध्ये (निवाई)
४०४	६५१०	युद्धकोशल		१६वीं श.	७	
४०५	७६४२	"	श्रीरुद्रः	"	१६	
४०६	६७७५	युद्धजयोत्सव	गंगाराम	१८६६	१७	लि.क. मोतीगरू
४०७	६८६१	योगचिन्तामणि (सबालावबोध)	हर्षकीर्तिसूरि बा. नरसिंह रतनराज गणिशिष्य	१७२४	७३	लि.क. रङ्गविमल कालूग्रामे
४०८	५७४६	योगशतक	बलभद्र	१६वीं श.	१२	
४०९	४८६३	योगार्णव	वैकटेश	"	१८	
४१०	५७३६	"	"	१६२१	१३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
४११	५७६६	योगावली		१६-२०वीं श.	२०	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४१२	६०४०	योगिनीदशाकरण	राजश्रुषि	१८११	१२	लि.क. भैरवदास
४१३	४८६५	योगिनीदशान्तर्दशाफल		१८वीं श.	७	
४१४	४६५४	योगिनीदशाफल	रुद्रयामलोक्त	"	७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१५	७६४५	रत्नप्रदीप		१८०६	१६	लि.क. हरवल्लभ पारीक
४१६	५६०६	रत्नमाला	महादेव	१८६८	२३	जोसी भूधरजीसुत, ढाण्यां लि.क. भागीरथ ब्राह्मण
४१७	५८३१	रत्नमाला (विवरणनाम्नी टीका)	श्रीपति टी. महादेव लूणिय पुत्र	१९वीं श.	२१४	रचनाकाल ११८५ शाके ४६,४७,६१,२०८वां पत्र अप्राप्त
४१८	७५७२	रमलग्रन्थ (रमलेन्दुप्रकाशसम्मत)		१८वीं श.	२०	
४१९	७५७५	" (बिन्दुरमलाख्य)		१९वीं श.	११	ग्रन्थस्वामी भट्ट हरिदत्त
४२०	४७५६	रमलचिन्तामणि संज्ञातंत्र (प्रथम)	चिन्तामणि पंडित	१८वीं श.	१०	
४२१	४७६०	" (प्रश्नतन्त्र) द्वितीय	"	"	१०	
४२२	५१६५	रमलनवरत्न	परमसुख उपाध्याय	"	३७	#
४२३	५३०४	रमलनवरत्नम्	परमसुखोपाध्याय	१८८८	२६	
४२४	५६०८	"	"	१९वीं श.	३५	रचनाकाल-१८६७
४२५	५७६७	रमलबिन्दु		"	११	प्रति के कोण खंडित हैं
४२६	४४५३	रमलशास्त्र	राम	१७८०	१२	भुजद्वंगमध्ये लिखितं
४२७	५३२१	"	रामरुद्र	१७१५	७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४२८	५४७६	"	रामदेवज्ञ	१९वीं श.	४६	
४२९	६८३३ (२)	"		१८४८	६-७	लि.क. लाला अमृताराम
४३०	७५७४	"	"	१९वीं श.	१७	
४३१	६८३३ (११)	"		१८५२	५५-६६	
४३२	४७६६	रमलसार	श्रीपति	१८४२	१६	#
४३३	४६५१	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१९वीं श.	३४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३४	७५७३	रमलेन्दुप्रकाश	रुद्रधर त्रिपाठी	१८३८	२८	
४३५	५६७७	राजवल्लभ वास्तुशास्त्र	मण्डन सूत्रधार	१६०६	४४	
४३६	७५१२	रामविनोद	रामभट्ट	१७५५	१३	लिपिस्थान-नरायणा कूर्मवंशो- द्भव महाराजाधिराज श्री राम- दास की आज्ञा से रचित ।
४३७	५५६४	रेखागणित	जगन्नाथ सच्चट्ट	१६२०	२६४	सवाईजयसिंहतुष्ट्य
४३८	७०६३	लग्नचंद्रिका		१८वीं श.	३४	प्रथम पत्र शोभन
४३९	५५६८	„ (जन्मपत्रीलेखोदाहरण)	काशीनाथ	१६वीं श.	१८	प्रथम पत्र अप्राप्त
४४०	७६०५	लग्नवाद	श्री गिरधारी मिश्र मैथिल	„	१	
४४१	४६८२	लग्नसाधनविधि		„	८	
४४२	६४२६	„		१८६८	६	
४४३	४७३०	लग्नोदाहरण		१६वीं श.	४	नागोर मध्ये लिखितम्
४४४	६४६४	लघुकामधेनुसारिणी	केशव	१८वीं श.	१०	लि.क. धर्मविजयगणि रूपनगर
४४५	५५२३	लघुजातक	वराहमिहिर	१६१६	१७	रचनास्थान-काशी
४४६	६३८२	„	„	१८१२	७	लि.क. विप्र रामगोपाल, केकड़ी
४४७	६८२२	„	„	१७वीं श.	६	„ पं. उदयसुन्दर श्रीवीकानगरे
४४८	६६०७	„	„	१८४४		द्वितीय पत्र अप्राप्त
४४९	७०६८	„ (अरिष्टाध्यायान्त)	„	१८वीं श.	३	लि.क. उदयसुन्दर क्षमासुन्दर- शिष्य
						आर्यापञ्चबद्ध ग्रन्थ है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५०	४१८७	लघुजातक सटीक	वराहमिहिर	१६५४	५६	#
४५१	४६८४	„ सवृत्तिक	„ टी.-मत्तिसागर उपाध्याय	१८८५	३०	
४५२	४७४६	„ सटीक (त्रिपाठ)	वराहमिहिर, टी.-उत्पलभट्ट	१७२३	१६	
४५३	४७५४	„ „	„	१८४२	१८	लि.क. सन्तोषदास वण्णव
४५४	७१०१	„ सटिप्पण	„	१८वीं श.	२	
४५५	५६८५	लघुपाराशरी (योगाध्यायमात्र)	पाराशर ऋषि	१६३२	२	
४५६	७६४३	लघुपाराशरी (जडुदायप्रदीपोद्योत)	भैरवदत्त पं. हरिरामशर्मपुत्र	१६वीं श.	२६	पत्र १, २, ३, अप्राप्त
४५७	५७४६	लघुपाराशरी सटीक (राजयोगाध्यायान्त)	पाराशर ऋषि	१८६४	६	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु:मणि- कर्णिका तीरे श्रमृतपातालदेवालये
४५८	४७५८	लघुमातृण्ड, मुहूर्तदीपक	नारायण देवज्ञ कौशिक	१६वीं श.	१४	#
४५९	५६१३	लघुक्षेत्र सभास विवरण	चंद्रशेखर	१४८८	३२	लि. स्था.चित्रकूट दुर्ग
४६०	५७४२	लम्पाकशास्त्र	पद्मनाभ	१८६७	८	लि.क. देवीचन्द्र ग्राम सहहड़ी काश्याम्
४६१	५६३४	„ सटीक (त्रिपाठ)	„	१६०५	३४	लि. ब्रजवासी सिल्लु: काश्याम्
४६२	६३७२	लल्लवाराही	लल्ल	१८वीं श.	३	
४६३	५७२३	लीलावती	भास्कराचार्य	१६वीं श.	४२	
४६४	५७०४	लीलावती विवरण	„ टीका-रामकृष्ण		६३	#
४६५	४७६७	वर्षगणितपद्धति (दिवाकरीपद्धति)	दिवाकर नृसिंहसुत	१८४७	५	
४६६	६३११	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८३२	३०	लि. मनरूप व्यास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६५४५	वर्षतन्त्र	नीलकण्ठ	१८७२	४७	लि.क. रतनविजय
४६८	४७०६	„ सटीक	„ टी-विश्वनाथ	१७५२	३१	२७,२८ २९वां पत्र अप्राप्त
४६९	७१४२	वर्षसारिणी (वर्षफलपद्धतिसार्थ)		१८०२	१६	लि.क. चिरञ्जी सीतर
४७०	४३५५	वसन्तराज शाकुन	वसन्तराज भट्ट	१७७१	३७	* लि.क. विद्याविलास पाठक लि.स्था. श्री बेनातट नगर
४७१	६२०८	„	„	१८२३	६३	
४७२	६७८८	„	„	१९१२	१५७	
४७३	७८२९	„	„	१८४२	८२	लि.क. गङ्गाराम
४७४	५५९३	वसिष्ठसंहिता	वसिष्ठप्रोक्त	१९१९	१३३	
४७५	६४२१	वामवेधफल		१७९९	८	लि.क. देवचन्द्र, मण्डोवरमध्ये
४७६	५१३२	वास्तुशास्त्र	विश्वकर्माप्रकाशगत	१९०६	७२	
४७७	४८७७	विशोत्तरीदशाफल		१९५८	१०	
४७८	४६५६	विजयप्रशस्ति	स्वच्छन्द शङ्कराचार्य	१८२४	१३	* लि.स्था. जयपुर, रचनाकाल सं० १७४२
४७९	५६३३	विरोधप्रकाश	यज्ञेश्वर	१८९३	३	लि.क. व्रजवासी सिल्लुः
४८०	४७१२	विवाहपटल		१८५६	६	राजस्थानी भाषार्थ सहित
४८१	५५३७	विवाहपटलटीका		१९१२	१२	काशिनाथकृत शीघ्रबोधानुसार लि.क. इन्द्रसुन्दर
४८२	६३५२	विवाहपटलसस्तबक		१९वीं श.	१९	
४८३	७६५०	विवाहपटल		१८१८	१७	राजस्थानी भाषार्थ सहित लि.क. नवनिधिविजय
४८४	७६५८	„		१७८४	२०	राजस्थानी भाषार्थ सहित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८५	६४२२	विवाहमासनिर्णयादि		१८वीं श.	२	
४८६	४८५७	विवाहवृन्दावन	केशव	१९वीं श.	२८	
४८७	६०६६	"		१७१२	२०	लि.क. कल्याण
४८८	६३३६	विवाहवृन्दावन टीका	गणेश देवज्ञ	१८६०	६२	
४८९	७०५१	विवाहवृन्दावनभाष्य	केशवार्क, भाष्य-शिवशंकर	१८२१	५७	प्रति की लिपि दो प्रकार की है
४९०	६८३४	वेगराजविवेकनिबन्ध (कर्मविपाक)		१८७८	३८	लि.क. सुमतिसागर
४९१	४६५७	शकुनप्रदीपचूड़ामणि	उपेन्द्र	१७६६	१२	लि.क. छद्दीलाराम अगलपुरमध्ये
४९२	६३३०	शकुनसार		१९वीं श.	३	
४९३	५४५२	शकुनावली		१९१०	८	
४९४	७६३७	शरत्पद्धति	रङ्गनाथ	१७५३	५	लि.क. व्यास पुरुषोत्तम, स्थान-मथुरा
४९५	५२२२	शिवालिकित मुहूर्त	रुद्रयामलोक	१८वीं श.	४	
४९६	४६५३	शिवालिकित "		"	६	
४९७	६४३६	शिवालिकित मुहूर्तमालिका	शिवोक्त	"	६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९८	४१५५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१९वीं श.	४०	लि.क. रामचन्द्र ब्राह्मण
४९९	४७५६	"	"	१७६७	२६	
५००	५०५०	"	"	१८६६	३१	
५०१	५७३८	"	"	१८८५	४६	लि.क. देवीदयाल कायस्थ, काशी
५०२	६३६७	"	"	१८५१	३४	
५०३	७१५२	शीघ्रबोध; भड्डली के दोहे	" भड्डली	१८६१	६३	लि.क. यति प्रेमचन्द, हीरापुरीमध्ये
५०४	७६२५	शीघ्रबोध	काशीनाथ	१८७३	७	" धीरविजय, कृष्णगढ़, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०५	४८७१	शुकजातक	शुकमुखोक्त	१८४२	३	लि.क. मुरुजित्सुत दुर्गादित्त
५०६	४४०६	शेषवासना	कमलाकर	१७८६	४४	,, रामकृष्ण कायस्थ
५०७	५१०६	षट्पंचाशिका	भट्टोत्पल	१८१८	६	,, हरिकृष्ण ब्राह्मण, दशपुर- ग्राममध्ये
५०८	४६५०	षट्पंचाशिका सटीक	पृथुयशाः, टी. उत्पल भट्ट	१९वीं श.	२१	
५०९	४६८७	,, (सबालावबोध)	पृथुयशाः	१८वीं श.	१४	लि.क. जीवनविजय, बालीमध्ये
५१०	४६९२	,, सटीक	,,	१८१९	२२	,, ज्योतिर्विच्छंभुराम
५११	४८४१	,, ,,	,,	१८२२	१०	राजस्थानी भाषायां साहित
५१२	५७१३	षट्पञ्चाशिकावृत्ति	उत्पल भट्ट	१८३९	२२	लि.क. कृष्णचन्द्र विजयराम
५१३	६५९४	,,	,,	१८८४	१७	,, रामनारायण ब्राह्मण
५१४	६८१९	,,	,,	१६४५	१९	,, ऊदा
५१५	७५७८	षट्पञ्चाशिकाटीका	मनीराम	१७६९	११	
५१६	४६७३	,, सस्तबक	भट्टोत्पल	१९०१	९	,, पुरुषोत्तमसुत लीलाधर देराश्री
५१७	४८००	,, (होराध्यायान्त)	पृथुयशाः	१९वीं श.	४	
५१८	७६२७	,, सबालावबोध		१८१९	९	,, दानसौभाग्यगणि
५१९	६८३३ (१०)	षष्टिसंवत्सरफलम्		१८५२	५०-५५	
५२०	४८९९	स्त्रीजातक	श्यामल	१७९७	१०	
५२१	५७९१	,,	यवनजातकान्तर्गत	१८९५	११	लि. ब्रजवासी सिल्लुः, काश्याम्
५२२	४७६३	स्त्रीजातकपद्धति	,,	१८५८	१२	,, रावल जीवा सुत अंबाराम
५२३	६७४८	स्त्रीजातक (कुण्डलीफल)		१९वीं श.	१	
५२४	४५२५	स्वप्नाध्याय	प्रस्तावरत्नाकरोक्त	१८वीं श.	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२५	४६५५	स्वप्नाध्याय		१८०८	३	लि.क. बैजनाथ
५२६	५६१४	"		१६१६	७	लि.क. रामगोपाल
५२७	५६०६	स्वप्नाङ्ग तावर्तप्रकरण	अङ्गुतसागरगत	१६वीं श.	११	
५२८	४१०५	स्वरपञ्चाशिका	मिश्र नन्दराम	१८३२	३	रचनाकाल १८२२
५२९	५३१८	"	"	१८६५	४	स्थान—काम्यकवन
५३०	५३२२	"	"	१७१५	७	लि.क. हरदेवलाल
५३१	७१२३	स्वरोदय (सटीक)	शिवप्रोक्त	२०वीं श.	४०	लि.क. नरहरिदास
५३२	४६७६	स्वरोदय शास्त्र	"	१६वीं श.	२१	
५३३	४८६८	"	"	१८३३	१०	लि.क. बखतराम तिवाड़ी, देवगढ़
५३४	४८६०	"	जीवनाथ	२०वीं श.	२४	
५३५	५५१७	" विश्वम्भरी	उमामहेश्वरसंवादगत (प्रश्नोत्तरी)	१६१६	३६	
५३६	५४३३ (१)	संकेतकौमुदी	हरिनाथ		१-५४	
५३७	५८०२	"	"	१६वीं श.	१८	
५३८	४६६६	संज्ञातन्त्र	नीलकण्ठ	"	२१	
५३९	५८०४	"	"	१८६६	२५	
५४०	६६६०	"	"	१६वीं श.	२०	
५४१	५१८५	"	"	१६१०	५४	
५४२	५५३०	"	"	१६वीं श.	८६	
५४३	६०४६	संज्ञातन्त्रोदाहरणम्	"	१८२२	१०१	लि.क. काशीनाथ
५४४	५४७३	संज्ञाविवेकविवृति: (रसालाभिधा)	नीलकण्ठसुत गोविन्द दैवज्ञ	१८६२	३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४५	५५८२	संज्ञाविवेकविवृति (पूर्वार्द्ध)	नीलकण्ठसुत गोविन्ददेवश	१६वीं श.	१४४	
५४६	५५८३	” (उत्तरार्द्ध)	”	”	१२३	रचनाकाल १५४४
५४७	६०४६	संज्ञाविवेक टीका	”	१८वीं श.	३६	
५४८	५७६४	सन्तानदीपिका	भावचिन्तामणिगत	१८६४	५	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु:
५४९	४४५२(८८)	सप्तनाडीचक्र		१८वीं श.	१२८वां	इसमें वर्षा सम्बन्धी योगों का वर्णन किया गया है लि.क. पं. प्रीतसीभाग्य स्थान-बरणहेड़ा ग्राम
५५०	५७२७	सर्वतोभद्रचक्र		१८६७	१२	
५५१	५६७५	सर्वार्थचिन्तामणि (पूर्वार्द्ध)	श्री वेंकटेशशिष्य अम्पय (?)	१६वीं श.	४६	
५५२	५६७६	” (उत्तरार्द्ध)	”	१६०६	५१	
५५३	५२८८	सर्वार्थचिन्तामणि	”	१८वीं श.	६२	
५५४	४१०८	समरसार	राम	१६वीं श.	७	#
५५५	४२७४	”		१७६७	११	# लि.क. हरिचयन सवाई जयपुर
५५६	४६६८	”	रामचन्द्राचार्य सोमयाजी	१६वीं श.	१०	
५५७	४८५६	”	रामवाजपेयी	”	१०	
५५८	५७७४	”	रामचन्द्र	”	१७	
५५९	६२४१	”	”	१८६२	७	
५६०	६३०८	”	”	१८वीं श.	४	
५६१	४७०३	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८६१	३२	
५६२	५८१६	” ”	”	१८६३	२३	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु; ८वां पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६३	५३८८	समरसार सटीक	रामचन्द्र, टी. भरत	१८५७	३१	
५६४	६१०७	"	"	१८४०	४१	
५६५	७५०३	"	"	१९१३	३०	लि.क. ब्रजवासी, आद्य पत्र त्रुटित
५६६	७८२१	साधितग्रह कुण्डली संग्रह		१९वीं श.	गुटका	
५६७	४३६४	सामुद्रिक (पुरुष स्त्री लक्षण)	समुद्र	१६६४	६	लि.क. ऋषि मति कीर्ति, स्थान—नांदसमा ग्राम
५६८	४४०८	(१) सामुद्रिक, (२) नारचन्द्र (३) भावाध्याय		१७८६	१७	(१) पृष्ठ क से ७ तक, (२) ७ से १४ (३) १४ से १७ लि.क. वैरागी राजपाल स्थान—पाल्हाणपुर
५६९	५९६८(२)	सामुद्रिक		१९वीं श.	३-१९	
५७०	५३७३(३)	" सटीक		१८०९	७४-९७	
५७१	४६५९	" सार्थ	नृपति भूपति	१७०८	१३	लि.क. मिश्र रघुनाथ
५७२	७५१४	सारमञ्जरी पद्धति		१८वीं श.	३३	" जयकृष्ण
५७३	४७३४	सारसंग्रह	महादेव राजगुरु राजगुरु	१८८४	१२	" गुमानसागर, र.का. १७१८, स्थान—भुजपत्तन
५७४	६०१२	सारावली	कल्याण वर्मा	१८वीं श.	११८	
५७५	५३१३	सिद्धान्तज्योतिष स्फुटपत्राणि		१९वीं श.	१४-३९	
५७६	५६२२	सिद्धान्ततत्त्व	त्रिविक्रमाचार्य	१८९५	७	लि.क. ब्रजवासी सिल्लु:
५७७	५०४३	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१९वीं श.	६२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७८	६२२६	सिद्धान्तरहस्योदाहरण	विश्वनाथ	१८२२	५५	कुम्भेर क्षेत्रे लिखितम्
५७९	५८०१	"	"	१७वीं श.	७६	
५८०	५२६१	सिद्धान्तशिरोमणि	भास्कराचार्य	१८२८	३३	
५८१	५२६२	"	"	१९वीं श.	३०	
५८२	५३३७	"	"	१८७७	५५	
५८३	५६६६	सिद्धान्तशिरोमणि मरीचि	श्री रंगनाथ	१७वीं श.	१८३	
५८४	५६२६	सिद्धान्तशिरोमणि वार्तिक (पूर्वार्द्ध)	भास्कराचार्य	१९वीं श.	८१	
५८५	५६३०	" (उत्तरार्द्ध)	"	"	५०	
५८६	५७८७	सिद्धान्तशिरोमणि वासनाभाष्य	"	१८८२	१७६	
५८७	४७३३	सिद्धान्तसुन्दर	ज्ञानराज	१८४३	३१	
५८८	५५४६	सुदर्शनचक्रम्	मिठ्ठन शुक्ल	१९वीं श.	७	रचनाकाल—शाके १५४३
२८९	५७५०	सुश्लोकशतक		१९०३	२	लि. स्था० कलकत्ता
५९०	४४५२ (८७)	सूक्तिकान्त		१८वीं श.	१२६-१२७	लि. क. हरिसुख ब्राह्मण
५९१	५२५६	सूर्यचंद्रग्रहणसारिणी	दुर्गाशंकर	१९वीं श.	५	प्रथम आठ पत्र अप्राप्त
५९२	५६५३	सूर्यग्रहादिसाधनसिद्धान्त		१८६३	६०५	लि. क. रामनारायण
५९३	४४५२ (८)	सूर्यपुरुषचक्रादि		१८वीं श.	१२वां	आरम्भ के १० श्लोक नहीं हैं
५९४	६३७४	सूर्यसिद्धान्त	अज्ञात	१८२६	४७	लि. क. वज्रवासी सिल्लुः
५९५	६८६२	"	मयासुर	१८वीं श.	१०	#
५९६	४५२८	"	"	१९वीं श.	३४	लि. क. डालचन्द
५९७	५८७६	"	"	१८५५	१०	" देवसुन्दर
						" बालचन्द्र स्वामी, ग्वालियर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६८	४६५२	सूर्यसिद्धान्त टीका	नृसिंह देवज्ञ	१८वीं श.	६१	
५६९	५५६२	सूर्यसिद्धान्तोदाहरणव्याख्या	विश्वनाथ देवज्ञ	१९१२	१५०	लि.क. रामजीवन
६००	४७५७	सौरवासना	कमलाकर	१८००	४६	„ हेमराजाचार्य, सवाईजयपुर
६०१	६५७४	हस्तरेखाप्रकरण		१९वीं श.	२	
६०२	६२१०	हस्तसंजीवन		१९२३	१७	
६०३	५७८६	„		१९वीं श.	३३	
६०४	४१८२	हायनरत्न	बलभद्र	१८३१	१०७	* लि.क. हरिप्रसाद
६०५	६८३३(४)	हायनसुन्दर		१९वीं श.	२६-३२	
६०६	४८६०	हिल्लाजदीपिका	नृसिंह	१९वीं श.	१०	
६०७	५७१८	„	„	१८६५	१४	
६०८	४८८५	होराप्रदीप (कर्मविपाकोक्त)	उमामहेश्वर संवाद	१६३६	११	
६०९	४७६५	होरामकरन्द	गुणाकर	१८२४	२४	
६१०	५६७४	होरारत्न	बलभद्र	१९वीं श.	४६८	रचनाकाल-१७१०
६११	४६११	त्रिपताकीचक्रादि	जातकार्णवान्तर्गत	१८२८	५	लि.क. चतुरविजयगणि, पालीनगरे
६१२	४२८५	त्रिकालज्ञानमनश्चिन्तामणि	शिवोक्त	१९वीं श.	८	*
६१३	४२८०	त्रैलोक्यप्रकाश (ज्ञानदर्पण)	हेमप्रभ सूरि	१७७२	२३	* लि.क. धीरसुन्दर गणि
६१४	४३५४	„ (अर्घ्यकाण्ड)	„	१७१५	२६	* आद्य दो पत्र अप्राप्त
६१५	७०३७	„	„	१७७५	३१	लि.क. पं. विजयसोमगणि
६१६	५७५४	ज्ञानप्रदीप (प्रश्नादर्श)		१९वीं श.	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. सुखविजय, शाकम्भरीनगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१७	४७७३	ज्ञानप्रदीप प्रश्नाधिकार		१६वीं श.	२	
६१८	७६२४	ज्ञानप्रदीपिका		१६०६	३४	लि.क. बालमुकुन्द
६१९	४४६४	ज्ञानमंजरी (प्रश्नविषयक)	महर्षि ऋषिशर्माचार्य	१८७८	२६	लि.क. गोवर्द्धननाथ, जयपुर
६२०	५६२१	ज्ञानमंजरी	सोमनाथ (रीवां निवासी)	१६०४	१७	रीवाभिधाने नगरे चतुर्वर्णसमा- कुले । तत्रावसन् सोमनाथः करोमि ज्ञानमंजरीम् ॥
६२१	७१३१	क्षेत्रसमासवृत्ति (अपूर्ण)		१७वीं	३३	२५, २६, ३१वां अप्राप्त
६२२	५०८८	”		१७५३	१३	लि.क. दुर्गादास यति
६२३	४४२७	क्षेत्रसमासावचूरि	मू. सोमतिलकसूरि, अवचूरि-गुणरत्नसूरि	१६वीं	३२	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १२-छन्दःशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६२२५	छन्दःकौस्तुभ (सभाष्य)	राधादामोदरदास	१६०६	२७	लि.क. बलदेव गोस्वामी
२	५६६०	छन्दःपीयूष	भा. विद्याभूषण			
३	५५८१	छन्दोमञ्जरी	जगन्नाथ मिश्र	१६०६	४४	लि.स्था. वृन्दावने आनन्दघट्टे
४	४४३२	वृत्तमुक्तावली	गङ्गादास	१६वीं श.	३०	
			धुरन्धरमल्लारि	१८वीं	१२	*लि.क. कालिग बम्मणभट्टात्मज वराहग्रामस्थ
५	४३००	वृत्तरत्नाकर	केदार भट्ट	१८२१	६	लि.स्था. कर्णपुरग्राम
६	४४६४	"	"	१६वीं श.	१५	लि.क. लक्ष्मण, पहार
७	६६५६	"	"	१६२०	१०	लि.क. गुणाकर विद्यार्थी
८	४३३६	" (सटीक)	" टी. सोमचन्द्र	१५८२	३८	प्रति जीर्ण, दीमक खाई हुई
९	४४३३	" "	टी. भास्कर शर्मा	१८१३	३६	टीका का रचनाकाल चै.शु. १ सं. १७३१
१०	४०३२	" सबालावबोध	टी. मेरुसुन्दर	१८वीं	११	टी. गुर्जर भाषा में
११	५१४१	" सटीक त्रिपाठ		"	२०	अपूर्ण, त्रुटक
१२	५५५८	" सटीक	टी. श्रीकण्ठ	१६वीं श.	१५	
१३	६४४७	" (सेतु टीका सहित)	टी. भास्कर शर्मा दायाजिभट्टमुत्त	१६०३	३२	अक्षवह्निहयभूमितवर्षे टी. रचना लि.क. कन्हैयाराम
१४	७४८२	" सटीक पञ्चपाठ	टी. सोमचन्द्र	१७वीं	२०	
१५	७५१३	" वृत्ति	वृ. समयसुन्दर सकलचन्द्रशिष्य	१७५५	३४	*
१६	४३५६	" सटिप्पण	टी. क्षेमहंस	१७वीं	१३	पत्र जीर्ण एवं कीटविद्ध
१७	६०४३	वृत्तरत्नाकर सटिप्पण		१८वीं	६	
१८	४४६२	श्रुतबोध	कालिदास	१७६२	२	लि.क. मुरलीधर श्रीदुम्बर, काश्याम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४४९३	श्रुतबोध	कालिदास	१८वीं	५	
२०	५१८०	"	"	"	७	
२१	६९७१	"	"	१९११	४	
२२	६०२६	"	"	१९वीं	३	
२३	५२१८	" (ज्योत्स्नाभिघटीकासहित)	टी. माधव देवज्ञ गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र गार्ग्यवंशोद्भव	"	१४	टीका का रचनाकाल—भूतर्क- बाणेन्द्रमिश्रकाले १५६० शाके (१६९५ वि०)
२४	५६६३	सुवृत्ततिलक	क्षेमेन्द्र	२०वीं	२९	अनन्तराजस्य राज्ये

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १३-संगीतशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६७४१	अनूपसंगीतरत्नाकर (द्वितीय- रागाध्यायः)	भाव भट्ट जनादंनसूनु	१८वीं	२५६	जीर्ण प्रति #
२	४१६६	रागमाला	व्रजनाथदीक्षित पञ्चनदीय (गोकुलस्थ)	१८६४	१०	#
३	५०६४	„		१९वीं	२	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; १४-कामशास्त्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४७७४	कोकशास्त्र भाषार्थ सहित	कोक	१६वीं	१५	
२	५७२०	पञ्चसायक	कवि शेखर	१८वीं	३२	
३	४४२६	रतिरहस्य	कुक्कोक पण्डित	१६वीं	२८	
४	४७७५	„	„	१६८३	४२	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग--२; १५--काव्य-नाटक-चम्पू]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७०२६	अद्भुतरामायण	वाल्मीकिमुनि	१८६०	४३	लि.क. हरिलाल
२	४३७६	अध्यात्मरामायण (सुन्दरकाण्ड सटीक)	टी. श्रीराम वर्मा हिम्मतवर्मणः पुत्र	१६२७	१७	लि.क. व्यास घासीराम
३	४५२०	अध्यात्मरामायण सटीक त्रिपाठ	"	१८वीं श.	१७६	
४	५५८६	अध्यात्मरामायण (अयोध्याकाण्ड)	"	१६०४	३५	
५	५५८७	" " (बालकाण्ड)	"	"	२४	
६	५५८८	" " (सुन्दरकाण्ड)	"	"	१७	
७	५५८९	" " (किष्किन्धाकाण्ड)	"	"	२८	
८	५५९०	" " (अरण्यकाण्ड)	"	"	२६	
९	५५९१	" " (युद्धकाण्ड)	"	"	५२	
१०	४३३१	अनर्घराघव	मुरारि	१७वीं श.	२०	
११	६६६८	" " टीका	मू. मुरारि, टी. महोपाध्याय रुचिपति	१८वीं श.	४१से१८६	टी. खीभालकुलोद्भव वैजोलिया ग्रामवास्तव्य हरि- नारायण-पद-समलंकृत महाराजा- धिराज श्रीमद्भैरवसिंहदेव- प्रोत्साहित
१२	६४०२	अन्यापदेशशतक	मधुसूदन	१८वीं श.	६	लि.क. दवे विश्वेश्वर गोलवाल
१३	७५१७	अभिज्ञानशाकुन्तल	कालिदास	"	२१	जयपुरमध्ये
१४	४३२५	अमरुशतक सटिप्पण	श्रीशङ्कराचार्य (अमरुक)	१८६१	३६	पञ्चमार्कपर्यन्त
१५	५६६५	अमरुशतकम्	अमरुक	१८२७	६	लिखितं पंडितदेवदत्तेन नाहटा जसरूपपठनार्थम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	६६८१	अमरुशतक (भावचिन्तामणि व्याख्यासहित)	अमरुक, टी. चतुर्भुज मिश्र	१८६०	६२	लि.क. नैणसागर
१७	५१६८	उद्धवसन्देश	श्रीरूप गोस्वामी	१८वीं	८	खण्डित । ६ से ८ तक पत्र कीटविद्ध
१८	४३३०	ऋतुसंहार	कालिदास	१७६८	८	लि.क. मुनि श्रीराघव लि.स्था. हिसार
१९	७४९९	कर्णामृत सटीक	मू. लीलाशुक, टी. चैतन्यदास	१८वीं	१८	१२वां पत्र अप्राप्त
२०	५१६७	कादम्बरी (पूर्वभाग)	बाण भट्ट	"	१८५	प्रति सुन्दर है
२१	६१७४	" उत्तरार्द्ध	बाण भट्ट तनय (पुलिन्द)	१८१५	८२	लि.क. लालविहारी माथुर
२२	६६२६	" "	"	१८८०	८२	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. वैष्णव हरिदास जयपुरमध्ये
२३	६९७४	" पूर्वखण्ड	बाण भट्ट	१८वीं	१५६	
२४	४२०४	किराताजुनीयम्	भारवि	१८११	११८	
२५	५१२५	" सटीक	मू. भारवि, टी. मल्लिनाथ	१८२५	१३४	लि.क. चूड़ामणि सलावदनगरे
२६	६००१	" "	टी. अज्ञात	१७वीं	४३	आदितः अष्टमसर्गपर्यन्त, प्रथम पत्र अप्राप्त
२७	६३१३	" "	"	"	१३	पञ्चदशसर्गपर्यन्त
२८	६७९१	" सावचूरि	भारवि	१८वीं	५४	आद्य ८ पत्र अप्राप्त
२९	६९८२	" मूल	"	१७७१	६०	लि.क. 'साकवाटा (सागवाड़ा?) ग्रामस्थितेन रणावस्वोरस वसदावसात्मजेन देवकृष्णेन-लिखितमिदम्, लवणपुरे'
३०	४३६५	कुमारविहारशतक	रामचन्द्र	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४३६७	कुमारसम्भव सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१६८४ १७५४	५०	लि.क. उदयनिधान मुनि लि.स्था. योषपुर, आदि के २ पत्र अप्राप्त, सप्तम सर्गपर्यन्त
३२	७५८६	„	„	१८३१	६६	लि.क. राधाकृष्ण, लि.स्था.कृष्ण- गढ़ १०वाँ पत्र अप्राप्त
३३	४१६७(१)	„ मूल	कालिदास	१८४२	५४	सप्तम सर्ग पर्यन्त, लि.क. पुरुषोत्तम आचार्य
३४	६००५	„ „	„	१७वीं श.	३८	सप्तमसर्गपर्यन्त, ३७वाँ पत्र अप्राप्त
३५	६८७०	„ सवृत्तिक	„	१८वीं श.	७०	सप्तसर्गात्मक
३६	५५१०	„ सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१७१२	१११	
३७	४१६३	„ अष्टम सर्ग	कालिदास	१६१४	५	लि.क. अलवेश्वर नागर ब्राह्मण
३८	४४८५	„ अष्टमसर्गपर्यन्त	„	१८६१	४६	लि.क. व्यास रतनेश्वर लि.स्था. जयपुर
३९	७००१	„ सटीक	मू. कालिदास, टी. मल्लिनाथ	१८वीं श.	१३३	षष्ठसर्ग के ७४वें श्लोकपर्यन्त
४०	५१०७	„ „	मू. कालिदास, टी. परमहंस परिव्राजकाचार्य सरस्वतीतीर्थ	१७वीं श.	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, प्रथम सर्ग के छठे श्लोक से पञ्चमसर्ग के २०वें श्लोक तक टीका है
४१	७७६४	कृष्णगणोद्देशदीपिका		१९वीं श.	६	
४२	५२७१	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१७५६	२८	लि.क. धर्मेश्वर शम्बावतीवास्तव्य
४३	४३३८	„	„	१८वीं श.	३०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	५६६८	खण्डप्रशस्ति	हनुमत्कवि	१६वीं श.	६	जीर्ण और प्राचीन प्रति
४५	४२७६	खण्डप्रशस्तिवृत्ति	वृत्तिकार गुणविनय	१८वीं श.	२०	
४६	५०६०	गीतगोविन्द	जयदेव	१६वीं श.	३४	
४७	५२०५ (१६)	"	"	१८वीं श.	६६से८६	
४८	६०६०	" (सटीक त्रिपाठ)	" टी. चैतन्यदास	१६वीं श.	४६	
४९	६७३४	"	जयदेव	१८१८	३४	
५०	६०६८	" सटीक	मू. " टी. चैतन्यदास	१८७७	५१	बालबोधिनी टीका, लि. मथुरासध्ये
५१	६७८६	"	जयदेव	१६वीं श.	६५	१२, ११, १२, १३, १४, ६१, ६२ ६३ वां पत्र अप्राप्त
५२	६८५७	"	"	"	७२	अपूर्ण, प्रथम पत्र शोभन
५३	७६२८	"	"	१८वीं श.	१०	
५४	७७५१	" सार्थ, पदसंग्रह	"	१६८३	१७७	गुटके के अंतमें सुरदास, हरदास परमानन्ददास, कृष्णजीवनी, लच्छीराम आदिके पद व परशु- राम कविके दोहे तथा तुलसी बीजमंत्रादि लिखे हुए हैं।
५५	७७५५	"	"	१६वीं श.	५७	
५६	५१५७	" सटीक	जयदेव, टी. शेष कमलाकर	१८३०	६२	साहित्यरत्नमालाख्या टीका लि. क. हरिचंद मथेन (मथेरी) रूप नगरमध्ये
५७	६६८०	गोवर्द्धनसप्तशती सटीक	मू. गोवर्द्धन, टी. अनन्तपण्डित	१८१२	३०५	टीका नाम 'व्यङ्ग्यार्थसदायन' है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	४४८६	घटखपरंर	कालिदास	१८०५	२	लि.क. भवानीशङ्करात्मज उदयशङ्कर
५९	५१६६	„	„	१८वीं श.	४	
६०	६३०६	„ सटीक	मू. „ टी. अज्ञात	१८१६	६	
६१	५६४५	चौरपञ्चाशिका	चौर कवि	१८वीं श.	३	
६२	६६२८	जयवंशमहाकाव्य	सीताराम पर्वणीकर	१९४१	१३३	जयपुर के इतिहास से सम्बद्ध काव्य
६३	७७६३	दुर्जनमुखचपेटिका	रामाश्रम	१९वीं श.	४	
६४	४४०१	द्रोपदीवस्त्रदानप्रबन्ध	गोवर्द्धन	१८१४	८	
६५	५६०२	धर्मशर्मभ्युदय	हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेव कायस्थसुत)	१८२३	३६	
६६	५८७७	नलोदयकाव्य	कालिदास	१८५७	२०	चतुर्थांशवासपर्यन्त
६७	४०६२	नलोदयटीका	मू. „ टी. मनोरथ कवि	१८वीं श.	३८	विबुधचन्द्रिका टीका
६८	७४५८	„	मू. „ टी. कविशेखर केशव	१८३५	३२	साहित्यदीपिकानाम्नी
६९	६१६३	„ सटीक त्रिपाठ	मू. „ केशव नृसिंहाश्रम-कृत टीका सहित	१८५५	४८	विदुषा वषतरामेण लिपीकृतम् लिखितं भरतपुरमध्ये तृतीयोच्छ्वास के अन्त में कर्ता केशव लिखा है
७०	५६४५	नेमिदूतम् (विक्रमकाव्यम्)	विक्रम	१७वीं श.	५	कालिदासकृत मेघदूत काव्य के श्लोकों के अन्त्यपादपूर्तियुक्त
७१	५१६२	नैषधीयचरित	श्रीहर्ष	१८वीं श.	२२०	अन्त्य पत्र अष्टाप्त
७२	७०४२	„	श्रीहर्ष	„	६६से१६०	पञ्चमसर्ग के १४वें श्लोक से नवमसर्गान्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३	६२६१	नैषधीयचरित टीका (पञ्चमसर्ग)	टी. विद्यारण्य योगी	१८वीं श.	१६	
७४	४३८८	नृसिंहचम्पू	केशव भट्ट	१६वीं श.	१५	
७५	५१५८	प्रसन्नराघव	जयदेव	१८१५	७३	लि.क. जोशी रघूनाथ, जयपुर सवाईमाधोसिंहजी राज्य
७६	५३६४	"	"	१८५०	३८	लि.क. चतुर्भुज मिश्र
७७	७२६८	परिशिष्टपथं (स्थविरावली- चरित्र)	हेमचन्द्र	१८वीं श.	१२०	
७८	७२१६	पाण्डवचरित्र	देवप्रभ सूरि	१६४१	२४१	लि.क. राव श्री दुर्गभाणजी विजयराज्ये, रामपुरामध्ये
७९	५६४२	ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिचरित्र	हेमचन्द्र	१६६६	१३	त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रा- न्तर्गत । लि.क. पं० विद्याकीर्ति- पुण्यतिलकशिष्य
८०	७७८६	भट्टिकाव्य (तृतीयसर्गपर्यन्त)		१६वीं श.	८	
८१	५१६०	भामिनीविलास	जगन्नाथ पण्डितराज	१८११	३६	अति सुन्दर प्रति
८२	५२४०	भावशतक	नागराज टाकवंशीय	१८वीं श.	६	प्रथम पत्ररहित
८३	६६५३	"	"	१६वीं श.	१५	
८४	७१३५	मधुकेलिवल्ली	गोवर्द्धन	१६वीं श.	३७	पत्र ३ से १० अप्राप्त
८५	७०२२	महाभारत	श्रीवेदव्यास	१८३७	१७१७	लि.क. हरिदत्तनागर सावरमध्ये
८६	६८१०	" आदिपर्व	"	१६वीं श.	२१५	अपूर्ण, खाण्डववनदाहपर्यन्त
८७	७४६५	" "	"	१७वीं श.	३५६	
८८	७८३२	" "	"	१७७३	३७१	लि.क. हीरानन्द ओदीच्यजातीय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	६२४४	महाभारत सभापर्व	श्रीवेदव्यास	१६९४	१४२	लि.क. गोवर्धन
९०	६०६७	" "	"	१८१०	९९	लि.क. मनोहरदास
९१	६१८५	" "	"	१८वीं श.	१६	
९२	६९११	महाभारत सभापर्व	"	१६४५	१५१	लि.क. हरिदास व्यास गागात्मज मांडलमध्य
९३	७४९४	" "	"	१६वीं श.	६२	
९४	६१८६	" मौशलपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं श.	१	
९५	५४७५	" ऐषिक, आश्रमवासिक, मौशलपर्व	श्रीवेदव्यास	"	ऐषिक ९ आश्रम ३५ मौशल १२	
९६	७४५८	" मौशलपर्व	"	१६वीं श.	१३	
९७	६१८८	" आश्रमवासिकपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं श.	१	
९८	६१८९	" सौप्तिकपर्व सटीक	"	"	१	
९९	६४७०	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	१५	
१००	७१२०	" "	"	१८२९	३२	रायचन्द्र ब्राह्मण को शक्तिसिंह- सुत भोपतिसिंह द्वारा प्रदत्त प्रति
१०१	६१८७	" आरण्यक पर्व सटीक	मू. " टी. नीलकंठ	१८वीं श.	३९	अन्न में लिखित 'जयश्री चतुर्भुज- रायजी', स्थान-सावर
१०२	५४९८	" " मूल	श्रीवेदव्यास	"	३४७	
१०३	६१९०	" विराटपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	"	९	
१०४	६१९१	" उद्योगपर्व "	"	"	३५	
१०५	७४५३	" " मूल	श्रीवेदव्यास	१५३१	१७६	

क्रमाङ्क	प्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	५४८१	महाभारत कर्णपर्व	श्रीवेदव्यास	१८२८	२२५	लि.क. विद्याधर गुर्जरगौड़ पंचोली लिखायित भोपालसिंह शक्तावत, ३रा पत्र अप्राप्त
१०७	६१६२	„ कर्णपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं	६	
१०८	६४७१	„ „ मूल	श्रीवेदव्यास	१७६३	११६	
१०९	५४७७	„ भीष्मपर्व „	„	१९वीं	३१६	२४वाँ पत्र अप्राप्त
११०	७४६३	„ „	„	१५वीं	१५४	पत्र ५६ से ७१ तक तथा १३२ से १५४ तक सं० १७५८ में लिखित, शेष १५वीं शती के हैं
१११	५५०१	„ द्रोणपर्व	„	१९वीं	५५१	
११२	५४६२	„ विशोकपर्व	„	१८२६	१२	
११३	५१६५	„ आश्रममेधिकपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं	१२	
११४	६१६३	„ शान्तिपर्व राजधर्म सटीक	„	„	१६	
११५	६१६४	„ „ आपद्धर्म „	„	„	६	
११६	६८६७	„ „ राजधर्म	श्रीवेदव्यास	१९वीं	११०	लि.क. साधु निरंजनी उत्तमराम
११७	७१२१	„ स्त्रीपर्व	„	१८२६	३५	लि.स्था. सावर
११८	६१६६	„ मोक्षपर्व सटीक	टी. नीलकंठ	१८वीं (?)	८४	
११९	७४५२	„ हरिवंश	श्रीवेदव्यास	१६३०	७०६	
१२०	६७००	महारामायण सटीक त्रिपाठ		१८वीं	१०६	त्रुटित
१२१	६५८८	महारामायणान्तर्गत (सीतारामाष्टलक्षणानुवर्णन)		१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२२	५६७३	महारासोत्सव	हनुमत्संहितान्तर्गत	१८३६	१८	भगवान् श्रीरामचन्द्रजीकी
१२३	६२३६	"	"	१८वीं	१४	रासलीला वर्णनपरक
१२४	५१६१	मिथ्याज्ञानखण्डन (नाटक)	रविदास	"	१७	"
१२५	४३६१	मुद्राराक्षस सटीक त्रिपाठ	मू. विशाखदत्त, टी. दुर्गायज्वा	१६वीं	८०	श्रीद्वारकापतेः प्रसादार्थ-
१२६	६६०६	मूलरामायण	वाल्मीकि	१७६७	१३	रचितमिदम्नाटकम्
१२७	५०६७	मेघदूत	कालिदास	१६७४	१८	लि. स्था. जोधपुर, व्यास माघव-
१२८	५१६३	"	"	१६वीं	२ से १७	सुत परमानन्द पठनार्थम्
१२९	५७०६	"	"	१८६४	२१	प्रथम पत्र रहित, लि.क. हरिकृष्ण
१३०	६१२३	"	"	१८वीं	११	लि.क. मुनि विनीतसागर भाव-
१३१	६२४८	"	"	"	१८	सागरशिष्य सूरतमध्ये लिखितं
१३२	६१३७	" टीका	"	"	२२	लि.क. मुनिवीरविजय संघ-
१३३	७२३५	" वृत्ति	"	१६८३	४१	विजयगणेशिष्य
१३४	४३८६	" सटीक	"	१८०१	२७	लि.क. चतुरविजय गणि
१३५	४३६०	"	टी. धनेश्वर	१७६३	२६	लि. स्था. श्री कर्णपुर
१३६	५१५६	"	टी. पूर्णानन्द यतीन्द्र	१७वीं	६२	लि.क. श्री दर्यापि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३७	५६२५	मेघदूत सटीक	मू. कालिदास, टी. अज्ञात	१७वीं	३०	
१३८	६०५३	"	"	१६वीं	२४	
१३९	६१६६	"	"	"	३६	
१४०	६८६६	"	"	१७५२	३१	लि.क. मुनि लालचंद पाटलिपुत्र पत्तने
१४१	५६४१	„ सावचूरि त्रिपाठ		१७८६	२४	लि.क. फतेविजय गणि रंगविजय-शिष्य, विलाड़ास्थाने लिखितम्
१४२	६००३	„ „ पंचपाठ		१६वीं	६	विशिष्ट प्रति
१४३	७२६६	„ सावचूरि	अवचूरिकर्त्ता श्री लक्ष्मीनिवास	१८०७	२२	लि.क. अमरहंसगणि कल्याण-हंसगणिशिष्य, विशिष्ट प्रति
१४४	५१८१	„ सटिप्पण		१७वीं	१६	
१४५	६६६३	मोहमुद्गर	श्री शङ्कराचार्य	१७४३	३	लि.क. राघव शर्मा
१४६	५७५६	रघुनाथार्यारत्नमाला	महामुद्गल भट्ट	१६१२	५	लि.क. ब्रजवासी अलवरमध्ये
१४७	४१६८	रघुवंश	कालिदास	१८४६	१४२	लि.क. पुरुषोत्तम आचार्य
१४८	५१२४	"	"	१८३६	११६	स्था. जयनगर
१४९	६२११	"	"	१८४५	१२२	लि.क. लाला मयाराम कृपाराम-सुत । लि. स्था. हिडिम्बानगर यति सुखानन्दपठनार्थ
१५०	६५६१	"	"	१८६८	८७	आरम्भ के कुछ पत्रों में टिप्पणियां हैं । लि.क. मनोराम पण्डित कश्मीरनगरे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५१	६७८६	रघुवंश	श्री कालिदास	१८वीं	८३	द्वादशसर्गपर्यन्त
१५२	६८४७	"	"	"	५	प्रथम सर्ग मात्र
१५३	६८६६	"	"	"	७४	
१५४	७०५२	"	"	१६३३	११६	पत्र १ से ६ अप्राप्त । लि.क. गोपाल व्यास, श्री रङ्ग- स्थात्मज नरसिंहदास, मान्धातुः- पुरमध्ये, श्रीमदकबर पात- साहिराज्ये
१५५		" सटीक (सुगमान्वयबोधिका टीका)	टी. सुमतिविजय	१६०१	१६६ से ३४७	सर्ग १२वें से १६ तक लि.क. विरधीचंद बीकानेरमध्ये
१५६	५४६६	रघुवंश सटीक	टी. मल्लिनाथ	१८वीं	२२१	पत्र ५४ से ५८ अप्राप्त
१५७	६७६२	"	"	१७वीं	१४२	चतुर्दशसर्ग के ७२वें श्लोकपर्यन्त
१५८	६८१४	"	टी. समयसुन्दर	१६वीं	६१	नवम सर्ग पर्यन्त
१५९	७३०२	"	टी. धर्ममेरु गणि	१८३५	२०३	
१६०	५४६१	" सटिप्पण पाठान्तरसहित		१८वीं	३८ से १८२	८१वां पत्र अप्राप्त
१६१	६६७६	" सटिप्पण		१५४७	१०६	लि.क. वाचक तिहुणकीति चारुचंद्रशिष्य श्री मरुस्थलदेशे शुद्धदन्ती श्रीश्रीनगरे सातल- विजयराज्ये मंत्रीश्वर वरावीर दूला श्रीचैत्रगच्छे
१६२	४३२६	" साक्चूरि पंचपाठ		१६२६	११४	लि.क. वीरहंस, आद्यपत्र त्रुटित
१६३	७०८३	राधाकृष्ण प्रेमसम्पुट काव्य		१८वीं	१७	
१६४	७५८५	राधामाधवल्लिला	राधागोविंद मिश्र, किशोरीरमण- शिष्य नवनन्दशर्मासुत	२०वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	५२७६	रामकृष्ण काव्य		१६वीं श.	२	
१६६	५६५७	„ सटीक	सूर्यकवि	१६२३	२६	लि.क. घनश्याम व्यास पाराशर सवाईजयपुरमध्ये
१६७	५६८४	रामकृष्णकाव्य सटीक त्रिपाठ	„	१६१६	१८	
१६८	५६०६	„ सटीक	„	१६वीं श.	६	अव्ययदीपिकानाम्नी स्वोपज्ञ टीका
१६९	५६०७	„	„	१७वीं श.	७	लिपिकार ने भूल से सम्भवतः टीका का नाम 'अनूपदीपिका' लिख दिया है
१७०	६२७३	रामरास क्रीडन (सुवर्शनसंहितान्तर्गत)		२०वीं श.	२४	
१७१	४४००	रामहनुमन्नाटक		१७वीं श.	८	लि.क. हर्षहंसमुनि
१७२	७८३३	रामानुजचरित्र (प्रपन्नमृताभिधान काव्य)		१८३२	१४६	लि.क. जोशी रघुनाथ सवाईजयपुरमध्ये
१७३	७०२०	रामायण	वाल्मीकि	१७६६	८३३	
१७४	५४७१	„ बालकाण्ड	„	१८वीं श.	६०	
१७५	५५१४	„ „ (भूलरामायण मात्र)	„	„	१५	
१७६	४२५०	„ „	„	„	२०	आद्य पत्र सचित्र
१७७	५६६७	„ „	„	„	१२३	आद्यन्त शोभन
१७८	६२६१	„ „	„	१८६०	७४	
१७९	७०२५	„ „	„	१८वीं श.	६३	„

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	६१४२	रामायण बालकाण्ड	वाल्मीकि	१६ वीं	२०३	तिलकव्याख्यायुक्त
१८१	६५००	" "	"	"	१५५	"
१८२	५६६६	रामायण अयोध्याकाण्ड	"	१८वीं	२२५	"
१८३	७०२६	" "	वाल्मीकिमुनि	१८०८	११५	"
१८४	६४६६	" "	"	१६वीं	३३०	तिलकव्याख्या सहित अपूर्ण
१८५	५४४७	" "	"	१८वीं	२३१	अपूर्ण
१८६	६१४४	" अरण्य और किष्किन्धाकाण्ड	मू. वाल्मीकि, टी. महेश्वर	१६वीं	३४+२६	दोनों काण्ड एक ही जिल्द में हैं
१८७	५६७०	" अरण्यकाण्ड	वाल्मीकि	१८वीं	१२३	"
१८८	६१४३	" "	"	१६वीं	१७८	तिलकव्याख्या सहित
१८९	६५०१	" "	"	"	११७	"
१९०	५०४२	" किष्किन्धाकाण्ड	"	१७६२	७६	पत्र ६, ६६वां अप्राप्त, पत्र २६ से ८० तक प्रायः त्रुटित, प्रति जीर्णोद्धार, लि.स्था. तृंगानगर आद्यन्तपत्र शोभन
१९१	५६६८	" "	"	१८वीं	१२७	"
१९२	६०१८	" "	"	१८६६	१२२	"
१९३	६२६०	" "	"	१६वीं	१२१	प्रति अपूर्ण, अन्त के कुछ पत्र भीगे हुए हैं
१९४	६५०२	" "	"	"	१५२	तिलकव्याख्या सहित
१९५	६२०४	" सुन्दरकाण्ड	"	"	१००	"
१९६	६०१७	" "	"	१७६६	१३७	भीकाजीलक्ष्मणस्येवं पुस्तकम्
१९७	६१८४	" "	"	१८वीं	१२८	पत्र सं० ११६ तक पत्र प्राचीन हैं और १८वीं श. के प्रतीत होते हैं, सं० ११७ से १२८ तक नये पत्र हैं

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८	५६७१	रामायण युद्धकाण्ड	वाल्मीकि मुनि	१८वीं श.	२८८	
१६९	६०१६	रामायण युद्धकाण्ड	"	"	२८६	
२००	७८०७	" "	"	"	१६६	
२०१	५६७२	" उत्तरकाण्ड	"	"	१६६	अमृतसरे लिखितम्
२०२	६०२०	" "	"	१८६७	१८६	लि.क. लक्ष्मण
२०३	४५२१	रामायणसार	श्रीअग्निवेशमुनि	१६वीं श.	१२	
२०४	५३६६	राक्षसकाव्य सटीक त्रिपाठ		१८वीं श.	६	विद्वज्जनविनोदिनी टीका
२०५	५६६२	"	टी. सूरदेव भट्ट गोपीनाथसुत	"	२	प्रति सुन्दर है
२०६	६००६	वासवदत्ता	सुबन्धु	१७५३	६६	अपूर्ण
२०७	५३०२	विदग्धमाधव		१७५८	१००	गोकुलचं; गोस्वामिना लिपीकृतम्
२०८	५२३०	विप्रमुखचपेटासस्तवक		१६वीं श.	२६	लि.क. हृदयराम कायस्थ
२०९	६०६२	विदग्गुणादर्शचम्पू	वेंकटाचार्ययाजी काञ्चीनगर- वास्तव्य	१६१८	६०	प्रथम पत्र अप्राप्त
२१०	४३३७	वेणीसंहार	नारायण भट्ट	१७वीं श.	५४	
२११	६७१७	शतश्लोकी रामायण	अग्निवेश्यमुनि	२०वीं श.	११	लि.क. गोपीनाथ
२१२	५६१२	शत्रुञ्जय माहात्म्य	धनेश्वर	१५११	१८५	आशापल्ली में लिखित
२१३	७२५३	"	"	१६७१	२२५	
२१४	७०४०	शिशुपालबधम्	माधकवि	१६८३	१३८	आद्य २० पत्र अप्राप्त
२१५	६००६	शिशुपालबध टीका	टी. वल्लभ (आनन्ददेवायनि)	१८वीं श.	२४३	प्रति सुन्दर है
२१६	७०८७	" सटिप्पण	माध वणिक् (?)	१५५२	१२८	* विशिष्टतम प्रति

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१७	७६६०	शिशुपालबध टीका	टी. मल्लिनाथ	१८वीं	१३१	नवमसर्गान्ति, दो लिपियाँ मिल गई हैं
२१८	५१११	,, सटीक	,,	,,	३३	
२१९	७८०६	,,	,,	,,	१२	प्रथम सर्ग मात्र
२२०	६५६८	शृङ्गारतिलक	कालिदास	१९वीं	२	
२२१	६१७६	शृङ्गारमाला	मुखलाल	,,	७	रचनाकाल १८०१
२२२	४२९७	शृङ्गारवैराग्यमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	१७वीं	६	
२२३	५३०३	संवित्प्रकाश	गोविन्द कवीश्वर	१९२२	२५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२२४	४१२६	सप्तशती (आर्यावृत्तवद्धा)	गोवर्द्धन	१८०७	५३	लि.क. जोसी परसराम
२२५	६०६३	सुन्दरमणि सन्दर्भ	मधुराचार्य	१७७९	४०	
२२६	४७१५	सूर्यशतक	मयूर कवि	१९वीं	१६	
२२७	५९५४	हंसदूत सटीक	रूप गोस्वामी	,,	२४	
२२८	५१६६	हनुमन्नाटक सटीक	टी. मोहनदास मिश्र, कमलापति- माथुरचतुर्वेदसुत	१८५९	१११	लि.क. पुजारी राघोदास
२२९	५५५३	,, मूल		१८वीं	४०	३९वाँ पत्र अप्राप्त
२३०	७५०५	हरिलीला सटीक (भागवतानु- क्रमणिका)	मू. बोपदेव मधुसूदन	१७९२	३६	३५वाँ पत्र अप्राप्त
२३१	६१९७	हरिवंश टीका	टी. नीलकंठ	१८वीं	५३	भावार्थप्रकाशाभिधान व्याख्यान
२३२	६९९९	हरिविलास प्रथम सर्ग	लोलिम्बरराज	,,	४	
२३३	५९४३	त्रिषष्टिशलाका-पुरुष-चरित्र (परिशिष्ट पर्व)	हेमचन्द्राचार्य	१४८६	७०	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-रसालङ्कारादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६११३	अलङ्कारकौस्तुभ सटीक	मू. लक्ष्मीधर, टी. विश्वेश्वर	१६वीं	१२५	
२	४३६६	अलङ्कारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)	वैद्यनाथ	"	१२३	
३	७७८३	"	"	१६०२	१५७	
४	५६८३	काव्यकल्पलतावृत्ति (कवि शिक्षा)	अमरचंद्र	१६४८	१०२	सेरपुरामध्ये लिखितम्
५	५६६६	"	"	१७वीं	१२०	रायदनपुरे लिखितम् लि.क. श्रीहर्षसोमगणि
६	५२७५	काव्यचंद्रिका (समस्यापूरणोपाय)	न्यायवागीश भट्टाचार्य	१८वीं	६	
७	५८७६	"	"	१८११	११	
८	६००७	काव्यप्रकाश श्लोकार्थदीपिका	गोविन्द ठक्कुर	१६५६	२५	
९	५६५५	कुवलयानन्द	अप्यध्य दीक्षित	१८६५	४८	लि.क. गोस्वामी नंदात्मजबलदेव
१०	६२४६	"	"	१८६७	४६	लि.क. केशवराय
११	४७०८	कुवलयानन्दकारिका		१८१५	१८	लि.क. लक्ष्मीचंद ब्राह्मण
१२	५१४०	कुवलयानन्द (अलंकारचंद्रिका)		१८वीं	२१ से ५६	
१३	६०७३	चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)	मू. जयदेव, टी. प्रद्योतम भट्टाचार्य	१८६६	३६	लि.क. सालगराय
१४	६१६४	रसगङ्गाधर	जगन्नाथ पण्डितराज	१८वीं	२७६	किंचिदपूर्ण
१५	६१२४	रसचंद्रिका	विश्वेश्वर लक्ष्मीधरपुत्र	१८३३	३६	
१६	६३०५	रसतरङ्गिणी	भानुदत्त	१६३१	५१	लि.क. चुन्नीलाल
१७	७७८०	"	"	१६वीं	३६	यह पुस्तक गुजरात पाटण वास्तव्य राव फान्ही उमदे- सिंहजी ने अपने पढ़ने के लिये जोधपुर में लिखाई
१८	७७८१	रसतरङ्गिणीनोकाटीका	जयदेवनाथ भट्टाचार्य	१६०२	१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	४३२७	रसदीधिका	विद्याराम	१८वीं	४८	र.का. सं. १७०६, लि.स्था. कोटा
२०	६२६४	रसमञ्जरी	भानुदत्त मिश्र	१९०४	२४	लिखितं रामचरणेन
२१	६३१४	"	"	१८५३	३२	
२२	६४०४	"	"	१७०५	५	लि.क. मेघराज ऋषि
२३	६६३१	"	"	१९वीं	१७	
२४	६४६८	रसमञ्जरी टीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	मू. भानु कवि, टी. अनन्तपण्डित	१९०६ (?)	४९	काशिराज श्रीचंद्रभानु-
			त्र्यम्बकपण्डितात्मज			कुतूहलार्थं निर्मित
२५	७५००	रसमञ्जरी सटीक	मू. भानु कवि, टी. शेषचितामणि	१६२१	२४	पत्र १-२ अप्राप्त
२६	७७८२	" रसिकरञ्जिनी टीका	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	७२	
२७	६६६७	" सटिप्पण	भानु कवि	"	४४	अपूर्ण
२८	७५०७	रसमञ्जरीप्रकाशस्वोपज्ञ टीकासहित	नागेश भट्ट श्रीकालोपनामक	१८३८	४२	लि.स्था. कृष्णगढ़
			शिव भट्टसुत			व्यास मोतीराम पठनार्थम्
२९	७७८४	रसमञ्जरीव्याख्या व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	अनन्त पण्डित त्र्यम्बकात्मज	१९०२	१७४	लि. क. साधु प्रभुदास वारहट
						पंच कान्होजी उमेदसिंहजी
						पाटणवासी वाचनार्थ जोधपुरे
						लिखितम्
३०	६२६३	रसिकमञ्जरी टीका रसिकरञ्जिनी	मू. भानु कवि, टी. गोपाल भट्ट	१९वीं	३९	
३१	६००२	वाग्भटालंकार टीका		१७वीं	१९	
३२	६८७२	वाग्भटालंकार (पञ्चपाठ)	मू० वाग्भट	"	२०	
		पदभंजिका व्याख्या				
३३	७१९१	वाग्भटालंकारसावचूरि	"	१६वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४	४३०६	वाग्भटालंकारवृत्ति		१६वीं	१५	२,६,७ और १३ पृष्ठ नहीं हैं
३५	६६४५	विदग्धमुखमण्डन	धर्मदास	१६५७	२८	
३६	६६४६	"	"	१८१२	२४	सूर्याष्टमहीभिर्युते विक्रमे
३७	७६८७	"	"	१८४२	३६	लि.क. राधाकृष्ण गुरजी
३८	७६६२	" सटिप्पण	"	१६८२	१५	शिवरामसुत लि.क. गङ्गादास हीरानन्द- सूरीश्वर शिष्य पल्लीवरपुरे (पाली—मारवाड़)
३९	६५१९	" सावचूरि	श्रवचूरिकर्ता अज्ञात	१८३९	४५	लि.क. शिवनाथ शिवजीरामसुत
४०	६३१०	वृत्तिवार्तिक	अप्यय दीक्षित	१७वीं	१६	
४१	६६९६	"	"	१८वीं	१७	
४२	५९०३	श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डन टीका)	नरहरिभट्ट हरिरल्लालनन्दनः	१६वीं	८	
४३	५३११	साहित्यरत्नाकर (प्रथम तरङ्ग)	श्रीधर्मसुधी पर्वतनाथसुत पल्लमाम्बागर्भज हारीत गोत्रज	१९वीं	१६	वाराणसी में रचित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १७-मुभाषितादि]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	५६६२	उपदेशशतक (चारुचर्याख्य)	क्षेमेन्द्र	१६३६	६	रसगन्धर्वकुन्दुहायने लिखितं गोपरामेण शुक्रकृष्णग्नित्थौ
२	७२७२	एकषष्टियुतप्रश्नशत	जिनवल्लभ	१७४१	७	
३	४३४७	कर्पूरप्रकरसावचूरि	मू. हरिकवीश्वर	१६वीं	२५	
			टी. जिनसागर सूरि			
४	५६४७	"	सोमचंद्र रत्नशेखरशिष्य	१५६७	२८	रचनाकाल १५०४ लि.क. संघमाणिक्यगणि लि.स्था. चम्पकनेर महानगर
५	५६५६	"	हरिमुनि वज्रसेनशिष्य	१५५८	५४	अणहिलपुरमध्ये लिखित
६	७३६५	दृष्टान्तशतक (राज. भाषार्थ सह)	तेजसिध गणि	१७६६	१६	लि.क. सोमचंद्रगणि लि.स्था. पत्तननगर (पाटण गुजरात)
७	७३६७	" मूल	" लूकागच्छीय	१८वीं	१८	
८	७५४८	"	" "	"	६	लि.क. कान्हजी मुनि
९	४५३२	नीतिशतक सटीक	मू. भर्तृहरि, टी. धनसार	१८२२	२५	लि.क. गंगाधर
१०	४४५२ (३४)	" सस्तबक	भर्तृहरि	१८०७	१-१३	
११	४५६५	प्रश्नोत्तरमणिमाला	श्रीशङ्कराचार्य	१८वीं	५	
१२	७३७८	प्रश्नोत्तरमाला	विमलसूरि	१७५७	१	लि.क. विनोदसागर लि.स्था. श्रीकृष्णगढ़मध्ये
१३	७४३२	प्रश्नोत्तररत्नमालाविवरण	देवेंद्रसूरि	१६वीं	१३८	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४	४४१५	प्रश्नोत्तरषष्टिशतक सटीक	जिनवल्लभसूरि	"	२३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५०५४	पद्यावली	वित्त्वमंगलश्रावित	१६७६	४५	त्रुटित
१६	५१५६	भर्तृहरिशतक (चैराग्य शृंगार)	भर्तृहरि	१६वीं	२२	अपूर्ण
१७	४४८२	रत्नकोश	वैशम्पायनोक्त	१७४६	६	
१८	४६०७(२)	लघुचाणक्य	चाणक्य	१८३७	२३-३४	
१९	४५७१	"	"	१८०५	४	लि.क. सामन्त ऋषि
२०	६७५०	वृद्धचाणक्य	"	१६वीं	१६	स्था. राजपुर
२१	६७७२	चैराग्यशतक	भर्तृहरि	"	६	लि.क. बालकदास कबीरपंथी
२२	४५६१	" सटीक	मू. भर्तृहरि, टी. धनसार	१८६०	५१	
२३	४४५२(३६)	" मूल		१८०७	२५ से ३६	लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि
२४	५४३७	शतकत्रय	भर्तृहरि	१८वीं	६२	स्था. बण्डा ग्राम
२५	६१२७	"	मू. भर्तृहरि, टी. रूपचंद	"	६३	
					नीतिशतक १-२० शृ.श.२०-३६ वै.श.३६-६३	
२६	७०८०	शृंगारशतक	भर्तृहरि	१७५६	२०	लि.क. किशोरदास मुरलीदास- शिष्य
२७	४४५२(३५)	"	"	१८०७	१३ से २५	लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि
२८	६६६४	सभारंजन सुभाषित		१६१४	१७	स्था. बण्डा ग्राम १३वां पत्र अप्राप्त
२९	४५७२	सभाशृंगार		१७५१	१४	लि.क. रामनारायण लि.क. ऋषि धनजी स्था. राजपुर नगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०	५२७७	संस्कृतमंजरी	अमन्तपण्डित	१८वीं	२४	
३१	५२७८	"	"	"	४	
३२	५५२१	"	"	१६१७	६	लि.क. रामगोपाल, स्था. बूंदी
३३	६५७७	"	"	१६वीं	३	
३४	५६७७	"	"	"	३	
३५	६२५३	"	"	"	१६	
३६	६४०५	संस्कृतविधि (ज्ञानक्रिया संवाद पत्र)		१७६८	३	लि.क. पं. सुखानन्द
३७	४५७४	सिद्धप्रकर	सोमप्रभ	१७वीं	५	
३८	६३८७	"	"	१६६४	५	लि.क. वीरसुन्दरगणि
३९	७३१६	"	"	१५वीं	५	
४०	४४०४	" सवालावबोध	मू. सोमप्रभ, टी. पाठकवर राजशील	१८५२	६१	लि.क. क्षमासौभाग्य लि.स्था. श्रीवांतानगर
४१	४४५६	" सटीक	मू. सोमप्रभ, टी. हर्षकीर्ति	१८वीं	१७	
४२	६२७६	" "	"	१८७२	४३	लि.क. ऋषि नगराज गोपाचल मध्ये
४३	७३२६	" "	मू. सोमप्रभ, टी. पाठक राजशील	१८३०	५०	लि.क. दौलतसौभाग्य श्रीविलाङ्गानगरे
४४	७२६२	" " मूल	सोमप्रभ	१७५६	२२	लि.क. लक्ष्मीचंद्र जादवनगरे
४५	४३६७	" सावचूरि	"	१७६२	१४	१३वां पत्र अप्राप्त लि.क. ऋषि भावशेखर
४६	४४१७	" "	"	१७वीं	१२	
४७	४५७०	" सस्तवक	मू. सोमप्रभ, स्त. वीरसागरगणि	१८४७	१६	लि.क. चोखाजी, बांकानेरमध्ये

क्रमाङ्क	प्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८	७१४६	सिन्दूरप्रकरसूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभ	१८६०	७	लि.क. प्रमाणविजय
४९	७४४४(१६)	" "	"	१८८६	३१०-३२४	स्था. पोहकरण
५०	५३५२	" सूक्तिरत्नकोश	"	१६०१	६	
५१	४८११	सुभाषित (प्रास्ताविक)		१८३३	१८	
५२	४४५२(१०१)	सुभाषितश्लोकाः		१८वीं	१३६वाँ	
५३	४५६६	"		१६वीं	८	
५४	७१५३	"		१६वीं		
५५	४३४६	सुभाषितसंग्रह		१४०८	२५*	प्रतिलिपि योग्य, जीर्ण खरड़ा
५६	७१०३	"		१८वीं	२	लि.क. मुनिदाम शिष्य, राणपुर
५७	४३४८	सुभाषितसूक्तावली		१६८२	२७	एक हजार से अधिक सुभाषितों का संग्रह, महत्वपूर्ण, विशिष्ट और प्राचीन प्रति
५८	५६८४	सुभाषितार्णव		१७३६	६१	लि.क. विमलहर्ष भीमजी-पठनार्थम्
५९	६३२२	"		१८१०	२२	लि.क. सांवल पण्डित
६०	७७४१(६)	सुभाषितावली		१७वीं	४३-७७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	४४१४	सूक्तावली		१५वीं	३५	
६२	६३६०	सूक्तिमुक्तावली (सिद्धरप्रकरबालावबोध)		१८वीं	७६	
६३	५१३५	सूक्तिरत्नावलीव्याख्या		१९वीं	११	६२ श्लोकों की व्याख्यापयन्त, अपूर्ण
६४	७५६०	ज्ञानप्रकाश सस्तबक	तेजसिध	१८४२	४	लि.क. ऋ. मेघजी

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १८--कथा, चरित्र, आख्यानादि]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४३३२	अंबडचरित्र	मुनिरत्नसूरि	१६४६	३१	
२	६१३२	अजापुत्रकथा	माणिक्यसुन्दर	१७१४	७	
३	७२५०	अमरसेन वज्रसेनकथा		१७६३	२१	लि.क. लक्ष्मण, जिहानाबादनगरे
४	७२७०	आदिनाथचरित्र		१८वीं	७	लि.क. रंगहर्ष, बाहड़मेर
५	७३३७	आमराजा बप्प-भट्ट-सूरि-धर्मकथा		"	३	प्रतिलिपि योग्य, अन्त में राज-स्थानी भाषा में स्तवन आदि लिखे हैं। (लिपिकर्ता का नाम मिटाया हुआ है)
६	५६४४	उत्तमकुमारचरित्र		१६६७	१०	
७	४३३५	उत्तराध्ययनकथा (प्राकृत उत्तराध्ययनसूत्रगता)	पद्मसागरगणि	१७वीं	११६	रचनाकाल १६५७
८	५६६३	" "	"	१७२३	८४	पीपाड़ग्रामे, सं. १६५७ मध्ये रचित
९	७२८१	" "	"	१८५६	८२	लि.क. कुशलकल्याणगणि रचनाकाल १६५७ रचनास्थान पीपाड़ग्रामे
१०	७८५२	कालकथा	नेमिप्रभ	१६वीं	८	चित्र सं० ७
११	५६६३	कालकाचार्यकथा		१७६२	१३	
१२	७८५३	" "		१६वीं	६	चित्र सं० ५
१३	७८५४	" "		"	१ से १० तक	चित्र सं० ७
१४	७०८१	चतुर्दशीलादिकथा (भेघनादराज्ञः)		१८वीं	२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	५३७६(६)	चन्दनषष्ठिविधानकथा	बुद्धिविजय	१८वीं	१०७-११०	लि.क. रामविजय गणि लि.स्था. श्रीराधनपुरनगर (गुजरात)
१६	४३८७	चित्रसेन पद्मावतीकथा		१८५३	२३	
१७	७२६२	„	राजवल्लभ पाठक	१८वीं	१३	लि.क. ऋषिचंद्रभाण, बीदासर- मध्ये, रचनाकाल १७२२
१८	६६२०	„ सटिप्पण	„ महिमानिधान शिष्य	१८४६	५०	
१९	४३६८	„ चरित्रसस्तवक	मू. राजवल्लभ, स्तवकार भक्तिविजय	१८५३	१५४	
२०	७१४५	दीपमालिकाव्याख्यान	माणिक्यसुन्दरसूरि मेरुतुंग सूरिद्रशिष्य	१९वीं	६	विशिष्ट प्रति मलाणाग्रामे लिखित लिखितं नन्दरवारनगरे लि.क. जयविजय गणि स्था. भाहरजा ग्राम
२१	५३७६(१०)	दुग्धरसकथा		१८वीं	११०-१११	
२२	४४३५	देवकुमारकथा		१५३४	७	
२३	७३६६	धर्मदत्तकाथा		१६१२	१८	
२४	७३६३	धर्मबुद्धि पापबुद्धिकथा		१७००	१४	
२५	४४३४	धर्मबुद्धिमंत्रिकथा		१६७४	६	
२६	६४०७	धर्मदत्तकथा		१६३३	१०	
२७	६८२०	धर्मसंवाद (महाभारतीययज्ञकथान्तर्गत)		१७८६	१७	आद्य पत्रद्वय अप्राप्त लि.क. ऊधोदास, हिंडोलीमध्ये
२८	५३७६(८)	निशल्यकथा		१८वीं	१०५-१०७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	६१५३	पापबुद्धिमंत्रीकथा	भावदेव	१९वीं	६	लि.क. दाणाऋषि समाणेनगरमध्ये प्राचीन प्रति
३०	७२१३	पार्श्वनाथचरित्र		१७५६	१३६	
३१	५६३३	पार्श्वनाथचरित्र		१५०४	१४७	
३२	६३१८	मणिमंजीराख्यान (वाल्मीकि- रामायण बालकाण्डान्तर्गत)		१६३०	२२	
३३	४५६०	मथुरामाहात्म्य संग्रह (गोपालोत्तरतापिन्यादिगत)	सकलकीर्ति	१६०८	३३	लिखायित श्रीनथमलजी खण्डेलवाल, विलाला लि.क. नानूराम जोशी जोधपुरमध्ये
३४	६१४६	मल्लिनाथचरित्र		१८१३	५२	
३५	७७७६	माधवनाटककथा		१६१५	२६	
३६	५६६४	मुनिपतिचरित्र		१९वीं	२२	
३७	४३३३	युवराजऋषिचरित्र	रत्नकीर्ति	१६६३	७	लि.क. भावप्रमोद, जिनरत्नसूरि- शिष्य
३८	५३७६ (७)	रत्नत्रयविधानकथा		१८वीं श.	६४, ६५ १००-१०५	
३९	४४०२	रूपसेनकथा		१७वीं	२६	
४०	५३७६ (४)	रोहिणीकथा गोतमोक्त		१८वीं	८०-८७	
४१	४४६०	वत्सराजकथा	कनककुशल	१६४०	११	लि.क. पंकवर्धनशिष्य लाल- वर्धन, लि.स्था. पाडलाग्राम लि.स्था. मेड़ता नगर
४२	४४५८	वरदत्तगुणमंजरीकथा		१८वीं	३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३	६७६६	बैतालपञ्चविंशिका		१८वीं	६८	२५वीं कथा अपूर्ण
४४	६१८२	श्रीपालचरित्र	सकलकीर्ति	"	२५	पत्र ११, २१ और २३वां अप्राप्त
४५	४३३४	शांतिनाथचरित्र	अजितप्रभ सूरि	१६५१	६५	
४६	५६८०	" "	"	१६५४	६२	
४७	७२७६	" "	"	१६३३	१५३	प्रथम पत्र अप्राप्त
४८	७३२२	"	भावचंद्र (?)	१८वीं	१३३	
४९	७२६६	शालिभद्रचरित्र	धर्मकुमार	१६०५	२६	भोटोपलीवासी हुम्बड़जातीय शाहादेवसंहेन श्रीगुरुणामुपदेशेन मंत्रो चांपाकेत लिखितं कल्प- मेरुषु, प्रथमपत्र अप्राप्त (विशिष्ट प्रति)
५०	७३८८	"	"	१६वीं	१७	
५१	४३३६	" सावचूरि	"	"	१६	
५२	७३८३	सम्यक्त्वकौमुदी		१७०५	३२	लि.क. शिवचंद्रगणि, माणिक्य- चंद्रसूरिशिष्य
५३	७३५४	"		१४६६	३१	प्राचीन प्रति
५४	७३४२	"		१६वीं	३७	
५५	७४३०	"		१५वीं	४६	
५६	७०८६	"		१८वीं	२८	अपूर्ण
५७	४३२८	सागरचन्द्रकथादि		१७वीं	१-१२	इस प्रति में तीन कथाएँ हैं पृ. १ से ३ तक (१) सागर- चन्द्रकथा पृ. ३ से ६ तक (२) मङ्गलकलशकथा पृ. ६ से पृ. १२ तक (३) सुदर्शन- अष्टिकथा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८	६४०६	सिंहासनद्वान्नशतिका	बल्लालसेन	१७७५	१४६	प्रथम पत्र अप्राप्त, जीर्ण प्रति
५९	५३४४	सौभाग्यपंचमीकथा	कनककुशल विजयसेनसूरिशिष्य	१८वीं	५	रचनाकाल सं० १६५५ भूतेश्वरसेन्दुवत्सरे
६०	७२६३	हरिश्चन्द्रचरित्र	भावदेवाचार्य	१६वीं	३२	
६१	६७८७	हितोपदेश	विष्णु शर्मा	१८वीं		पत्र १, २, २०, २१, २३, २४ और २७ से ३५ तक अप्राप्त

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; १६-आयुर्वेद]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६०६४	अञ्जननिदान	अग्निवेश	१८८८	६७	लि.क. चतुर्भुज
२	५२६८	अग्निवेशनिदान (सटीक)	,,	१८५६	२६	स्थान-नेनवा
३	५८४२	अनुपानमञ्जरी	पीताम्बर	१६०७	११	
४	५८५४	,,	,,	१६२८	४	लि.क. लक्ष्मीनारायण
५	४१६२	,, सस्तबक	,,	१६वीं	६	लि.क. लोमचन्द्र
६	५८६०	अमृतमञ्जरी (अजीर्णमञ्जरी)	काशिनार्थ	,,	३	
७	५११५	अर्कचिकित्सा	रावण	१८वीं	६३	रावण मन्दोदरीसंवाद, इसमें गर्भ- रक्षण के उपाय बतलाये गये हैं
८	५८५०	अर्कप्रकाश	,,	१८३६	३८	
९	५८५१	,,	,,	१६२६	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०	५४६०	अरिष्टनिदान (रागविनिश्चय)		१६वीं	५४	
११	५६१०	ऋतुचर्या	त्रिमल्ल	१८६५	५	लि.क. सिल्लु व्रजवासी
१२	६५१४	कल्पस्थान	वाग्भट	१७३५	१६	
१३	५७५२	कालज्ञान	शिवप्रोक्त	१६४३	१६	लि.क. रामविलास नायलावास्तव्य
१४	६८६०	,,	,,	१६०४	३६	लि.क. लक्ष्मीचन्द्र
१५	५८६८	कालज्ञानवैद्यक (सस्तबक)	,,	१८४३	४६	लि.क. ब्राह्मण चतुर्भुज
१६	४१५०	,, मूत्रपरीक्षा आदि	अनेक	१८५१	१६२	लि.क. परसराम
१७	५८५२	कूटमुद्गर (सटीक)	माधवपण्डित	१६२५	५	लि.क. भक्तावर
१८	६८७६	गणपाठचिकित्साकलिका		१८वीं	२	
१९	७५०४	गोपालविनोद	गोपालदास	,,	७२	प्रथम व सप्तम पत्र अप्राप्त
२०	५८६२	चमत्कारचिन्तामणि	लोलिम्बरज	१६३४	६	लि.क. लक्ष्मीनारायण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१	६८६४	चिकित्सामहार्णव	वंगसेन	१८११	३६०	
२२	७४६८	ज्वरतिमिरभास्कर	कायस्थ चामुण्ड	१७४३	५४	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३	४७८०	ज्वरप्रतीकार (ज्वरघटमहिमा)		१८०५	३	
२४	४७८२	द्रव्यगुणशतश्लोकी	त्रिमल्ल	१८वीं	६	लि.क. वैष्णव नारायणदास
२५	७६६१	"	"	१६५१	१६	" रामनारायण, कृष्णगढ़
२६	६६६३	धातुरत्नमालाव्याख्या		१६वीं	१५	
२७	५२४५	नागार्जुनवैद्यक	नागार्जुन	१८वीं	६४	पत्र ८, २०, ३५, ६१ अप्राप्त
२८	७७२२(११)	नाडीपरीक्षा		"	११५-११६	
२९	५४७८	निघण्टु	मदनपाल भूपति	१६०६	१२५	
३०	५८४६	निघण्टु (धन्वन्तरीय)	त्रिमल्ल	१६वीं	३३	
३१	६८१२	"		१८७०	५१	लि.क. भागीरथराम
३२	६८८२	"	मदनपाल	१७२५	११६	लि.क. रामचन्द्र
३३	७०३६	"		१८वीं	४७	पत्र ४, ५, ६ अप्राप्त
३४	५६५८	पथ्यनिर्णयलंघन	वाचक दीपचन्द्र	१६वीं	१०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
३५	५८५७	पथ्यनिर्णय	"	१६२७	२	लि.क. भक्तावर
३६	७००८	पथ्यलङ्घननिर्णय	"	१६३७	२०	
३७	६६८७	पथ्यापथ्यविचार		१८वीं	२५	
३८	५६०४	पथ्यापथ्यविनिश्चय		१६१५	४६	
३९	५८४४	"		१६वीं	१६	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४०	४०६६	पथ्यापथ्यविबोधक	केयदेव	१८८७	१६६	
४१	६८७१	"	"	१८वीं	१०३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२	५८४०	बालग्रहचिकित्सा	रावण	१६वीं	२१	लि.क. लक्ष्मीनारायण
४३	५८६४	"	"	१६२८	२१	
४४	४२००	बालतन्त्र	कल्याण	१८वीं	३८	
४५	५८४१	"	"	१६वीं	२३	
४६	५८६३	"	"	१६२८	१२	
४७	६६५७	"	"	१८६४	६०	लि.क. पोकरमल ब्राह्मण भालरापाटण
४८	५८३४	भावप्रकाश	भावदेव	१६वीं	३३४	लि.क. भागीरथ
४९	६८०५	भावप्रकाश (मध्यमखण्ड)	भार्वांसिंह	१८७२	१७६	
५०	६८०६	" "	"	१६वीं	३५०	
५१	७८०८	भावप्रकाश उत्तरकाण्ड	"	२०वीं	५७४	
५२	७०२३	मदनपालनिघण्टु	मदनपाल	१८८२	६८	
५३	५८३७	मदनविनोद (निघण्टु)	मदननृपति	१६०५	११५	लि.क. पं.मतिमंदिर, विक्रमपुरनगर
५४	६८०३	मदनविनोदनिघण्टु	मदनपाल	१६वीं	२-८१	
५५	६१२०	मधुकोश	देव महामहोपाध्याय जयपारदीक्षित	१८५६	५१-६५	
५६	५८३८	माधवनिदान	माधव कवि	१८६०	११०	
५७	६७४३	"	"	१५६२	६८	
५८	७०२४	"	"	१७५३	३६	लि.क. महेश सूरि, बीकानेर
५९	५२८६	"	"	१७३६	१२२-१८४	
६०	६८१३	"	"	१८वीं	१७०	
६१	६०१३	" सटीक	" टी. वाचस्पति	१८७३	२३७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२	५६२८	माधवनिदान सटीक	टी. वाचस्पति	१६११	२२६	लि.क. भगवान विप्र
६३	६८६८	" "	"	१८७४	२१६	लि.क. रामबुल मिश्र
६४	४०६८	योगचिन्तामणौवैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति सूरि	१६६६	४७	लि.क. जगजीवन
६५	४७६६ (३)	योगचिन्तामणि	हर्षकीर्ति	१७७५	१-१६८	
६६	५८४३	"	"	१६२०	५०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
६७	६४४१	"	"	१८वीं	४३	७वां पत्र अप्राप्त
६८	६८७३	योगचिन्तामणि सटीक	हर्षकीर्ति	१८३१	१३७	
६९	४२६०	" गुर्जरभाषा टीकायुक्त	"	१८६६	४६	
७०	६८१७	योगतरंगिणी		१६वीं	४-२४	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
७१	५८५६	योगशत		१६२३	६	लि.क. भक्तावर शर्मा
७२	४७७६	योगशतक		१७१२	१६	
७३	६६०३	"		१८५६	६	
७४	५८७५	" सवालावबोध	वैद्यनाथ	१८४२	२७	लि.क. चतुर्भुज गोपाल
७५	६३१२	योगसार (योगमालिका)		१८वीं	५	
७६	६८१८	रत्नसागर		१६वीं	२-६२	आद्य पत्र अप्राप्त
७७	६८३२	"		१८८१	३१८	लि.क. चौधरी खूबकृष्ण
७८	७५६७	रसचिन्तामणि	अनंतदेवसूरि	१८०३		प्रथम पत्र अप्राप्त, १५५ व १५६वां पत्र भी अप्राप्त
७९	५६४३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	१६वीं	५२	लि.क. ब्रह्मर्जनसागर, नागपुर
८०	६०८७	रसमंजरी तन्त्र	"	"	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८१	७६४१	रसरत्नाकर तन्त्र	नित्यनाथ	१६वीं	३७	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८२	५८५३	राजमार्तण्ड	भोजनरेश	१६४२	१६	
८३	५५७६	रामनिदान	राम	१८वीं	१८	
८४	६८०२	रोगविनिश्चय	"	"	१-६६	
८५	४१६१	व्याधिनिग्रह सस्तबक	विभ्राम	१८५३	४६	लि.क. लक्ष्मीनारायण
८६	५८६१	विश्ववल्लभ	मिश्र चक्रपाणि	१६२५	११	
८७	६४५५	विश्वप्रकाश कोश	श्रीमहेश्वर	१७वीं	५५	
८८	५४७४	विषरोगपथ्यापथ्यविचार	"	१६वीं	३६	
८९	७३८६	वैद्यकउद्धार	राजमार्तण्ड	१६३४	१५	लि.क. शिवदास
९०	४७७६	वैद्यजीवन	लोलिम्बरज	१८१६	१०	
९१	४८४४	"	"	१७००	१६	
९२	५२६४	"	"	१८७६	२७	
९३	५८३५	"	"	१८६३	१५	लि.क. लक्ष्मीनारायण
९४	५८८०	"	"	१८४८	५३	लि.क. ठण्डीराम
९५	५५५६	"	"	१६वीं	१२	पत्र १ से ३ तक अप्राप्त लि.क. मिश्र कल्याण शर्मा ३२वां पत्र नहीं है लि. स्था. बगड़ी
९६	६०८१	" सटीक	"	१६०५	४१	
९७	६२८८	वैद्यजीवन टीका	टी. हरिनाथ गोस्वामी	१६२२	५०	
९८	६३२६	वैद्यजीवन सटीक त्रिपाठ	"	१८८६	५७	
९९	४७७८	" सस्तबक	लोलिम्बरज	१७३४	२७	लि. स्था. बगड़ी
१००	५८८१	" "	"	१६वीं	१७	
१०१	६६००	" "	"	१८६८	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०२	५२७३	वैद्यरत्न	शिवानन्द भट्ट	१८वीं	४४	
१०३	७८२६	वैद्यवल्लभ (सटवार्थ)	हस्तिरुचि	१७६८	२१	लि.क. राजविजयगणि
१०४	५३०८	वैद्यविनोद	शंकर भट्ट	१८वीं	६६	विवोरा नगरे
१०५	५८३६	"	"	१६वीं	४७	आद्य दो पत्र अप्राप्त
१०६	५८४८	"	"	१६०४	८०	लि.क. लक्ष्मीनारायण
१०७	६६०५	"	"	१६१२		" " गोपालमहात्मा
१०८	७८१३	"	"	१८५७	७४	
१०९	७८१४	"	"	१६वीं	२४	प्रतापसिंहसुत रामसिंहाज्ञायारचित
११०	५८५८	वैद्यामृत	मोरेश्वर	"	३८-११५	"
१११	५८४६	शतश्लोकी (सटिप्पण)	त्रिमल्ल भट्ट	१६२६	७	लि.क. भक्तावर
११२	५८५५	" "	बोपदेव	१६१२	१०	रचनाकाल (१६०३)
११३	६६०१	"	"	१६२३	७	लि.क. लक्ष्मीनारायण
११४	६६३२	"	"	१६वीं	३८	लि.क. भक्तावर
११५	६०८०	"	त्रिमल्ल, टी. कृष्णदत्त	१८वीं	७	
११६	६५८६	शतश्लोकी टीका	"	१६०३	६१	पत्र १ से ४ व ६, १०, २१, २२, ३१, ३३, ३४ अप्राप्त
११७	४३०३	शाङ्गधरसंहिता	शाङ्गधर	१६वीं	१०	
११८	५५६३	"	"	"	१३१	
११९	५८४७	"	"	१६०६	१७३	पत्र १ से १६ व १६५ से १६६ तक अप्राप्त
१२०				१६११	१०१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	६०३०	शाङ्गधरसंहिता	शाङ्गधर	१६७८	४७	राजलदेसरे लिखितं
१२१	६७६५	"	"	१८६४	१२७	लि.क. रूपचन्द्र
१२२	६८६०	"	"	१७वीं	६६	
१२३	५८२४	"	"	१६१०	४७१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१२४	६०८४	" सटीक (प्रथमखंड)	" टी. काशीराम	१६वीं	७५	
१२५	६०८५	" " (द्वितीय)	"	"	१४०	पत्र १, २६, २५, ३६, ३७, १००, १०१ अप्राप्त
१२६	७७६५	" (षष्ठाध्यायपर्यन्ता)	टी. आढमल्ल	"	५७	
१२७	७०३८	" (अपूर्ण)	"	"	१२०	
१२८	५४१४(२)	शारीरनिबन्धसंग्रह	"	"	१-७१	
१२९	४७८३	शोथनिदानचिकित्सा	"	१८वीं	३	
१३०	६६७२	सन्निपातचिकित्सा	"	१६वीं	११	
१३१	६३००	सन्निपातप्रकरण	"	"	१२	लि.क. फतेचंद, जयपुर
१३२	५७४५	सिद्धमन्त्रप्रकाश	बोपदेव	१८वीं	२८	आद्य पत्र शोभन
१३३	४१३७	" (सटीक)	"	१८४५	८२	लि.क. सेठ आदित्यराम
१३४	६०८२	हिकमतप्रकाश (द्वितीयखंड)	"	१६वीं	५५	पत्र २१ से २३ व ३०वां अप्राप्त
१३५	६०८३	" (तृतीयखंड)	"	"	४४	
१३६	६८०१	हितोपदेश	शिव पण्डित	१८७०	६२	
१३७	५६३२	क्षेमकुतूहल	क्षेम शर्मा	१६वीं	६६	
१३८	७४६२	"	"	१८वीं	३६	
१३९	६६३८	त्रिशक्तिका	दास पण्डित	१८५६	१८	लि.क. देवीदत्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४०	५८४५	त्रिशती	शार्ङ्गधर	१६वीं श.	१३	लि.क. मनसाराम पत्र ६, १२, १३, १६, २८ से ३१, ६६, ७६, ८३, ८५ व ८६वां अप्राप्त
१४१	६६६१	,, (सटिप्पण)	,,	१७७०	५०	
१४२	६०८६	त्रिशत्श्लोकी सटीक	,,	१६वीं श.	११०	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २०-राजस्थानी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७५३ (१-१५)	अंकपाटी		१८३७	१३-२६	* पाटियों के नीचे नीति विषयक "दूहा" हैं
२	४६०७(१)	अंकपाटी		"	१८-२२	
३	४६१६(५)	अंकपाटी		१८७५		
४	४४५२(५२)	अंगफुरकणविचार	हीररतन	१८वीं	१०८वाँ	
५	५८६३	अञ्जनाचौपई (सचित्र)		१६वीं	४३	चित्र सं० ४३, प्रारम्भ के १० दूहे पुण्यसागर वाली प्रतियों से मिलते हैं
६	६५२५	अञ्जनाचौपई	पुण्यसागर	१८६८	२४	* सं० १६८७ में रचित। लिपि-कर्ता ऋषि नोलचन्द, पोही ग्राम, ऊदावत राज्य
७	४८१८	अंजनाचौपई	पुण्यसागर	१७०२	२०	
८	४१६४(१)	अंजनासतीरास		१६२६	१३	अन्तिम पत्र त्रुटित
९	४०४०	अंजनारास		१८४६	१७	
१०	५०६३	अंजनासतीनो रास		१८वीं	२१	
११	४०३६	अंजनासुन्दरीचौपई	भुवनकीर्ति	१६वीं	१८	अपर नाम पवनंजयप्रिया अंजनासुंदरी हनुमंत चरित्र
१२	४३१६	अंजनासुन्दरीचौपई (सचित्र)	भुवनकीर्ति	१८६१	३४	चित्र सं० ४०
१३	७०४३	अञ्जनासुन्दरीचौपई		१८वीं	१४	लि.क. आर्या हीरां
१४	७२१६	अञ्जनासुन्दरीचौपई	पुण्यसागर	१८५०		बीकानेर में लिखित
१५	६३६२	अञ्जनासुन्दरीरास		१८६५	२५	पोरबंदर में लिखित। बाई साकर पठनार्थ
१६	५२०२(१)	अकबरनामा		१८८५	४-८७	जयपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७	४६२०	अकबरनामो		१६वीं	१४	
१८	४२८७ (१०)	अदीतवारकी कथा	भाव कवियण (?) गगंगोत्रीय	१८वीं	४६-७७	
१९	५३१२	अध्यात्मगीता	अग्रवाल मल्लपुत्र	१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अप्राप्त ।
२०	७७४३(१)	अध्यात्मरामायण भाषा	राजसिध	१७८४	१-३२	पाली में लिखित * बाई सिरकंवरीलिखित, सावर
२१	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	मध्य श्रीगारियाधामध्ये लिखित
२२	५४१८(१६)	अनन्तचतुर्दशी कथा		१६वीं	१२१-१२४	
२३	४६१४(१८)	अनन्तव्रतरास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	२१२-२१८	
२४	४०३६	अनाथीसंधि	खेमो	१८वीं	६	गीत दूहाबद्ध
२५	५१०८	अब्जदीप्रइन		२०वीं	८	अपूर्ण
२६	५४१८(३६)	अब्जदीपाशावली			१-१०	जैन विनतिसहित
२७	४४५२(१६)	अभिसारिकावर्णन गीत आदि		१८वीं	१८वां	
२८	७१४१	अमरदत्त मित्रानन्दचरित्ररास	देवगुप्त चन्द्रसूरीश्वर	१७००	२८	१६०६ (?) में रचित । सारण- मध्ये ऋषि कचरा भाक्षण- शिष्यलिखित
२९	४३६१	अमरदत्तमित्रानन्दरास	"	१६१७	१६	सं० १६०७ ई. क्र. ६
३०	५११७	अमरसेनवीरसेनचौपाई	विजयहर्ष	१८४६	२०	रवि-रचना काल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६६०२	अमृतसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	२२८	पत्र २,३,४,५ अप्राप्त
३२	६८३१	अमृतसागर	"	"	४६७	*
३३	५८३६	अमृतसागर	"	"	३३८	अपूर्ण
३४	४२०६	अमृतसागर	"	१८७६	२७८	
३५	७१३७	अयवंतीसुकुमाल चौपाई		१६वीं	५	रचनाकाल १७४१
३६	४०४८(२)	अयवंतीसुकुमाल स्वाध्याय	शान्तिहर्ष	१८६२	१६-२०	लि.क. धनरूपहंस, सऊपरा ग्रामे
३७	७७४४(२)	अज्जणगीता	रघुनदास	१७५८	३-८	
३८	४४६१	अर्बुदाचलश्लोक	विनीतविमल	१८वीं	२	
३९	४०३४	अरहन्नकमुनिचरित्र	जिनहर्ष सूरि (?) (सुमतहंस)	१६वीं	६	
४०	७७२४	अवतारचरित	नरहरिदास बारहठ	१७८६	२६७	*
४१	७७२६	अवतारचरित	"	१८१८	६४६	
४२	७७३३	अवतारचरित	"	१८१४	४४५	बदनोर में हरिदास कबीरपंथी द्वारा लिखित
४३	७३८७	अवन्तिगजसुकुमाल चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	६	रचनाकाल १७४१
४४	७७४५	अवपरीक्षा		१८४३	३६	लि.क. वर्जसिंह, पहला लख्या सो ब्रह्म रामगोपालजी का
४५	४७८४	अष्टप्रकारपूजारास	उदयरत्न	१८२६	६१	
४६	५४१८(१६)	अष्टमीकथा		१६वीं	१४०-१४३	
४७	४६१४(२४)	अष्टाणीवरतनोरास (ऊठाई)	शुभचन्द्र	१८७१	२३१-२३२	
४८	४८२३(१)	आणंदश्रावकसंधि	श्रीसार	१८१६	१-६	
४९	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचनाकाल १७४२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०	५४१८(४)	आत्मसंबोधरास	बनारसी	१८वीं	८८-९१	
५१	४९१४(२०)	आदित्यकथाव्रत	सूरजी शाह	१८७१	२२२-२२६	
५२	५३७६(२)	आदित्यवारकथा			३१-४२	
५३	५३७६(१३)	आदित्यवारकथा छोटी			१९७-१९९	
५४	४४२०	आनन्दमन्दिररास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	ढाल दूहाबद्ध । अन्तिमपत्र अप्राप्त
५५	७०६४	आनन्दश्रावक	मुनि श्रीसार	१८७०	२२	लि.क. साधवी रतन
५६	४०४२	आनन्दसंधि (अनाथीसंधि)	"	१७५४	१५	बावडीनगर मध्ये
५७	५४१८(३२)	आनन्दाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	लि.क. आर्या रूपमा
५८	४९११(२)	आभूषणहणा चिन्तावली		१८७६	४१-४२	४१ दोहे
५९	४०३५	आर्द्रकुमारचऊढालिया	समुद्र मुनि	"	३	लि.क. भागचन्द
६०	४८२३(२)	आर्द्रकुमाररास	मान कवि	१८१९	९-११	
६१	६०४५	आराधना प्रकरण	सोम सूरि	१८वीं	६	सुलिखित प्रति
६२	४४५२(९)	आवडीजी आदिके छन्द	अनेक कवि	१८वीं	१३ वां	
६३	७३४४	आवश्यक विधिप्रकरण	जिनवल्लभ गणि	१५वीं	६	
६४	४०५१	आषाढाभूत चतुष्पदिका	भावप्रभ	१९वीं	२	ढाळ गीतबद्ध
६५	५४१८(७)	आषाढाभूति चौपई		"	९७-१०७	
६६	५१२१	आषाढाभूति धमाल	कनकसोम	१८वीं	५	रचनाकाल १६३८
६७	४५७३	इन्द्रियपराजय शतक		सं. १६२८	६	
६८	७२७३	इन्द्रियपराजय शतक		१७वीं	६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	४०४३	इलाकुमार चौपाई	ज्ञानसागर	१८४३	५	रचनाकाल १७१९ आसोज सुदि २ बुधवार
७०	६५३०	इलाकुमार चौपाई	"	१८वीं	७	
७१	४९१४(२८)	उणतीसी भावना		सं. १८७७	२४६-२४७	
७२	५९७४	उत्तमकुमार चौपाई	तत्त्वहंस	१७९५	३१	जोधपुर में लिखित
७३	५०९८	उत्तराध्ययन गीत		१७२२	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
७४	४२८७(१३)	उपदेश को रासो	रामचन्द्र	१८वीं	९८-११४	स्वयं कवि द्वारा लिखित । रचनाकाल १७२९
७५	६१०६	ऋषभविवाहलो	सेवक	१७२२	२१	
७६	६१६६	ऋषिदत्ता चौपाई	चौथमल	१८७९	२५	बोल मध्ये लिखितम्
७७	७३३३	ऋषिभाषित कुलक		१८वीं	२	
७८	४९१५(६)	एकलगिड दाढाळारी बात		१८८७	१३६-१३९	
७९	४४५२(५५)	एकलगर वाराहरी वारता			१११-११३	अपूर्ण
८०	७२६१	एकविंशति स्थान प्रकरण	सिद्धसेन सूरि	सं. १७६६	१०	लि.क. सुमति हंस
८१	७७४६	एकादशीकथा भाषा (गद्य)		१९१३	५१	२६ कथाओं का संग्रह
८२	४२९३(२)	एकादशीकथा संग्रह			१८	२० कथाओं का संग्रह
८३	४०५५	एकांतरा तावरी बात		१८७६	३	
८४	७४४४(२०)	कका सञ्भाय	श्रावक चोयो		३२४-३२६	
८५	५२११	कछवाहोंकी वंशावली		१८८४	११४	*
८६	४०४६	कनकावती चौपाई	जिनहर्ष	१९वीं	२३	अन्तिम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	७७२० (२२)	कपडकुतूहल		१८वीं	६	*
८८	४०४७	कपोतकपोतणीरी वारता		१८५४	१२	*
८९	६९३७ (२)	कबीरजीकी बाणी	कबीर	१८११- १८१६	१०६-१८७	लि. क. रामदास, टीकोदासशिष्य निराणा ग्राम
९०	६७३६	कयवन्ना चोपई	गुणसागर	१७१६	१०	लि. क. ऋषि भरथ
९१	४०४८ (१)	कयवन्ना चौपाई	जयरंग	१८६२	२२	रचनाकाल १७४१ वै. शु. ८ शनिवार
९२	४०४९	कयवन्ना रास	सुन्दरसूरिचन्द्र (?)	१८वीं	५	आर्या हीरां, श्रीमानाजीनी शिष्यणी द्वारा लिखित
९३	५९७६	कर्मग्रन्थ पंचक बालावबोध	मतिचन्द्र	१८वीं	११२	
९४	४९१४ (३३)	कर्मविपाक कांड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१-२५५	
९५	४४२५	कलावतीचरित्र	विजयचन्द्र	१६७६	४	चौपाईबद्ध, दूसरा पत्र अप्राप्त
९६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	६	* रचनाकाल सं. १६८६
९७	४४५२ (२६)	कवित्त बावनो	उदयरज	१८वीं	२४ से २६	
९८	४४५२ (६५)	कवित्त	उदयरज	,,	१३१ वां	
९९	४४५२ (४५)	कवित्त सबैया	गंग, वृन्द	१८वीं	६१ वां	
१००	४४५२ (५४)	कवित्त	अनेक कवि	,,	१०६-११०	५० कवित्त
१०१	४४५२ (१०३)	कवित्त दूहा आदि	केसरसिंघ आदि	,,	१३६-१४१	
१०२	४९१५ (२)	कवित्त गीत आदि		१८८७	२०-४१	जगदम्बा आदि के छन्द हैं

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	४४५२(७३)	कवित्त गीत आदि		१८वीं	१२२वां	दाडिम-फल,
१०४	४४५२(८६)	कष्टावलीचक्र		,,	१२६वां	मुहम्मद स्तुति आदि
१०५	४६१५(१६)	कागदरी नकल		१८८७	३६८-४०६	वार और नक्षत्रों से बने योगों का फल-निरूपण
१०६	४०५१	कानड कठियारा री चौपई	मानसागर	१८वीं	८	* स्त्री, पुरुष आदि के प्रति पत्र रचनाकाल १७४७
१०७	४०५०	कान्हण विवाहलो		१७०२	८	लि.क. आर्या हीरां
१०८	७३७७	कालज्ञान भाषा	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१६वीं	७	
१०९	४०५२	कालीनागदमण पवाड़ो		१८वीं	७	
११०	५४३०	काव्यविधान		१६वीं	३३-४०	मंत्र-साधनों को काव्य कहा गया है
१११	७७२२(७)	कुतुबशतरी वात		१७२०	६६-१०४	लि.क. मथेन माधा
११२	७७२१(१०)	कुबदीन शाहजादारी वात		१८२५	१६६-१७७	
११३	५६६१	कुमतिविध्वंसण चौपाई	हीरकलश	१७वीं	७	रचनाकाल १६७७ कनकपुरी मध्ये
११४	६४२५	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो		१६वीं	४	
११५	७०३०	श्रीकृष्णजीरो व्याहलो	पदम कवि	,,	६४	
११६	४८३८	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	म. पृथ्वीराज	१७४५	२४	लि.क. भाग्यविजय, तेजविजय-
११७	४४५२(४७)	कृष्णरुक्मिणी वेली सटीक	,,	१८१७	८५-१००	शिष्य, खीमेल नगरे
११८	७७६६(४)	श्रीकृष्णलीला वर्णन		१८५६	२-७	लि.क. प्रीत सौभाग्य गणि बोहला
११९	४६०४(१)	केरडावाली चौथ माताजीरी कथा		१८६१	१-३४	ग्रामे मही उपकंठे चित्र—१
						लि.क. कल्याण सौभाग्य

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२०	७१७२(१)	केवाटराजाकी कथा		१६३६	२७	
१२१	५४१८(३०)	खिचड़ीरासा		१६वीं	१६८-१७०	
१२२	४०६०	खीची अचलदासकी वात		१८वीं	६	
१२३	४६८८	खेटसिद्धि		१८४८	६	लि.क. चतुरविजय गणि
१२४	४६८६	खेटसिद्धि	महिभोदय	१८४८	६	पोहकर मध्ये
१२५	४४५२(१३)	खेजड़ला माताजीरी नीसाणी	मान कवेसर	१८०८	१६ वाँ	लि.क. ज्ञानविजय,
१२६	४४५२(८४)	खेतरपालजीरो छन्द	कवि देद	१८वीं	१२५ वाँ	रचनाकाल सं. १७३१
१२७	५२७६	ग्रहणविचार टीका		"	३	
१२८	६४३७(२)	गर्जसिंहकुंवर कथा		"	२४-४८	अपूर्ण
१२९	४०५६	गजसुकुमाल चरित्र		"	१८	वृष्टि
१३०	६५४१	गजसुकुमाल रास		१८८७	८	लि.क. सरूपचंद
१३१	४६१४(१४)	गजमुनिवीनती		१८७१	२०८ वाँ	
१३२	४४५२(६६)	गणेशजी छन्द अमृतध्वनि		१८वीं	१२०	
१३३	६०४१	गर्भोत्पत्तिस्तवन	श्रीसार	"	३	
१३४	४६१५(५)	गीत		१८८७	१३४-१३५	
१३५	४१३६	गीतगोविन्द सटीक	टी. चैतन्यदास	१८वीं	४७	अन्त का पत्र अप्राप्त
१३६	४६१५(१५)	गीतकवित्त		१८८७	३६५-३६७	
१३७	७५५६	गीतसज्जाय		१८वीं	४	
१३८	४४५२(६०)	गीत, सबैया आदि		१८वीं	१२८वाँ	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३९	४९०४ (३)	गीतामाहात्म्य			६५वाँ	
१४०	५४५८ (४)	गौदोलीकी वारता	जगमाल मालावत	१८५६	१-२७	
१४१	४०२२	गुणकरंडगुणावली चौपई	ऋषि दीप	१८२१	२२	
१४२	४०५३	गुणकरंडगुणावली चौपई	"	१९वीं	२७	लि. क. आर्या नाथी
१४३	४८२०	गुणकरंडगुणावली रास	दीप (?)	१८७४	२०	रचनाकाल सं. १७५७
१४४	६०२७	गुणकरंडगुणावली		१८३९	१५	"
१४५	६५४२	गुणकरंडगुणावली चौपाई	दीप ऋषि	१८३३	३६	लि. क. पं. नवनिधिविजय, सथाणा नगरे
१४६	४०१३	गुणहरिरस		१७९६	७	राबडियास ग्रामे लिखितम्
१४७	५०६४	गुणावली रास	गजकुशल	१९वीं	२६	पत्र २ से ९ और अन्य अप्राप्त रचनाकाल सं. १७१४
१४८	४०५५	गुणावलीचरित्र चौपई	शान्तिहर्ष	१८७४	२१	रचनाकाल सं. १५१३ आश्विन कृ. ३, बडलू ग्रामे लिखितम्
१४९	५१०३	गुरुचेलारी कथा		१७वीं	२	त्रुटित
१५०	७१८०	गुरुपरंपरा ढाळ	ज्ञानविमल	१९वीं	१२	
१५१	५४५८ (३)	गोतमरासा		१८३८	४	
१५२	७५६७	गोतमपृच्छा चौपाई		१७५६	१३	लि. क. मुनि गङ्गजी
१५३	६१२८	गोतमपृच्छा बालावबोध	जिनसूरि	१८८३	६८	
१५४	६५४३६ (७)	गोतमलघुस्तवन	समयसुन्दर		३८-४०	
१५५	५०६९ (२)	गोतमस्वामीरास	उदयवन्त	१९०६	३-८	
१५६	५४३६ (३)	गोतमस्वामीरास			१७-२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५७	४४५२(५)	गोरखपतङ्गा	गोरखजी	१८वीं	१० वां	
१५८	४१५१	गोराबादलकथा आदि गुटका		"	६०	१४ कृत्तियों का संग्रह
१५९	७७२२(६)	गोराबादल चौपई	हेमरतन	"	५७-६५	सादड़ीमें रचित
१६०	४६२४(२)	गोराबादलरी बात	जटमल	१७८७	६-१५	लि.क. जयसोभाग्य सिरियारी मध्ये
१६१	७४४४(११)	गोतमरासो		१८८५	२०५-२१२	
१६२	४४५२(७६)	घूघूचक्र		१८वीं	१२३ वां	उलूकके सम्बन्धमें शकुन-विचार
१६३	४६२४(१०)	घोड़ांरा बषाण		१७९३	११-१२	अन्तमें 'नाहरखान राजसिधो- तरो छंद' है
१६४	४४५२(६३)	घोड़ांरा बणाव		१८वीं	१३० वां	
१६५	४७२९	घटीज्ञान		१९वीं	१	
१६६	५१२३(२)	चक्रकेवली		१८वीं	२-११	
१६७	६९१२	चर्चासमाधान		१८१८	२३६	र.का. सं. १७८१
१६८	७१५४	चतुर्मुकुटचन्द्रकिरणरी कथा		१८७७	३१	जीर्ण प्रति
१६९	५३०६(२१)	चतुर्विंशतिस्थानकसूची			२४३-२४८	
१७०	४६१५(१०)	चंदकंवररी वात		१८८७	३४८-३६०	रचनाकाल सं. १७४०
१७१	५३४१(२)	चंदकंवररी वात तथा स्फुट कवित्त		१९वीं	५८-६७	
१७२	७७५३(११)	चंदकंवररी वात	कलश कवि	१८३७	४७-६०	
१७३	५४५८(१)	चंदकंवररी वारता	सकलकीर्ति	१८३८	४	चित्र सं. १
१७४	४६१६(३)	चंदकुमररी वार्ता	हंस कवि	१८७५	४७-५४	लि.क. पं. मनरङ्गसागर लि.क. पं. हुकमसोभाग्य

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५	४१४८	चंदकुंवरकी वात		१८१६	१८	*
१७६	४६११ (३)	चंदकुंवरकी वारता	कवि राय	१८३० से १८३२	१-६	
१७७	७३७६	चंदनबालाभगवती गीत	भक्तिलाभ	१८वीं	१	
१७८	४०५८	चंदनमलयागिरिकी चौपई	भद्रसेन मुनि शिष्य (?)	१८६५	१०	लि.क. ऋषि उमेदचंद, स्थान-ओरंगाबाद, लसकर मुगजादे मध्ये
१७९	४४२१	चंदनमलयागिरि चौपई	यशोवर्द्धन	१७८६	११	रचनाकाल सं. १७४७ आ.कृ. ६
१८०	४४५२ (४८)	चंदनमलयागिरिरी वारता	भद्रसेन	१८०६	१०१-१०२	
१८१	६३३६	चंदनमलयागिरि चौपई	भद्रसेन	१८३४	८	
१८२	७०७६	चंदनमलयागिरि चौपई		१८वीं	५	
१८३	५०८४ (२)	चंदनमलयागिरिरी वात (सचित्र)		१८३६	२६-३५	३४वां पत्र अप्राप्त, बीकानेर- कलमके चित्र
१८४	५४१८ (२४)	चन्द्रगुप्तस्वप्न		१९वीं	१५०-१५२	
१८५	४६१४ (३५)	चन्द्रप्रभविवाहलानी ढाळ		१८७७	२५६-२५७	
१८६	४६१८ (१)	चंद्रराजाकुमरकी कथा		१७६६	४-२०	प्रथम तीन पत्र अप्राप्त
१८७	७०७२	चंद्रराजाचरित्र	मोहनविजय	१९वीं	१८५	अपूर्ण, प्रथम व अन्तिम पत्र अप्राप्त
१८८	६८५०	चंद्रराजाचौपई	विद्यारुचि	१८०६	४१	रचनाकाल सं. १७७७, सिरौही नगरे
१८९	४०५६	चंद्रराजा रास	मोहनविजय	१८१०	८२	रचनास्थान-राजनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०	६३४६ (२)	चंदराजानो रास	मोहनविजय	१६०६	७०-३५४	लि.क. हरकचंद पाण्डे
१६१	७२४६	चंदराजानो रास	"	१८४७	६८	रचनाकाल सं. १७८३
१६२	७४२०	चंदराजानो रास	"	१८४६	१२३	लि.क. पृथीराज
१६३	७४०७	चंद्रलेखाचौपाई	मतिकुशल	१७७८	१८	
१६४	४०६०	चंद्रलेहाचरित्र चौपाई	"	१८०५	१६	रचनाकाल सं. १७२८
१६५	४७६५	चंद्रलेहारास	"	१८वीं	२६	
१६६	४७८६	चंद्रलेहारास	"	१६वीं	२४	
१६७	५०६६	चंद्रायण कथा	ऋषि कर्मचंद	१८वीं	२	
१६८	५३७६ (१८)	चंद्रायण कथा	मलयकीर्ति		२११-२१३	
१६९	४७४६	चंद्रार्की		१८वीं	११	
२००	४६१४ (५७)	चरित्ररत्नत्रयगीत		१८७७	३१२-३१३	
२०१	६३६३	चातुर्मासिक व्याख्यानपद्धति		१६११	२४	लि.क. टेकचंद
२०२	५१०५	चार जणारी वात		१६वीं	३	
२०३	७२३१	चार भावना (गद्य)		१७वीं	११	
२०४	६२६२	चारिप्रत्येकबुद्धचरित्र	समयसुन्दर	१६७६	२७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२०५	४४५३ (३)	चित्तोड़गढ़की गजल	खेतल	१८वीं	६	रचनाकाल सं. १७४८
२०६	४८०६	चित्तोड़गजल	"	१६वीं	२	
२०७	४८२२	चित्तोड़गजल	"	१७८३	५	तीसरा पत्र अप्राप्त
२०८	४४५२ (१००)	चित्रबंधकाक		१८वीं	१३४-१३५	
२०९	४७६७	चित्रसंभूति चौपाई	ज्ञानसागर	"	३५	
२१०	४२८७ (१४)	चेतनगीत	मनराम	"	११५-११६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२११	७८१० (३)	चेतनदासकी बाणी	चेतनदास	१८वीं	२३०-२६८	
२१२	४४५२ (६१)	चौबोलीराणीरी कथा	जिनहर्ष	"	११८वाँ	
२१३	७४४४ (१३)	चौढालियो (दानशील तप संवाद)	समयसुंदर	१८८५	२४५-२५३	
२१४	४०६१	चौथमाताजीरी कथा		१८वीं	३	बीलाड़ामें लिखित
२१५	६०६७	चौबीसचौक	अमृत कवि	१८५३	७	लि.क. भानुकीर्ति, जयनगरे
२१६	६६१८	चौबीस तीर्थकरोकी पूजाविधि		१६वीं	६६	
२१७	७४२५	चौसठमार्गणाविचार		"	१३	
२१८	५०६१	छत्तीस अध्यनगान	सागरचंद	१६४२	१५	लि.क. पं. हर्ष, मुलतानमध्ये
२१९	४४५२ (७८)	छींकचक्र		१८वीं	१२३वाँ	छींकके संबंधमें शुभाशुभ फलका परिचय
२२०	४३०८ (३)	छीतरदासजीका सबैया	छीतरदासजी	"	४४७-४५५	३५ छंद
२२१	४८४७	ज्योतिषवर्त्तारो		१८४३	३०	लि.क. ऋषि भाणजी
२२२	५५२८	ज्योतिषसार	कवि कृपाराम	१६०७	४७	लि.क. रामकुंदार
२२३	४४५२ (६४)	जगदेवपमाररा कवित्त	कंकाली भाटण (?)	१८वीं	११६वाँ	
२२४	७१७२ (२)	जगदेवपरमाररी वात		१६३६	१-३५	
२२५	७७५२३ (१४)	जगदेवपुंवाररी वात		१८३७	७१-८८	अपूर्ण
२२६	४६१६ (१)	जगदेवरी वात		१८७५	४४	अन्त में ५ अन्य वार्ताएँ हैं।
२२७	४४५२ (७१)	जड़ भरथरा कहाँ श्लोक आदि		१८वीं	१२१ वाँ	सवाई कूरम नरेश (जयपुर) की पराजय और मारवाड़के बख्त-सिंहकी विजयका वर्णन, बुधसिंह हाडाका वर्णन भी है।
२२८	४८४८	जन्मपत्रीगणित		१६वीं	२६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२६	४५२४	जन्मपत्रीगणितक्रम (ब्रह्मतुल्य)		१६वीं	२५	
२३०	६४३४	जन्मपत्रीप्रकार		१७५६	६	
२३१	७४२७	जम्बूग्रजभयण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३२	६२६८	जम्बूगुणरत्नमाल		२०वीं	३६	
२३३	४२७३	जम्बूगुणरत्नमाल	आणंद जेठूमल	१६वीं	४३	प्रथम पत्र अप्राप्त
२३४	४१५७	जम्बूचरित्र रास	पदमचंद मुनि	"	३३	लि.क. परताबाई, स्थान-अजमेर
२३५	७०४६	जम्बूचरित्र		१८७२	५५	
२३६	७५३३	जम्बूचरित्र		१७६६	६०	
२३७	७६०३	जम्बूचरित्र		१८६१	११३	
२३८	५३७६ (३)	जम्बूस्वामी कथा			४२-८०	विहारी विप्रेण लिखित
२३९	६७३५	जम्बूस्वामी कथा		१८५६		लि.क. ऋषि माणकचंद
२४०	६७८१	जम्बूसरकी कथा		१६वीं	४	
२४१	४०६३	जम्बूस्वामीचरित्र चौपई	पद्मचंद	१८५६	३३	लि.क. जीवनराम ऋषि, स्थान-नागौर
२४२	७३५२	जम्बूस्वामीकथा		१८६६	२०	चुरू मध्ये लिखित
२४३	६८८४	जयसुखवंद्यक		१७३३	८	लि.क. मतिविमल
२४४	५४१८ (१३)	जलगालणविधि		१६वीं	११४-११६	
२४५	४४५२ (३२)	जलाल गहाणीरी वात		१८०७	३५ से ४०	लि.क. पं. प्रीतसोभाग्य गणि
२४६	४०६२	जलाल गहाणीरी वारता		१८६०	२०	लि.क. ऋषि टेकचंद सरियारीग्रामे
२४७	७७६६ (५)	जलाल गहाणीरी वारता		१८५६	२-४२	
२४८	५८६५	जलालबूबनावारता सचित्र		१८वीं	३२	चित्र सं. १२

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४९	४०६४	जामघतीचौपई	सूरसागर	१८४७	७	बीकानेरमें लिखित
२५०	४८१७	जिणरस	वेणीराम	१८४१	१७	
२५१	७१०७	जिनेश्वरपूजापद्धति		१८वीं	१६८	र.का. सं. १६५१
२५२	५०७३	जीवदयासञ्ज्ञाय	सोमसुन्दर सूरशिष्य	"	१	
२५३	७४४४ (३)	जीवविचार		१८८५	१२१-१२९	
२५४	४९१४ (२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुचंद्र	१८७७	२४२-२४४	" सं. १८५८
२५५	४९०५ (७-९)	जुवानीरा ब्रूहा आदि			३१-३६	अर्थ सहित पहेलियां भी हैं।
२५६	५४५६	जैनबोलसंग्रह		१९वीं	५३	
२५७	४९१४ (५४)	जोगीरास	जिनदास	१८७७	३००-३०२	*
२५८	५४१८ (२०)	जोगीरासा	"	१९व	१४३-१४५	
२५९	५४१८ (२५)	जोगीरासा	भगोतीदास	"	१५२-१५४	
२६०	४२८७ (४)	जोगीरासो	जिणदास	१७२६	१४-१८	लि.क. रामचन्द्र
२६१	५४१८ (३१)	टण्डाणा गीत		१९वीं	१७०-१७१	*
२६२	६८४१	ढाल, पट्ट आदि		"	६६	
२६३	४०६७	ढालसार	चोथमल	"	१९	रचनाकाल सं. १८५६
२६४	६७३७	ढालसागर		१८६७	११९	लि.क. ऋषि खुशालचंद
२६५	६१२२	"	केशराज	१८वीं	१०१	देशी रागोंमें पद
२६६	७२२४	"	गुणसागर	"	७७	रचनाकाल सं. १६७६ हरिवंश- गाथा
२६७	७३७५	"	"	१७९८	७६	
२६८	४०३३	ढालसागरप्रबंध	"	१७४०	१०४	ढाल १५१

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६६	४०६६	ढालसागरप्रबन्ध	गुणसागर	१७५६	८६	लि.क. ऋषि जोधनजी
७०	५०८४(१)	ढोलामारू, सचित्र, अपूर्ण, त्रुटित		१८३६	१४	स्थान—मेदपाट श्रीसाहबा नगर चित्र सं. ३६ बीकानेर में लिखित पत्र सं. ४० पर ग्रन्थ का अन्तिम अंश है
२७१	७७२०(१)	ढोलामारूचौपई	कुशललाभ	१७५६	१-२३	
२७२	६४३८	ढोलामारवणीचौपई	वाचक कुशललाभ	१८वीं	२४	रचनाकाल सं. १६७३
२७३	५८६६	ढोलामारवणीरा दूहा, सचित्र		"	६१-११४	स्थान—जैसलमेर, अमरसती पठनार्थ रचनाकाल सं. १५३०, चित्र सं. ३३
२७४	७७४७	ढोलामारूनी वात	कुशललाभ		५६	रचनाकाल सं. १६१७, भंवरजी अजर्यासिहजी पठनार्थ जैसलमेर में लिखित ।
२७५	६७२०	ढोलामारूरा दूहा		१६वीं	४७	
२७६	४६२४(१३)	ढोलामारूरी चौपई	कुशललाभ	१७७०	१-३४	
२७७	७७४८	तर्कप्रबन्ध	सरूपदास	१६वीं	५७	
२७८	७००७	ताजिकसार	हरि भट्ट	१८५०	२६	
२७९	४८७५	तुरकशकुनावली (रमलग्रन्थ)		१७६६	३	लि.क. देवेन्द्र सौभाग्य
२८०	७५३५	तेजसिहजीरा सवैया		१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
२८१	४६१४(५०)	तेरहकाठिया		१८७७	२७६वां	
२८२	७६०४	तंडुलवेयालियंपह्न	पाशचन्द्र	१८३३	४१	लि.क. ऋषि मोतीचंद डूंगरसी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	७२६५	थावन्चाचौपई सविवरण	सययसुन्दर	१८वीं	१८	रचनाकाल १६६१
२८४	४६०४(२)	थावरदेवतारी वात		१८६१	३५-६५	लि.क. कल्याणसौभाग्य
२८५	४०६८	थूलभद्रनवरसो	उदयरतन	१८४६	५	रचनाकाल सं. १७५६
२८६	४८३२	थूलभद्रनवरसो	"	१८५२	८	लि.क राजविजय
२८७	६२५५	थूलभद्रनवरसो	"	१८वीं	२	
२८८	७४४४(१४)	थूलभद्रनवरसो		१८८५	२५३-२६०	
२८९	७४२१	दण्डक सस्तवक		१९वीं	६	
२९०	६५३१	द्रौपदीरास	कनककीर्ति	१८वीं	४१	जैसलमेर में रचित
२९१	६३५६	द्रौपदीरास चौपई	"	१८१५	४०	जयपुर में लिखित
२९२	६४१६	द्वादशभावफल		१९वीं	४	
२९३	७४४४(५)	दण्डकप्रकरण सटवार्थ		१८८५	१३६-१४३	लि.क. नेमविजय
२९४	६४४६(५)	दत्तलाल को कक्को	दत्तलाल	१९वीं	५-११	
२९५	४६१४(४६)	दर्शन बत्तीसी		१८७७	२७७-२७८	सं. १८५४ में रचित
२९६	६५४४	दशार्णभद्र चौढालियो	दीप ऋषि	१९वीं	३	लि. स्थान-अहिपुर
२९७	६३६६	दशावली		"	६	लि.क. उपाध्याय पद्मउदय गणि
२९८	६६४८	दादूजीका शब्द	दादूजी	१८००	७८	आद्यन्त पत्र शोभन
२९९	६६२६	दादूजीकी वाणी आदि गुटका	दादूजी आदि	१७८७	२६८	गुटके में विविध कृतियों का संग्रह है
३००	६६४६	दादूजीकी साखी	"	१८वीं	६६	
३०१	६६५०	दादूजीकी साखी	"	१८६६	६७	लि.क. लक्ष्मणदास
३०२	४३०८	दादूवाणी आदि	"	१८वीं	४१०	विभिन्न सन्तों के ४४४० पदों का संग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०३	६६३७(१)	दादूवाणी आदि	दादूजी आदि	१८११- १८१६	१०६	लि.क. रामदास, निराणा ग्रामे
३०४	६६५४(१)	दादूशब्द	"	१६वीं	६५	दादू, कबीर, सूर, मीरां आदि के पदों का संग्रह
३०५	४१४६	दाढाळारी वात		१८१७	२३	
३०६	५४३६(६)	दानशील तपभावना			४४वाँ	
३०७	५४३६(११)	दानशील तपभावना	दशार्ण भद्रराज		४६-५६	
३०८	६८४५	दानशील तपभावनासंवाद	ऋषिकुशलशिष्य	१६वीं	४५	
३०९	५६६७	दानादिकसंवाद	समयसुन्दर वाचक (?)	१६६२	५	सांगानगर मंझादि
३१०	५४१८(१७)	दानाधिकार	समयसुन्दर	१६वीं	१२४-१३४	
३११	७७२०(२४)	दिल्लीपातसाहीरो विवरो		१८वीं	१२-१८	
३१२	४०१७	दिवालीकल्प बालावबोध	जिनसुन्दर	१६वीं	२६	
३१३	४४५२(२८)	दूहा	कवि ज्ञान	"	२६वाँ	पुरुष-शृंगार और स्त्री-शृंगार के १६-१६ दूहा
३१४	७७२१(१३)	दूहो श्रीमहाराज जसवन्तसिंहजीरो	म. जसवन्तसिंहजी	१६३१	२००वाँ	हदिरस की प्रशंसा में रचित
३१५	६०१५	देवकीरी चौपाई		१६वीं	६	
३१६	४४५२(७६)	देवीचक्र		१८वीं	१२३वाँ	
३१७	७३७३	देशना शतक		१७वीं	१६	
३१८	४८५५	दोषकेवली		१८वीं	१	लि.क. मानसिंह
३१९	४६१४(५)	दोहाशतक	रूपचंद	१८७१	१६२-१६५	
३२०	४६१५(१३)	धमाळ		१८८७	३८४-३८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२(५१)	धमाळ वसन्त	लालचंद	१८वीं	१०७ वाँ	लि.स्था. जैसलमेर
३२२	७३६६	धर्मबुद्धि चोपाई		१७६०	१६	
३२३	५४१८(१५)	धर्मवत्तीसी		१६वीं	११६-१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मबावनी		१८३७	६०-६६	
३२५	४०६६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चोपाई	लालचंद	१८२५	२५	अपूर्ण र.का. सं० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन	गुणसागर	"	६	६८वाँ पत्र अप्राप्त
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोढाळियो			३	
३२९	६६५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८८	६५-६६	
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८८५	८७-८९	रचनाकाल सं. १६७३
३३१	४०७०	नलदमयन्तीचौपई	समयसुन्दर	१८३६	२५	
३३२	६६१३	नवकारमंत्रदर्शन	लब्धिविजय	१६वीं	१३५	स्फुट
३३३	७६६७	नवकारवालीनी सज्भाय		"	१	
३३४	६४१२	नवपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४६१	नसीहतनामा और देवीदासके कवित्त	साईदास	१६वीं	१३८	सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र लि.क. पं. ईश्वर, अहमदाबादे
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचौपई		१८२४	६	
३३८	६३६०	नागदमण छंद		१८वीं	४	
३३९	४६२४(३)	नागदमणकथा	समयसुन्दर	१७८७	१५-१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमंतर		१८वीं	२३ वाँ	
३४१	५०६६	नागिला भवदेव रास		१७४१	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१६वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६६३७ (३)	नामदेवजीका सबद	नामदेव	१८११- १८१६	१८७-२०१	लि.क. रामदास, निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१६वीं	१२	
३४५	७८१६ (३)	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		लि.क. कायस्थ भार्वासिंह
३४६	४४५२ (५०)	नासिकाविचार		१८वीं	१०७वां	
३४७	६७४६ (१)	नासिकेतपुराणकथा	वातिक नन्ददास	१६वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	नन्ददास	,,	५१	
३४९	४२६३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि.स्था. लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८ (३३)	निर्वाणकांड		१६वीं	१७३-१७५	
३५१	४४५२ (२५)	निसाणी	सूरज	१८वीं	२४वां	
३५२	५०७७ (२)	नेमराजीमती सज्जाय	यशोदेवसूरिशिष्य	१८०२	१ ला	
३५३	४६१४ (३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५-२५६	र.का. सं. १६७० सूरतबंदर
३५४	५३३०	नेमराजुलका सवेया		१६वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजुल बारामास	कवियण (?)	,,	१	
३५६	६३०४	प्रत्येकबुद्धचौपाई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लिखितं जैपुरमध्ये
३५७	६५२६	प्रत्येकबुद्धचौपाई	,,	१८२५	२८	लि.क. परमानन्द शिष्य जैतसी
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलबन्धु	१८१३	२८	र.का. सं. १७२२
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३६	२०	चूडामणिने लिखवाया प्रथम पत्र अप्राप्त
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचौपाई		१८६०	२६	पाटणमध्ये लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२१	४४५२(५१)	धमाल वसन्त		१८वीं	१०७ वाँ	
३२२	७३६६	धर्मबुद्धि चोपाई	लालचंद	१७६०	१६	लि.स्था. जंसलमेर
३२३	५४१८(१५)	धर्मबत्तीसी		१६वीं	११६-१२१	
३२४	७७५३(१२)	धर्मबावनी		१८३७	६०-६६	अपूर्ण
३२५	४०६६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चोपाई	लालचंद	१८२५	२५	र.का. सं० १७४२
३२६	५२२३	धर्मोपदेश		१६वीं	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
३२७	४८०८	धामनो वर्णन		"	६	
३२८	५४३६(१२)	नरक रो चोढालियो	गुणसागर		३	
३२९	६६५४(२)	नरसीमाहेरो		१८८८	६५-६६	६८वां पत्र अप्राप्त
३३०	५२०२(२)	नरसीजीको माहेरो	वसन्त	१८८५	८७-९१	
३३१	४०७०	नलदमयन्तीचोपाई	समयसुन्दर	१८३६	२५	रचनाकाल सं. १६७३
३३२	६६१३	नवकारमंत्रदर्शन		१६वीं	१३५	
३३३	७६६७	नवकारवालीनी सज्जाय	लब्धिविजय	"	१	
३३४	६४१२	नवपदपूजा		१८८५	१४	
३३५	५४६१	नसीहतनामा और देवीदासके कवित्त		१६वीं	१३८	स्फुट
३३६	४४५२(४)	नागदमण		१८वीं	७ से ६	
३३७	७०७३	नागदमणचौपाई	साईदास	१८२४	६	
३३८	६३६०	नागदमण छंद		१८वीं	४	
३३९	४६२४(३)	नागदमणकथा		१७८७	१५-१८	
३४०	४४५२(२२)	नागमंतर		१८वीं	२३ वाँ	सर्प-विष उतारनेके २० मंत्र
३४१	५०६६	नागिला भवदेव रास	समयसुन्दर	१७४१	५	लि.क. पं. ईश्वर, अहमदाबादे

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	४३१२	नाथियाका सोरठा	नाथिया (?)	१६वीं	११	१४० सोरठे
३४३	६६३७ (३)	नामदेवजीका सबद	नामदेव	१८११- १८१६	१८७-२०१	लि.क. रामदास, निरोणा ग्रामे
३४४	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१६वीं	१२	
३४५	७८१६ (३)	नारायणलीला	माधवदास	१८३१		लि.क. कायस्थ भार्वासिंह
३४६	४४५२ (५०)	नासिकाविचार		१८वीं	१०७वाँ	
३४७	६७४६ (१)	नासिकेतपुराणकथा	वार्तिक नन्ददास	१६वीं	८८	
३४८	६११०	नासिकेतपुराण भाषा	नन्ददास	,,	५१	
३४९	४२६३	नासिकेतमहापुराण भाषा	स्वामी नन्ददास	१८३७	४४	लि.स्था. लालुवास प्रतापसिंहराज्ये
३५०	५४१८ (३३)	निर्वाणकांड		१६वीं	१७३-१७५	
३५१	४४५२ (२५)	निसाणी	सूरज	१८वीं	२४वाँ	
३५२	५०७७ (२)	नेमराजीमती सञ्ज्ञाय	यशोदेवसूरिशिष्य	१८०२	१ ला	
३५३	४६१४ (३४)	नेमिनाथनी साखी		१८७७	२५५-२५६	र.का. सं. १६७० सूरतबंदर
३५४	५३३०	नेमराजुलका सबैया		१६वीं	२५	
३५५	७३०३	नेमराजुल बारामास	कवियण (?)	,,	१	
३५६	६३०४	प्रत्येकबुद्धचौपाई	समयसुन्दर	१८६७	२४	लिखितं जैपुरमध्ये
३५७	६५२६	प्रत्येकबुद्धचौपाई	,,	१८२५	२८	लि.क. परमानन्द शिष्य जैतसी
३५८	५२७०	प्रद्युम्नप्रबन्ध	कमलबन्धु	१८१३	२८	र.का. सं. १७२२
३५९	५२७४	प्रद्युम्नप्रबन्ध	समयसुन्दर	१७३६	२०	चूड़ामणिने लिखवाया
३६०	५०६८	प्रदेशीरायचौपाई		१८६०	२६	प्रथम पत्र अप्राप्त पाटणमध्ये लिखित

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६१	६०३३	प्रबोधचिंतामणिचौपई	धर्ममंदिर गणि	१८५८	७७	लिखितं बीकानेरमध्ये
३६२	५१३७	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक		१९वीं	५७	
३६३	४६१५ (१४)	प्रश्नोत्तररीरत्नमाला	मंगनीराम		३८६-३६५	र.का. सं. १८८६
३६४	५१०१	प्रहेली	जिनहर्ष	१९वीं	५	आद्य २ पत्र मसीप्लुत
३६५	५३२६	प्रश्नशकुनावली		"	१२	
३६६	६३४६ (१)	प्रश्नोत्तरसार्द्धशतकनो बीजक	क्षमाकल्याण	१९०६	७०	लि.क. हरकचंद पांडे
३६७	६८५४	प्राकृतप्रबन्धसंग्रह	मोहनविजय	१८६८	११६	लि.क. बख्तावर, बीकानेरमध्ये
३६८	४७६२	प्रास्ताविक दूहा	जसराम आदि	१८वीं	३	
३६९	५३६५	प्रास्ताविक दूहा		"	६	
३७०	४८०६	प्रास्ताविक दोहरा	वृन्द आदि	१९वीं	३	
३७१	४८१५	प्रास्ताविक दोहरा	"	१८३६	३	लिखितं राजपुरमध्ये
३७२	५३४५	प्रास्ताविक पत्र		१९वीं	८	पत्नी का पति के प्रति आदि
३७३	४४५२ (६६)	प्रास्ताविक श्लोकदूहा आदि	उदैराम आदि	१८वीं	१३२-१३४	
३७४	४७६३	प्रियमेलकचौपई	समयसुन्दर	"	७	ऋषि भीकमजीपठनार्थ
३७५	४८२१	प्रियमेलकचौपई	"	१७वीं	६	
३७६	६८७५	प्रियमेलकचौपई	"	१९वीं	८	लि.क. लब्धिकीर्ति गणि राणपुरमध्ये
३७७	५४१८ (२८)	पंचगतिकी वेली	मुनि हर्षकीर्ति	"	१६५-१६७	र.का. सं. १६२३
३७८	४८५०	पञ्चांगानयनविधि भाषा	मेघराम लब्धिविजयशिल्प	"	२	र.का. १७२३
३७९	४६१४ (५८)	पंचेन्द्रियकी वेली	ठाकुरसी	१८७७	३१३-३५	र. सं. १५८५
३८०	५२६५	पंचेन्द्रियचौपाई		१८७२	५	उज्जैनमध्ये लिखितं
३८१	५३४१ (१)	पञ्चावीरमदे वात		१९वीं	२ से ५७	लि.क. बोरा बीरानन्द

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८२	४६१५(४)	पन्नावीरमदेरा वात	शेरसिंह	१८८७	७६-१३४	७८वां पत्र खंडित
३८३	७१६६(१)	पन्नावीरमदेकी वात		१६७७		गुटका
३८४	४८०७	पद्मिनीचौपई	हेमरतन	१८२७	५१	
३८५	४६१०	पद्मिनीचौपाई	हेमरतन	१६वीं	३१	
३८६	४६१४(१०)	पद	सकलकीर्ति	१८७१	२०७वां	
३८७	४६१४(३१)	पद		१८७७	२४८-२४६	स्फुट
३८८	४०७२	पदमसीपदमावतीचौपाई	मुनि माल	१८वीं	२२	
३८९	७७२१(५)	पनरबादशाशकुनावली		१८२५	११८-११६	
३९०	४६१६(६)	पनरमी विद्या		१८८१	८४-६६	
३९१	४४५२(४६)	पनरमी विद्या स्त्री-चरित्र		१८०५	१०३से१०७	लि.क. पं. प्रीतसौभाग्य गणि
३९२	४०७६	परदेसीप्रबन्ध	ज्ञानचंद	१८४८	३१	
३९३	७४१२	परदेसीप्रबोधचौपई	"	१७५५	२२	
३९४	४८२७	परदेशीराजारी चौपई		१८८५	२६	लि.स्था. बड़ली
३९५	५४१८(२६)	परमादि (प्रमाद)	गोपालदास	१६वीं	१६७-१६८	
३९६	४०७३	पलकदरियावरी वात		"	३६	लि.क. अखुजी
३९७	४०७४	पांडवचरित्रचौपई	लाभवर्द्धन	१७८५	५६	र.का. १७६७
३९८	७७२३	पांडवविजय	मलूकदास	१६२६	३७७	लि.क. जीताराम, फतेहपुर मध्ये
३९९	४६१४(५५)	पाशर्वनाथआदित्यवारकथा		१८७७	३०२-३११	सं. १६७० की प्रति से प्रति- लिपि की गई
४००	६४३३	पाशाकेवली	गर्ग ऋषि	१६६६		लि.क. रूपां साधवी
४०१	७६७०	पाशाकेवली		१६वीं	५	जोधपुर में लिखित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०२	५१२३ (३)	पाशाकेवली अम्बजदी	चन्द (?)	१८वीं	१२-१६	चित्र सं. ७ ग्रं. सं. ५४५७ के साथ संयुक्त। थानलानगरे, मालवदेसे लिखितं
४०३	६२८२	पाशाकेवली अम्बजद		१६वीं	१६	
४०४	७८२३	पिङ्गलरो समीयो		१८वीं	८	
४०५	४४५५	पिङ्गलशास्त्र टीका		१८७१	२३	
४०६	७१४३	पुण्डरीककुडरीकनी ढाळ	मुनि हर्ष	१६वीं	५	र.का. सं. १६६२ सांगानेर में रचित जीर्ण और त्रुटित प्रति
४०७	५११६	पुण्यसारचरित्र	हर्षचन्द्र गणि	१८७५	३	
४०८	७५३०	पुण्यसारचौपाई	पुण्यकीर्ति	१८वीं	५	
४०९	६४३७ (१)	पुरन्दरकुंवरकथा	मालदेव	"	४८	
४१०	४८२६	पुरन्दरकुंवरचौपाई	रतनविमल	१६वीं	२१	जीर्ण और त्रुटित प्रति
४११	४६७६	पूर्णमाविचार		"	४	
४१२	५३३२	पूर्वदेशचैत्यप्रवाड़ी		"	३	
४१३	४६०३	पृथ्वीराजरासो	चन्द कवि	"	१२६	
४१४	७१२८	पृथ्वीराजरासो	"	१७४७ से	६६	"
४१५	७१५०	पृथ्वीराजरासो	"	१७५३		जीर्ण गुटका लि.क. चिरञ्जी मुफसलाल केकड़ी निवासी कई रचनाओं का संग्रह
४१६	७१६४	पृथ्वीराजरासो (पद्मावतीको समो)	"	१८वीं	१६२	
४१७	७१६८	पृथ्वीराजरासो आदि		१६४१	७६	
४१८	७१६९	पृथ्वीराजरासो आदि		२०वीं	११८	
४१९	७१६६ (२)	पृथ्वीराजरासो (महोबाको समो)		"	"	
४२०	४६१४ (१६)	पोस्तीनोरास	ज्ञानभूषण	१६७७	"	
				१८७१	२१८-२२२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२१	४०७५	पोस्तीरा रासो	बखतो	१८८२	४	
४२२	७७२२ (१२)	फुटकर औषध		१८वीं	११६-१२५	बधिरता, वायगांठ आदि रोगों की औषध
४२३	४६२४ (१८)	फुटकर कवित्तादि		१८वीं	२७-२६	
४२४	४६२४ (७)	फुटकर ज्योतिष		१७६३	१४-१५	पन्द्रह तिथियों के दोहे आदि
४२५	५२७२	फूलकुंवर फूलकुंवरीरी वात		१६१२	१४	र.का. सं. १८५२
४२६	५०८१	फूलकुंवर फूलकुंवरीरी वात	ब्रह्म जिणदास राजसिंघ कवि तेण कमलकलश शिष्य (?)	१८६०	७२	चित्र सं. ४५; र.का. सं. १८३०
४२७	५५००	फूलजी फूलमतीरी वात		१८४६	२६	अन्त में चौढाळिया आदि
४२८	४६१४ (३७)	ब्रह्मजिणदासनी वीनती		१८७७	२५८-२५६	
४२९	७७४३ (३)	ब्रह्मनिरूपण		१७८४	४६-५३	लि.क. बाई सिरैकंवरी
४३०	५८६७	बगसीराम प्रोहित होरांकी वात		१६वीं	६५	*
४३१	७७५३ (७)	बांमणवाड़रो स्तवन	ऋषि रायचन्द्र	१८३७	३६-४१	
४३२	४६१४ (६२)	बाई जतन ने लीलवणनी विगत		१८७१	३२१ वां	
४३३	७१३६	बाईस परीक्षाकी चौपाई		१८२२	४	र.का. सं. १८२२
४३४	४३२०	बातसंग्रह		२०वीं	५२२	राजस्थानी भाषा की चौबीस प्रकीर्ण वार्ताओं का संग्रह,
४३५	७८१७	बादशाही हाल	चन्द्रकीर्ति	१६वीं	८-५०	
४३६	४६१४ (२७)	बारह अनुप्रेक्षा		१८७७	२४४-२४६	
४३७	४७२१	बारह पुनमरो विचार		१६वीं	१	
४३८	४७३७	बारह भवनफळ		१८४०	५	लि.क. सुमतिसागर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३९	७४४४(१५)	बारहभावना	जयसोम शिष्य	१८८५	२६०-२७०	जैसलमेर में रचित
४४०	७७५४ (१,२,३)	बारहमासीसंग्रह		१९२२	१५	भरतराजाका बारह मासा र.का. सं. १८९०
४४१	४२८७(१५)	बारहमासो	रामचंद्र	१८वीं	११६-१२७	
४४२	७६२१	बालचन्द्रवत्तीसी	बालचन्द्र	२०वीं	७	
४४३	४१४२	बुद्धिसेणचौपाई	तिलक सूरि	१९वीं	६६	
४४४	७५४२	बोलविवरण	आचार्य केशवजी (?)	१७वीं	६२	
४४५	७७५३(१०)	भंमरागीत	महमद	१८३७	४५-४६	
४४६	५८८५	भक्तसार	शालिग्राम	१९वीं	२२	
४४७	७७२१(१)	भङ्गीपुराण	हरदास	१८२५	१-२५	र.का. सं. १८५५ शिव-स्तुति, कई स्थानों पर चित्र भी हैं।
४४८	७७४४(४)	भजनसंग्रह	चैना	१७५८	१८-२२	
४४९	५१२३(७)	भडुली	भडु कवि	१८वीं	२९-४१	लि.क. चैनकुंवरी
४५०	४४५२(१७)	भडलीदूहापचीसी	"	"	१९ वाँ	
४५१	६७२८	भडलीपुराण	"	१८८१	१२	
४५२	५१२२	भडलीरा दूहा	भडु कवि	१८२८	३	
४५३	४४५२(६८)	भडलीवाक्य	"	१८वीं	१३२ वाँ	
४५४	५८००	भडुलीवाक्य	"	१९१३	१४	१५ दूहा
४५५	७६३०	भरताधिकार		१७९३	५३	लि.क. ब्रजवासी, अलवर
४५६	४८३०	भवानीछन्द		१९वीं	२	लि.क. त्रीकमजी, वढवाणमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५७	४७६६ (२)	भाषा लीलावती (पद्यानुवाद)	लालचंद	१७७५	१ से १५	म. रायसिंह, बीकानेर के अमात्य कोठारी नेणसी पुत्र जैतसी की प्रार्थना से उनके गुरु द्वारा रचित
४५८	७४१०	भुवनद्वारविचार		१६वीं	२०	
४५९	७७२२ (१०)	भैरव आदि की बोलीविचार		१८वीं	१०७-११४	
४६०	६७०२	भोगलपुराण (उमामहेश्वरसंवाद)		१७७२	३०	लि.क. टीकूदास
४६१	४८२५	मच्छोदरचौपई	शान्तिहर्ष	१८४८	२३	लि.क. क्षमा सौभाग्य
४६२	४७६८	मदनवार्ता	खुश्यालचंद जालंधरी	१८वीं	१०	
४६३	४४५२ (१)	मदनशत (अपूर्ण)		"	२	
४६४	४३१५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास कायस्थ	१८८८	८१	लि.क. तुलसीराम कनौजिया, सवाई जैनगर
४६५	४६११ (१)	मधुमालतीकथा	"	१८३२	१ से ४१	
४६६	५४५७	मधुमालतीकथा (सचित्र)	"	१६वीं	२-८७	चित्र सं. ८७
४६७	५०७८	मधुमालतीकथा (सचित्र)	"	१८८१	२१६	चित्र सं. २२३
						लि.स्था. पालनपुर
४६८	५०७९	मधुमालतीकी वात		१८वीं	८८	चित्र सं. ६०
४६९	४०८४	मधुमालतीचौपई	चतुर्भुजदास	१६वीं	६०	लि.क. सेसमल्ल, कापरड़ा नगर
४७०	५०८०	मधुमालतीकी कथा	"	१८वीं	१२५	हाड़ोती कलम के २७० चित्र
४७१	४६१५ (८)	मधुमालतीकी वात	"	१८८७	१४१-१६६	लि.क. हररूप, जालोर
४७२	५४१८ (१२)	मनभंवरा गीत	कवि माल	१६वीं	११३-११४	
४७३	४६१४ (२६)	मनोरथमाला		१८७७	२४८ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७४	७७२२(४)	मयण भट्ट दूहा		१६वीं	४८-५२	३० पद्य
४७५	४६१४(४४)	मरुदेवीनी सुखड़ी		१८७७	२७२-२७४	
४७६	५४२७(५)	मलयासुन्दरीचौपई	गोपालदास		६४-१४८	र.का. १६६६
४७७	४४५२(१८)	महादेवजीरो छन्द	गङ्गलाला	१८वीं	१६ वां	
४७८	४६१४(५३)	महापुराणनी वीनती	गङ्गदास पर्वतसुत	१८७७	२८८-३००	
४७९	६८५१	महाबलमलयसुन्दरीरास		१६वीं	२१	
४८०	४७४३	महाराजा दौलतसिंहजीजन्मो- दाहरण		१८वीं	८	
४८१	५४३६(५)	महावीरजीरो पारणो		१६वीं	३३-३६	
४८२	७३५६	महावीर दशोष्ठण जीमणवार विगत		१७६८	२	
४८३	७०५८	महासती सीताचरित्र	पुन्ह कवि	१८७१	८८	लि. स्था. अयोध्यापुरी र. का. १७७३ (?)
४८४	४४५२(१०)	माताजीरी चरचा		१८वीं	१३ वां	
४८५	४४५२(१२)	माताजीरो गीत		१८०८	१६ वां	लि.क. प्रीतसौभाग्य
४८६	४४५२(११)	माताजीरो छन्द	बीकाजी	१८०७	१४-१६	लि.क. प्रीतसौभाग्य, बणेडा ग्राम
४८७	४४५२(८५)	माताजीरो छन्द	कवि सारंग	१८वीं	१२६ वां	
४८८	७७२१(११)	माताजीरो छन्द	चानण खिड़ियो	१६३१	१७७-१७९	लि.क. अमरसिंह खिड़ियो
४८९	४६११(४)	माधवानल कामकन्दलाचौपई	कुशललाभ	१८३०	६	विजयपुरमध्ये लिखित
४९०	४६२४(१६)	”	”	१७६२	१-२२	
४९१	५११८	मानतुङ्ग मानवतीचौपाई	मोहनविजय	१८वीं	२१	अणहलपुर पाटण, दुर्गादास राठोड़ राज्ये रचित

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	६१३८	मानतुङ्ग मानवती रास	मोहनविजय	१८०६	४४	र.का. सं० १७१०
४६३	६१३९ (१)	मानतुङ्ग मानवती रास (सचित्र)		१८७८	६५	चित्र सं० ८८
४६४	६२९७	मानतुङ्ग मानवती रास	"	१९१४	३६	
४६५	६३३५	"	"	१८२४	५०	लि.क. आलमचंद मकसूदाबाद, अजीमगंजमध्ये
४६६	६५३४	"	"	१८७६	७६	
४६७	७३६६	"	अभयसोम	१८२८	११	र.का. सं. १७२०
४६८	७५२८	मानवतीरास	मोहनविजय	१८६२	८४	
४६९	७५५७	"	"	१७६७	३५	र.स्था. अणहिलपुर पाटण
५००	४४५२ (८०)	मासंधिचक्र		१८वीं	१२३ वां	बोलने के फलाफल का विचार
५०१	६५२६	मुनिपति चरित्र (गद्य)		१९वीं	२१	
५०२	६३५५	मुनिपति चरित्र बालावबोध		१७६६	३१	
५०३	५४३६ (४)	मुनिमालिका			२६-३३	
५०४	६२७२	"	कल्याण	२०वीं	२०	र.का. सं. १६३६
५०५	५८६१	मृगलेखाचौपाई (सचित्र)	मुनि सागरचन्द्र	१८३८	५३	चित्र सं. ४८
५०६	६७४५	मृगाङ्कलेखाचौपाई (सचित्र, अपूर्ण)		१९वीं	३६	चित्र सं. ४२
५०७	७०५७	मृगावतीचरित्र	समयसुन्दर	१८वीं	३८	र.का. सं. १६२८, प्रथम पत्र अप्राप्त
५०८	४०८६	मृगावतीचरित्र चौपाई	"	१८वीं	२४	र.का. सं. १६६१ (?)
५०९	६५३३	"	"	"	२३	
५१०	६२५०	मृगावतीचौपाई	"	"	१३	
५११	६८३८	मेघकुमार चौढालियो आदि	"	१७३८-४६	५३	जोर्ण प्रति, १२ कृतियोंका संग्रह

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१२	४२८२	मेघमाला		१६वीं	५	लि.क. भगवानदास
५१३	४६१४ (१६)	मेरुजयमाला		१८७१	२०६वाँ	
५१४	४४५२ (६०)	मेघसंक्रांति आदि		१८वीं	११७वाँ	
५१५	६६२२	मंणरेहा चौपई		१६४६	७	लि.क. मुनि केशरीचंद
५१६	५१०२	मोती कपासिया वाद	श्रीसार	१८वीं	५	लि.क. मुनि नित्यसागर खेड़ामध्ये
५१७	७०७७	मौनएकादशीकथा (गौतममहावीर- संवाद)		१८२४	५	
५१८	६७६२	मोहमरदराजाकी कथा (पद्य)		१६५३	१३	लि.क. गरीबदास
५१९	५६०१	मोहविवेक चौपाई	धर्ममन्दिर	१७६६	६६	लि.क. भीमविजय
५२०	६४००	योगदृष्टिस्वाध्याय	नयविजय	१६वीं	५	दीमक से कटे जीर्ण पत्र
५२१	५४१८ (१८)	योगसारके दोहे	योगचन्द मुनि	,,	१३४-१४०	१०७ दोहा
५२२	५४५०	योगासनमाला (सचित्र)		१८४६	११०	लि.क. स्वामी शोभाराम खातीपुरामध्ये
५२३	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसुन्दर	१८वीं	११	
५२४	४०८७	रत्नचूड़ चौपई	कनकनिधान	१८१४	१२	र.का. सं. १७३८
५२५	४८१६	रत्नपालरास	मोहनविजय, बुधरूपविजयशिष्य	१८६७	५४	लि.क. हितसौभाग्य क्षमा- सौभाग्यशिष्य
५२६	६०५७	,,	सूरविजय	१६००	७६	
५२७	४६१४ (३०)	रत्नत्रय		१८७७	२४८वाँ	
५२८	६५३२	रत्नपालरास	सेवक सूर	१८२७	३२	र.का. सं. १७३२, छोटी खाटू- मध्ये, प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२९	४८३३	रतन महेशदासोत्तरी वचनिका	खडियो जगो	१७४१	७	लि.क. प्रमोद मुनि, रोहितासपुरे
५३०	४९१५ (३)	रतनाहमौररी वात (पद्यबद्ध)	कवियण (?)	१८८७	४२-७५	२०० पद्य, लि.क. प्रभुदान
५३१	५४१८ (२६)	रविकथा	तिहुरा गिरिनिवासी गगंगोत्रीय म लूकपुत्र (?)	१९वीं	१५४-१६३	लि.क. रामसागर
५३२	५४१८ (२७)	"	भानुकीर्ति	"	१६४-१६५	
५३३	७४४४ (१६)	रागपदबहोत्तरी	आनन्दधन	१८८५	२७०-२९४	लि.क. नेमविजय
५३४	४२८७ (९)	रागपदसंग्रह		१८वीं	१७-२८	
५३५	५१००	"		१९वीं	३	
५३६	५४१८ (३४)	रागरासाष्टक		"	१७५-१७६	
५३७	७७२० (२३)	रागानामोपरि विरहसुभाषित		१७६५	९-११	
५३८	४९०६ (२)	राजसभारंजन	रसिक (?)	१७९८	१-२५	# र.का. सं. १७५९, ३७० दोहा
५३९	४९१५ (१७)	राजाचंचरी बातरा दूहा		१८८७	४०६-४१०	
५४०	४९१६ (२)	राजाभोज, माघपंडित नै डोकरीरी वात		१८७५	४५-४६	लि.क. सौभाग्य गाँण
५४१	७७२१ (६)	राजा रतनरी वचनिका	खडियो जगो	१८२५	११९-१४१	
५४२	७७२० (२१)	राजावली			७ वां	सं. १२९७ से १७७० तक के सीसोदिया राणाओंका वंशपरिचय
५४३	४७९९	राणांरी वंशावली		१८वीं	१	नागधरानरेश से अमरसिंहपुत्र संप्रार्मसिंह तक
५४४	४९१४ (८)	राजुलपचीसी बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७-१६८	
५४५	५४१८ (३५)	राजुलपचीसी	आनन्दचंद	१८०६	१-६	लि.क. दयानिधि

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४६	७१४४	राजुलपचीसी	लालचंद	१८५८	४	लि.क. सह्या, आगरामध्ये
५४७	७२४३	राजुलपचीसी	"	१९वीं	२	
५४८	५१०४	राठोड़ रतनमहेसदासोतरी वचनिका	खिड़ियो जगो	१८०२	३७	लि.क. धर्मसुन्दर, प्रथम पत्र अप्राप्त
५४९	४४५२ (६१)	राठोड़ारी वंशावली		१८वीं	१२६ वां	१११ राजाओं के नाम
५५०	४८३४	राठोड़ नाहरखानरो छन्द	गाडण माधोदास	१९वीं	१	*
५५१	६४४६ (७)	राधाजीकी बारहखड़ी		"	१४-१६	
५५२	७७४४ (३)	राधाविलास		१७५८	८-१७	
५५३	४४५२ (१६)	रामकिशनजीरो छन्द		१८वीं	१६ वां	
५५४	५६०३	रामकृष्णचौपाई	लावण्यकीर्ति	१७११	३०	र.का. सं. १६७७
५५५	६४६७	श्रीरामचन्द सवारी (गद्य)	रामनाथ	१९वीं	६	
५५६	७८१० (२)	रामचरणदासजीका कृतिसंग्रह	रामचरणदास	१८वीं	२६-२३०	७ कृतियों का संग्रह
५५७	६८५३	रामजसरसायन		१८६४	११४	र.का. सं. १६८७
५५८	७७४४ (१)	राममञ्जरी	गोविन्ददास	१७५८	१-२	
५५९	६३५७	रामयशोरसायन	केशराज	१७६४	८६	
५६०	६७४६ (२)	रामरक्षाभाषा	रामानन्द	१९वीं	८८-६२	
५६१	७६०६	रामरक्षामंत्र	"	"	३	लि.क. केशवदास
५६२	४६२४ (५)	रामगुणरासो	माधोदास दधवाड़िया	१७८८	१-३२	लि.क. जयसौभाग्य गणि
५६३	७७२१ (२)	रामरासो	"	१८२५	२५-६६	
५६४	७७३५	रामरासो	"	१८वीं	८१	गुटका, अपूर्ण
५६५	७१४०	रायप्रशनश्रेणीमध्ये ईग्यारह प्रश्न		२०वीं	७	
५६६	७७२२ (८)	राव सत्रसालरो गीत		१८वीं	१०५ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६७	४४५२ (७५)	रासभचक्र	धर्मसमुद्र	१८वीं	१२३ वाँ	गधे के विषय में शकुन-विचार लि.क. भक्तिविशाल
५६८	४४५७	रात्रिभोजन चऊपई		१७२३	७	
५६९	४६१४ (४३)	रात्रिभोजन रास		१८७७	२६८-२७२	
५७०	४६१४ (४१)	रात्रिभोजन सज्झाय		१८७७	२६६ वाँ	
५७१	४६१४ (४२)	रात्रिभोजन सज्झाय	कवियण	१८७७	२६७-२६८	लि.क. अनूपविजय अपूर्ण गुटका, सं. ४८ से ६४ तक के पत्र अप्राप्त लि.क. जीवनदास, रेवां ग्राम
५७२	४६०५ (१,२)	रीसालुकुंवररी बात स्फुटदोहा	नर्बदो चारण	१८७५	१-२५	
५७३	७१२२	रुक्मिणीमंगल (कृष्णको व्याहलो)	मू. पृथ्वीराज, टी. कुशलधीर गणि मू. पृथ्वीराज, टी. लब्धिविज्ञान शिवनिधान	१९वीं	१२-४२	
५७४	६६७५	रुक्मिणीव्याहलो		१८६७	१३२	
५७५	४०७६	रुक्मिणीवेली (सबालावबोध)		१८२६	४३	
५७६	४०७७	रुक्मिणीवेली (सस्तवक)		१७८६	२८	जीर्ण
५७७	७१६५	रुक्मिणीवेली, नागदमरण आदि	पृथ्वीराज	२०वीं	गुटका	
५७८	४०७८	रुक्मिणीवेली (राजस्थानी अर्थसहित)		१८वीं	२७	
५७९	५२२१	रुक्मिणीहरण रास		१९वीं	१५	
५८०	५८६४	रूपसेनकुमार रास (सचित्र)		१८वीं	१३	लि.क. साध्वी मेरुश्री, चित्र सं. १६ लि.क. रामदास, निराणाग्राम
५८१	६६३७ (४)	रंदासके पद	रंदास	१८११- १८१६	२०१-२०६	
५८२	४०२७	रोहिणीतपस्तवन आदि	श्रीसार, राज आदि	१८वीं	२२	
५८३	६११६	लीलावती चौपाई	लाभवर्द्धन	१७४२	१४	पत्र १ से ३ अप्राप्त
५८४	६३७८	लीलावती चौपाई	"	१९वीं	३६	
५८५	६०५६	लीलावती भाषा	लालचन्द	१७८३	२०	र.का. सं. १७३६

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८६	४८३६	लीलावती रास	उदयरतन	१८०७	१६	लि.क. मुनि जेठा
५८७	५२८६	लीलावती रास	"	१६वीं	१२	र.का. सं. १७६७
५८८	४६१४ (२५)	लूकामतनिराकरण प्रतिमास्थापन रास	सुमतिकीर्ति	१८७७	२३४ से २४२	
५८९	४०८८	वच्छराजहंस चौपाई	जिनोदय	१८६१	३३	लि.क. रूपविजयजी, बातानगर
५९०	४७८१	वंश्याकल्प		१८१४	४	
५९१	७७२६	वंशभास्कर	सूर्यमल्ल	१९४३	१८४	लि.क. बारहठ बालाबक्सजी, ग्राम हणूत्या, काशी ना. प्र. सभा में ग्रन्थमाला के संस्थापक
५९२	७७२७	वंशभास्कर	"	१९४०	१८४	
३९३	७७२१ (३)	वमेकवारतारी नीसाणी		१८२५	६६-११०	लि.क. श्वेताम्बर पञ्चायण
५९४	७१५१	वर्षात्रुतुका कवित्त आदि		१८७६	७५	लि.क. भैरुंदास, जोधपुरमध्ये
५९५	४७१६	वर्षोत्पत्ति		१९वीं	२	
५९६	५३७६ (२०)	वारसेनमुनिकथा			२२६-२४२	
५९७	६७३८	विक्रमखापरा चौपाई	अभयसोम	१९वीं	१६	खण्डित
५९८	६४१४	विक्रमचरित्र (वंतालपचीसी)	हेमानन्द	"	२७	
५९९	६९१५	विक्रमचरित्र (चौबोलीसतीचौपाई)	उभयसोम	१८६५	११	र.का. सं. १७२४
६००	७०१४	विक्रमादित्यभूपालपञ्चदण्डकचरित्र	लक्ष्मीवल्लभ गणि	१७६२	५५	र.का. सं. १७२८
६०१	६४१५	विक्रमादित्य लावणी	धर्मदेव (?)	१९७७	६	लि.स्था. देवगढ़
६०२	७६२०	विजयसेठ विजयासेठाणीलावणी	लालचंद	२०वीं	३	र.का. सं. १८६१
६०३	६१११	विद्याविलास चौपाई	जिनहर्ष	१८२६	१८	
६०४	४०६६	विनयभट्ट श्रेष्ठिपुत्रकथा	ऋषभसागर	१९वीं	७०	र.का. सं. १८१०

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०५	४६२४(६)	वभेक (दिवेक) वाररी नीसाणी	केशवदास	१७६३	१-१४	लि.क. जयसौभाग्य, आठपहररा दूहा आदि भी हैं।
६०६	४४५२(४१)	विमलशाहजीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वीं	४५-४८	
६०७	४१४५	विमलसाहाको सिलोको	पंडित विमल	१६वीं	१४	
६०८	४४५२(५३)	विषहरा विचार		१८वीं	१०६वां	
६०९	४६१४(४)	विषापहार स्तोत्र	अचलकीर्ति	१८७१	१६०-१६१	
६१०	६३३४	विषापहार स्तोत्र		२०वीं	१३	
६११	७७२२(१४)	वीरम देईडरिया आदिके कवित्त		१८वीं	१५२-१५६	* लि.क. आणंदराम
६१२	७७६६(१)	वीरमदे पन्नीरी वार्ता (सचित्र)		१८५६	१-३७	चित्र सं० १८
६१३	४१३६	वीरसेन राजकथा आदि		१६२४	८	लि.क. पं० जीवो
६१४	४४५२(६२)	वृद्धजुवानको भगड़ो		१८वीं	११८वां	लि.क. पं० प्रीतसौभाग्य
६१५	७७४३	वेदन्तुति भाषा	राजसिंघ	१७८४	३३-४६	* लि.क.बाई सिरैकंवरी, साथरगढमध्य
६१६	५३६८	वैतालपच्चीसी		१६वीं	४०	लि. स्था. -जोधपुर
६१७	६४४३	वैतालपच्चीसी	म. अनूपसिंह	१८६१	४४	लि.क. पुरुषोत्तम व्यास
६१८	७०४४	वैतालपचीसी	शिवराम	१७२६	५२	६१ कवित्त
६१९	७७२२(२)	वैतालपचीसीरा कवित्त		१६वीं	३७-४५	
६२०	७४४४(८)	आवक अतिचार		१८८५	१८०-१९०	
६२१	७१२२	आवक कथाकोश भाषा (अपूर्ण)		१६वीं	२१	
६२२	७७५३(८)	आवकरी सज्जाय	जिनहर्ष	१८३७	४२-४४	
६२३	७८१६(१)	ओधरलीला		१८३१से	४८	
६२४	६०२४	श्रीपालकथा	रत्नशेखर	१८३३ १७२७	२६	लि.क. शांतिलाभ, जेतारणमध्य

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२५	६२०५	श्रीपालचरित्र चौपाई	परमल्ल	१८५८	१००	लि.क.ब्राह्मणगुलाब, भगवंतगढ़मध्ये
६२६	४००२	श्रीपाल चौपाई	जिनहर्ष	१८२३	२५	
६२७	६६१६	श्रीपालचरित्र	सुजसविजय	१६२८	७८	लि.क. मंगूमल, प्रथमपत्र अप्राप्त
६२८	६३५१	श्रीपालचरित्र भाषा		१६१७	१०२	
६२९	६५२७	श्रीपाल चौपाई	ग्यानसागर	१७६१	३४	र.का. सं० १७२६
६३०	४१३८	"	जिनहर्ष	१८६४	३५	
६३१	७२४८	श्रीपाल नरेन्द्रकथा		१६वीं	३१	
६३२	७०८६	"	हेमचन्द्र, रत्नशेखरशिष्य	१८२३	१३७	लि.क. गोडीचन्द्र
६३३	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	र.का. सं० १७२६
६३४	६५२८	"	विनयविजय	१८५७	५५	र.का. १७३८
६३५	६७४६	"		१८७७	गुटका	र.का. १७३८
६३६	५३७३ (५)	श्रीपाल रास (अपूर्ण)		१८०६	१०६-११८	
६३७	४४५२ (७७)	श्वानचक्र		१८वीं	१२३ वां	कुत्तेके कान फड़फड़ानेके विषय में फलाफल-विचार
६३८	६८६३	शकुनदीपिका चौपाई		१६वीं	८	
६३९	४४५२ (६२)	शकुनरा कवित्त तथा जैसिह सवाई-		१८वीं	१२० वां	
३४०	४४५२ (३०)	बखतेसयुद्ध				
		शकुनरी चौपाई (अपूर्ण)		१८वीं	३१-३२	
६४१	४४५२ (७)	शकुनविचार		"	११ वां	
६४२	४१६०	शकुनावली		१७वीं	२	४ यंत्रों का फल
६४३	५१२३ (४)	"		१८वीं	१६-२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६४४	४६८६	शतसंवत्सरी		१६वीं	६	
६४५	४७२५	"		१६वीं	४६	
६४६	४४५२ (६५)	शनीसररो गुणछन्द	हेम कवि	१८वीं	११६ वां	लि.क. प्रीतसौभाग्य
६४७	४१६६	शनैश्चरकथा (स्नेहलीला) आदि		१८४०	२१	लि.क. गोपाल-मिश्र, पीरागपुरा वाला
६४८	४७८८	शनैश्चर कथा		१६वीं	६	
६४९	४८२४	"		१८३६	२	आसोपनगरे लिखितम्
६५०	६३०७	शनैश्चर छन्द		१६वीं	२	
६५१	६३८६	शत्रुञ्जयउद्धार	भानुमेह	१६६७	६	* र.का. सं० १६३८
६५२	५४३६ (२)	शत्रुञ्जय रास		"	५-१७	
६५३	६५३८	शत्रुञ्जयोद्धाररास	नयसुन्दर	१८वीं	६	लि.क. दानविजय, भ्राविका लाडमरेपठनार्थम्
६५४	५८६०	शान्तिनाथ रास		१८५४	२२०	१०४, १०५ पत्र अप्राप्त
६५५	७७२० (७)	शारदाष्टक		१८वीं	४५ वां	
६५६	४०२४	शालिभद्र चरित्र	मतिसार	१८वीं	१२	र.का. सं० १६७८
६५७	४८०४	शालिभद्र चौपई		१८वां	१२	
६५८	५०६५	शालिभद्र चौपाई		१८४३	१८	लिखितं सवाईजयपुरमध्ये
६५९	६१३१	"		१७७५	२५	लिखितं ग्वालियरमध्ये
६६०	६१४०	"		१८१८	४८	
६६१	६५४३	"	"	१८५१	२३	लि.क. शिवदत्तसागर
६६२	६८४६	"	"	१८२८	१७	लि.क. खुश्यालचंद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	७५६३	शालिभद्र चौपाई	मतिसार	१७७२	१३	लि.क. ऋषि चांपो
६६४	७५६४	"	"	१८०६	२६	लि.क. खुशाल, वेगमपुरमध्ये
६६५	५४५८ (५)	शालिभद्र श्लोक		१८५६	१-१०	
६६६	४७७७	शालिहोत्र		२०वीं	६०	
६६७	६८२६	"		१९१५	१०५	पत्र १ से ३ अप्राप्त
६६८	७७३०	शालिहोत्र ग्रंथ (गुटका)		१९४३	३४	लि.क. राय जयसिंहबदनोर, फतहबुर्जमध्ये
६६९	७७६७	शालिहोत्र (सचित्र गुटका)		१९वीं	१३९	चित्र सं० ११८
६७०	७८३७	शालिहोत्र (सचित्र)	महाराज नकुल पंडित	"	६-७२	चित्र सं० ४८
६७१	७७२२ (१३)	शिवरात्रि कथा		१७२७	१२५-१५२	लि.क. कासटोहा
६७२	५२९६	शीयलबावनी		१९वीं	२	५८ दोहे
६७३	४०७१	शीलरास (नेमिनाथ रास)	विजयदेव सूरि	१७९२	७	लि.क. लब्धिसागर
६७४	५४१८ (२३)	शीलरासा	कवि जैत	१९वीं	१४९-१५०	
६७५	४०१०	शकवहोत्तरी	देवीदान	१८९९	४७	लि.क. विजयसमुद्र, जेसलमेर
६७६	४४१९	"	देवदत्त	१७९०	५०	प्रथम पत्र अप्राप्त
६७७	७०१८	षट्पञ्चाशिका भाषा	मूल-पृथुयशा, टी. उत्पल भट्ट	१७६९	१५	
६७८	५३७६ (६)	षोडश कारण कथा	शुद्धकीर्ति	"	९०-९४	
६७९	५३७६ (१७)	"		"	२०६-२११	
६८०	५३७६ (१६)	षोडश कारण रासा	सकलकीर्ति	"	२०३-२०६	
६८१	६९३७ (६)	सर्वांगी	दादूजी	१८१६	२९३-४३०	
६८२	६५३९	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१७२४	१९	लि.क. मुनि सुन्दरसौभाग्य कृष्णदुर्गमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६८३	७४०१	साम्बप्रद्युम्न चौपाई	समयसुन्दर	१६७३	३१	लिखितं आर्या मरूपठनार्थम्
६८४	४६१८(२)	सार्वलिगा सदैवच्छकी वात		१७६६	२१-५२	लि.क. प्रोहित जोधा, मनोहरपुर का
६८५	७१७३	सार्वलिगारी वात		१६७६	२७	लि.क. मथुरालाल
६८६	७७२२(५)	सार्वलिगासूरेरी वात		१६वीं	५३-५६	६८ पद्योंमें रचित
६८७	५४५८(२)	सदैवच्छसार्वलिगारी वात (सचित्र)		१८३८	१-५४	चित्र सं० ७
६८८	४६२४(१)	सदैवच्छ सार्वलिगारी वात		१७८७	१-८	जीर्ण प्रति
६८९	४६१६(४)	"		१८७५	५४-७२	लि.क. सोभाग्य गणि
६९०	४१४७	"		१८१६	३६	
६९१	६६८६	"		१८५६	१६-१०८	लि.क. राधाकृष्ण ब्राह्मण
६९२	७७२०(२०)	"		१८वीं	१-७ १६-२५	
६९३	७७६८	सदैवच्छ सार्वलिगारी वात (सचित्र- गुटका)		१८५४	७५	चित्र सं० ७७
६९४	७८४५	"		१८४८	७-८४	चित्र सं० १४
६९५	५२०२(७)	सदैवच्छ सार्वलिगारी वात (अपूर्ण)	सिद्धिविजय	१८८५	१२३-१४१	
६९६	४६१५(११)	साहजादा कुतुबुदीनरी वात		१८८७	३६१-३७६	
६९७	४४५२(६६)	सिखामण		१८वीं	१३१ वां	७३ शिक्षाके वाक्य
६९८	७२४७	स्थूलभद्र स्वाध्याय		१६वीं	१	
६९९	४६२४(१४)	स्थूलभद्र सञ्ज्ञाय		१८वीं	३५-३६	
७००	७४४४(१२)	स्नात्रविधि	देवचन्द्र	१८८५	२१२-२४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०१	४४५२(७४)	स्यालचक्र		१८८५	१२३वाँ	सियार के बोलने का शुभा- शुभ विचार
७०२	५१२३(८)	स्फुटज्योतिषचक्रादि		१८८५	४१-४६	गोरखचक्र, धातुचक्र आदि
७०३	७७५३(१५)	स्फुटपद्य		१८३७	८६-१०६	सोरठ, राजुल आदिके ब्रूहा, पद आदि
७०४	४४५२(८२)	संक्रान्तिफलचक्र		१८वीं	१२४वाँ	
७०५	४६७५	संक्रान्तिविचारआदि		१६वीं	५	
७०६	४६८५	"		१८वीं	५	
७०७	७३३२	संस्तारकप्रकीर्णकसबालाबोध		१७वीं	१६	
७०८	४६१५(१२)	सज्जनप्रेमब्रूहा		१८८७	३३७-३८४	११० ब्रूहा हैं
७०९	७४४४(१)	सज्ज्मायसंग्रह		१८८६	३२७-३७३	
७१०	७५३८	"		१८वीं	४	लि.क. ऋषि रामाजी
७११	६२८६	सत्तरभेदीपूजा	साधुकीर्ति	१८५३	१४	
७१२	७४८०	सत्तरीशयठाणप्रकरण		१६२३	४०	
७१३	४०५४	सतीगुणावलीचोपई	गजकुशल	"	१२	र.का. सं० १७१४
७१४	७८१०(१)	सन्तदासकीवाणीआदि	सन्तदास	"	४-२६	आद्य ३ पत्र अप्राप्त
७१५	६७४७	सन्तवाणीगुटका		१८६४	६६७	जीर्ण प्रति
७१६	७०६०	सन्ध्याप्रतिक्रमणविधि		१६वीं	१४	
७१७	४४५२(६)	सन्यासीरादशनाम		१८वीं	१०वाँ	
७१८	५११६	सनत्कुमारप्रबन्धचोपई		१८४०	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त
७१९	४६१४(५१)	सम्बोधसन्तानू ब्रूहा	वीरचन्द लक्ष्मीचन्दशिष्य	१८७७	२७६-२८३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२०	४७२४	समयरे राजारो फल (वर्षपतिफल)		१६वीं	१	
७२१	५३७६ (१५)	समाधि रास		१७६१	२०२-२०३	
७२२	४६१४ (३)	सम्मेद शिखर निर्वाणकांड		१८७१	१५८-१६०	
७२३	४८०२	सरस्वती छन्द		१६वीं	३	
७२४	४२८७ (१६)	सवाई जैसिधजीकीजोधपुर चढ़ाई		१८वीं	१२७-१३०	
७२५	४४५२ (८३)	सवैयासंग्रह	श्याम, काशीराम आदि	,,	१२४ वाँ	
७२६	७७५३ (१३)	सवैया		१८३७	७० वाँ	
७२७	४२८७ (३)	सवैया इकतीसा	बनारसीदास	१७२६	१२-१३	स्वयं बनारसीदास के अक्षरों में लिखित ५ पद्य
७२८	४०८१	सवैयाबावनी	राजसी	१६वीं	५	
७२९	४६०६ (४)	,,	राज कवि	१७६८	२५-३४	लि.क. केवलसौभाग्य
७३०	४४५२ (१४)	सवैयासंग्रह	प्रताप, ब्रह्मगुलाल आदि	१८वीं	१७ वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
७३१	४४५२ (२०)	सवैया, सपखरो आदि		,,	२० वाँ	
७३२	५५२४	सत्रह भेद पूजा	साधुकीर्ति	१८६४	६	र.का. १६१८, लालमण ढोलीरी पोशाळमध्ये
७३३	५४१०	साठी संवच्छरी आदि		१८वीं	८३	प्रश्नावली और मुहरंम के चांद आदि का फल
७३४	४६२४ (१२)	सात वारांरा बिघड़िया		१७९०	१३-१४	लि.क. जयसौभाग्य गणि
७३५	४६२४ (११)	सात सखीरो संवाद		१७६३	१२-१३	
७३६	४४५२ (६४)	सात सखीरो संवाद (प्रहेली)		१८वीं	१३० वाँ	
७३७	७३०५	सिद्धान्तबोल		१६१०	४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७३८	७५४६	सिद्धांतसारोद्धार		१७७६	५६	अन्तिम तीन पत्र त्रुटित
७३९	६३८३	सिरी सांतणी भास	लावण्यसमय	१८वीं	२	सा. चन्द्रावलि पठनार्थ
७४०	४००६	सिंहलसुत चौपई	समयसुन्दर	१७६४	६	लि.क. कुशलहर्ष
७४१	४८२८	सिंहलसुत चौपई	"	१७वीं	६	
७४२	६५३६	सीताराम चौपाई	"	१८वीं	६२	
७४३	७७५३ (२)	सीतासज्जाय	जिन हर्ष	१८३७	३०-३१	
७४४	५३७६ (१)	सुदर्शनसेठकी कथा	नन्द (?)	१७६१	१-३१	र.का. सं० १६६३
७४५	४००७	सुदर्शनसेठरा कवित्त	दीयो कवि	१८८०	२१	लि.क. ऋषि इन्द्रभाण
७४६	४०८६	सुदर्शनसेठरा कवित्त	"	१८८४	२०	लि.क. बाई चंपा
७४७	६२७४	सुबाहुचरित्र आदि		१६वीं	८	
७४८	६३८८	सुबाहुचरित्र	जिनमाणिक्य सूरि	१८वीं	६	र.का.सं. १६००, जैसलमेरमध्ये
७४९	४००८	सुभद्रासतीरो चौढालियो	मानसागर	१८७६	५	लि.क. स्थाविरजी श्रीचैन- रामजी
७५०	४६१२	सुभाषित		१६वीं	४	६५ पद्य हैं
७५१	५४१८ (३)	सुरतपंचमी कथा	वनवारीदास	१६वीं	१-८७	
७५२	५६३०	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्धनदास	१८४२	२८	
७५३	५६७५	सुरसुन्दरी चौपाई	"	१७८२	२५	पत्र सं० २० से २३ अप्राप्त
७५४	४००९	"	शुभशील	१६वीं	१७	लि.क. नेमचन्द
७५५	७२४४	"	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
७५६	४८०१	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६८८	२६	लि.क. राघवकेशव, राजकोटमध्ये
७५७	७३७४	सूक्तिमुक्तावली	केशरबिमल गणि	१६वीं	२५	लि.क. इष्टहंस

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५८	६४१८	सूरजजीरो सलोको		"	२	
७५९	७७२५	सूरजप्रकाश	करणीदानजी	१८४१	३००	र.का.सं. १७८७ लिपिस्थान-बदनोर
७६०	६७५२	सेऊसमनकी परन्त्री	गोविन्दराम (?)	१६२६	३	
७६१	४०११	सोमवती अमावसरी वार्ता		१८४३	३	लि.क. जीवणराम
७६२	७७२२(३)	सोरठरा ब्रूहा		१८वीं	४६-४८	४३ ब्रूहा
७६३	५४१८(२२)	सोलह कारण का रासा		१६वीं	१४७-१४९	
७६४	४६१४(४५)	सोलह स्वप्न वीनती		१८७७	२७४ वां	
७६५	६३५८	सौभाग्यपंचमी चौपई	जिनरंग	१८वीं	२५	
७६६	५८६२	हंसराज वच्छराज चौपई (सचित्र)	जिनोदय सूरि	१८३५	४४	र.का. सं० १६८०, चित्र सं. १०३
७६७	५४३१(२)	हंसराज वच्छराज चौपई (अपूर्ण)		१६१०	६४ से ६६	१४३ पद्य
७६८	७४०२	हंसराज वच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८६६	३४	लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द
७६९	६५३५	"	"	१६वीं	४२	
७७०	७२२७	हंसराज वत्सराज रास	"	१८८३	४६	र.का. सं. १६८०
७७१	५२०६	हंसवत्स चौपई (सचित्र)		१८वीं	६२	चित्र सं. ६५
७७२	५४३१(१)	हंसावली (अपूर्ण)		१६१०	१५-६४	
७७३	४४५२(७०)	हणमंतरो छन्द		"	१२० वां	
७७४	७७२१(१४)	हनुमान छन्द	नरहरदास	१६३१	२०१-२०२	
७७५	४६०२	हम्मीर रासो	कवि महेश	१७८७	५६	लि.क. पांडे नाथूराम गौड़
७७६	५३८४(१)	"	"	१६४४	१-७०	लि.क. मनसाराम ब्राह्मण

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७७	७१६७	हमीरहठ वार्ता		१८६७	६६	गुटका
७७८	६४४६ (४)	हरजस		१६वीं	१-४	
७७९	४०१२	हरिचंद रास	जिनहर्ष	१८८२	२५	लि.क. पं. क्षेमाब्धि
७८०	४८२९	"	कनकसुन्दर	१८८५	१७	र.का. सं. १६६७
७८१	७७२१ (९)	हरिजस नाममाळा	रतनूहमीर	१८२५	१४४-१६५	
७८२	४६०५ (१०, ११, १२)	हरियालीरा दूहा आदि		१६वीं	३६-३८	
७८३	४६२४ (८)	हरिरस	ईसरदास	१७६३	१-१०	अंतिम पत्र पर सोलह शृंगारों की सूची
७८४	७७२१ (१२)	"	"	१६३१	१८०-१६६	लि.क. फूलगिरि
६८५	७७५० (१)	"	"	१८६०	१-२१	लि.स्था. बीरघोर
७८६	५३४३	" आदि	"	१८वीं	५	
७८७	४६१४ (२)	हरिवंशपुराणनो रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	७-५७ १७१-२०१	लि.क. चंद्रकीर्ति, एहमदाबाद-नगरे
७८८	४४५२ (६२)	हाथियांरा बखान	नाहरखान राजसिंहोत	१८वीं	१३० वां	रोमकंद छन्दों में वर्णन
७८९	४६२४ (९)	हाथीरा बणाव		१७६३	११वां	
७९०	४४५२ (२४)	हिंगुलाष्टक		१८वीं	२४ वां	
७९१	७४१७	हिंडोलण आदि	रामसरण (?)	१७वीं	१	लि.क. पं. छेतसी
७९२	४१६८	हीर रांझिया को तमासो		१६५४	३२	लि.क. नाथूनारायण शर्मा
७९३	४८३६	क्षेत्रसमास	रत्नशेखर सूरि	१७८२	७१	पत्र सं. १, २ अप्राप्त, जैसलमेरनगरे लिखितं
७९४	७३६७	"		१७वीं	१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६५	७४०३	क्षेत्रसमाप्त		१८५१	६	र.का. सं. १५३६
७६६	७५२३	„ गणित		१८३६	१२	ताल्लिब ग्रामे लिखितं
७६७	४४२४	„ चौपाई	मतिसागर	१६८२	१४	र.का. सं. १५६४
७६८	४०२	„ प्रकरण सबालावबोध	रत्नशेखराचार्य	१८२१	२०	र.का. सं. १६८६ (?) उदयपुर नगरे

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४४५२(१०२)	अकडमचक्र	हीर	१८वीं	१३६वाँ	अंगद रावण संवाद का वर्णन है
२	४०३८	अंगद वसीठी सबैया	कवि भान	१६वीं	३	
३	७७२०(६)	अध्यात्मछत्तीसी	बनारसीदास	१८वीं	४३-४५	
४	४६१४(६)	अध्यात्मबत्तीसी	"	१८७१	१६६-१६७	
५	७७२०(५)	"	"	१८वीं	४२-४३	
६	५३६२	अध्यात्मरामायण भाषा (बालकांड)	भगवान् अर्जुन नागा शिष्य	१८वीं	३२	रचनाकाल सं० १७४१
७	५३६३	अध्यात्मरामायण भाषा (अयोध्याकांड)	(निरंजनी)	"	४८	
८	५३६४	अध्यात्मरामायण भाषा (वनकांड)	"	"	३७	
९	५३६५	अध्यात्मरामायण भाषा (किष्किंधाकाण्ड)	"	"	३१	
१०	५३६६	अध्यात्मरामायण भाषा (सुन्दरकांड)	"	"	२१	
११	५३६७	अध्यात्मरामायण भाषा (युद्धकाण्ड)	"	"	६५	* रचनाकाल सं० १७२८ लि.क. मेघा, नामपुरमध्ये
१२	५३६८	अध्यात्मरामायण भाषा (उत्तरकाण्ड)	"	१७८३	३६	
१३	४२१६(३)	अनेकार्थी	नन्ददास	१८५६	१६२-१६६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	६७५३	अमृतधारा	भगवानदास निरंजनी	१८२२	५६	अपूर्ण
१५	४८०३	"	"	१६वीं	५२	
१६	७४६१	अलङ्कारदीपक	शंभूनाथ मिश्र (सुखदेव शिष्य)	"	२८	
१७	४०३७	अलङ्कारमाला	सूरत मिश्र	१८वीं	५	
१८	४२७०	अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय	१६वीं	६०	र.का. सं० १७६६ आगरा में रचित
१९	६६५३	अष्टावक्र प्रकरण भाषा		१८६४	१४	वंशीधर कवि की व्याख्या सहित
२०	४२८७(१)	अक्षरवत्तीसी		१७२६	१-४	लि.क. बुधराम दादूपंथी
२१	४२८७(१२)	अक्षरवावनी	सुन्दरदास	१७२८	६३-६८	लि.क. रामचन्द्र
२२	५६८०	आत्मप्रकाश	आत्माराम (दीलतरामजी शिष्य)	१६वीं	३६२	"
२३	६२४०	आत्मानुशासन भाषा	गुणभद्र	१८८८	१३८	लि.क. ताराचंद ब्राह्मण
२४	७७२०(१७)	आत्माराम गीत		१८वीं	५१ वां	डांगरवाड़ा का, नगर महुवा मध्ये
२५	५४१८(६)	आदीश्वर के रेखते		१६वीं	१०५-१०६	
२६	४६१७	आनन्द विलास	महाराजा यशवन्तसिंह	१७४३	११	
२७	६७२१	इतिहाससमुच्चय भाषा	लालदास	१८१२	८६	
२८	४२६३(३)	इस्क दरियाव	रसरशि	१८८२	६-१६	कवि जयपुर के महाराजा सवाई
२९	४२६३(४)	इस्कफंद	"	"	१७-१६	प्रतापसिंह का आश्रित था
३०	४६२४(१७)	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	१८वीं	२२-२७	लि.क. जयसौभाग्य गरि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	६३२३	उपदेश बावनी	कृष्णदास	१६वीं	१०	र.का. सं० १७७२
३२	५१६६	उपाख्यान सहित दश लीला		१६२१	३-२६	लि.क. ब्राह्मण बालमुकुन्द, मथुरा मध्ये
३३	४३१३	ऐन पचीसी	लाला सुन्दरलाल	१८६७	८	जयपुर में रचित
३४	५४०१	कर्मविपाक		१६०७	२५	लि.क. हरिदास
३५	७७४४(५)	करुणाभरण नाटक	कृष्णजीवन लच्छीराम	१७५८	२३-५१	लि.क. चैनकुंवरी
३६	७७५६(२)	कालको अंग	सुन्दरदास	१६वीं	२२-३१	
३७	४४५२(२७)	कवित्त कुण्डलिया	केशव, गङ्ग	१८वीं	२६वाँ	
३८	४४५२(२१)	कवित्त बावनी	खेमचंद आदि	,,	२१-२२	
३९	५३७४	कवित्त संग्रह	आनंदधन	१८४६	५६	५३२ कवित्त हैं
४०	५३८२	,,	जगदीश कवि	१८६३	१६३	* १००० कवित्तों का संग्रह
४१	४२१७(२)	कविप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पत्र सं० ७६ से ८४ अप्राप्त
४२	५३८०(१)	,,	,,	१८४६	६६	
४३	७०६४	,,	,,	२०वीं	१६६	
४४	६६७६(२)	काव्य सिद्धांत	सूरति मिश्र	१८६०	७४-८८	
४५	४१४०	,,	,,	१६०१	३१	लि.क. ऋषि देवराज
४६	४२६४	किशोर कल्पद्रुम	शिव कवि	१८वीं	१६६	प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५२०१	किस्सा गुलबकावली		१६वीं	३-७६	
४८	७७४४(७)	कृष्णजीकी रसोई		१७५८	५७-६२	
४९	६८२८	कृष्णसागर		१६वीं	२००	
५०	५४१७	कृष्णायन कथा चौपई		,,	१७५	१८४६ पद्य । र.का. सं० १८३६ स्थान—आगरा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१	५३७१(५)	केनोपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२४	
५२	५४२०(७)	कोकमंजरी		१९१२	१०७-१११	लि.क. इन्द्र मिश्र
५३	७७५२	"	कवि आनन्द	१८१३	४१	लि.क. विजय गणि
५४	४१५८	कोकसार	आनन्द कवि	१९०६	११	लि. स्था. रतलाम
५५	४४५२(२६)	"	"	१८०४	२७-३१	लि.क. प्रीतिसौभाग्य गणि
५६	४६२२	खिल प्रकरण (योगवासिष्ठान्तर्गत)		१८५३	४८	
५७	५११०	खालिकवारी		२०वीं	३	
५८	५३७०	गङ्गा आगमन कथा	रस आनन्द	१८६३	६	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
५९	६३४३(२)	गङ्गालहरी	पद्माकर	१८८६	१२-२७	
६०	५४०२	गणितसार	हेमराज	१७६४	७	कोटा में लिखित, त्रुटित
६१	५८७४	गणेशपुराण भाषा	मोतीलाल	१९वीं	१६	
६२	५४०६	गीतगोविन्द टीका	चिन्तामणि	"	४०	चन्द्रकुलसंभूत पहाड़सिंहप्रीतये
६३	४२८८(४)	गीता भाषा (पद्यानुवाद)	हरिवल्लभ	१८८६	११३	
६४	७१७१	गीतामृत सार	मकरन्द	२०वीं	१७३	आद्य २ पत्र अप्राप्त
६५	४६०५	गुरुदेव को ग्रंथ	सुखसागर	१९वीं	२५-३१	
६६	६४४६(३)	गुरुस्तुति		"	४१-४२	
६७	५८६६(३)	गुलजार इस्क अनवर इकबाल का किस्सा		"	१२-८२	
६८	५२०४	गुसाईजी की वन-यात्रा		"	४१	
६९	४६०६(५)	गूढार्थ दोहरा	वृन्द आदि	१७६८	३४-४५	
७०	७७४४(८)	गोपाल लीला	गुलछीदास	१७५८	६२-६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१	६६८८	गोपीजनवल्लभोत्सव प्रकाशिका		१६वीं	४२	जयपुर के गोपीजनवल्लभ मंदिर की निर्म्बार्कीय पूजा प्रणाली
७२	७७२० (१६)	गोरखवचनिका		१८वीं	५१दां	
७३	७७३४	गोवर्द्धननाथजी की प्राकट्य वार्ता		१६२३	४८	बदनोरमध्ये लिखित
७४	५३६७	गोविन्दविलास	कृष्ण कवि	१८६७	११६	र.का. सं० १८६३, कवि गोपाल-सुत, ग्वालियर वासी
७५	५३८१	गोविन्दानन्दधन	गोविन्द नाटाणी	१६वीं	३०	कवि जयपुर वासी र.का. सं० १८५८
७६	५३८३	चकत्ता पातशाही की परंपरा		”	१४१	
७७	५३४७ (१)	चन्द्रमुकुट चन्द्रकिरण रानीकी बात		१८३७	१-३०	लि.क. लाला तुलसीराम सेनवंशी
७८	६३४६	चरनाई की पाटी आदि		१८८७	८५	
७९	५४३८ (५)	चिन्तामणि माला	नन्ददास	१८६०	६२-६६	
८०	४६१३	चितावणी संग्रह	रामेश्वरदास आदि	१६वीं		र.का. सं० १८०८
८१	७७२० (१८)	चेतन सुमति गीत	बनारसीदास	१८वीं	५१-५२	
८२	७११५	चौरासी वैष्णवों की वार्ता		१६वीं	२७०	रूपनगर में उम्मेदकुंवर बांकावती ने लिखवाई
८३	५३८२ (२)	छक पचीसी	जगदीश कवि	१८६३	१८६-१६३	लि.क. भट्ट श्यामसुन्दर
८४	५३७७	छद्मषोडशी	वृन्दावनहित	१८६०	७१	राधाकृष्ण लीला वर्णन, वृन्दावनमें लिखित
८५	६७६३	छन्दरत्नावली	हरिराम	१६२०	१०	र.का. सं० १८२५, पुरनगर में लिखित
T ८६	५८१६	छन्दलता	चित्तुसमणि	१६०६	३१	लि.क. नजवासी, वृन्दावन मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८७	४२१३	छन्द विचार	सुखदेव मिश्र	१८७६	२५	लि.क. संगम कवीश्वर
८८	५३७६ (२२)	ज्येष्ठजिनवर कथा		१८वीं	२४८-२५३	
८९	६३०३	जिनदत्तचरित्र चौपई	विश्वभूषण	१७६६	७१	
९०	७७४६ (१)	जोग लीला	उदय (?)	२०वीं	१-७	
९१	४२८७ (७)	तर्क चिंतावनी	सुन्दरदास	१७२८	२६-३३	लि.क. आनंदराम
९२	५३७१ (२)	तैत्तिरीयोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट		३४	
९३	७७२० (१०)	दसदान		१८वीं	४६ वां	
९४	५४०७	दक्षनविलास	दक्षन कवि (अहमदउल्लाह, बहरियाबाद के)	१८६४	३७	र.का. सं० १७२२, राधाकृष्ण के श्रृंगार का वर्णन
९५	४३१६	दानलीला	कृष्णदास	१६२८	१४३-१५२	
९६	५४३८ (४)	"	परमानंददास	१८६०	५६-६२	
९७	४२६३ (१५)	दुखहरण वेलि	म प्रतापसिंहजी	१८वीं	३४, ३५	
९८	४३०६ (१०)	"	"	१६वीं	१६, २०	
९९	७४४१ (११)	"	"	१६१४	५६, ६०	
१००	५३६१	दोहासार		१८८४	१०३	संग्रह समय-१७२०, भरतपुर में लिखित, प्रथम पत्र अप्राप्त
१०१	५४५५ (१)	ध्यानमञ्जरी	अग्रदास	१६वीं	१६	
१०२	६०८८	"	"	"	५	
१०३	६३६४	"	"	"	६	
१०४	४२८८ (२)	ध्रुवचरित्र	गोपाल	१८८६	१७-४५	
१०५	५४१२ (२)	"	शशिनाथ मायुर (सोमनाथ)	१८५७	१-२०	र.का. सं० १८१२, कवि भरतपुर वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०६	७१५८	ध्रुवचरित्रादि		१८०५	८८	आद्य पत्र अप्राप्त
१०७	६३१६	धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	१८६०	८७	र.का. सं० १८११
१०८	६३१६	धर्मसार चौपाई	पं० शिरोमणिदास	१९वीं	३४	र.का. सं० १७३२
१०९	६१४५	नयचक्र भाषा	विलास	१९०७	४७	र.का. सं० १८६७ करौलीमध्ये लिखितं
११०	७३५१	नयतत्त्वविचार सार्थ		१९वीं	११	
१११	७७६६(२)	नयनसुख (बैद्यमनोत्सव)	नयनसुख केशवपुत्र	१८५६	१-४४	चित्र सं० २
११२	७००६	नयनसुख	"	१८८४	२६	
११३	६८३५(१०)	नवकारमंत्र		१८६६	३	
११४	७४४२(१)	नवतत्त्वभेद		१७६४	१-४६	
११५	७७२०(८)	नवदुर्गाविधान		१८वीं	४५ वाँ	
११६	७७२१(७)	नवरत्नकवित्त	वनारसीदास	१८२५	१४१-१४२	
११७	६८३५(५)	नागोरीगच्छपट्टावली		१८६६	१	
११८	७७२०(६)	नामनिर्णयनिधान		१८वीं	४५-४६	
११९	६३४३(४)	नाममंजरी (मानमंजरी)	नन्ददास	१८८६	४२-६६	
१२०	७७६७	"	"	१८१३	१८	लि.क. उदयराम ब्राह्मण
१२१	६८३३(१)	नायिकाभेद		१८४८	२-५	अपूर्ण, प्रथम पत्र अप्राप्त
१२२	५४१६	नासिकेतकथा भाषा	नन्ददास	१८८५	४७	लिखितं जिगनीमध्ये
१२३	४५५७(१)	नीतिमंजरी	म. प्रतापसिंह	१९वीं	१-१३	लि. क. महात्मा ज्ञानीराम
१२४	७४४१(१)	नीतिमञ्जरी	"	१९१४	१-२	लि. स्था. उदयपुर, सेठ गंभीरमल पठनार्थ
१२५	७७४६(१)	"	"	२०वीं	१-१३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२६	५३७२	नेहनिदान	रस आनन्द	१८६६	१२	स्वयं कवि द्वारा भरतपुर में लिखित
१२७	४४५२ (४०)	नैनवत्तीसी	वृन्द कवि	१८वीं	४४-४५	र.का. सं० १७४३
१२८	७७२१ (८)	प्रकीर्ण कवित्त		१८२५	१४३-१४४	
१२९	७७२० (१९)	प्रकीर्ण पद	बनारसीविलासान्तर्गत	१८वीं	५२ वां	
१२०	५४०८	प्रतापविलास	वृन्द कवि	१९वीं	१९	काव्यप्रकाश पर आधारित रस-ग्रन्थ
१३१	६२६२	प्रबोधपंचाशिका	पद्माकर भट्ट	१८६३	२०	
१३२	४८०५	प्रबोधपचीसी	सुन्दर कवि	१९वीं	२	कवि खरतरगच्छीयशांतिदास-का शिष्य है
१३३	४२८८ (३)	प्रल्हादचरित्र	गोपाल	१८८९	४२-८८	
१३४	५३७१ (३)	प्रश्नोपनिषत् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	३५-६४	
१३५	७७२० (१२)	प्रास्ताविक सवैया		१८वीं	४७-४८	
१३६	५२२४	प्रास्ताविक सवैया (प्रश्नोत्तर)		१९वीं	६	५१ सवैया हैं
१३७	४३०९ (१२)	प्रीतिपचीसी	म. प्रतापसिंहजी	"	२३-२७	
१३८	७४४१ (१६)	"	"	१९१४	७५-८०	
१३९	७७४९ (६)	"	रसरशि	२०वीं	१-५	
१४०	४२६३ (११)	प्रीतिलता	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	१०-१६	
१४१	४३०९ (६)	"	"	१९वीं	१०-१३	
१४२	७४४१ (८)	"	"	१९१४	४६-५२	
१४३	४२६३ (८)	प्रेमतरङ्गिणी	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	१-२३	कवि म. प्रतापसिंहका आश्रित था

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	४२६३ (१२)	प्रेमप्रकाश	म. प्रतापसिंह	१८वीं	१७-२०	र.का. सं० १७४२, म. कु. रतन-पाल, करौली प्रशस्ति परक
१४५	४३०६ (४)	"	"	१९वीं	६-८	
१४६	७४४१ (१३)	"	"	१९१४	६३-६६	
१४७	५३४७ (२)	प्रेमरत्नाकर	देवीदास	१८३७	३०-४०	
१४८	४७६४	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८वीं	१७	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त त्रुटित
१४९	५२०२ (६)	पंचाध्यायी (भाषानुवाद)	वंशीअली	१८८५	११४-१२३	
१५०	४२६५ (१)	पंचाध्यायी	नन्ददास	१८४३	१०-२६	
१५१	७७५६ (१)	पञ्चेन्द्रियोपदेश	सुन्दरदास	१९वीं	३१	
१५२	४२६२	पदमुक्तावली	श्रीनागरीदासजी	"	६२	जलविहार भ्रमर गीत, सांभो आदि से सम्बन्धित पद निम्बार्क संप्रदाय सम्बन्धी पद हैं
१५३	५३७८	पदसंग्रह	किशोरीअली गोस्वामी	"	२१२	
१५४	५४४०	"	"	"	६६	
१५५	६८४२	"	"	"	११०	
१५६	७८१५	"	"	१८८६	१२८	जैन धर्म सम्बन्धी पद वल्लभ संप्रदाय के पद ३०८ पद
१५७	७८३६	"	रसनायक	१९वीं	५६	
१५८	५१७७	"	नन्ददास आदि	१८वीं	५५	
१५९	७७३८	पाण्डवयशोदुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१९२३	१३६	
१६०	७७४२	"	"	१९१४	११२	लि.क. पठान उमेदखां, बदनोर राज्ये लि.क. वैष्णव हरिदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६१	७७३६	पाण्डवयशोन्दुचन्द्रिका	स्वरूपदास	१६४१	३६६	लि.क. वैष्णव सीतारामदास
१६२	६३३१	पातसाहनामोपरि रमल		१६१२	३	
१६३	६१७७	पादर्वनाथपुराण भाषा	भूधर	१८०१	६५	र.का. सं० १७८६, आगरा में रचित
१६४	६६२१	"		१६वीं	६४	पत्र सं० ४०, १५ अप्राप्त
१६५	७१०८	"	भूधर बुध	१७२५	८६	र.का. सं० १७८२
१६६	५६६६	पारासोमल की क्रिया		१६वीं	६	रजत आदि धातुओं की निर्माण- विधि
१६७	६३४३(३)	पिंगलसार	मोहन	१८८६	२७-३८	
१६८	५२०५(१८)	पूजाविधि	श्रीबल्लभाचार्य	१८वीं	८८-६१	
१६९	७७४४(१०)	पूरणमासी कथा		१७५८	७२-११५	
१७०	४३०६(१३)	फागरंग ग्रन्थ	म. प्रतापसिंह	१८६६	२८-३१	
१७१	७४४१(४)	फाग रंग	"	१६१४	३५-४०	
१७२	५१२३(६)	फालनाम फारसी		१८वीं	२८-२६	
१७३	४२६४	फुटकर कवित्तसंग्रह	अनेक कवि	"	११८	४२५ कवित्त हैं
१७४	४३०६(१५)	व्रजसिगार	म. प्रतापसिंह	१६वीं	४५-५०	
१७५	४२६३(१०)	व्रजशृंगार	"	१८वीं	१-६	
१७६	७४६०	ब्रह्मविलास	भगवतीदास	१८४६	१२४	र.का. सं० १७५५, कर्ता आगरा- निवासी लालजी कटारिया का पुत्र
१७७	५३७१(१)	ब्रह्मसूत्र भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१८वीं	१-२७	लि.क. महात्मा इयोजी (शिवजी)

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	४७८५	बनारसीविलास	बनारसी गर्ग, अग्रवाल	१८वीं	११५	र.का. सं० १७७१, पत्र ८६ से ६६ अप्राप्त
१७९	७४४२ (२)	बनारसीविलास भाषा	"	१७६४	१-११६	
१८०	५४२८	बल्लभाख्यान	गोपालदास	२०वीं	५३	
१८१	५३८७	बहुत्तरी	मोहनदास	१७९७	८	लि.क. नरसिंह अग्रवाल
१८२	५२०२ (५)	बारहखड़ी	दत्तलाल	१८८५	१०९-११४	भाषा पर पंजाबी प्रभाव है
१८३	५४२० (४)	"	"	१९वीं	६७-१०३	
१८४	५४२६ (१)	"	विष्णुदास ठण्डीराम शिष्य	"	१-१२	
१८५	५४२६ (३)	"	दत्तलाल	"	२६-३५	
१८६	५४२६ (६)	"	भत्रानी	"	४६-५३	
१८७	५४२६ (११)	"	"	"	१-५	
१८८	५४२६ (४)	" प्रह्लादजी की	"	"	३५-३८	
१८९	५४२६ (५)	" परमेश्वरजी की	कुशला	"	३८-४२	
१९०	५४२० (६)	" रामायण की	रामरत्न	"	१०३-१०७	
१९१	५४२० (५)	" विरह की (ब्रह्मस्नेह बारहखड़ी)	"	"	१०३	
१९२	५४०३	बारहखड़ी सूरत की	सूरत, देवधरशिष्य	"	८	
१९३	५४२६ (६)	बारहमासी	मुरलीदास	"	४२-४७	
१९४	५४२६ (७)	"	भवानी (अवधपुर वासी)	"	४७-४९	
१९५	५४२६ (८)	"	सूरदास	"	४९ वाँ	
१९६	४७९०	बावनी सबैया	जसराज	"	४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	४३०७(१)	बिहारीसतसई	बिहारी	१७८७	६६	लि.क. यति कुसला
१९८	४४१२	"	"	१८१२	५०-६१	मालपुरामध्ये लि.क. प्रीतसौभाग्य गणि,
१९९	४९०७(३)	"	"	१८३७	३५-१३५	खारिया ग्रामे श्रंत में होराचक्र और स्फुट कवित्त हैं
२००	६३४२(४)	"	"	१९वीं		
२०१	४१४४	बिहारीसतसई सटीक	टी. कृष्ण कवि	१८०२	१३२	
२०२	४२१६(२)	बिहारीसतसई टीका		१८५६	७२-१६०	
२०३	६३१५	"		१९वीं	५६	अपूर्ण
२०४	४४१२	बिहारीसतसया	बिहारी	१७६६	१५	लि.क. मुनि मनोहर
२०५	४२६१	बुद्धिसागर	कवि जान	१८६८	२००	लि.क. भूँभणू वासी विरामण रामधन
२०६	५४२६(२)	अमरगीत टीका, प्रेमरसपुञ्जनी	मुकुन्ददास		१२-२६	
२०७	६७२६	भैवरगीत		१९वीं	१७	प्रथम पत्र खण्डित
२०८	७७४६(५)	भैवरगीत	नन्ददास	२०वीं	१-६	
२०९	७७४४(६)	"	रसिकराय	१७५८	५१-५७	
२१०	५४००	भक्तमाल टीका	मू. नाभादास, टी. प्रियादास	१९वीं	१६५	
२११	५४७६	भक्तमाल टीका रसबोधिनी	"	१९००	३०६	र.का. सं० १७६५, बून्दी में लिखित
२१२	५४०६	भक्तमाल टीका	"	१७६६	१४१	लिखायितं माजी जोधपुरीजी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	६७५५	भक्तमाल टीका	लालदास	१८६३	१०४	लि.क. हेमदास, कबीरशाह को साधक
२१४	६६३६	"	लालदास	१८७०	१६८	लि.क. गोपालदास अवन्तीमध्ये शेषशायीमन्दिरे
२१५	६५७१	"	प्रियादास नारायणदासशिष्य	१८६४	११६	र.का. सं० १७६६ लि.क. रामकृष्ण महाजन
२१६	६०५४	भक्तमाल टीका रसबोधिनी		१८वीं	२०५	
२१७	६४४८	भक्तमाल सटीक		"	२७६	
२१८	७७३२	"	प्रियादास	१६२५	१६५	र.का. १७६६
२१९	७८३१	"	लालदास	१८५६	१३२	लि. स्था० बदनौर लि.क. शिवरामदास, गङ्गापोल, जयपुर
२२०	६५७६	भक्तमालमाहात्म्य	कृष्णदास	१६वीं	४	
२२१	५४२४	भक्तितरङ्गिणी	चरणदास	१६४१	४०	लि.क. इन्द्र मिश्र, स्थान नगर
२२२	६८२६ (१)	भक्तिपदार्थ		१६०२	१-१४४	अन्त में भजन हैं
२२३	५४१३	भगवद्गीता भाषा पद्य		१६००	८६	लि.क. हरिदास ब्राह्मण, वैराठ
२२४	७५०८	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद		१७७४	८८	लि.क. डालचंद ब्राह्मण, शाहगंज दिल्ली
२२५	६१४८	भद्रबाहुचरित्र चौपाई	किशनसिंह सांगानेर के	१८२७	४७	र.का. सं० १७७०, कई स्थानों पर प्राचीन पत्रों के स्थान पर नये पत्र लिखे हुए हैं
२२६	६१५१	"	किशनसिंह सिघवी	१६०६	३६	
२२७	६१५६	भद्रबाहु चरित्र भाषा	किशनसिंह	१६०६	४०	लिखितं अलवरसहरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२२८	५४२० (३)	भर्तृहरिशतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	म. प्रतापसिंह	१६वीं	६५-६७	
२२९	४३०८ (४)	भरथचरित्र	जनगोपाल (?)	१८वीं	४५६-४६७	१०५ छन्द हैं
२३०	६०१०	भविष्यदत्त चौपाई	ब्रह्म रायमल	१६वीं	४७	
२३१	६६३७ (५)	भागवत, एकादशस्कन्धानुवाद	चन्द्रदास	१८११	२१०-२६३	लि.क. रामदास, निराणा ग्राम
२३२	४२५६	भागवतचरित्र नारायण लीला	माधवदास	१८वीं	३६	लि.क. जती जीवनसागर
२३३	७१७०	भागवत दशमस्कन्ध की भाषा	हरिवल्लभ	१६८०	६१	गुटकाकार
२३४	६८३०	भागवत भाषा	कविराय मोतीराम आणंदसुत	१६वीं	१०३	जीर्ण प्रति
२३५	६०६८	,	हरिवल्लभ	१७८६	६५	लिखितं रूपावास मध्ये, ब्राह्मण केशवरायजी
२३६	६०६०	भागवतभाषानुवाद (द्वितीय स्कन्ध)	नागरीदास	१६वीं	३३	पत्र सं० ५, ६, १७ अप्राप्त
२३७	४२६५ (२)	भावपञ्चाशिका	वृन्द कवि	१७६३	४-१४	लि.क. डालूराम
२३८	४८१३	"	"	१८३६	६	लि. स्था०-लीबड़ी
२३९	४६०६	"	"	१७६८	१३	र.का. सं० १७४३
२४०	५४३२	भाषाभरण	सरस्वती (बैरीसाल)	१६वीं	२५	लि.क. केवलसोभाग्य
२४१	५०४८	भाषाभूषण	म. जसवन्तसिंह	"	२६	लि.क. गोपाल ब्राह्मण
२४२	६६७६ (१)	भाषाभूषण टीका	नन्ददास	१८६०	१-७३	
२४३	४२६३ (६)	भाषासरोदय	रसरशि	१८८२	२५-२६	
२४४	५३०६	भास्करवंशप्रदीपिका	तेजसिंह	१८वीं	५३	
२४५	४०८२	भीषमबावनी	भीषम	"	१०	
२४६	४१७६	भोगलपुराण		१६वीं	२०	
२४७	५४१८ (५)	मङ्गल गीत	रूपचंद	"	६१-६६	

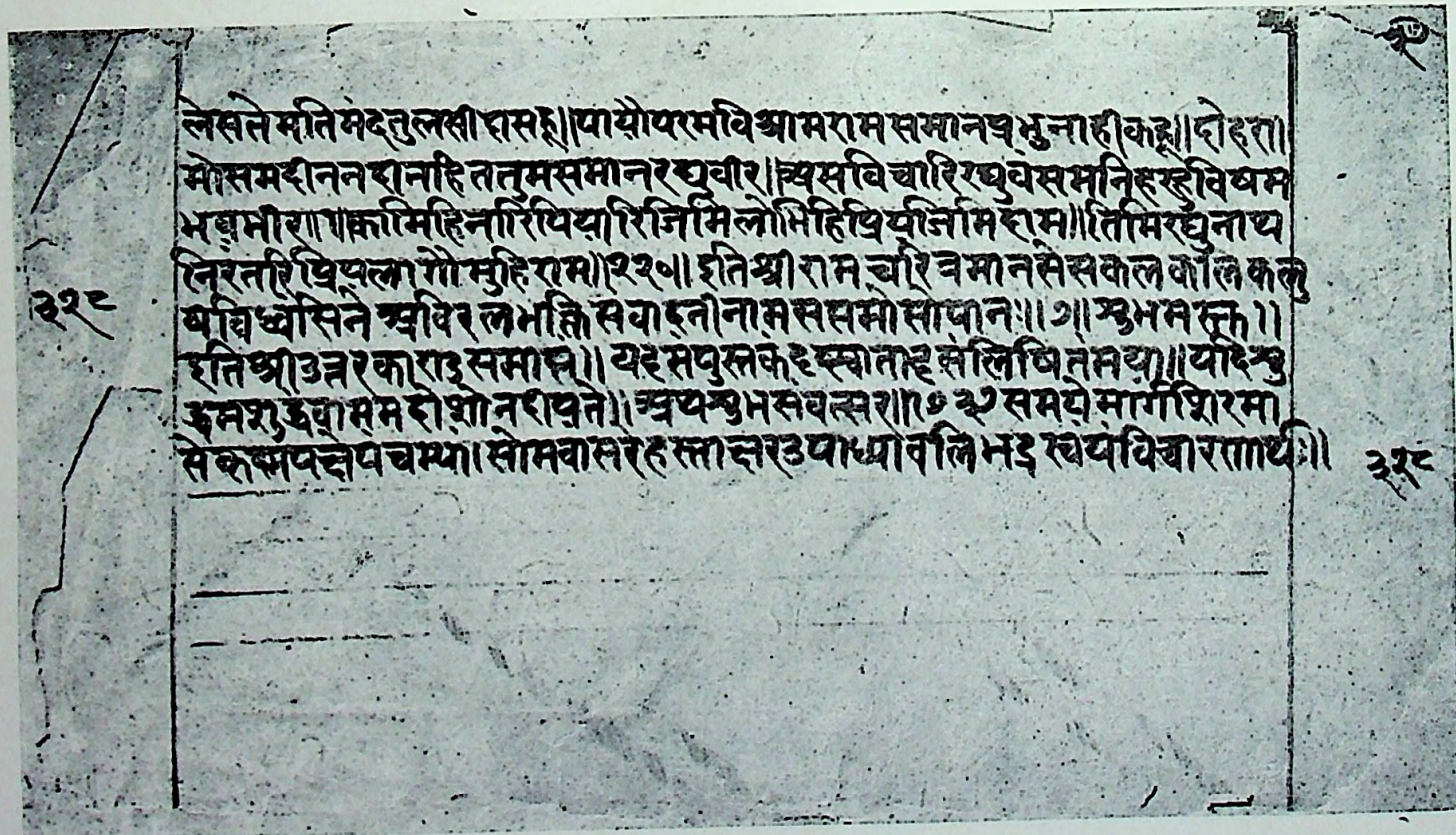
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४८	४७२२	मतिचन्द्रिका		१६वीं	४	मोहरंम और वारों का विचार
२४९	४३०६ (१)	मनीरामपचीसी	मनीराम	१६०२	५१	
२५०	६८३५ (७)	महावीरस्तवन		१६६६	१	
२५१	६८३५ (११)	"	"	"	२	
२५२	७१५६	माखन लीला	नन्ददास	१६१४	४३	
२५३	५३७१ (४)	माण्डूक्योपनिषद् भाषा	श्रीकृष्ण भट्ट	१६वीं.	१-२०	
२५४	७६४८	मातृकाक्षरबावनी कवित्त-संग्रह	सार कवि	१८वीं	८	अन्तिम पत्र त्रुटित
२५५	४२१६ (६)	मानमञ्जरी नाममाला	नन्दराम	१८५६	३६०-३७०	
२५६	४६१५ (१)	"	"	१८८७	२-१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
२५७	४२६३ (२)	मानमञ्जरी नौका	रसरशि	१८८२	२	
२५८	४२६३ (५)	मालिकमुकाम	"	"	२०-२४	
२५९	७७२० (११)	मिथ्वात्ववानी		१८वीं	४६-४७	
२६०	४३०६ (५)	मुरलीविहार	म. प्रतापसिंहजी	१८६६	८-६	
२६१	७४४१ (१०)	"	"	१६१४	५७-५८	
२६२	४४५२ (१५)	मुहूर्तचक्र		१८वीं	१८वाँ	लि.क. प्रीतसौभाग्य
२६३	५४१६	यदुराज विलास	रघुनाथ द्विज	२०वीं	२२५	र.का. सं० १६३३
२६४	७५६४	याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा	गुरुप्रसाद	"	२१	लि.क. गोपीनाथ शर्मा
२६५	४३७१	योगवाशिष्ठसार भाषा पद्य	कवीन्द्राचार्य सरस्वती	१८वीं	२०	
२६६	४३०६ (१६)	रंग चौपाई	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	५०-५६	
२६७	७४४१ (१४)	"	"	१६१४	६६-६८	
२६८	६७७६	रत्नपरीक्षा	रत्नसागर	१६वीं	२१	र.का. सं० १७५५

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६६	४३०६(८)	रमकभूमक बत्तीसी	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	१५-१६	
२७०	७४४१(६)	"	"	१६१४	४२-४३	
२७१	४६६६	रमलज्ञानशकुनावली		१६वीं	४	
२७२	५४३४	रसकवित्तसंग्रह	शेख आलम	२०वीं	१५४	
२७३	५४२२	रसपीयूषनिधि	सोमनाथ आचार्य	१८५५	१३३	र.का. सं १७६४
२७४	४६२३(२)	रसमंजरी	नन्ददास	१७२८	१८-२४	
२७५	६३३७	रसरतन काव्य	प्रधान पुहकर	१८५०	२३२	आद्य पत्र अप्राप्त, सं० १७२३ में रचित
२७६	४२१६(६)	रसराज	मतिराम	१८५६	२६४-३१८	
२७७	६३४२(२)	रसराशिपच्चीसी	रसराशि	१६वीं	१०-१६	
२७८	७०६२	रससमुद्र	चैनराम, (भोलानाथपौत्र)	१८६१	१३६	र.का. सं. १८६१, मूल प्रति
२७९	४४५२(२)	रसिकप्रिया	केशवदास	१६वीं	३-५	द्वितीय प्रभाव तक, अपूर्ण
२८०	४०१४	रसिकप्रिया	"	१७६६	६८	र.का. सं. १६४८
२८१	५३८०(२)	रसिकप्रिया	"	१८४६	१-६६	
२८२	७७२०(३)	रसिकप्रिया	"	१७५६	१-४०	लि.क. लखमीचंद, गढ़ हणोंरमध्ये
२८३	४६२५(१)	रसिकप्रिया, राजस्थानी भाषा में अर्थ सहित	"	१८२६	१-१७५	
२८४	७०६३	रसिकप्रिया टीका जोरावरप्रकाश	जोरावरसिंह	१६२१	१५४	लि.क. कवि मन्नालाल
२८५	४२१६(५)	रसिकप्रिया टीका	"	१८५६	१६२-२६४	
२८६	४२१७(१)	रसिकप्रिया	केशवदास	१८वीं	११२	पृ. ७६ से ८४ तक अप्राप्त
२८७	४२६३(१)	रसिकपच्चीसी	रसराशि	१८८२	१-६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८८	५०६५	रागमाला	कल्याण मिश्र	१७६६	२	लि.क. उदयचन्द्र
२८९	६६४१	रागरत्नाकर	राधाकृष्ण	१८६६	६	र.का. सं. १८५३, उणियारा रावराजा भीमसिंहजी की आज्ञा से रचित
२९०	४२७२	रागरत्नाकर (अपूर्ण)	„	१८७१	२४	आदि के ४ पत्र अप्राप्त
२९१	४२६३ (६)	रागावली	मुरलीधर भट्ट	१८वीं	२३-३१	
२९२	४२१६ (७)	राजनीतिकवित्त	देवीदास	१८५६	३२०-३३२	
२९३	६७७४	राजाहरिश्चन्द्र कथा		१८४०	२३	
२९४	६४४६ (८)	राधामाधवविलास (सचित्र)		१९वीं	१-८२	चित्र सं. ७१, पत्र संख्या २ से १०, १२ से १४, ४१ से ४७, ५५ से ६०, ६२ से ६५, ६८ और ७१ अप्राप्त
२९५	५४२० (१)	राधिकाप्रतीतिपरीक्षा (अपूर्ण)	बालकृष्ण	„	४१-४८	
२९६	७६२६	रामचन्द्र बारहमासा	यशोदानन्दन गुसाई	१८३५	७	
२९७	५३३३	रामचन्द्र बारहमासी	भवानी	१९२४	२	
२९८	५३८६	रामचन्द्रोदय (बालकांड)	श्रीकृष्ण कवि	१८०२	१२५	लि.क. लालचन्द्र पांडे, केर ग्रामे
२९९	५५०७	रामचरितमानस	तुलसीदास	१८४४-४५	६६७	
३००	६६६६	रामचरितमानस	„	१८६७(?)	३४१	लि.क. तुलसी गोसाई (?)
३०१	७४६७	रामचरितमानस	„	१७६२	२८	
३०२	६२१३	रामचरितमानस (बालकांड)	„	१९वीं	१६४	
३०३	४१८७	„	„	१८३०	६७	लि.क. उदयराम, शिवपुरी जयपुरमध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३०४	४२२२	रामचरितमानस (बालकांड)	तुलसीदास	१८४०	१२५	लि.क. वैष्णव भगवानदास
३०५	६६२२	" "	"	१८०३	११३	लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये
३०६	७७६६	" "	"	१६वीं	१३१	
३०७	६२१४	" (द्वितीय सोपान)	"	१८६५	१३५	लि.क. ब्राह्मण तुलसीराम, वरीमध्ये
३०८	४२२३	" (अयोध्याकांड)	"	१८२८	१७८	लि.क. नरेन्द्र सीभाग्य
३०९	५१८८	" "	"	१८३८	६५	वृन्दावन में लिखित
३१०	६६२१	" "	"	१८०३	१०३	लि.क. काशीराम, जयपुरमध्ये
३११	७८००	" "	"	१८४४	८१	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३१२	६२१५	" (तृतीय सोपान)	"	१८६५	३६	
३१३	६२३४	" "	"	१६वीं	२७	
३१४	६२६७	" "	"	१८४६	३३	लि.क. सहजराम मिश्र, कुम्हेरमध्ये
३१५	५४६४(१)	" (अ.कां. से सु.कां.)	"	१८७०	६३	लि.क. महात्मा बकसीराम, जयपुर
३१६	६२१६	" (सु.कां.)	"	१८६५	२८	
३१७	६६२३	" (अ.कां. और सु.कां.)	"	१८०३	४७	लि.क. काशीराम, जयपुर
३१८	४२२४	" (अ.कां.)	"	१८११	३८	
३१९	५१८९	" "	"	१८३८	२७	
३२०	४१५६	" "	"	१८८१	२८	प्रथम पत्र त्रुटित
३२१	५२८०	" "	"	१८००	५०	लि.क. गोविन्ददास, भरतपुर का विरक्त अखाड़ा
३२२	७८०१	"	"		२५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२३	४१२७	रामचरितमानस (कि.कां)	तुलसीदास	१८६६	४६	लि.क. परमानन्द कायस्थ
३२४	५१६०	" "	"	१८३८	१८	
३२५	४२२५	" (सु.कां)	"	१८३२	२४	लि.क. नरेन्द्र सौभाग्य
३२६	६२००	" "	"	१९१०	१७	
३२७	६७३१	" "	"	१९वीं	४३	लि.क. हरदयाल
३२८	७८०२	" "	"	१८५५	२४	मिश्र मोहनलाल
३२९	६०७२	" (लं.कां.)	"	१९वीं	६२	दो प्रकार की लिखावट है
३३०	६३२१	" "	"	१७८०	६८	लि.क. सरदारसिंह विद्यार्थी
३३१	६६२४	" "	"	१८०३	३९	लि.क. काशीराम व्यास, भीखा की पोथी सू
३३२	७८०३	" "	"	१८४४	७२	लि.क. मिश्र मोहनलाल
३३३	६२१७	" (यु.कां.)	"	१८९५	६३	
३३४	४२२६	" "	"	१८२१	७८	लि.क. कृपाराम पुरोहित जयनगरे
		" (उ.कां.)	"			
३३५	६२१८	" "	"	१८९५	६८	
३३६	६२४५	" "	"	१९११	४८	
३३७	४२२७	" (उ.कां.) चातकसोलसी	"	१८२७	७६	लि.क. वैष्णव भगवानदास
३३८	४२२८	" (उ.कां.)	"	१९वीं	६५	
३३९	६६२५	" "	"	१८०३	३८	लि.क. काशीराम अंतिमपत्रवृत्ति
३४०	६९९६	" "	"	१८८३	६९	लि.क. बलदेव
३४१	७६२३	" "	"	१८७९	१२५	



क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ.कां.)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि.क. मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७६८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, सं० १७३७ की प्रतिलिपि है
३४३	७७६८	" "	"	१७३७	३७	* लि.क. बलभद्र उपाध्याय
३४४	७५७१	" वैराग्यसंदापन नाम द्वितीयसर्ग	"	१८८६	५	लि.क. मिश्र आनन्दनारायण
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास	"	३	
३४७	६०७१	रामनोरत्नसार संग्रह	रामचरण	१६वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थों से संग्रहीत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचंद्र मुनि	१७६३	७८	र.का. सं. १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद बंछक		१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	कालिदास	१६व	१०	कृति के अंत में 'हनुमान छंद' है
३५१	५४११	रामस्तवराज भा.टी.	रामप्रसाद सोतापतिशरण	२०	६६	र.का. सं. १६०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	तुलसीदास गोस्वामी	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	"	"	२	
३५४	५३६२	रामायण (यु.कां.)	मनोहर, कविकलानिधि	१८२०	२६३	लि.क. युगलकर्ण मिश्र
३५५	५३८६	रामायण (यु.कां.)	"	१८३७	३४१	* प्रतापसिंहाज्ञाया निर्मित लि.क. रामसेवक, पत्र १-७६, २१०-२३१ अप्राप्त ५० पत्र रिपुपुरदाह और ८८ पत्र युद्धकांड सम्बन्धी हैं
३५६	७११३	रामायण (यु.कां.) सोताराम रामायण	कश्चित्, शंभसिंह निर्देशित	१६वीं	१३८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४२	७८०४	रामचरितमानस (उ.कां.)	तुलसीदास	१८४८	४०	लि.क. मिश्र मोहनलाल, यह प्रति ग्रन्थाङ्क ७७६८ की, बलभद्र उपाध्याय द्वारा लिखित, सं० १७३७ की प्रतिलिपि है
३४३	७७६८	" "	"	१७३७	३७	* लि.क. बलभद्र उपाध्याय
३४४	७५७१	" वैराग्यसंदापन नाम द्वितीयसर्ग	"	१८८६	५	लि.क. मिश्र आनन्दनारायण
३४५	४२५७	राम चरित्र	सुन्दरदास	१८वीं	८	
३४६	४२३५	रामनखशिखवर्णन	माधोदास	"	३	
३४७	६०७१	रामनौरत्नसार संग्रह	रामचरण	१६वीं	३१	सम्बन्धित ग्रन्थों से संग्रहीत
३४८	४८४५	रामविनोद	रामचंद्र मुनि	१७६३	७८	र.का. सं. १७५०, आद्य पत्र ११ खण्डित
३४९	६१३६	रामविनोद वैद्यक		१८३२	८६	
३५०	४२७१	रामविलास काव्य	कालिदास	१६व	१०	कृति के अंत में 'हनुमान छंद' है
३५१	५४११	रामस्तवराज भा.टी.	रामप्रसाद सोतापतिशरण	२०	६६	र.का. सं. १६०१
३५२	४२४३	रामस्तुति गीत	तुलसीदास गोस्वामी	१८वीं	४	
३५३	४२४२	रामस्तुति पद	"	"	२	
३५४	५३६२	रामायण (यु.कां.)	मनोहर, कविकलानिधि	१८२०	२६३	लि.क. युगलकर्ण मिश्र
३५५	५३८६	रामायण (यु.कां.)	"	१८३७	३४१	* प्रतापसिंहाज्ञया निर्मित
३५६	७११३	रामायण (यु.कां.) सोताराम रामायण	कश्चित्, शंभसिंह निर्देशित	१६वीं	१३८	लि.क. रामसेवक, पत्र १-७६, २१०-२३१ अप्राप्त ५० पत्र रिपुपुरदाह और ८८ पत्र युद्धकांड सम्बन्धी हैं

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३५७	६३७३	रामाज्ञा	तुलसीदास	१८वीं	३६	
३५८	७७४६ (७)	"	"	२०वीं	१-२१	
३५९	६८२८ (२)	राव हमीरकी वारता		१९वीं	७	
३६०	४२६३ (१७)	रासको रेखता	म. प्रतापसिंहज	१८वीं	४०-४२	
३६१	४३०६ (६)	"	"	१८६६	१७-१८	
३६२	७४४१ (१२)	"	"	१९१४	६१-६३	
३६३	५२०२ (६)	रासपञ्चाध्यायी	वंशीअली	१८८५	११४-१२३	
३६४	५३६६	"	नन्ददास	१९४३	१२	
३६५	४६२३ (१)	रूपमञ्जरी	"	१७२८	१-१८	* लि.क. मुरलीधर मिश्र ३०० पद्य हैं
३६६	५२०२ (४)	रेखता		१८८५	१०८-१०९	भाषा पञ्जाबी प्रभावित है
३६७	५४२६ (१०)	रेखता लैलामजनूका			५३-५६	
३६८	६८३५ (२)	लघुचाणक्य		१८६६	२	
३६९	७७२८	लीलाललितविनोद	डेडराज (जनराज)	१९०४	२७७	लि.क. अंकारनाथ व्यास, रामद्वारा उदेपुरमध्ये
३७०	५८६६ (२)	लैलामजनूका किस्सा	कवि खेतसी	१९वीं	१-११	*
३७१	७७४४ (६)	ब्रजनागरी		१७५८	६६-७२	
३७२	६९७८	ब्रजविलास (सचित्र)	ब्रजवासीदास		१६३	चित्र सं. १७
३७३	७४४१ (१५)	ब्रजशृङ्गार	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	६८-७५	
३७४	६०१६	व्रतकथाकोश भाषा	श्रुतसागर	१९२३	६२	* भाषाकार सुन्दर के पुत्र खुशालचंद्र, लक्ष्मीदासका शिष्य है
३७५	४१४३	वृन्दसतसइया	वृन्द	१८८१	४६	लि.क. मनसुख कंदोई, बीकानेर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७६	४२१६(४)	वृन्दसतसई	वृन्द	१८५६	१६७-१६१	
३७७	४६१६	वनपर्वकी कथा		१८६६	१३	
३७८	६२३२	वरांगनृपतिचरित्र भाषा	नथमल, शोभाचंद का पुत्र	१८२७	७४	
३७९	५२०५(१)	वल्लभाचार्यविज्ञप्ति और स्तोत्र नामावली		१८वीं	२-३२	
३८०	६०७८	विक्रमविलास	गंगेश मिश्र	१८६६	१०२	* र.का. सं. १७३६
३८१	५४१५	विक्रमादित्यचरित्र (पंचदंडकथा)	वैद्यनाथ, कवि सोमनाथका वंशज	२०वीं	५-३३	र.का. सं. १८८४
						आद्य ४ पत्र अप्राप्त
३८२	६६५२	विचारमाला		१८६३	५	र.का. सं. १७२६
३८३	६१५७	विजयमुक्तावली(महाभारतअनुवाद)	छत्रसिंह श्रीवास्तव	१८६५	२३१	अटोरपुर (भदावर) के राजा कल्याणसिंह के राजमें सं. १७५७ में रचित
३८४	५३७५	विजयसुधानिधि	कविवर रामलाल	१६०३	१४१	कणपर्व से आगे पद्यानुवाद है
३८५	६३४१	विदुरप्रजागर	कृष्ण कवि	१८६५	६४	ब्रजेन्द्र बलवन्तसिंह के लिए रचित सं. १७६८ में राजा आयामल्ल की आज्ञा से रचित, म.भा. उद्योग पर्व का अनुवाद
३८६	७७४०(१)	विदुरप्रजागर भाषा	गणपति मिश्र	१६३७	१-४६	
३८७	७५६२	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	१६१४	८२	लि.क. हरिदास फबीरपन्थी, बदनोरमध्ये
३८८	६०८६	"	"	१६वीं	८१	

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८६	६२१६	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	१८६०	५८	लि.क. वंष्णव गोविन्ददास लस्करी, स्थान विरक्त अखाड़ी, भरतपुर
३९०	६२३३	"	"	१८६४	१०६	
३९१	५२०३	विरहगुलजार इस्क अन्नवर कथा अपूर्ण		१९वीं	४२	
३९२	७४४१(१७)	विरहपदकी टीका	म. प्रतापसिंहजी	१९१४	८०-९६	: .
३९३	४२६३	विरहसलिला	,	१८वीं	३६-६३	
३९४	४३०६(११)	"	"	१९वीं	२१, २२	
३९५	६६७३	विविधसंग्रह		"	८८	रामचरित चौपाई, गुरुमहिमा, सुदामाबारहखड़ी, नारद गीता आदि
३९६	४२८७(८)	विवेकचिंतावनी	सुन्दरदास	१७२८	३३-३८	लि.क. आनन्दराम
३९७	४६२५(२)	वृन्दविनोद (वृन्दसतसई)	वृन्द (वरदराज)	१८२६	१७५-२०७	६६४ दोहे हैं
३९८	७४४१(१८)	वृन्दसतसई	"	१९१४	६७-१३४	
३९९	४२८८(१)	वृन्दावनशत		१८८६	१७	
४००	५२०२(३)	"	माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य)	१८८५	६१-१०८	र.का. सं. १७०७
४०१	५२०६	वैद्यकसार		१८वीं	६१-१५१	
४०२	५४२३	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख, केशव मिश्रसुत	१९वीं	६८	
४०३	६६३७	"	"	,	४०	
४०४	६०२२	वैद्यरत्न	जनार्दन गोस्वामी	१८८४	३६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४०५	४३६६	वैद्यविनोद, (शाङ्गधर भाषा)	रामचन्द्र	१८११	६६	र.का. सं. १७३६ र. स्था०-मरोटकोट
४०६	७७२० (१३)	वेदनिर्णयपञ्चाशिका	बनारसीदास	१८वीं	४८-५०	
४०७	६६४३	वेदान्तपरिभाषा	मनोहरदास निरञ्जनी	"	२०	र.का. सं. १७१७
४०८	६७७०	वेदान्तमहावाक्य भाषा	"	१८५२	२०	र.का. सं. १७१७
४०९	४५५७ (३)	वेराग्यमञ्जरी	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	२४-३८	
४१०	७४४१ (३)	"	"	१६१४	२२-३५	
४११	७७४६ (३)	"	"	२०वीं	१३	
४१२	८१०७	वेराग्यशतक भाषानुवाद	हरदयाल	१६५४	६०	लि.क. प्रोहित दीनानाथ
४१३	६७२५	शतकत्रयभाषानुवाद	म. प्रतापसिंहजी	१८६५	१२०	लि.क. मङ्गाविष्णु
४१४	७८३८	शतकत्रयमञ्जरी (सचित्र)	"	१६वीं	६५	चित्र सं. १
४१५	६७६८	शतप्रश्नोत्तरी भाषा	मनोहरदास निरञ्जनी (?)	१८५२	२४	
४१६	४१६४ (२)	शनिकथा	मुंता रामदान	१६२६	१०-१३	पद्यबद्ध कथा है
४१७	५४२५	शब्दावली (अपूर्ण)		१८७१	६-४५	सन्त-शब्द-वाणियों का संग्रह
४१८	५३६६	शिलखखवर्णन	रसानन्द	१८६३	२४	* र.का. सं. १८६३, स्वयं कवि के हस्ताक्षरों में लिखित
४१९	४५४७ (२)	शृङ्गारमञ्जरी	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	१३-२४	
४२०	७४४१ (२)	"	"	१६१४	१२-२२	
४२१	७७४६ (२)	"	"	१६वीं	१३-२४	
४२२	६४६१	षट्प्रश्ननिर्णय	मनोहरदास निरञ्जनी	१८२६	३३	लि.क. सेसराम, कुम्होरमध्ये
४२३	६७६६	"	"	१८५२	७५	लि.क. महात्मा जयदेव जोबनेर- वासी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४२४	५४३६	सिखनखवर्णन	बलभद्र	२०वीं	२४	
४२५	५४२१(१)	सिद्धान्तके पद	वृन्दावनदास	१६वीं	१-२५	
४२६	७४४१(७)	स्नेहबहार	म. प्रतापसिंहजी	१६१४	४३-४६	
४२७	४४५२(३१)	स्नेहलोला	"	१८वीं	३३, ३४	
४२८	५२३४(१)	"	कवि गिरिधरराय	१६११	१-१०	* लि. क. बट्टीनाथ व्यास
४२९	५४३८(३)	"	विष्णुदास	१८६०	४०-५६	
४३०	६७४६(३)	"	"	१६वीं	६२-१०५	
४३१	७४४१(६)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१६१४	५२-५७	
४३२	४६२३(३)	स्फुट कवित्त आदि			१-१४	
४३३	४२२६	स्फुट कवित्त, रेखता आदि		१६वीं	३३	
४३४	६३४२(१)	स्फुट कवित्त		"	१०	
४३५	६३४३(१)	स्फुटोक्ति		१८८६	१२	
४३६	६६६२	स्फुट पदसंग्रह	सूर आदि	१७४२-	६८	
				१७४४		
४३७	६८३३(६)	स्फुट राग पद		१८५२	३५-३७	
४३८	७७५३(६)	स्फुट सवैया		१८३७	३८-३९	
४३९	४२६३(१३)	स्नेहसंग्राम	म. प्रतापसिंहजी	१८वीं	२७-३०	
४४०	४३०६(२)	"	"	१६वीं	१-३	
४४१	४२६३(१४)	स्नेहबहार	"	१८वीं	३१-३३	
४४२	४३०६(३)	"	"	१६वीं	४, ५	
४४३	६३२८	स्मरणदर्पण	रामचन्द्रदास	"	८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४४	७१३३	स्वरोदय	गोरक्षोक्त	१६४६	११	लि.क. प्रभु पुरोहित नागोर का
४४५	५७१७	स्वरोदय भाषा		१८वीं	१४	
४४६	५६५७	स्वरोदय टीका	लालचंद्र	१६वीं	६	
४४७	५७८५	संग्रामदर्पण	सोमनाथ, नीलकण्ठात्मज	१६१५	३४	र.का. सं. १७८६, ग्रन्थान्त में कविकुल-वर्णन है
४४८	७७३६	संग्रामसार, द्रोणपर्वका अनुवाद	कुलपति मिश्र	१६५७	१६५	म. रामसिंह की आज्ञा से निर्मित
४४९	७७३७	” ”	”	१६वीं	१५२	लि.का. कृष्णचंद्र, बूंदी
४५०	७८१६	संगीतदर्पण भाषा	हरिवल्लभ	१८३१	३-७६	आद्य २ पत्र अप्राप्त
४५१	४००५	संयोगद्वात्रिंशिका	मानकवि	१८४८	४	
४५२	६४१७	संयोगवत्तीसी	”	१६वीं	२	
४५३	७७२१(४)	”	”	१८२५	१११-११८	
४५४	५३४६	सत्यनारायणव्रत कथा	हरिदास	१८२५	२४	र.का. सं० १६२२, लि.क. प्रताप मिश्र,
४५५	५२४२	सत्यनारायणकथाका अर्थ		१६वीं	१४	
४५६	७८१६(२)	सर्पमन्त्रादि		१८३१	६	
४५७	६६८६	सदाशिव भट्ट प्रशस्तिपरक पद्य		१८४१ से पूर्व	७	फतहचंद्र, गणपति, भोलानाथ आदि द्वारा रचित पद्य
४५८	५३८४(२)	सनेहलीला	मनोहरदास	१६०४	७०-८२	
४५९	७६०७	सनकादिबीजमंत्र		१६वीं	१	लि.क. केशवदास
४६०	४६०८	सभासार आदि	रघुराम कवि	१८५२	११४	लि.क. मगनीराम ब्राह्मण, मांडलगढ़मध्ये
४६१	४००३	सभासार नाटक	रघुराम कवि	१८४५	२०	रा.का.सं. १७५७ स्था. सारंगपुर, अहमदाबाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६२	४०२८	सभासार नाटक	रघुरत्न कवि	१८४२	१६	* लि.क. ऋषि किशोर, सोभत प्रथम पत्र अप्राप्त
४६३	५४२१(२)	समयप्रबन्ध	वृन्दावनदास	१६वीं	१-३११	
४६४	४४५२	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८१२	६२-८४	लि.क. प्रीत सोभाग्र
४६५	४७६१	"	बनारसीदास	१८वीं	६६	र.का.सं. १६६३
४६६	४८१६	"	बनारसीदास	१८०२	१३६	
४६७	४८१२	"	"	१८६०	१२५	
४६८	६४४२	"	"	१८२४	६०	लि.क. मोहन, रचना स्था० आगरा ।
४६९	७७२०(२)	"	बनारसीदास, आगरानिवासी	१७२५	१-५४	लि.क. मतिवर्द्धन, हमीरगढ़मध्ये दोस श्री थावा पठनार्थम्
४७०	६३५३	समयसार नाटक भाषा	"	१६	८६	
४७१	६८४४	समयसार भाषा नाटक	बनारसीदास	१७५३	११७	र.का. सं० १६६३
४७२	५३७३(२)	समयसार नाटक, सिद्धान्त भाषा			४-७३	
४७३	५३७६(१२)	" "			११२-१६७	
४७४	७४४२(३)	समयसार भाषा	बनारसीदास	१७६४	१-७१	
४७५	७४४३	समयसार नाटक भाषा	"	१६१३	१३२	लि.क. दवे अमरचंद
४७६	५३८०(२)	समरविजय		१८४६	१६	प्रल्हाददास वैष्णव पठनार्थ
४७७	६७६६	सरसरस	राय शिवदास	१६वीं	१५	
४७८	६८३५(३)	सवा सौ सीख		८६६	४	
४७९	४४५२(२३)	सवेया	बालपुरी	१८वीं	२३ वां	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४८०	४४५२(३३)	सर्वया	चंद कवि आदि	१९वीं	४० वाँ	
४८१	४४५२(६३)	,,		,,	११८ वाँ	लि.क. प्रीत सौभाग्य
४८२	६२२७	सियरघुवीरविवाह	तुलसीदास	,,	६	
४८३	५०३५	सिंहासनबत्तीसी (अपूर्ण)		१८६६	६३	लि.क. काशीराम पंचोली
४८४	५८६५	,,	कृष्णदास	१९वीं	१०२	#
४८५	६०११	सीताचरित्र चौपाई	चन्द कवि	१७४७	१२३	जीर्ण प्रति
४८६	६१४६	सीताचरित्र चौपाई	कवि बालक (चन्द ?)	१८६८	१००	र.का.सं. १७१३
४८७	७७५६(१)	सीताराम ध्यानमञ्जरी	अप्रदास	१८६४	१-२३	
४८८	६६३१	सीताराम रामायण (अयो. कांड, वनवास कांड)		१९वीं	१५६	गोणावत कुलावतंस, शंभूसिंहा- ज्ञया प्रणीत
४८९	६६३२	सीताराम रामायण (आर. कांड, सीतापहरण कांड)		,,	५६	
४९०	६६३३	सीताराम रामायण (कि. कां. कपिमित्र कां.)		,,	५६	
४९१	६६३४	सीताराम रामायण (सु.कां. रिपुपुरदाह कां.)		,,	६२	
४९२	७१५५	सुखदेव लीला	मुरलीदास	,,	४७	प्रथम पत्र अप्राप्त
४९३	६४४६(६)	सुदामाकी बारहखड़ी		,,	१२-१४	
४९४	५४१२(१)	सुदामाचरित्र	नरोत्तमदास	१८६३	१-१३	
४९५	५८८७	सुदामाचरित्र (कक्का प्रणाली)	खुशाल शांडिल्य विप्र	१८वीं	१२	
४९६	६६४६	सुन्दरदासकी साखी	सुन्दरदास	१८८६	५६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६७	६६४७	सुन्दरदासजीके शब्द	सुन्दरदास	१८८६	४५	लि.स्था. फतेहपुर
४६८	४३१३(२)	सुन्दर भक्तिविलास	लाला सुन्दरलाल	१८६७	६-७१	लि.स्था. जयपुर
४६९	४२१६(८)	सुन्दरभृंगार	सुन्दरदास	१८५६	३३३-३५६	
५००	४३०७(२)	"	"	१८३७	८७	लि.क. वेणीराम
५०१	४८१४	"	सुन्दरदास	१८१३	२३	लि.क. श्रीकमजीशिष्य डाह्याजी
५०२	४८३५	"	"	१७८६	२१	लि.क. मुनीलाल सूरत बन्दरे
५०३	४०२६	" व द्वादशमास वर्णन	"	१७४२	२२	र.का.सं. १६८८
५०४	६३१७	"	सुन्दर कवि	१६वीं	४०	र.का.सं. १६८०
५०५	६६४४	सुन्दरसवैयासंग्रह	सुन्दरदास	१८८९	७६	लि.स्था. फतेहपुर
५०६	६६४५	"	"	१८०४	४४	लि.क. प्रेमदासशिष्य भिखारी-दास
५०७	७७२०(१६)	सुमतिकुमतिसंवाद (कहरामामाकी चाली)		१८वीं	५०वां	
५०८	४३०६(७)	मुहागरन	म. प्रतापसिंहजी	१६वीं	१४, १५	
५०९	७४४१(५)	"	"	१६१४	४०-४२	
५१०	५४३५	सूरजपुराण		१८६२	२२	पद्मपुराणोक्त
५११	६३४२(३)	सूरसागर पद	सूरदास	१६वीं	१६-२४	लि.क. मनसाराम कायस्थ
५१२	७७२२(१)	सूरसारङ्ग (अपूर्ण)	"	१८वीं	१-३६	१७२ पद हैं
५१३	५८६६(१)	सौदागर बच्चेका किस्सा		१६वीं	१-१०	
५१४	६२०२	हनुमानबाहुक	तुलसीदास	१६१७	१४	
५१५	७७३१	हयगुणप्रकाश प्रश्नोत्तर	लक्ष्मणदान बारैठ	२०वीं	५२	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५१६	७८११ (५)	हरबोलचितावणी	सुन्दरदास	१८वीं	१८-१६	
५१७	४२६३ (७)	हरिकीर्तनमाला	रत्नराशि	१८८२	३०-४४	
५१८	४४६५	हरिनाममाला		१६वीं	१	
५१९	४२८७ (६)	हरिबोलचितावनी	सुन्दरदास	१७२८	२३-२५	लि.क. आनंदराम
५२०	६३४०	हरिवंश भाषा		१६वीं		आदि के १५३ पद्य ऋटित
५२१	५३६०	हरिवंशपुराण भाषा	लालचंद	१७१६	१५४	लि. स्था. अंबावती, पत्र १ से ७
५२२	६१५८	"	सालवाहन	१७८४	५८	अप्राप्त
५२३	६१७५	"	खुशालचन्द	१८४२	१६७	पत्र ४ से ६, ७, १६, १७, ३०, ३४
५२४	७१३४	हितहरिवंश जन्मोत्सव	व्यास हरिलाल	१८३७	७	४२ से ४६ नहीं हैं
५२५	५३७६	हितामृतलतिका	राम कवि	१६वीं	१३३	लि.क. स्वयं रचयिता,
५२६	४२१६ (१)	हितोपदेश टीका	विष्णु शर्मा	१८५६	३७०	वृन्दावन मध्ये
५२७	४०१५	हितोपदेश पंचाख्यान	"	१८५६	७२	ब्रजेन्द्र बलवन्त सिंहाजया
५२८	४३१६ (१)	हितोपदेश भाषानुवाद	"	१८६४	१५८	रचित
५२९	४६१५ (६)	हितोपदेश भाषा		१८८७	२००-३४७	लि.क. मुंशी पन्नालाल, जोधपुर
५३०	५०८२	हितोपदेश (सचित्र)		१८वीं	१७६	* चित्र संख्या ४७, कोटा कलम
५३१	६३४४	हितोपदेश (पद्यानुवाद)	कोविद मिश्र	१८८८	७८	बुन्देलखंड के महाराजा पृथ्वी-
५३२	४२६५ (३)	हितोपदेश (चतुर्थ तंत्र तक)	विष्णु शर्मा	१८०१	१५-१६७	सिंह की आज्ञा से रचित
						लि.क. डालूराम

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २१-हिन्दी ग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३३	७७४० (२)	हितोपदेश भाषा पद्यानुवाद	श्रीपति भट्ट	१६३७	४६-१२५	लि.स्था. लोचनपुर (बूंदी)
५३४	६२५६	हिम्मतिप्रकाश		१६०८	४५	र.का.सं. १७३०, प्रथम पत्र अप्राप्त
५३५	४३०६ (१६)	होरीबहार पद टीका	सवाई प्रतापसिंह	१६वीं	३२-४४	गोपालदासजी पठनार्थम्
५३६	६३४५	हृदयाभरण कवित्त	व्रजजीवन	१८६१-६२	१८२	
५३७	६६५१ (२)	ज्ञानचरणवाचिका		१८६१	२०	
५३८	६२०६	ज्ञानप्रकाश	कृष्णदास	१८८०	४	
५३९	४६१४ (७)	ज्ञानपचीसी	बनारसीदास	१८७१	१६७-१६८	लि. क. झुल्लेराम मिश्र, हस्तेड़ा मध्ये
५४०	७७२० (४)	"	"	१८वीं	४१-४२	
५४१	६६५१ (१)	ज्ञानमञ्जरी	मनोहरदास निरञ्जनी	१८६१	२०	
५४२	६७६७	ज्ञानमञ्जरी भाषा	"	१६वीं	२६	
५४३	४०६५	ज्ञानवचनचूर्णिका	"	१८५५	१८	र.का.सं. १७१६
५४४	६७७१	"	"	१८५२	२२	लि.क. सहजराम दादूपंथी
५४५	४०५७	ज्ञानशृङ्गार	सुमति रंग	१८५०	२२	र.का.सं. १७२२ मुलतानमध्ये
५४६	६६०८	ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	१६०७	३१	लि.क. बलदेव ब्राह्मण
५४७	४३०८ (२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१८वीं	४१०-४४६	६०० छन्द हैं
५४८	६८३७	"	"	"	६१	र.का.सं. १७१०

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २२-जैन स्तोत्र]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	४६०६	अंतरिक्षपाशर्वना छन्द	भाव विजय	१८४५	३	लि.क. हर्षविजय
२	५०७०	"	"	१८११	२	
३	४१४६	" स्तव	"	१६वीं	७	
४	४३४६	अजितशान्तिस्तव सवालावबोध		१७वीं	४	
५	४६१४ (३६)	आराधना	सकलकीर्ति	१८७७	२६२-२६४	
६	५६६०	" चौपई		१५६२	१८	
७	७७५३ (६)	इलापुत्रस्तवन	लब्धिविजय	१८३७	४४-४५	
८	४३६२	एकादशगणधर स्तवन		१७वीं	५	
९	४४५२ (६८)	ऋषभजिनस्तवन	भावकवि	१८वीं	१२० वां	
१०	४६१४ (२३)	ऋषभनाथजीनो छन्द		१८७१	२३०से२३१	
११	४६१४ (६०)	"	मूला मयारामसुत	१८७७	३१७से३२०	
१२	७३७२	ऋषभदेवजीरो छन्द	धर्मसी	१६वीं	१	
१३	४६१४ (१७)	ऋषिमंडलस्तोत्र		१८७१	२१०से२१२	
१४	७५५०	कल्याणमन्दिरस्तोत्र (राजस्थानीटबार्थसहित)		१७५७	१२	लि.क. धनजी
१५	५३७३ (१)	" मूल		१८वीं	१-३	
१६	५६८२	" (मटीक, त्रिपाठ)	कुमुदचंद्र	१७वीं	१२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१७	६२५६	"	हर्षकीर्ति	१८४८	२५	लि.क. हेतराम यता अमोचंद की पोथी सूं राजराजा रणजीतस्यंघजी ने लिखी
१८	७३६८	" (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१८वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९	६९१४	कल्याण मंदिर स्तोत्र राजस्थानी भाषार्थ सह		१७८२	१८	
२०	४०३०	कायस्थिति स्तोत्र (सबालावबोध)	साधुकीर्तिगणि	१७वीं	३	लि.क. समयकीर्तिमुनि
२१	५०६९(७)	गौडीयपाश्वर्चस्तुति		१९०६	१३ वाँ	
२२	५०६९(१)	गौडीयपाश्वर्चनाथ चौदालियुं	लावण्यविजय	१९०६	१९३	
२३	५०६९(४)	" छन्द	कुशललाभ	१९०६	१० से १२	
२४	५०७७(१)	गौडीपाश्वर्च स्तवन	कीर्तिविलास	१८०२	१ला	पत्र का कोण कटा हुआ है
२५	४३६३	गौतमदीपाली का स्तवन	सकलचंद्रसूरि	१६८५	६	
२६	४३६६	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रसंक्षेपवृत्ति	सोमप्रभाचार्य	१५२४	५	लि.क. धीरमूर्ति गणि शिष्य लि. स्था. श्री भृगुपुर महानगर
२७	६३२९	" स्तुति		१७८२	६	लि. स्था. मसूदा
२८	७२७५	" (सावजूरि, पंचपाठ)	वप्पभट्टिसूरि	१६वीं	४	
२९	४२८७(५)	चतुर्विंशतिस्वयंभूस्तोत्र		१७२६	१९-२२	
३०	४९१४(३२)	चैत्यवंदन चौपाई	वीरचंद्रमुनि	१८७७	२४९से२५१	
३१	४९२४(४)	"	लावण्यसमयमुनि	१७८७	१	
३२	५४३६(१)	"		१८५३	१ से ३	लि.क. दौलतराम मुनि लि. स्था. मारोट
३३	५४४१	चैत्यवंदनादि जिनस्तवनसंग्रह		२०वीं	२४२	
३४	७४४८	"		१९१५	१२६	लि.क. अमरचंद ? स्तवविष- यक ३१ कृतियों का संग्रह
३५	५०७२	चौबीस जिनस्तवन	गुणविजय	१८वीं	५	
३६	७५९९	" भाषा	महानन्द मुनि	१९वीं	९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७	७४४४(१)	चौबीसी	आनन्दघन	१८८५	१-५३	इस गुटके में १६ कृतियों का संग्रह है
३८	४६१४(३८)	चौरासी लाख जीवयोनिवीनती	ज्ञानभूषण	१८७७	२५६से२६२	
३९	४६१४(५६)	"	हर्षकीर्ति	१८७७	३१५से३१७	
४०	७३६६	जयतिहुयण (सावचूरि)	अभयदेव	१८८२	५	लि. स्था. जैसलमेर
४१	७४०६	" (सबालावबोध)	"	१६६५	६	लि.क. भुवनसुन्दर
४२	५४३६(१८)	जिणकुशलसूरिवृद्धिस्तवन		१६वीं	३	दो स्तवन हैं
४३	५४३६(१९)	जिणकुशलसूरिलघुस्तवन		"	१	
४४	६३८५	जिननमस्कार	जिनकीर्तिसूरि	१८वीं	४	
४५	४२८७(११)	जिनाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	७८से६२	
४६	४६१४(४०)	जीवदया छन्द	भूधर	१८७७	२६५-२६६	
४७	६१८०	जैनचैत्यस्तव (सरस्वतीस्तोत्र)		१६वीं	५	
४८	५३७३(४)	जैनशतक	भूधरदास	१८वीं	६७से१०६	रचना सं० १७८१
४९	५४१८(८)	तिरेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	१६वीं	१०१से१०५	
५०	५४१८(१४)	"	"	"	११६से११६	
५१	४६१४(५६)	तिरेपन क्रिया वीनती	प्रभाचंद्र	१८७७	३११-३१२	
५२	५४३६(६)	तीर्थावलीस्तवन		१६वीं	३६-३८	
५३	७०८४	दण्डकविचारषट्त्रिंशिकासूत्र सटिप्पण	गजसारसाधु धवलचंद्र महोपा- ध्यायशिष्य, टि.क. यशःसोम	१८वीं	१०	
५४	५४३६(१७)	दादेजीरा स्तवन		१६वीं	११	
५५	५४३६(८)	नवकारमंत्रमहिमालघुस्तवन			४०-४३	
५६	७२६०	नवकारमहामंत्रस्तवन	जयवर्त्मभसूरि	१७वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५४३६(१४)	नवकारमहिमास्तवन			३	
५८	५४२७(१)	नवस्मरणस्तवन		१६वीं	१-३१	
५९	४९१४(२१)	नीगोदनी वीनती		१८७१	२२९-२३०	
६०	४८३७	नेमनाथसिलोको	उदयरतन	१८७१	४	लि.क. फतेचंद्र लाधड़ामध्ये
६१	४९१४(१२)	प्रभाती	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वाँ	
६२	७२५७	प्राचीनकर्मस्तवटीका	गोविंदगणि	१७वीं	१७	
६३	५४३६(१३)	पंचकल्याणस्तवन			२	
६४	४९१४(१)	पंचकल्याणीक	रूपचंद	१८७१	१-७	
६५	४२९८	पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थ	समयराज मुनि	१६३५	४	श्रीपाश्र्वनाथसमसंस्कृतस्तव भी साथ में हैं, लि.क. नयनकमलगणि
६६	६२९९	पंचमंगलस्तवन	रूपचंद	२०वीं	८	
६७	४९१४(१५)	पंचमेरु-अष्टक	सुदर्शनविजय	१८७१	२०८-२०९	
६८	५४३६(१५)	पंचसंवरस्तव			२	
६९	५०६९(५)	पद्मावतीछन्द	हर्षसागर	१९०६	१२-१३	
७०	४९१४(४६)	पद्मावतीवीनती (१)	पुंजराज	१८७७	२७५ वाँ	
७१	४९१४(४७)	„ (२)	„	„	२७५-२७६	
७२	४९१४(४८)	पद्मावतीस्तोत्र (अष्टक)	जिनसागर देवेंद्र कीर्तिशिष्य	„	२७६-२७७	
७३	५१३१	पद्मावतीस्तोत्र		१९वीं	२	
७४	७४४४(१७)	पनरे तिथिरी थुई		१८८५	२९४-३०२	लि.क. नेमविजय मानविजयशिष्य गोघूँदा नगर में लिखित
७५	७४४४(९)	पाँच तिथिरी थुई			१९०-१९४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७२६४	पार्श्व जिन यमकमयस्तुति		१७वीं	१	
७७	५४३६ (१०)	पार्श्वनाथजिनलघुस्तवन			४४-४६	
७८	४६१४ (५२)	पार्श्वनाथजीनो छन्द	भुवनकीर्ति	१८७७	२८३से२८८	
७९	४४५२ (६६)	पार्श्वनाथजी पाढगत छन्द	अभयसोम	१८०५	११६ वां	लि.क. प्रीतिसौभाग्य, लि. स्था. नीबेड़ा र.का. वि० १५३५
८०	७४०४	पार्श्वनाथ तथा साधारण जिनस्तवन	प्रेमविमल	१९वीं	१	
८१	६६८४	पार्श्वनाथस्तवन		१८वीं	७	
८२	७७५३ (५)	पार्श्वनाथस्तवन	कीर्तिप्रभ	१८३७	३७-३८	
८३	७५६५	पुद्गलपरावर्त्त स्तवन सवालावबोध		१७वीं	१	
८४	५४३६ (१६)	वीसबहिर्मानस्तवन		१९वीं	१	
८५	७१३८	वीससंस्थानकस्तुति		२०वीं	१८	
८६	५२६८	भक्तामर बालबोध टीका	हरिदास	१८वीं	१८	कमलमपुरमध्ये रचित
८७	५४१८ (२)	भक्तामर भाषा	मानतुंग (हेमराज)		८	४६ पद्य
८८	७१०९	भक्तामर भाषा कालभैरवाष्टकादि		१८वीं	८८	इस गुटके में आबूस्तवन, स्थूल- भद्र सज्जाय, साधुवन्दना मंग- लाष्टक, चतुर्विंशतितीर्थकर स्तव सरस्वती अष्टक आदि विविध रचनाओं का संग्रह है र. का. सं० १७४७
८९	६३४७	भक्तामर महाचरित्र भाषा	विनोदीलाल	१८२८	२६३	
९०	५४२७ (२)	भक्तामरस्तोत्र		१९वीं	३१से४५	
९१	४०२५	,, प्राकृत वार्तिक सहित	मानतुंग सूरि	१६८९	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि.क. शिव- दास वसताणी, स्था. देशलहरान, श्रीफतेपुरमध्ये
T	९२	४३६०	,, सवालमयबोध	१९वीं	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३	७२७१	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग सूरि, बाला. मेरुसुन्दर	१७००	१४	
६४	७४०८	"	मू. मानतुंग	१८२६	१६	लि.क. रूपचंद्र
६५	५६०५	भक्तामर टीका	गुणाकर	१६वीं	३२	
६६	४२८७(२)	भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	१७२६	५-११	लि.क. रामचंद्र
६७	६०००	भक्तामरस्तोत्र पंचपाठ	अमरप्रभ सूरि	१७वीं	७	लिपि सुन्दर है
६८	६०३६	" सार्थ	भा. विनयसुन्दर	१८वीं	१६	
६९	६२७१	" भाषा टीका	मू. मानतुंग, भा. अखैराज श्रीमाल	१७८४	२४	लि. स्था. तूंगा
१००	६२७७	" भाषा	हेमराज	१६४१	१६	लि. स्था. अमदा नगर
१०१	७४५०	भक्तामर भाषा आदि विविध कृतियाँ		२०वीं	२३२	* कृतियों के नाम परिशिष्ट में देखिये
१०२	६२८६	भक्तामरस्तोत्र सटीक	मानतुंगाचार्य	१८वीं	६	
१०३	६३६१	भक्तामर सटीक त्रिपाठ	टी. कनककुशल	१६२८	२४	लि. स्था. विराट नगर
१०४	७१८४	" (सुखबोधिका)	टी. अमरप्रभ	१७वीं	५	
१०५	७३८१	" वृत्ति (सुबोधिका)	वृ.का. समयसुन्दर	१८२१	७०	रचनाकाल—सप्तवसु शृंगावसंति १३८७ (?) पत्तने नगरे
१०६	७७६४	भवारिवारणस्तोत्र सटीक पंचपाठ	जिनवल्लभ सूरि	१७वीं	५	
१०७	४६१४(११)	मंदिरस्वामीनी वीनती	सकलकीर्ति	१८७१	२०७-२०८	
१०८	५४३६(२०)	मरोटकोटमंडण, दादेजी श्रीजिन-कुशल सूरिजीरी नीशाणी		१८५३	८	
१०९	५०७१	राणपुर मंडन वीरजिनस्तवन		१८वीं	२	लि.क. दौलतराम मुनि
११०	७८२७	लघुशांतिस्तव सटीक	मानदेव आचार्य		१६	र.का. १६११

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११	७४३७	ललितविस्तरा पञ्जिका (चैत्यवन्दना वृत्ति)	मुनिचंद्रसूरि	१५वीं	४०	
११२	७३५५	वर्धमानस्तुति	कनककुशलगणि विजयसेन सूरिशिष्य	१६५७	१	लि.क. साहू हरष (ख), ग्राम-हालीवाड़ा
११३	५०७६	वासुपूज्यस्तवन	प्रेमविजय	१६वीं	७	
११४	४३४४	वीतरागस्तोत्र	हेमचन्द्रसूरि	१७वीं	८	
११५	५६३५	वीतरागस्तोत्र सावचूरि पंचपाठ	हेमचंद्र सूरि	१६वीं	६	सहजातिशयनामक द्वितीयस्तव
११६	५६३६	"	"	"	१०	आशीस्तवे विंशतिप्रकाशः
११७	५४१८ (११)	वीरजिणन्द		१८वीं	११२-११३	
११८	५०७४	वीरस्तवन सस्तवक	वीरविजय शुभविजयशिष्य	१८५८	१०	
११९	६४४६ (२)	वीरस्तुति			४०-४१	
१२०	७३७६	बीस विहरमान गीत, पुरोहितपुत्र स्वाध्याय	जिनसागर सहजसागर	१८वीं	६	लि.क. खेमधर्म, लि. स्था. पीपाड़- नगरे
१२१	५०६९ (३)	वद्धचैत्यवन्दन	मूला वाचक	१९०६	८-१०	
१२२	४३४५	श्रीऋषिमंडलस्तवन	धर्मघोष सूरि	१७वीं	११	
१२३	४१५६	श्रीदेवीछंद शनैश्चरस्तुति		१९वीं	३	
१२४	५०७५	शंखेश्वरपादछंद	हर्षरुचि	"	३	
१२५	७७५३ (४)	शांतिनाथस्तवन	गुणसार	१८३७	३४-३६	
१२६	७७२० (१५)	शांतिनाथ त्रिभङ्गी छन्द	बनारसीदास	१८वीं	५०-५१	
१२७	५३८५ (७)	शीतलनाथस्तोत्र	सिंहनन्दि	१६वीं	१८६वां	
१२८	४५११	शोभनस्तुति		१७वीं	६	
१२९	७४७२	" पंचपाठ	धनपाल पंडितबान्धव	१६३४	१०	लि.क. पूरणमल माथुर कायस्थ लि. स्था. गढ़ रणथम्भोर

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-२; २२-जन स्तोत्र]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३०	७२७८	शोभनस्तुति सटीक	शोभन	१६वीं	११	
१३१	४८४०	स्तंभनपार्श्वनाथस्तवन जम्बूकुमार स्वाध्याय	कुशललाभ कवियण हरिविजय- शिष्य	१८२८	३	
१३२	६८३६	स्तंभन पार्श्वनाथस्तुति आदि		१६वीं	७२	* लि. स्था. सांगानेर, इस गुटके की अन्य कृतियों का विवरण परिशिष्ट में देखें
१३३	४६१४ (१३)	स्तवन (मुजरा)	सकलकीर्ति	१८७१	२०८ वां	
१३४	६१६०	स्तवन (स्वयंभूस्तोत्र)	समंतभद्र स्वामी	१८वीं	१६	इस प्रति में २४ स्तोत्र हैं
१३५	७५६८	स्तवन (शांतिजिन)	"	"	३	
१३६	७४४७	स्तवनसङ्ग्राह्य पदसंग्रह		१६१६	१७०	लि.क. अमरचंद्र, सेठ गंभीरमल- पठनार्थम्
१३७	७४४६	" आदि		१६११	२००	*
१३८	७४४४ (१०)	स्तुतिस्तवन		१८८५	१६४-२०५	इसमें पजूसणरी थुई, सेत्रुंजाजीरी थुई, पांचमरो तवन, आठमरो तवन, इग्यारसरो तवन हैं
१३९	६८२५	स्तोत्रसंग्रह		१६वीं	४	* इसमें ५ स्तोत्र हैं, नाम परि- शिष्ट में देखिये
१४०	७४४४ (६) ५४२७ (३)	सप्तस्मरण "	नानू ऋषि	१८८५	१४४-१६८ ४५-४६	
१४२	४६१४ (३६)	सात वसणनी वीनती	ब्रह्महंस	१८८७	२५७-२५८	
१४३	७३६४	साधारणजिनस्तोत्र (सावचूरि)	जयानन्द, अथ. वानर ऋषि	१७५८	५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४	५०७७(३)	साधारण स्तवन	मोहनविजय रूपविजयशिष्य	१८०२	१ला	
१४५	५४१८(२१)	साधुवन्दना	बनारसीदास	१९वीं	१४५-१४७	
१४६	५११४	सीमंघरवीनती		१८वीं	२१	
१४७	४९१४(२२)	सीमंघरस्तवन		१८७१	२३० वाँ	
१४८	७७५३(३)	"	भक्तिलाभ	१८३७	३२-३४	
१४९	६८४०	" आदि (विंशतिविहार स्तवनादि)		१९वीं	२२६	फुटकर ढाल, भक्तामर, तथा घंटाकर्ण स्तुति आदि कृतियाँ हैं

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २३-जैनागम]

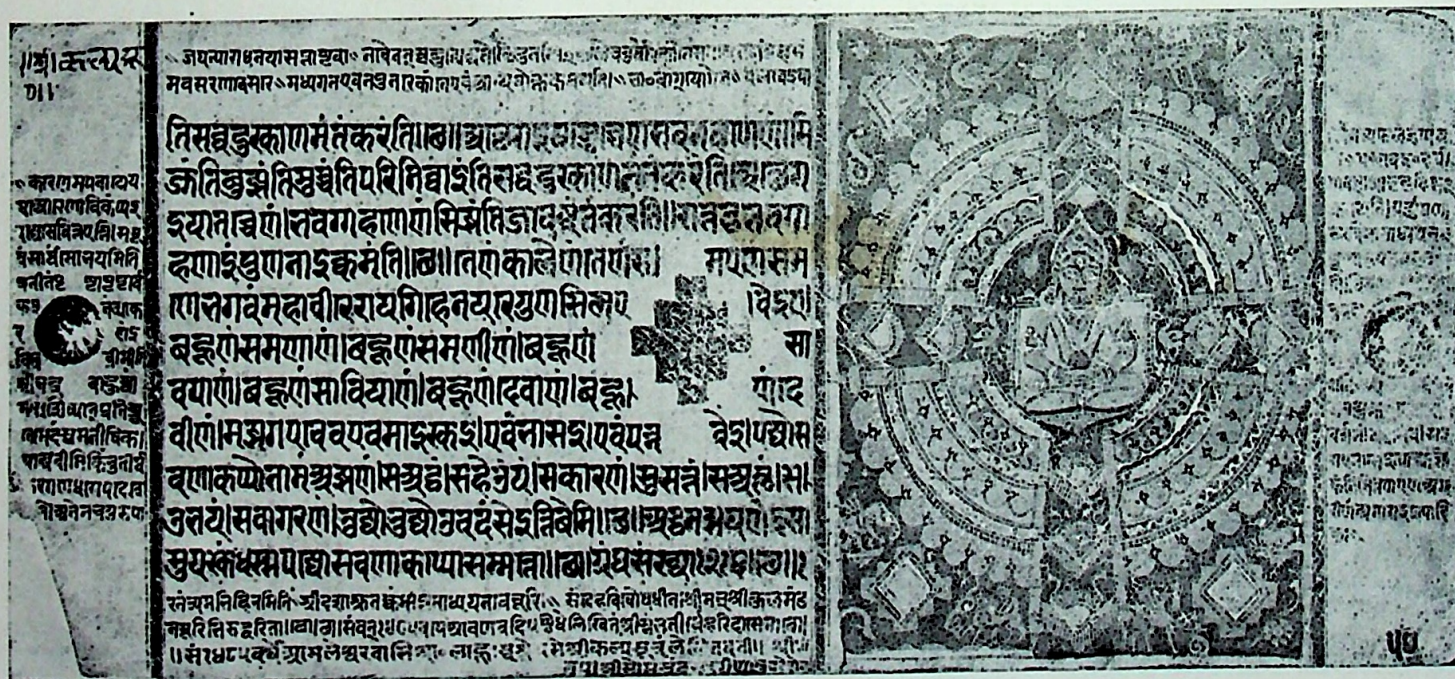
क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७२५८	अन्तकृद्दशाविवरण तथा अनुत्तरो- पपातिकविवरण		१७वीं	११	संस्कृत-प्राकृत
२	७६४०	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र		"	१२	प्राकृत
३	७५३४	अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र (प्रा० राजस्थानी- भाषार्थसहित)		१७६६	६२	प्रा. रा. लि.क. ऋषि त्रीक्रम, राणङ्गपुरे
४	७२५४	अन्तगडदशा (राजस्थानीभाषार्थ- सहित)		१६३६	३८	अ. प्रा., लि. कर्त्री-जियां अमरांजीशिष्या
५	७४६४	अनुत्तरोपपातिकसूत्र		१८वीं	१०	प्राकृत., लि.क. ऋषि हरजी
६	७६३८	अनुत्तरोपपातिकसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थसहित)		१७७३	१६	प्रा. रा., लि.क. ऋषि धनजी
७	७२१२	अनुत्तरोववाइसूत्र		१६वीं	४	प्रा. अ.
८	७२०२	अनुयोगद्वारवृत्ति	श्रीहेमचन्द्रसूरि मलधारी	१६६६	१०४	संस्कृत, लि.क. गुणनन्दन मुनि विशालकीर्ति, लि. स्था. पुष्क- रिणीनगरी (पोहकरण)
९	७४११	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध, राज- स्थानीभाषार्थसहित)		१७वीं	१०१	प्रा. रा.
१०	७४१५	" "		१६वीं	६६	"
११	७५५१	" "		१७२७	५६	" लि.क. मुनि मनोहर लि. स्था. वीरमग्राम
१२	५६३२	आचाराङ्ग (प्रथमश्रुतस्कन्ध बाला- वबोध)	बा. पासचन्द साधुरत्नशिष्य	१५८६	१४२	प्रा. रा., लि.क. रतनभट्ट गुजर- गौड़ लि. स्था. सोमलपुर, आद्य पत्र अप्राप्त
१३	५६३१	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध बालावबोध)	"	१७६६	८१	प्रा.

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४	७३५८	आचाराङ्ग (द्वितीयश्रुतस्कन्ध राज-स्थानीभाषार्थसहित)		१६२३	६५	प्रा. रा., लि.क. गोडा अमरवत्ता
१५	७५४०	आचाराङ्गनिर्युक्ति	श्रीजिनहंससूरि शीलाङ्क	१७वीं	१४	प्राकृत
१६	७२४०	आचाराङ्गप्रदीपिका		१६६५	२१६	स. प्रा.
१७	७२२२	आचाराङ्गवृत्ति		१६वीं	२८१	"
१८	७२७४	आचाराङ्गसूत्र		१७वीं	११५	प्राकृत
१९	७४२६	आवश्यकनिर्युक्ति		१६वीं	६१	" प्रथम पत्र अप्राप्त
२०	७४३६	" "		"	४७	प्राकृत
२१	७४४०	" "		१६२२	८१	" लि.क. ऋषि बाथा
२२	७७६६	" "		१६वीं	११६	प्राकृत
२३	५६४६	आवश्यकनिर्युक्तिसूत्रम्		१५४६	१२७	" लि. स्था. अणहिल्लपुर-पत्तन
२४	७२०४	आवश्यकवृहद्वृत्ति	श्रीहरिभद्रसूरि (?)	१६३१	४०५	संस्कृत, लि.क. लक्ष्मणमुनि लि. स्था. जैसलमेर
२५	७४००	" "		१७वीं	५४६	संस्कृत, प्रति में ५४७, ४८, ४९वें पत्र खण्डित हैं
२६	७३३४	आवश्यकसूत्र (सटीक, वृहद्वृत्ति)	हरिभद्रसूरि	"	२०१	संस्कृत
२७	४३५८	आवश्यकसूत्र (सबालावबोध)		"	१६	* प्रा. रा.
२८	७५५४	आवश्यकसूत्र		"	४	प्राकृत, लि.क. पं० धर्मकीर्तिमुनि
२९	७१८८	आवश्यकसूत्रनिर्युक्ति (सचित्र)		१५०१	६८	प्रा., चित्र संख्या २, लि.क. जिन-दास, लि. स्था. माण्डली नगर
३०	७२१६	उत्तराध्ययनसूत्र		१५४८	३५	प्राकृत, अद्यह श्रीघोषावेला-कूल माणिक्येन लिखितम्

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	७३१४	उत्तराध्ययनसूत्र		१६४७	६५	प्राकृत, लि.क. पं. उदयतिलक
३२	७३६१	" "		१६वीं	१७६	प्राकृत
३३	७४८७	" "		१७वीं	१३६	"
३४	७७६५	" "		"	७५	संस्कृत
३५	७२८०	उत्तराध्ययनसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थ सहित)		१८१८	१६८	प्रा.रा., लि.क. लोकवल्लभ वाचक, उदरामसर (बीकानेर) मध्ये
३६	७३१३	" "		१८३२	१६१	प्रा.रा., लि.क. हस्तिसागर एवं विमलसागर, प्रति का अर्द्ध- भाग संवत् १८३२ से भी प्राचीन है
३७	७३४१	" "		१८३५	२३१	प्रा.रा., लि.क. दीलतसौभाग्य, श्रीबीलाडा नगरे
३८	७३६२	" "		१८५२	२६०	प्रा.रा., लि.क. कुसुमगतसागर, तांतोटी नगरे, ठाकुर गुलाब- सिंहजी कँवर सवाईसहराज्ये
३९	७४२८	" "		१७२७	१६२	प्रा.रा.
४०	७५७०	" "		१८वीं	११६	प्रा.रा.
४१	७६५५	" "		१९वीं	१५७	प्रा.रा., अपूर्ण
४२	४४१८	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध)		१६३७	३८३	* प्रा.रा.सं., १६५, १६८, १६९ तथा २१७ वें पत्र अप्राप्त
४३	६६१६	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तवक)		१७वीं	२२८	प्रा.रा., प्रति जीर्ण-शीर्ण तथा त्रुटित है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४४	७७६२	उत्तराध्ययनसूत्र (सस्तबक)		१७६२	२४३	प्रा.रा., प्रति के आद्यन्त पत्र शोभन हैं, लि.क. धनजी, राजपुरग्रामे
४५	७३१२	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		१७वीं	३१७	प्राकृत-अपभ्रंश
४६	५६०६	उत्तराध्ययनसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१६वीं	१४६	प्रा. सं., प्रति अति सुन्दर लिखित है, इसके स्वामी का नाम ऋषि तेजपाल, गोवर्धन, आशकरण है
४७	७२८२	उत्तराध्ययनसूत्र (सटीक)	टी. कमलसंयम, जिनभद्रसूरिशिष्य	१६५६	३०२	प्रा. सं., लि.क. पं. तेजपाल, देवराजपुर
४८	६८४६	उत्तराध्ययनसूत्र-परीसहाध्ययन-कथा		१८वीं	५६	प्राचीन राजस्थानी, आद्य तीन पत्र चिपके हुए हैं तथा प्रति जीर्ण-शीर्ण है
४९	७३४०	उत्तराध्ययनसूत्रमुबोधावृत्ति		१६६७से पूर्व	२६३	प्रा. संस्कृत
५०	४३५७	उत्तराध्ययनावचूरि		१४६७	४७	* संस्कृत, लि.स्था. चित्रकूट
५१	७३६३	" "		१६१२	६४	संस्कृत-प्राकृत, र.का. १४८५ (रत्नगजमदमितेऽब्दे) लि.क. गोपी, आचार्यवेणुसुत, सारङ्गपुर. मध्ये
५२	७४३४	उपासकदशङ्ग (सटीक)		१७वीं	४१	प्रा. सं.
५३	७४३८	" "		१६१२	३०	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
५४	७२८६	उपासकदशाङ्गविवरण		१६४७	२०	संस्कृत, लि.क. मुनि लघमन, जिनचन्द्रसूरिविजयराज्ये
५५	५२२६	उपासकदशाङ्गसंग्रह	शिवचन्द (कल्याणसूरिशिष्य)	१७१३	४७	रा.प्रा., लि.क. छीतर (शिव- चन्दशिष्य वैराठदुर्ग, आसन्दी ग्रामे, पांचवां पत्र अप्राप्त
५६	७३१८	उपासकदशाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थ सहित)		१७५२	५३	प्रा.रा., लि.क. लालसागर
५७	७६३४	" "		१६८०	६६	प्रा.रा.
५८	७२२८	उवाइसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ- सहित)		१८६६	८६	प्रा.रा., लि.क. ऋषि हुकमचन्द, राणावासनयरमध्ये
५९	७४१९	उवाइसूत्र		१६८४	६५	प्राकृत, प्रथम पत्र अप्राप्त
६०	७४८५	ओघनिर्घुक्ति		१६वीं	२३	प्राकृत
६१	७५५३	ओपपतिकोपाङ्गसूत्र (सस्तबक)	स्त. पार्श्वचन्द्र (सीधुरत्नशिष्य)	१७वीं	११५	प्रा.रा.
६२	६८५२	कल्पवार्ता		१६वीं	१५२	रा., अपूर्ण, पत्र १०, ३८, ३९ तथा ११४ से ११८ तक अप्राप्त
६३	४३१८	कल्पसूत्र (सचित्र)			१३१	प्राकृत, चित्र सं. ३४
६४	५३५६	" "		१६वीं	८५	सं.प्रा., राजस्थानी कलम के चित्र६
६५	५३५७	" "		१५वीं	७२	प्रा., चित्र सं. १६
६६	५३५८	" "		"	५३	प्रा., चि. सं. १४
६७	५३५९	" "		१५०२	६१	प्रा., चि. सं. ४०
६८	७८४१	" "		१४वीं	१३३	प्रा., चि. सं. ३६



ग्रन्थसंख्या ७८४६

कल्पसूत्र

(मुद्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य श्रीसोममुन्दरसूरिके उपदेशसे सं० १४८५ में मुलेखित सचित्र प्रति)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९	७८४२	कल्पसूत्र (सचित्र)		१४वीं	१०३	प्रा., चि. सं. ८
७०	७८४६	" "		१५५० से पूर्व	५०	प्रा., चि. सं. २८
७१	७८४७	" "		१५३१	१०	प्रा., स्फुट पत्र, चित्र सं. १०
७२	७८४९	" "		१४८५	९	प्रा., त्रुटित, चि. सं. ३, सुप्रसिद्ध तपोगच्छाचार्य सोमसुन्दरसूरिके आदेश से आलेखित
७३	७८५०	" "		१४६०— १४९० के मध्यवर्ती	३६	प्रा., त्रुटित, चि. सं. ७
७४	७८५१	" "		१५५० के लगभग	४	प्रा., प्रति में पत्र ८, १७, २३ व ८२वें ही प्राप्त हैं
७५	७३८९	कल्पसूत्र		१८९५	५४	प्रा., लि.क. सन्तोषचन्द्र मुनि, नागोरमध्ये
७६	७३९०	कल्पसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३३	१७२	प्रा.रा. १ से १० पत्र अप्राप्त, लि.क. ऋषभविजय, बृहत्सप्त-च्छदी (बड़ी सादड़ी, मेदपाट-वेशे ?) नगरे
७७	७४१३	" "	भा. गुणविजय	१८वीं	१३१	प्रा.रा., प्रति के अन्त में जिन-धर्मप्रवक्तक विद्वानों की जन्म-तिथि, विभिन्नगच्छों की स्थापना, नामकरण का समय एवं विविध आचार्यों की कृतियों का परिचय लिखित है, अन्तिम पत्र अप्राप्त
७८	७४२६	" "		१८४५	१७५	प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७६	७३६१	कल्पसूत्र (राजस्थानीभाषासहित)		१८३६	१३६	प्रा.रा., लि.स्था. फलौधी
८०	७५५५	" "		१७२६	८८	प्रा.रा., लि.क. मुनि मनोहर, बलूदा ग्रामे
८१	४४१३	कल्पसूत्र (सस्तबक)	स्त. सोमविमल	१६७२	१०६	* प्रा.रा.
८२	७५२६	" "		१७२६	६१	प्रा.रा., लि.क. मनोहरश्रृषि, अहमदपुरमध्ये
८३	७०७५	" (सटिप्पण)		१८वीं	६६	प्रा.अ., अपूर्ण प्रति किन्तु प्रदर्शनीय
८४	५३५४	" (सावचूरि, सचित्र)		१५६३	१३६	प्रा.सं., चि. सं. ३६, भिन्नमाल में लिखित
८५	७८४०	" " "		१५२३से पूर्व	१०५	प्रा., चि. सं. २४, धनेश्वरसूरि द्वारा लिखापित, इस प्रति को सं. १५२३ में आचार्य को भेंट करने का उल्लेख है
८६	७४८६	" (सावचूरि)		१४१६	१११	प्राकृत-संस्कृत
८७	७८४४	" "		१६२१	६५	" "
८८	५३५५	" (सटीक, सचित्र)	टी. सुमतिहंससूरि	१७३४	११५	प्रा.सं., चि. सं. ८६, सोजत में लिखित
८९	७२४१	कल्पसूत्रकिरणावलीटीका	टी. धर्मसागरगणी	१६७६	३२२	सं.प्रा., प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. कमलसी, महंतवसीसुत, ईदलपुरा (अहमदाबाद) स्थाने संस्कृत
९०	७२२६	कल्पसूत्रटीका		१६वीं	११८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	७५५६	कल्पसूत्रटीका	लक्ष्मीवल्लभ (लक्ष्मीनिधि)	१६वीं	१११	सं. प्रा. रा.
६२	६०३२	कल्पसूत्रबालावबोध	शिवनिधान	१७६४	१२८	राजस्थानी, लि.क. पं. हरराज, श्रीशोमनगरे
६३	७५५८	„ „ (सप्तमवाचना)		१७१२	२२	प्रा.रा., लि.क. मानविजय, मालपुरामध्ये
६४	६६१७	कल्पसूत्रभाषा		१६३३	१२७	राजस्थानी, लि.क. ऋषि केश-रीचन्द्र, विक्रमपुरमध्ये
६५	६८४८	कल्पसूत्रसिद्धान्तवाचना		१६५७	१६६	राजस्थानी, १-२ पत्र कोट-विद्ध, लि.क. ऋषि लक्ष्मीचन्द सरूपचन्द, रेवासी (पालणपुर, गुजरात) मध्ये
६६	७३१०	कल्पान्तर्वाच्य		१६६२	५४	प्रा.सं., लि.क. सौभाग्यविमल, श्रीसिरोहीनगरे, रचनाकाल १५७० (?)
६७	७२६०	कल्पान्तरवाच्यटीका		१७वीं	५०	प्रा.सं.
६८	७४६६	चन्द्रप्रज्ञातिसूत्र		„	३६	प्राकृत
६९	४३०४	चित्तसंभूति (ऋषीश्वराध्ययना-नन्तरम्)		१५वीं (?)	७	प्रा.रा.
१००	७२०१	जीवाभिगमवृत्ति	वृ. श्रीमलयगिरि	१६वीं	२६२	प्रा.सं.
१०१	७२१४	ठाणाङ्गसूत्र		„	७७	प्राकृत
१०२	७२२६	ठाणाङ्ग (स्थानाङ्ग) सूत्रवृत्ति		१६०६	१८२	प्रा.रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०३	७२३२	दशवैकालिकसूत्र		१७वीं	२७	प्राकृत
१०४	७४२४	"		१८७८	२०	" लि.क. अखु
१०५	७४८८	"		१६६६	२६	" लि.क. हरजी
१०६	७६३६	"		१७७७	२५	(ललित प्रभशिष्य)
१०७	७३१७	दशवैकालिकसूत्र (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७वीं	५८	प्राकृत, लि.क. ऋषि धनजी, कालावडनगरे प्रा.रा.
१०८	७५५२	दशवैकालिकसूत्र (सावचूरि)		१६२३	३७	प्रा.सं.
१०९	४४५६	" (सटबार्थ)		१८वीं	५४	प्रा.रा., ३६वां पत्र अप्राप्त
११०	७३२३	दशवैकालिकसूत्रटीका	टी. सुमतिसूरि (बोधकशिष्य)	१७वीं	५४	संस्कृत, टीकाकार ने अपनी पुष्पिका में हरिभद्राचार्य की एक टीका का भी उल्लेख किया है
१११	७४७४	दशवैकालिकसूत्रटीका (शिष्य बोधिनीनाम्नी)	हरिभद्रसूरि	१६१७	१२४	संस्कृत, लि.क. जिनचन्द्रसूरि मुनिराज, अणहिलपुरपत्तने
११२	७२८७	दशवैकालिकसूत्रावचूरि		१५वीं	१६	संस्कृत
११३	७६५४	दशाश्रुतस्कन्ध		१६७०	२६	प्रा., लि.क. मुनि महावजी, खीरपुरनगरे
११४	७४८४	नन्दीसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११५	७२५६	निरयावलिका (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८६७	६२	प्रा.रा., लि.क. मूल० सुमतिहंस, भाषा उमदहंस, कोसाणामध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११६	७३०७	निरयावलिकासूत्र		१६६५	२६	प्रा., लि.क. वच्छा
११७	७३६५	निशीथसूत्र (लघु) (राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१८३२	७७	प्रा.रा., लि.क. कपूरविजय, हरचन्द, पोपाड़नगरे
११८	७४८१	निशीथसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
११९	७५४१	"		"	२३	" प्रथम पत्र अप्राप्त
१२०	७०८५	प्रतिक्रमणसूत्र		१९वीं	२३	प्रा., अपूर्ण, १६वां पत्र अप्राप्त
१२१	७४४४(७)	"		१८८५	१६८-१८०	प्राकृत
१२२	७४४५	" आदि		१८८७	४६१	* विविध भाषा, जरी के कपड़े के जिल्दबन्ध गुटके में आठ कृतियों का संग्रह है
१२३	७४४६	" "		१९२२	९६	* वि.भा., सुन्दर जिल्दबन्ध गुटके में १० कृतियों का संग्रह है
१२४	५९७३	प्रतिक्रमणसूत्रबालावबोध	सहजकीर्ति	१८८९	९१	प्राचीन राजस्थानी
१२५	६८५६	प्रश्नव्याकरण		१५९८	४३	प्रा., द्वितीय पत्र अप्राप्त
१२६	७२५६	"		१७वीं	२६	प्राकृत
१२७	७२११	प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका	अभयदेवसूरि	१६०२	८३	संस्कृत
१२८	७३४५	" "	"	१५वीं	४८	* संस्कृत
१२९	७५४७	प्रश्नव्याकरणाङ्गसूत्र (सबालावबोध)		१७वीं	९५	प्रा.रा.
१३०	७३१५	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (सबालावबोध, पंचपाठ)		१६५४	११२	प्रा अपभ्रंश
१३१	७३४९	प्रश्नव्याकरणोपाङ्गसूत्र (प्राचीन राजस्थानी भाषार्थ सहित)		१७५९	७३	प्रा.रा., लि.क. ललितहंस तत्व-हंस शिष्य, सप्तसदी नगर मध्ये

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३२	७१८१	प्रज्ञापनासूत्र	मू. श्रीश्यामाचार्य ? टी. श्रीमलयगिरि	१७वीं	३२०	प्राकृत
१३३	७५४५	"		१६५६	२२७	" १-२ पत्र अप्राप्त
१३४	७१९७	प्रज्ञापनोपाङ्ग (सटीक, पञ्चपाठ)		१७वीं	४२६	प्रा. संस्कृत
१३५	७२८३	प्रज्ञापनोपाङ्गसूत्र		"	१७१	प्राकृत, १-२ पत्र अप्राप्त
१३६	७६६८	पाक्षिकसूत्र		१६वीं	१४	प्राकृत
१३७	७४८३	पिण्डनिर्युक्ति	अभयदेवसूरि	१७वीं	३२	"
१३८	७२३३	भगवतीसूत्र		१६२५	४५७	प्राकृत, संवत् १६ आषाढादि २५ वर्षे फाल्गुन वदि द्वादशायान- तिथौ भगवतीसूत्र लिखितम्
१३९	७२८६	भगवतीसूत्र		१६०२	३०४	प्राकृत, लि. स्था. अणहलपुर
१४०	७२०३	" टीका		१७३०	३४२	संस्कृत, लि. स्था. जैसलमेर राउल श्रीअमरसिंहजीराज्ये
१४१	७२२०	" वृत्ति		१६वीं	४१०	संस्कृत. लि. क. ब्राह्मण जीवा
१४२	७५६६	राजप्रश्नीयसूत्र	भा० मेघराजवाचक	१६७०	८३	प्राकृत, लि. क. मोढजातीय जोशी कुलसी
१४३	७६३५	" (राजस्थानीभाषार्थसहित)		१७वीं	२०६	प्रा. रा.
१४४	७३००	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सटीक, पञ्चपाठ)		१४१५	८१	प्रा. सं, प्रदर्शनीय प्रति
१४५	७२८४	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (सवालाव- बोध, पञ्चपाठ)		१७०२	७७	प्रा. रा., लि. क. मुनि मानसिंह
१४६	७५२६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी- भाषार्थसहित)		१७वीं	१३६	प्रा. रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४७	७६३१	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्र (राजस्थानी भाषार्थसहित)		१७५६	६२	लि.क. मुनि मनोहर, बोटाद-ग्रामे
१४८	७२२५	"	भा० मेघराज वाचक	१६१२	११८	प्रा. रा., ऋषि रूपचन्द, पोहीमध्ये
१४९	७३१६	राजप्रश्नीयोपाङ्गसूत्रवृत्ति	वृ. मलयगिरि	१७वीं	७७	संस्कृत
१५०	७१८५	व्यवहारसूत्र		१७वीं	१६	प्राकृत
१५१	७४६६	" "		१७वीं	१४	"
१५२	७१८७	विपाकसूत्र (सटिप्पण)		१५१३	२४	" लि. क. वाङ्मयक
१५३	७७६३	विपाकाङ्गसूत्रटीका	टी. अभयदेवाचार्य	१५६१	१६	प्रा. सं.
१५४	७३८४	श्रमणसूत्र (सबालावबोध)		१८वीं	८	प्रा. अ., लि. क. मुनि मिरकू भांभणजीशिष्य
१५५	७२३८	आहुप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	श्रीरत्नशेखरगणि	१६५५	१८५	प्रा.सं., संशोधनकर्ता श्रीलक्ष्मीभद्र
१५६	६१३५	षडावश्यकबालावबोध	बा. हेमहंस	१८वीं	१२१	अ. सं.
१५७	७४२३	षडावश्यकसूत्र		१६८८	१३	प्राकृत
१५८	७२६६	स्थानाङ्गसूत्र		१६७२	७७	" लि. स्था. गुजाउलपुर
१५९	५६७८	स्थानाङ्गसूत्र (सबालावबोध, त्रिपाठ)		१७८७	२०६	प्रा. रा. लि. स्था. बीकानेर
१६०	७२२३	समवायाङ्गवृत्ति	अभयदेवसूरि	१६१८	८४	* सं. प्रा., रचनाकाल ११२० वि.
१६१	७१८३	समवायाङ्गसूत्र		१६५८	५०	प्रा. पातशाहअकबरराज्ये लिपीकृतम्
१६२	७२१५	" "		१६६७	३३	प्राकृत
१६३	७४६५	" "		१६वीं	५०	"

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६४	७४६७	समवायाङ्गसूत्र		१६६२	६८	प्राकृत
१६५	७५६१	„ „		१८१४	१६५	प्रा. रा., लि.क. हीराचन्द भावचारी, लीबड़ीमध्ये
१६६	६४४५	सूत्रकृताङ्ग (सटीक)		१८वीं	७३	प्रा. सं., अपूर्ण
१६७	७१७८	सूत्रकृताङ्गसूत्र		१६वीं	५७	प्रा., लि.क. माणिक्यचन्द्र, नागेन्द्रगच्छे
१६८	७२०७	„ „ (द्वितीय स्कन्ध, सस्तबक, पञ्चपाठ)	स्त. पाशचन्द्र (श्रीसाधुरत्नशिष्य)	१६५०	४८	प्रा. रा., लि.क. लूणिया- पोमसी पुत्रेसासूरताण, जैसलमेर- मध्ये
१६९	७२०९	सूत्रकृदङ्गटीका	शीलाचार्य (वाहरिगणसहायेन)	१६वीं	२४५	प्रा. सं.
१७०	७४३९	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध		१७वीं	३५	प्राकृत
१७१	५९९६	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (सबालावबोध)		१६०१(?)	५१	प्रा. रा.
१७२	७४३३	„ „ (पञ्चपाठ)		१७वीं	३४	„ „
१७३	७५३१	सूत्रकृदङ्गप्रथमश्रुतस्कन्ध (राज- स्थानी भाषार्थसहित)		१६५३- १६६७	७३	„ „ मू. १६५३, भाषा- १६६७, लि.क. ऋषिभाण
१७४	७५३२	„ „		१६६८	८४	प्रा. रा.
१७५	७३०१	ज्ञाताधर्मकथाङ्ग		१६७५	१८९	प्रा., लि.क. ऋषिविनायक पुंजा, केसीयामध्ये
१७६	७३५६	„ „ (राजस्थानीभाषार्थ- रहित)	भा. प्रेमजीगणि	१८४८	२२७	प्रा. रा., लि.क. जीवनराम, नागोरमध्ये
१७७	७३९८	„ „		१८६९	२९८	प्रा. रा.

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७८	७४३५	ज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्ति	वृ. अभयदेवसूरि	१६३८	७०	प्रा. सं., प्रथमपत्र अप्राप्त
१७९	७१९२	ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र		१६वीं	१३६	प्राकृत
१८०	७२३४	" "		१७वीं	१५०	"
१८१	७४७८	" "		१४८३	६४	"

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २४-जैनप्रकरण]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६१२५	अङ्गचूलिया		१८वीं	२१	अपभ्रंश
२	७५६१	अन्तसमाधि		१६०६	७	राजस्थानी
३	७२६७	अष्टप्रकारप्रकारपूजाकथा (स्नात्र- पंचाशिकावृत्ति)	माणिक्यसुन्दरसूरि	१६४८	४०	संस्कृत, रचनाकाल १४८४, लि.स्था. अणहलपुरपत्तन
४	७५२५	अष्टान्हिकव्याख्यान (पर्य्यषणादि)		१८८८	१०	संस्कृत
५	७५३७	आगमवाणी आदि	आगमसारोद्धारगत	१८वीं	१४	राजस्थानी
६	६१६२	आगमसार	देवचन्द्र (खरतरगच्छीय)	१६वीं	५६	हिन्दी-रा., र.का. १७८३ लि.क. मुनि दुर्गदास, जालोरमध्ये, पत्र ५६-७६ तक भिन्नलिपि है
७	७०१६	आगमसारोद्धारभाषा	देवचन्द्र	१८६०	७६	* हि.रा., र.का. १७७६ लि.क. मथेन जसकरण, कृष्णगढ़नगरमध्ये
८	७३३१	आगमसारोद्धाररास	„ मुनि	१८३२	२८	हि.रा., लि.स्था. पुष्पावतीनगरे
९	७२७३ (३)	आदिनाथदेशनोद्धार		१७वीं	१२-१६	प्राकृत
१०	४७६६	आदिपुराण	सकलकीर्तिभट्टारक	१८वीं	२०४	संस्कृत, अन्तिम पत्र अप्राप्त
११	७११०	आराधनासूत्र (सार्थ)		१७३६	६	प्रा.रा., प्रथम पत्र अप्राप्त, अन्त्य पत्र शोभन
१२	५६३४	उपदेशबालावबोध	सोमसुन्दर	१७वीं	७६	सं. प्रा.
१३	७३०८	उपदेशमाला (सावचूर्णि)	श्रीरत्नशेखर	„	२३	प्राकृत-संस्कृत
१४	४०१८	उपदेशमालाप्रकरणकथा (सवा- लावबोध)	धर्मदासगणि (वृद्धिविजय ?)	१८५६	२१८	प्रा.सं.रा., लि.क. विजयचन्द्र स्थविर, पाल्लीदुर्ग
१५	५६६०	उपदेशमालासूत्र (सटिप्पण)		१६६३	३६	प्राकृत, लि.क. मुनि कल्याण- सुन्दर, लिपि सुन्दर व प्रदर्शनीय

क्रमाङ्क	ग्रंथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६	४३०२	ऋषभपंचाशिका		१७वीं	७	* प्राकृत
१७	७४६३	ऋषिमण्डलप्रकरण		"	१२	प्राकृत
१८	७२६८	" " (सावर्चूणि पञ्चपाठ)		"	१६	प्रा. सं.
१९	७२४२	ऋषिमण्डलवृत्ति	शुभवर्द्धनगणी, (श्रीसाधुविजय-गणिशिष्य)	१८वीं	३५३	" लि.स्था. रामगढ़
२०	७३०६	कर्मग्रन्थपञ्चकावचूरि		१६वीं	४३	सं. प्रा.
२१	७२८८	कर्मग्रन्थषट्क (स्वोपज्ञटीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि (?), मलयगिरि	१७वीं	२६२	" १ से ५ तक स्वोपज्ञटीका तथा द्दठे की मलयगिरिकृत टीका है
२२	७२३६	कर्मग्रन्थषट्कसूत्रवृत्ति (स्वोपज्ञ, टीका, त्रिपाठ)	देवेन्द्रसूरि, मलयगिरि	१६४६	२२५	" "
२३	७२६७	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक	१६०२	१२	प्रा., लि.क. लक्ष्मीरत्न
२४	५४१८ (१०)	कर्मपचीसी		१६वीं	१०६-११२	हिन्दी
२५	५०६०	कर्मविपाक (सटिप्पण, सप्ततिका पर्यन्त)		१८वीं	४७	अप्रभ्रंश
२६	६८८०	कर्मविपाकग्रन्थव्याख्या	मतिचन्द्र (गुणचन्द्रशिष्य)	१६वीं	५६	सं. प्रा. रा.
२७	७८५५	कालकसूरिकहाणयं (सचित्र)		१६वीं	६	प्राकृत, चि. सं. ६
२८	५३६१	कालकाचार्यकथा (सचित्र)		१५वीं	१२	" " ५
२९	७८४८	" " "		१५३१	६	" " ३, त्रुटित, अपूर्ण
३०	५३६०	कालकाचार्यकथानक (सचित्र)		१५वीं	२५	" " १२, पत्रा ७६-१०३ तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१	४४२२	कालिकाचार्यकथा		१७वीं	१६	प्रा. रा.
३२	७२५१	गुणस्थानकवृत्ति	रत्नशेखरसूरि	१६८८	१४	संस्कृत
३३	७३६४	गुणस्थानविचार	"	१६वीं	३	"
३४	५४२७(६)	गुणसंख्या (१०८ गुणोंकी संख्या)		१६वीं	१४८-१४९	प्राकृत
३५	६०२८	गुर्वावली	क्षमाकल्याणमुनि	१८७२	२८	संस्कृत, रचनाकाल १८३०
३६	६३३८	गुरुचारगूढाष्टपंचाशिका आदि		१८वीं	६२	हिन्दी, गुटका
३७	७७४१(४)	गौतमपृच्छा		१७वीं	३८-४१	प्राकृत
३८	७२४६	गौतमपृच्छावृत्ति	मतिवर्द्धन	१७५७	३१	प्रा. संस्कृत, र.का. सिद्धौरामे मुनीचन्द्रे (१७३८) लि.क. ऋषि रत्ना
३९	७५२७	" "	" (पाठक)	१८वीं	४३	प्रा. सं.
४०	७३०४	चउसरण (सबालावबोध)		१७वीं	१०	प्रा. अ.
४१	७३८५	चउसरणप्रकीर्णक		"	६	प्रा., मोढ़जातीय जोशी माहव (माधव) लिखितम्
४२	७१२६	चतुर्दशस्थानकविचार		१७७५	१९	अ., लि.क. निहालचन्द्र, पाडली- पुरे, पत्र १५-१८ तक अप्राप्त
४३	५०९२	चतुर्विंशतिदण्डकसूत्रम् (सबालाव- बोधम्)	गजसागरगणी (धवलचन्द्रशिष्य)	१६९८	५	प्रा.अ., लि.क. सौभाग्यगणि शिष्य, भट्टनेरकोटमध्ये
४४	७५९०	चातुर्मासिकव्याख्यानपद्धति		१९०४	७	सं.प्रा., लि.क. हमीरविजय, कृष्णगढ़मध्ये
४५	७४६८	ज्योतिष्करण्डकसूत्र		१७वीं	११	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६	६१०४	जम्बूग्रन्थयन (जम्बूचरित्र)		१६८७	१६	अपभ्रंश, प्रथम पत्र अप्राप्त
४७	५३२७	जिनदर्शन (जिनरक्षितजिनपालको चौढालियो)		१६३६	२	संस्कृत
४८	५१३६	जिनप्रतिमापूजापद्धति	तिलकाचार्य	१७वीं	२६	सं. प्रा., अपूर्ण
४९	७१८६	जीतकल्पवृत्ति		१६वीं	४०	संस्कृत
५०	७१८६	जीवविचार (सस्तबक)		१७५८	१०	प्रा. अ., लि. क. मोहनविमल
५१	७२३०	जीवविचार (सटीक)		१५८१	२	प्रा. सं., लि. स्था. शमीग्राम, सौभाग्यनन्दिसूरिविजयराज्ये
५२	६८४३	जैनपूजाविधि, स्तुति आदि		१६वीं	२३७	विविध भाषाके इस गुटकेमें तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि, आरती, स्तुति, क्षेत्रपालपूजादि संग- हीत हैं
५३	५३३४	तत्त्वार्थाधिगमसूत्र	उमास्वामि	१६०१	२५	सं., लि. क. देवचन्द्र
५४	६३०२	„ „ (सटिप्पण)		१८वीं	७	„ „ विमलदास
५५	४६१४(६)	„ „ (सार्थ)		१८७१	२०१-२०७	सं. रा.
५६	७७६१	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रटीका	सिद्धसेन	१६३१(?)	४४४	संस्कृत
५७	७७६०	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य	उमास्वाति (मि)	१६३१	६६	„ लि. क. पं. नाइया, श्री अचलगच्छेश्वर श्रीधर्ममूर्ति सूरीश्वर विशदोपदेशात्
५८	६२६६	तत्त्वार्थाधिगमसूत्रभाषाटीका		१८वीं	१०४	सं. रा., ऊपरके पत्र पर 'सुत्राजीकी टीका' लिखा है
५९	६०३५	द्रव्यसङ्ग्रहवृत्ति	म. तेमिचन्द्र व. ब्रह्मदेव	१६३१	६१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०	६२७६	दीपमालिकाकल्प	जिनप्रभसूरि	१८२३	२२	सं., प्रतिका शोधनकर्ता ऋषि सुखदेव है
६१	७६३२	दीपमालिकाकल्प, दीपमालिकाकल्प बालावबोध		१८११	२०	सं.रा., र.का. 'शरयुग शिखि- शशिचर्ष' (१६४५)' लि. क. कृष्णाजी धांडूधडामध्ये
६२	७३६२	दीपालीकल्प (दीपमालिकाकल्प)	जिनसुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि- शिष्य)	१८वीं	१५	सं., लि.क. हेमविजय 'संवत्सरे- ऽग्निद्विपविश्वसंमिते'
६३	६०३६	दीपोत्सवकल्प		"	६	अपभ्रंश
६४	५४२७(४)	देवमहिमादि		१६वीं	४६-६४	सं.रा.अ., प्रतिमापूजन एवं स्तवन भी लिखित है
६५	५६४६	धर्मप्रशनोत्तरमहाग्रन्थ	सकलकीर्तिभट्टारक	१६१३	७४	सं. इसमें १११६ प्रश्न हैं तथा ७२वें पत्र की लिपि नूतन है।
६६	४५६२	धर्मोपदेशश्लोक (साथ)	महावीरभगवदुक्त. अ. भीमविजय	१८४६	८०	प्रा.र., पादलिप्तनगरे शत्रुञ्जय- तीर्थेलिपिकृतम्
६७	४५६६	धर्मोपदेशश्लोकाः	जैनपुराणोक्त	१६वीं	६	* संस्कृत
६८	५३७६(१६)	नृवणकथा (स्तनपनकथा)		१७६१	२१८-२२६	संस्कृत
६९	४०१६	नवकारबालावबोध		१८२१	४	प्रा.रा., लि. स्था. जैसलमेर
७०	६३२०	नवकारमन्त्र आदि		१६वीं	६१	हि, इस गुटके में जिनदर्शन, श्रीपालदर्शन, पार्श्वनाथस्तोत्र, बारहभावना जैनशतक' भक्ता- मरबालावबोध (हेमराजकृत) भी लिखित है।
७१	७४४४(४)	नवतत्त्व (सट्बार्थ)		१८८५	१२६-१३६	प्रा.रा., लि.क. नेमविजय

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२	४०१६	नवतत्त्व (सबालावबोध)	पद्मचन्द्रशिष्यः कश्चित् (खरतर- गच्छीयः)	१८०३	५२	सं. प्रा. रा., र. का. १७६६, लि. क.
७३	४०६१	" "	मेरुतुङ्गसूरि (श्रीगच्छेश)- शिष्यः कश्चित्	१६५२	७१	ऋषिदेवचन्द्रादि, लि. स्था आगरा प्रा. रा., लि. क. केशराज, श्रीरामपुर
७४	४४६२	" "		१७वीं	१०	प्रा. रा., लि. क. हंसविजयगणि
७५	७६५६	" "	बा. पार्श्वचन्द्र	"	८	प्रा. रा.
७६	७५२१	नवतत्त्वटीका		१८७७	६	सं. प्रा., लि. क. नेमचन्द्र, फलोधीग्राममध्ये
७७	७५३६	नवतत्त्वप्रकरण (सबालावबोध)		१८०७	१३	प्रा. सं., लि. क. विजयगणि, रामसेननगरे
७८	४४२३	नवतत्त्वविचार (सबालावबोध)		१६वीं	६	प्रा. रा.
७९	६२३०	नेमिपुराण		१८८६	२१२	सं., लि. क. हेतराम
८०	७४७६	प्रत्याख्यानभाष्यत्रयावचूरि	सोमसुन्दरसूरि	१६वीं	२३	प्रा. सं.
८१	७४७६	प्रत्याख्यानसूत्रभाष्यत्रय (सावचूरि, त्रिपाठ)	मू. देवेन्द्रसूरि, अ. सोमसुन्दरसूरि	१६५७	१६	प्रा. सं.
८२	७५४४	प्रत्येकबुद्धचरित्र		१७वीं	१०	" लि. क. धर्मकीर्ति
८३	७८२४	प्रतिष्ठाकल्प		१८वीं	१५	सं. प्रा.
८४	७२००	प्रबोधचिन्तामणि	जयशेखरसूरि	१५३३	७२	*संस्कृत, र. का.—१४६२
८५	७३२१	प्रवचनसारोद्धार		१७वीं	४४	प्राकृत
८६	७३४७	" " (सटीक)	सिद्धसेन	१६५०	३७६	*प्रा. सं.
८७	७२७६	पञ्चनिर्ग्रन्थिप्रकरण (सावचूरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	५	"
८८	७३०६	पञ्चनिर्ग्रन्थिसूत्र (सावचूरि)	मू. अभयदेवसूरि	१७८०	७	" लि. क. पं. कल्याणचन्द्र

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८९	७१६३	पञ्चपरमेष्ठिपूजनप्रकार	सोमसूरि	१९वीं	३६	संस्कृत, अपूर्ण
९०	६२८७	पञ्चेन्द्रिय चौपाई		१८५३	६	हि. र.का. १७६१
९१	५१३०	पद्मावतीकल्प		१७वीं	२	संस्कृत, त्रुटित एवं आद्य पत्र अप्राप्त
९२	६४०१	पर्यन्तराधनासूत्र		१७४०	७	प्रा.सं., लि.क. ऋषि छीतर, विराटनगरे, पातसाहिश्रीरंग-विजयराज्ये
९३	७७४१ (३)	परमात्मप्रकाश	मू. जिनवल्लभ, वृ. श्रीचंद्रसूरि	१७वीं	१२-३८	प्राकृत
९४	७१५६	पाश्वर्नाथपूजाद्यभिषेकान्त आदि		१९वीं	१२१	सं.हि.रा., अभिषेकनामक कृति अभयनन्दि द्वारा रचित, र.का. १५६७, इस गुटकेमें तत्त्वार्थ-धिगमसूत्र, भक्तामरस्तोत्रादि अनेक कृतियां भी लिखित हैं।
९५	७१८२	पिण्डविशुद्धि (सावचूरि, पञ्चपाठ)		१७वीं	१२	प्रा.सं.
९६	७२०६	पिण्डविशुद्धि		१६वीं	४	प्रा. प्रति के कोण भग्न हैं।
९७	६६०६	पूजाविधि (जैनतीर्थङ्करपूजाविधि)		१९वीं	११३	विविधभाषा के इस गुटकेमें चौबीस एवं बीस तीर्थङ्करोंकी पूजाविधि तथा दशवैकालिक, तत्त्वार्थधिगमसूत्र एवं विविध स्तोत्रादि संगृहीत हैं।
९८	७४१८	पोषधादिविधि		१८७५	६	प्राकृत, लि.क. कवीन्द्रसागर
९९	७५२२	बृहच्छान्तिटीका आदि		१९०१	२७	संस्कृत, इसमें लघुशान्तिटीका, दण्डकवृत्ति, नवग्रहस्तोत्रवृत्ति एवं विद्याविलासकथा लिखित हैं।
१००	४३०१	बृहदाराधना		१५६०	१३	प्रा.रा., लि.स्था. श्रीनारदपुरी, लि.क. गुणलाभगणि

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०१	५२८७	भक्तामरपूजापद्धति		१६वीं	१८	संस्कृत
१०२	७३३६	भगवत्पञ्चबीजक		१७वीं	६	प्राकृत
१०३	६०५०	भद्रबाहुसंहिता		१६वीं	६६	संस्कृत
१०४	७१६६	भवभावना (मूल)		१५६८	१८	प्राकृत
१०५	७१६६	"	श्रीहेमचन्द्रसूरि	१७वीं	२६	"
१०६	७२८५	भवभावना (मूल)	हेमचन्द्रसूरि मलधारी	"	६	प्राकृत
१०७	७३२०	भवभावनामूलप्रकरण	"	१८६७	२५	„ अन्तिम पत्र अपेक्षाकृत नवीन है, उसी पर उक्त संवत् लिखा है, किन्तु मूल प्रति इससे पूर्वकी प्रतीत होती है
१०८	७२५२	भवभावनासूत्रप्रकरण		१७वीं	३७	प्राकृत
१०९	७२७३ (२)	भववैराग्यशतक		"	६-१२	"
११०	५४१८ (६)	भवसिन्धुचतुर्विंशी	रूपचन्द्र	१६वीं	६६-६७	हिन्दी
१११	४०८५	मङ्गलकलशचोपाई	लक्ष्मीहर्ष	१८१६	२७	* अ. प्रा., लि. स्था. खींवर-ग्राम, रचनाकाल १७१६, स्था.-काकंदीनगर
११२	५१२०	मङ्गलकलश तथा द्वितीयवाचना	मं. कनकसोम	१७वीं	१०	प्रा. द्वितीयवाचना पत्र १-५ तक में लिखित है, मङ्गलकलशका र.का. १६४६ है, उक्त दोनों ही प्रतियां अपूर्ण हैं
११३	५३०१	महापुराणसंग्रह	गुणभद्राचार्य	१६वीं	१३८-१८१, १८४-२५८	संस्कृत, अपूर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११४	७१०५	मौनएकादशी		१८वीं	३	सं. प्रा.
११५	७२६३	मौनएकादशीकथा		१७वीं	२	संस्कृत, लि.क. पं० सोमनन्दन
११६	१०८७	लोकनालाख्यबालावबोध	नयविलास (जिनचंद्रसूरिशिष्य)	१८वीं	५	"
११७	७२६४	वन्दारवृत्ति		१५५६	७८	" अन्तिम पत्र के अक्षर उड़ गये हैं
११८	७३४३	वनस्पतिसित्तरीग्रवचूर	प्रज्ञापनापाङ्गसूत्रगत	१६वीं	३६	प्राकृत
११९	६०३४	वर्द्धमानदेशना (गद्यबन्ध)	कीर्तिगणि	१८६०	१०६	संस्कृत
१२०	६२२०	वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्ति	१७६८	१४६	" लि.क. गुणविजय
१२१	४२६६	विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह	जिनहर्षगणि (श्रीजयचन्द्रसूरि-शिष्य)	१७वीं	६६	* प्रा.सं., प्रथम पत्र अप्राप्त, र.स्था. वीरग्राम, र.का. १५०२
१२२	७४७७	विचारामृतसंग्रह	कुलमण्डनसूरि	१५वीं	३१	* सं.प्रा., र.का. १४४३
१२३	७१७६	विवेकविलास	जिनदत्तसूरि	"	२१	संस्कृत
१२४	७०७६	विशेषणवती	जिनभद्राचार्यगणि क्षमाश्रमण	१८वीं	६	प्राकृत
१२५	६१८३	श्रावकातिचार		१५५८	१०	अपभ्रंश
१२६	५६७०	शतकर्मग्रन्थबालावबोध	देवेन्द्रसूरि	१८वीं	१८	" लि. क. ऋषि विश्राम
१२७	४०२६	शीलोपदेशमालाबालावबोध	मू. जयकीर्ति, बा. मेरुसुन्दर	"	१५०	परगरायपुरे
१२८	४०३३	" "	" "	"	१५०	* प्रा. रा., लि.क. गुणपति-
१२९	७३३०	षडशीतिकशतककर्मग्रन्थ (स्वोपज्ञ-टीकोपेत)	देवेन्द्रसूरि	१६११	१६५	सागर प्राकृत
१३०	७४१६	षष्टिशतक		१६५४	११०	संस्कृत
				१६वीं	४	प्राकृत

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१	५६८६	षष्टिशतकबालावबोध		१८वीं	१६	प्राकृत
१३२	७३५३	स्थविरावली		१६वीं	४१	प्रा. सं.
१३३	६३२७	स्वर्णाचलमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित (हर्षसागरात्मज)	१८४७	६७	सं., लि.स्था. भरथपुर
१३४	७२२१	सङ्ग्रहण्यवचूरि	देवभद्रसूरि	१४६६	२०	संस्कृत
१३५	७३२५	"	श्रीचन्द्रमुनि (हर्षपुरीय)	१६वीं	२३	"
१३६	६१३३	सङ्ग्रहणी		१६२४	१७	प्रा., लि.स्था. अलवर, प्रथम ३ पत्र अप्राप्त
१३७	७४०५	" (मूल)		१८६६	४०	प्राकृत, लि.क. ऋषि वृद्धिचन्द्र, चूरुनगरमध्ये
१३८	७५४६	"		१७२२	८	प्रा., इसमें दण्डक भी लिखित हैं। लि.क. यशःसागरमुनि, सादड़ीमध्ये
१३९	७४७५	" (सटीक, त्रिपाठ)	श्रीचन्द्रसूरि, श्रीदेवचन्द्रसूरि	१६६०	५१	प्रा.सं., लि.क. नयनगणि जीव- कलशगणेशिष्य
१४०	७५६२	सङ्ग्रहणीप्रकरण (सस्तवक)	स्त. वच्छराज	१७१०	३१	प्रा. रा.
१४१	७६३३	सङ्ग्रहणीप्रकरण	उत्तमऋषि	१८वीं	३५	" रचनाकाल अष्टचतुर- शीतिके आगराख्ये महानगरे
१४२	४३५६	सङ्ग्रहणीबालावबोध	शिवनिधानगणि	१८३७	८५	* प्रा. रा., लि.क. ऋषि आनन्दचन्द्र, श्री बेनातटपुर
१४३	५६७२	" "	"	१८३६	६२	प्रा. रा., लि.क. शिवराज, श्रीबलभा (भी) पुर
१४४	७३२६	सङ्ग्रहणीवृत्ति	देवभद्रसूरि (श्रीचन्द्रसूरिशिष्य)	१८७७	१०१	संस्कृत, ३४ वां पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	४००४	सङ्ग्रहणीसूत्र (संघेननो रासछन्द)	मतिसार	१८४५	२५	* राजस्थानी, प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. प्रमोदतिलक, राजनगरे
१४६	४०३१	सङ्ग्रहणीसूत्र (सस्तवक)	लेख(श)सूरि	१६६२	२७	* प्रा.अ., लि. कर्त्री-आर्याश्री ५ सज्जनजीरी शिष्यना आर्यसू- वट, वीलाड़ाग्राम
१४७	५३५३	„ (सचित्र)		१८वीं	६७	प्रा.रा., चि. सं. ३२
१४८	६१४१	„ „		१८३०	४७	हि.रा.अ., लि.स्था. डीडवाना
१४९	७१७५	„ „		१८२१	६४	प्रा. अ., चि. सं. ३५
१५०	७८४३	„ „		१६७५	२४	प्रा., चि. सं. ५
१५१	७२७७	सङ्ग्रहणीसूत्र		१७वीं	२०	प्राकृत
१५२	७३२४	„		१८६०	२२	„ लि.क. सुन्दरहंस, राणा- वासमध्ये
१५३	७३२७	„ (सबालावबोध, पञ्च- पाठ)	देवभद्रसूरि	१६७८	३१	प्रा. अ.
१५४	७४४४(२)	„ (सटवार्थ)		१८८५	५४-१२०	„ लि.क. नेमविजय, गोघु- न्दाग्राममें लिखित, टिप्पणीका नाम रूपाली है
१५५	४१४३	सप्ततिशास्त्रबालावबोधविवृति	मतिचन्द्रमुनि	१७वीं	६२-१८३	सं.अ.रा., प्रति सुन्दर किन्तु अपूर्ण है
१५६	६२०७	सप्तव्यसनकथासमुच्चय	भारामलसंधी (परसरामसुत)	१८७८	६२	हिन्दी, लिखितं महाचन्द्र श्रीमालवासी पापडदाका पटवारी
१५७	७५४३	सप्तस्मरणसूत्र (राजस्थानीभाषार्थ- सहित)		१८४३	३६	प्रा. रा., लि.क. रूपसोम

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५८	७०१५	सप्तमन्याख्यान		१८वीं	१७	सं.ग्र., इसमें ऋषभदेव, आदि- नाथ आदिके चरित्रका व्याख्यान है, प्रतिके पन्ने चिपके हुए हैं
१५९	७६६९	सम्बोधसत्तरीप्रकरण		१९वीं	७	प्राकृत
१६०	६२०३	सम्मोदशिखरमाहात्म्य	देवदत्त दीक्षित	"	८१	* संस्कृत
१६१	७११८	समवस्तुतिपूजा		"	४०	" अपूर्ण
१६२	७२१७	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्र	१६६५	२५	* ,, लि. क.-पं. केशव
१६३	७१९३	साधुसमाचारी		१८वीं	६	प्रा.ग्र., लि.क. कमलविजय साध्वी श्रीसौभाग्यश्रीपठनकृते, प्रति सुन्दर व चित्रित है
१६४	७२१८	साद्विशतकवृत्ति	धनेश्वरसूरि	१६वीं	७०	सं.ग्र., आद्य ४ पत्र अप्राप्त, प्रतिके कोण खण्डित
१६५	५१३४	सारोद्धार (पंचखाना, सटिप्पण)		१७वीं	४०	प्रा. ग्र.
१६६	७३८२	सिद्धान्तसार		१७६३	६५	प्रा.स.रा., लि.क. लालसागरगणि
१६७	६१४७	सिद्धान्तसारप्रदीपक	सकलकीर्ति	१८११	१२६	सं., लि.क. पं. मयारुचि, जय- सिंहपुरामध्ये (माधवसिंहराज्ये)
१६८	७२६९	सिद्धिदण्डिका		१६वीं	४	प्रा.
१६९	७५३९	सूर्यप्रज्ञप्ति		१७वीं	९२	"
१७०	६१०९	संस्तारकप्रकरण (सबालावबोध, पञ्चपाठ)		"	१०	अपभ्रंश
१७१	५९११	हरिवंशपुराण	जिनसेनसूरि	१६वीं	२९९	* संस्कृत

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर—हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-२; २५--प्रकीर्णग्रन्थ]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	७७४१ (१)	अपभ्रंशस्फुटपद्य		१७वीं	१०-१२	
२	७७४१ (५)	"		"	४२-४३	
३	६०२५	इग्यारसितपसुत्रतकथा		१८वीं	४	अपभ्रंशमें
४	५२०७	श्रीदुम्बरवंशपरिचय		१६०८	१	यह एक प्रकारका पञ्चनामा है जिसमें जयपुरके महापण्डितों एवं राजगुरुओंकी मूल सम्मतियां अंकित हैं।
५	६८२७	श्रीषधसंग्रह आदि		१६वीं	१६३	इस गुटकेमें श्रीषधिके नुस्खे, यंत्रमंत्र, शकुन आदिका संग्रह है
६	७७२२ (६)	"		१८वीं	१०६	इसमें अदृष्टव्रणकी श्रीषधि द्रष्टव्य है
७	५१२३ (१)	गंगास्तोत्र		"	१	प्राचीनसंस्कृतमिश्रित हिन्दी
८	४४५२ (४२)	चण्डिकादेवीचित्र		"	४६ वां	
९	४४५२ (४३)	"		"	५० वां	
१०	४४५४	चन्द्रायणा, कवित्त		"	१	२३ दोहे, २ कवित्त राजस्थानी एवं व्रजभाषा
११	७१७७	जन्मपत्र (सचित्र गोलक)				
१२	६६६०	जयपुरराज्य एवं सदाशिवभट्टसे सम्बद्ध टिप्पणियां आदि			प्रकीर्ण पत्र	नवग्रहोंके सुन्दर चित्र अंकित हैं
१३	७०६०	ढाईद्वीपका पटचित्र				कामदारी लिपिमें इतिहास
१४	७०५६	"				

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	७८०६	तांत्रिकयन्त्र (भूगोलपटचित्र)		१६वीं	१	
१६	४८१०	तारतम्य (गद्य)		,,	६	श्रीकृष्ण विषयक व्रजभाषागद्यमें
१७	१५०६	द्वात्रिंशदपराधाः, दशमहापराधाः, माघमासोत्सवादि		,,	४	संस्कृत, राजस्थानी इसमें वसन्त पञ्चमी के दिन भगवत्प्रतिमा के शृङ्गार की विधिविष्टव्य है
१८	५३७६ (५)	दशलाक्षणिककथा	शुद्धकीर्ति	१८वीं	८७-६०	प्राकृत
१९	७७४१ (७)	प्रकीर्णपद्यानि		१७वीं	८०	संस्कृत अपभ्रंश
१०	७०००	प्राकृतगाथाकोशटीका	मू. शालिवाहन टा. गङ्गाधरभट्ट	१९वीं	१६	प्राकृत संस्कृत अपूर्ण
२१	७३३८	पुष्पमालाप्रकरण	सोमतिलकसूरि	१५वीं	१४	प्राकृत
२२	४४८१	बृहत्क्षेत्रसमास		१७८५	१६	विषय ज्योतिष, लि. क. दोलत- सागरगणि
२३	६३६८	बलिदानपद्धतिः		१६	६	तन्त्रोक्त
२४	६८५५	भागवत (मराठी अनुवाद)		१६वीं		प्रकीर्ण पत्र एकादशस्कंध पर्यन्त
२५	४०८३	मजलस		१८५२	३	प्राचीन हिन्दीगद्य, जिनमुखसूरि प्रशस्ति, लि. क. पं. गोड़िदत्त स्थान पालीग्राम
२६	१४५४८ (१)	मोक्षखेड़ा	बनारसीदास	१९वीं	१-३	पंजाबी में
२७	५४८४	रामविजयमहाकाव्य	श्रीधर	१८५२	५६४	र.का. शक सं. १७१७, मराठी भाषा में, लि. क. बालाजी भीखाजी, रेवातटे राजराजेश्वर सन्निधी
२८	५५५०	,,	,,	१८वीं	६८	आरंभसे लेकर दशम अध्याय तक

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९	७११६	"		१८६१	३६७	र.का. १६२५ शाके (१७६० वि.) अध्याय ११ से ४० तक सं. ५५५० और ७११६ की प्रतियोंको मिलाकर ग्रंथ पूर्ण हो जाता है
३०	५३७६ (११)	रोसहकीजयमाला	केसरीकवि बालकृष्णभट्टमुत्त	१७६२	१११-११२	लि.क. डालचन्द नथमलमुत्त लि.स्था. दरियाबाद
३१	६०६२	विष्णुमहोत्सवमाला		१८६५	२४	
३१	५२३७	वैराग्यशतक		१७४५	१५	प्रा. रा. गु., लि. क. मनोहर इन्द्रजीत शिष्य
३३	६९७७	षट्चक्रनिरूपणखरड़ा		१९००	१	
३४	५२३६	त्रैलोक्यसाधना		१६७६	१२	लि.क. धर्मकीर्ति उपाध्याय मांगलोर मध्ये
३५	७१७६	ज्ञानबाजीकापटचित्र		१९वीं	१	

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थों का विशेष परिचय]

१-स्तुतिस्तोत्रादि

८. ४२३४१

अहल्यास्तोत्र

आदि- ॐ ततो दृष्ट्वा रघुश्रेष्ठं पीतकौशेयवाससम्,
धनुर्वाणधरं रामं लक्ष्मणेन समन्वितम् ।

अन्त - ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि च
भ्राता रा [ग्रा] मर्विहंसकोऽपि सततं भोगैकवीधा (वद्धा) तुरः
नित्यं स्तोत्रमिदं जपन् द्युपतितं भक्त्या हृदिस्थं स्मरन्,
ध्यायेन्मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ त्वाचारयुक्तो नरः ॥ २८

इति श्रीअध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकाण्डे अहल्यास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

९. ४२५४

अज्ञानविमोचनस्तोत्र

आदि- ॐकारे आदिरूपे मुकुतबहुविधे श्वेतपीते च कृष्णे
नीले रक्ते कपोते तदुपरि रहिते सर्ववर्णे विवर्णे ।
प्राणपाने समाने विपरितकरणे ध्यान उद्यानपीठे
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ।

अन्त- ध्याता ध्याने विज्ञाने जयविजयकरे भावभावे विभावे
रामारामेति रामे अमृतविषमये लुब्धचन्द्रे अलुब्धे
स्वर्गे नर्के अनर्के अखिलखिलमये चेतिते अचेते
एको व्यापी शिवोऽयं इति वदति हरिर्नास्ति देवो द्वितीयः ॥ १०

इति श्रीनन्दीपुराणे नारायणकृत अज्ञानविमोचनस्तोत्र संपूर्णम् ।

४८. ७१४८

गुरुस्मरणाष्टक (स्तोत्रसंग्रह)

पत्र- १, १४, १६, १८, १९ वां अप्राप्त

(१) प्रोतस्तव (२) गोपालमंत्रध्यान (३) राधिकाशतनाम (४) कृष्णशरणागति-
स्तोत्र (५) दशश्लोकी (६) राधाष्टक (७) चतुःश्लोकी (८) आदित्यस्तोत्र (९) निवे-
दनाष्टक (१०) नारदशरणाचतुष्टक (११) निम्बार्कशरणागतिचतुष्टक (१२) आचार्य
पंचकस्तोत्र (१३) पंचश्लोकी (१४) राधास्तव (१५) आदित्यप्रस्तव (१६) निवादित्य-
लघुस्तव (१७) युग्मषोडशनामस्तव (१८) यमुनाष्टक (१९) गोपालस्तवराज (२०)
हरिव्यासाचार्याष्टक (२१) गुरुस्मरणाष्टक (हिन्दी) ।

१ प्रथम संख्या क्रमाङ्क और द्वितीय संख्या ग्रन्थाङ्क - सूचक है ।

१३६. ६७०१

यमुनाष्टकादिस्तोत्र, ४८ कृतियां ।

श्री वल्लभाचार्य रचित—१ यमुनाष्टक. २ बालबोध. ३ सिद्धांतमुक्तावली. ४ सिद्धांत-
न्तरहस्य. ५ नवरत्नस्तोत्र. ६ अन्तःकरणप्रबोध. ७ विवेकधीर्याश्रय. ८ कृष्णाश्रय ९
चतुःश्लोकी. १० पुष्टिप्रवाहमर्यादा. ११ भक्तिवर्द्धिनी. १२ जलभेद १३ स्वतन्त्रपद्यानि.
१४ सन्यासनिर्णय. १५ निरोधलक्षण. १६ सेवाफल. १७ पंचश्लोकी । (विट्टलेश्वररचित).
१८. यमुनाष्टपदी १९ गोपीजनवल्लभाष्टक. २० गोकुलाष्टक २१ मधुराष्टक. (वल्लभा-
चार्य) २२. भागवत्सारसमुच्चयेनामसहस्रम् २३. नामावलीत्रिविधलीला २४. सेवा-
फलविचार. २५ पूतनामोक्ष. २६ गोपालाष्टक. २७ नवनीतप्रियाष्टक. २८ शरणाष्टक
२९ दैन्याष्टक. ३० बलदेवाष्टक ३१ गिरिधार्यष्टक. ३२ गोकुलेशाष्टक. ३३ जन्मवैकल्य-
निरूपणाष्टक ३४ वल्लभभावाष्टक. ३५ स्वामियुगलाष्टक. ३६ पंचाक्षरगर्भितस्तोत्र.
३७ वल्लभशरणाष्टक. ३८ सप्तश्लोकी भागवत. ३९ स्वामिन्यष्टक. ४० स्वस्वामिनी-
स्तोत्र ४१. आर्या (वल्लभ) ४२ आर्या (विट्टलेश) ४३. आर्या (रघुनाथ) ४४. शिक्षा-
श्लोकी ४५. दैन्याष्टक ४६. भुजंगप्रयाताष्टक ४७. अष्टाक्षरमन्त्रार्थ ४८ स्फुट पद्य ।

३—कर्मकाण्ड

२६. ५७३६

कुण्डकल्पद्रुम

आदि— ॐ मित्यक्षरमद्वितीयमनघं तत्सद्बृहन्तःस्थितं,
नत्वा सौति विभति विश्वमखिलं यस्मिन् पुनर्लीयते ।
शास्त्रं वीक्ष्य समुद्धराम्यथ सतां श्रीमाधवोऽहं सुधी-
निर्मथ्याङ्कसमुद्रमिष्टफलदं श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥ १

अन्त — आसीत् काश्यपवंशजः क्षितितले श्रीमानुदीच्याग्रणी-
गोविन्दःश्रुतिवित्तदात्मज इहाभूत्.....नारायणः ।
तत्सूनुर्निगमक्रियासु निपुणः कूकाभिधस्तत्सुतः
शुक्लो माधवसंज्ञको रचितवान् श्रीकुण्डकल्पद्रुमम् ॥
भ्रान्ता भद्रा ये गणिताटवीषु फलाशयादौ विकलाश्च तेषाम् ।
कृते सुखेनेष्टफलः शिवाग्रे 'तापीपुरे'ऽरोपि सुकल्पवृक्षः ॥
संवर्द्धितो यः कृपया शिवेन फलप्रदोऽसाविति बालकानाम् ।
शिवः प्रसन्नो भवतीह येषां तेषां फलाप्तिर्नहि संशयोऽत्र ॥
पद्यं सबाधं यदि मत्कृतो चेद् ग्राह्यं च तत् साधुजनैर्विशोध्य ।
स्वर्वाहिनीसङ्गमतः कुवीर्याः कुनिम्नगायाश्च यथैव तोयम् ॥
रविघनमितवर्षे विक्रमाकौ प्रयाते (१७१२)
नगनगतिथितुल्ये (१५७७) शाककाले प्रवृत्ते ।
शरदि मनुजमाने मन्मथे चैपशुक्ले ॥
पण्णितिथियुतचन्द्रे कुण्डकल्पद्रुमोऽभूत् ।

२७. ४६६०

कुण्डतत्त्वप्रदीप

आदि- नत्वाऽच्युतब्रह्ममहेशमूर्तीरिष्टेषु पूर्तेषु यदङ्गमाद्यम् ।
सांगं समं कुण्डमनेकभेदं ब्रूतेऽखिलं तद्वलभद्रसूरिः ॥ १

अन्त- कल्पे श्वेतवराहनाम्नि विदिते वैवस्वते सप्तमे
सन्मन्वन्तरकेऽष्टविंशतितमे प्राप्ते कलौ सम्प्रति ।
अन्धि स्वे प्रथमेऽखिलक्षितिपतिश्रीविक्रमाकंप्रभो-
वर्षाशीतिसहैव षोडशशतातीते च काले त्विह ॥
श्रीमदभूपतिशालिवाहनशकात् पञ्चाब्धित्थ्यन्विते
श्रीसूर्ये गतसौम्यदिश्यथ वसन्तर्तौ च चित्रे शुभे ।
शुक्ले (गच्छति) पूर्णमासि हिमगौ सावित्र्यधिष्ये धृतौ
कन्यास्थे हिमगावथावनियुते मेघे बुधे मीनगे ॥
मिहे देवगुरौ सिते मकरगे कर्के शनौ संस्थिते
कन्यायां तमसि प्रकेदुषु भूपं संस्थे च पुण्येऽहनि ।
सुव्यष्ट्यां करणे च सन्मिथुनके लग्नेऽभिजित्के मुह-
र्तंसत्कुण्डविचारणार्थमुदितो दीपः प्रकाशं प्रयात् ॥
श्रीमत्सम्भसुपत्तने (स्थित) महेन्द्राम्भोधियोगे वसन् ।
नानाशास्त्रविचारणे पटुमतिः श्रीगौडरत्नाकरात् ॥
जातो वत्सकुलाब्धिशितकिरणः सत्कुण्डतत्त्वं स्फुटं
शुक्लस्थावरसूनु रत्नवलभद्राख्यः प्रवक्ति स्वयम् ॥
यः पूर्वं सुहिरण्यगर्भमतुलं रूपं दधन् वाग्विदाम्
मध्ये भट्टसमाख्ययाऽभवदसौ वेदान्वितत्त्वं स्वराट् ।
भूयः श्रीजयदेवदीक्षितमणिः सम्राट् सुविस्तारितुं
साङ्गं कर्मपथं चरन् विजयते श्रीमन्सिंहात्मभूः ॥
येन श्रीभगवान् मखैर्बहुविधैः सन्तपितः शाश्वतो
येन द्वादशसौत्यकाग्निचयनैः सद्वाजपेयादिभिः ।
इष्टं तेन सुशास्त्रवेदविदुषां तत्त्वोपदेशाय चा-
जप्तेनायमगाधसागरजलात् पूर्णेन्दुवत्काशितः ॥

२८. ४६७८

कुण्डप्रकरण (श्लोकप्रकाशिका)

रचना- 'रसगगनतिथिप्रमाणवर्षे गतवति विक्रमभूमिका [पा] लात्'
लि.क. सदाशंकर, अम्बिकेश्वरसुत महाशंकरपौत्र, जागेश्वरपठनार्थम् ।
टोडा निवासी ।

३३. ४१२८

कुण्डार्कं (मरीचिमालाटीकोपेत)

आदि- कृष्णात्रिगोत्रोद्भववृषसिन्धोः समुद्गतः विट्पूगंचन्द्रः ।
तस्यात्मजः श्रीरघुवीरविजः करोति कुण्डार्कमरीचिमालाम् ॥ १

अन्ते— शाखाः सप्तभिरावेष्टय वेदी पंचभिरेव च ।
कलशं तु त्रिरावेष्टय स्थापायेद्देवताक्रमात् ॥ इति श्री०

४१. ४१८५

ग्रहशान्तिपद्धति

अन्त— त्रिशरगजकुसुख्ये (१८५३) विक्रमातीतकाले
रवितिथिवृध्वारे माधवे कृष्णपक्षे ।
रचितमिदमनूपं श्लेषशान्तिप्रकारं
सुमतिभिरवलोक्यं योद्धराजाह्वयेन ॥ १ ॥

इति श्रीग्रहशान्तिप्रकारः समाप्तिमगात् ।

लिपिकर्ता—पं० नाथूरामपुरी वचूणी^१ मध्ये ।

१००. ४६४६

मूर्तिप्रतिष्ठाविधि

अन्त— व्योमाचलावसुनिशाकरनाम्नि' वर्षे
पक्षे सिते तपसि रमाधवान्हिवारे ।
विधौ जयपुरे च गुरोर्निदेशात्
प्रालेखि पुस्तकमिदं गिरधारिशर्मा ॥ १ ॥

११३. ४६६४

रुद्रपद्धति (रुद्रार्चनमञ्जरी)

अन्त— संवत्क्रिमभूपस्य तर्कचन्द्रशते गते । (१६५७)
पञ्चरागोत्तरे वर्षे कार्तिक्यां च प्रकाशके ॥
श्रीदीच्यज्ञातिविप्रेण श्रीत्यगलाख्यसूनुना ।
मालजिना कृता चेयं महारुद्रस्य पद्धतिः ॥

४-तन्त्रमन्त्रादि

१७. ४३२६

कृष्णचरित

आदि—देव्युवाच—भगवन् सर्वं भूतेश सर्वात्मन् सर्वसंभव ।
देवदेव महादेव सर्वज्ञ करुणाकर ॥१॥
त्वयानुकम्पितेवाहं भूयोप्यद्यानुकंपय ।
त्रैलोक्यमोहनोमंत्रस्त्वया मे कथितः प्रभो ॥ २ ॥

१ यह ग्राम विचूर ज्ञात होता है जो जयपुर से पश्चिम उत्तरमें १६ कोस पर है ।

अन्त- अथ वक्ष्यामि भर्गाख्यं मुनेश्वरि तमद्भुतम् ।

भुज्य नाम्नो मुनेः सोऽभूत् पुत्रः कनकसप्रभः ॥

तस्यास्यादचला भक्तिर्हरी गोपालरूपिणि ॥२५२॥

इति संमोहि (ह) नी (न) तंशे श्रीकृष्णचरितं समाप्तं ।

२४. ६२४७

गंधोत्तमानिर्णय

अन्त- सन्दिग्धसन्देहविनाशमुद्गरं चक्रे स ग्रंथं गुरुसेवको मुदे ।

एनं सुधीश्रीगुरुजकुलधरे नाकश्वरः कौलवतां प्रपद्य हि ॥ १ ॥

सिंहस्थे द्युमणी गुरी घटगते मासे नभस्याभिधे ।

मंदे ब्रह्मतिथौ विधौ तिमिगते पक्षे शुभे मेचके ॥

शाके विक्रमभूपते परिमिते द्वाभ्राद्विजैवातृकै-

(१७०२) विप्रप्रार्थनयासमाप्तिमगमद् गन्धोत्तमानिर्णयः ॥

इति श्री कालेत्युपनामकगुरुसेवक कृतं गंधोत्तमा निर्णयः ।

गुर्जरचुन्नीलालेन कुंभावत्यां लिपीकृतम् ॥

बहुशास्त्रान्वितो ग्रंथो कौलग्रन्थविनिर्णयम् ।

३२. ४८६७

तंत्रलीलावती

आदि- कुंजे मञ्जुलमंजरीपुलकिते भृंगांगनासंगते ।

माद्यत्कोकिलकाकलीविलपिते मन्दान (नि) लान्दोलिते ॥

सानन्दव्र [व] जसुन्दरीभिरभितो निःशेषमालिगिते ।

वन्दे सान्द्रपयोदसुन्दरश्चि शृंगारिणं माधवम् ॥१॥

..... श्रीमत्सूरतनूद्भवो गुणनिधिः सत्कीर्तिचंद्राकरः

ख्यातो विक्रमकेसरी जगति यो दारिद्र्यनागांतकः ।

नानाशास्त्रविचारकेलिचतुरश्रीकर्णभूमि-

पतिर्द्वारिः संतनुते मितेन वचसा श्रीतंत्रलीलावली ॥६॥

आलोक्य तंत्राणि विचार्य सारं निष्कृष्य यत्नादिह साधकानाम्

विनोदहेतोर्गुरुवक्त्रगम्यं सिद्धे निदानं प्रकटीकरोति ॥७॥

अन्त- होमादावप्यशक्तश्चेष्टुद्विणं जपमाचरेत् ॥

इदं तु पञ्चाङ्गपुरश्चरणविषयम् ।

अन्यत्र होमादीनामनुक्तत्वात् ।

इति श्रीतंत्रलीलावत्यां तृतीयः पटलः समाप्तः ।

३३. ७७११

तन्त्रस्थहृदय

आदि- श्रुतीनां तंत्राणां बहुलकथनात्पन्नगपुरे

समायाते मोहे द्विजवरगणानां च विदुषाम् ।

अतस्तैः सम्पृष्टे हरिहरविरिच्यादि चरणे

स्तुवन् काशीनाथो रचयति हि तन्त्रस्थहृदयम् ॥ ४ ॥

अन्त — सुखजनकं साधूनां बालमुकुन्ददीक्षितः स्वार्थम् ।
 व्यलिखत् परार्थमेतत् हृदयं यत् सर्वतंत्राणाम् ॥ १
 शिष्यकल्पतरुकल्पितकल्पं वेदबोधितविधिप्रभुमल्पम् ।
 शुद्धमार्गपरमं व्यलिखित् श्रीकृष्णदीक्षितसुतःस्वपरार्थम् ॥ २

४४. ७७०८

परशुरामकल्पसूत्र

अन्त— इति श्रीदुष्टक्षत्रियकुलकालान्तकरेणुकागर्भसम्भूतमहादेवप्रधानशिष्यश्रीमन्नारा-
 यणावतारमहामहोपाध्यायश्रीपरशुरामविरचितं कल्पसूत्रं समाप्तम् ।

७३. ४२६६

महाविद्यादशश्लोकीविवरण

आदि— अपक्षसाध्यवद्वृत्ति विपक्षान्वयि यत्र तु ॥
 साध्यवद्वृत्तितायुक्तं साद्गते साद्धचवर्जिते ॥ १ ॥

अन्त— तदर्थमाकाशान्वेति । तथापि द्रव्यत्वेन व्याघातस्तदवस्थ एव तदर्थमनित्यनित्या-
 वृत्तीति तथापि न विवक्षितसिद्धिरिति ।

७६. ४११८

रामपद्धति

आदि— श्रीगणेशाय नमः । ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

अन्त— सर्पं दृष्ट्वा यथा लोके दुर्दुरा भयकंपिताः ।

ऊर्ध्वपुण्ड्रं कृतं तद्वत्कम्पन्ते यर्मकिकराः ॥ ५६ ॥

इति श्रीरामानुजकृता श्रीरामपद्धतिर्वेदोक्ता सम्पूर्णा ।

लिपिकर्ता—विप्रजयराम ।

८३. ६७४२

रामपूजापद्धति

रचना काल—‘इन्दुवाणरसोर्वीर्भिवत्सरे याति वैक्रमे ॥ (१६५१)

कार्तिकमासिशुक्लायां द्वादश्यां भोमवासरे ।

काश्यां कृताऽनवद्येयं रामोपाध्यायसूरिणा ॥

राम एवापिता रामपूजापद्धतिरीदृशी ॥ १ ॥

६३. ५२३६

वसुधारा

आदि— संसारद्वयदन्यस्य प्रतिहंत्रिदिवावहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमस्तुभ्यं कृपामए [यि] ॥

६४. ५२२५

वसुधारानाम धारणीकल्प

आदि— संसारद्वयदेन [न्य] स्य प्रतिहंत्रिदिनवहे ।

वसुधारे सुधाधारे नमः तुभ्यां कृपामए (यि) ॥ १ ॥

अन्त— वसुधारा नामधारणी कल्पमित्यपि धारयं इदमेवोचद्भगवान्नात्तमनाः आयुष्मान्
 नन्दस्ते उभिक्षवस्ते च बोधिसत्त्वा सालसवति परिषत् सदेवमानुषासुरगंधर्वाश्च लोको
 भगवतोभाषितमस्यनदन्निति ॥ इति श्रीवसुधारानामधारणीसमाप्ता ।

११३. ४४६६ शिवपंचाक्षरी न्यासविधि

आदि- ऋषय ऊचुः-कथं पंचाक्षरीं विद्यां प्रभावो वा कथं वद ।
 कथं क्रमो महाभाग श्रोतुं कीदृहलं हि तः(नः) ॥
 सूत०॥ पुरा देवेन रुद्रेण शिवेन परमेष्ठिना ।
 पार्वत्याः कथितं पूर्वं प्रवदामि समासतः ॥
 अन्त- गृहे जपं समं विद्याद् गोष्ठे शतगुणं भवेत् ।
 नद्यां सहस्रगुणितं अनन्तं शिवसन्निधौ ॥
 इति शिवपंचाक्षरन्यासविधिः समाप्तः ।

११६. ४२०५ सिंहसिद्धान्तसिधु

आदि- यस्यांघ्रिद्वयपूजनेन निखिलाः सिद्धीर्लभन्ते नरा
 वृद्धीः प्राप्य वसन्ति वेङ्गमसु परास्तेषां समाः संपदः ॥
 भक्तस्वान्तनितांतमोहदलने दक्षं विपक्षं वरं
 विघ्नानां प्रणमाम्यनारतमहं तं श्रीगणाधीश्वरम् ॥ १
 इति गोस्वामिश्रीजगन्निवासात्मजगोस्वामिश्रीशिवानन्दभट्ट-
 विरचिते सिंहसिद्धान्तसिधौ द्विनवतितमस्तरङ्गः ।

अन्त- चंद्रवन्हितुरगैकसंमिते वत्सरे सहसि शुक्लपक्षतौ ॥

शीतरश्मिसितवासरे शुभे ग्रंथ एष परिपूर्णतामगात् ॥ २

संवत् १८२५ वर्षे राजाधिराजश्रीमज्जयसिंहतनूजश्रीमन्माधवसिंहोपहरेण स्वात्मा-
 वलोकनार्थं लिखापितं पुस्तकमिदं श्रीमज्जयसिंहनिमित्ते जयनगराख्ये शुभपत्तने लेखोयं लेखक-
 त्रयाणाम् श्रीः श्रीः ॥

५-धर्मशास्त्र

१५. ४११३ आशीचदशक सभाष्य

आदि- मातुर्गर्भविपत्स्वद्यं त्रिदिवसं मासत्रयेतो यथा
 मासाहं त्रिषु सूतिकावधिरतः स्नानं पितुः सर्वदा ।
 ज्ञातीनां पतनाद्रिजातमरणे पित्रोर्दंशाहं सदा
 नाम्नः प्राक् तदपैति सूतकवशाद्भ्रातुर्दंशाहं परम् ॥ १
 भाष्यादौ- विज्ञानेश्वरविरचितमुनिजनवाक्यैमिताक्षरामध्यात् ।
 आशीचदशकवृत्ति वदति हरिर्हरिहरी नत्वा ॥ २

अन्त- "शूद्रो धन्यः कलिर्धन्य इति व्यासवाक्यात् । शूद्रधर्मसंस्काराणामाहतः । धन्यः
 शब्दो मंगलवाचक इति । इत्याशीचदशकभाष्यं हरिहरविरचितं सम्पूर्णम् ।"

२४. ४३५१

कालनिर्णयसिद्धान्त सटीक

आदि— प्रणम्यैकरदं देवं, शारदां गुरुमेव च ।

कालनिर्णयसिद्धान्तं व्याकुर्वे विशदोक्तितः ॥ १

अन्त— एतादृशे समये भुजनगरे द्विवेदिअग्निहोत्रिश्रीजयरामजेन रघुरामेण ग्रन्थस्येयं व्याख्या बुद्ध्या मनीषया कृतेति ।

इति द्विवेद्यग्निहोत्रिश्रीजयरामसुतरघुरामविरचितो निर्णयसिद्धान्तः सटीकः समाप्तिमगमत् ।

२५. ६२४६

कृत्यरत्नावलि

रचनाकाल— भूतशून्य ऋषिचन्द्र मिते (१७०५ वि०) माघकृष्ण गहरी रविवारे ।

ग्रन्थपूतिमकरोत् किल रामः श्रीरमापतिसमर्पणबुद्ध्या ॥

प्रति पर पुस्तकके स्वामीकां पश्चाल्लेख इस प्रकार है—

“श्रीवीसलनगरवास्तव्यनागरजातीयत्रिपाठीकालात्मजग्रहलासूनुहरनाथतदात्मज भा. आ. तत्सूनुत्रि० त्रिविक्रम तदात्मज त्रि० मोहनसूनु त्रि० प्राणनाथात्मजबालकृष्णस्येदं पुस्तकम् । श्रावण शुक्लैकादश्याम् गुरौ संवत् १७५६ ।”

३२. ४१२६

तिथिनिर्णय

आदि— सा द्विविधा शुक्ला कृष्णा च । तत्र एकैककलावृद्धयवच्छिन्नः कालः शुक्लतिथिः तत्क्षयावच्छिन्नः कालः कृष्णतिथिः ।

अन्त— योजन्तदेवकृतमन्थनसन्निबन्ध—

क्षीराब्धिजोय कमलापतिना धृतो यः ॥

नित्ये निजे हृदि सतां प्रमुदे तु तस्य

तिथ्याख्यदीधितिरीयं स्मृतिकौस्तुभस्य ॥

इति तिथिनिर्णयः समाप्तः ।

४०. ४६८४

दानवाक्यसमुच्चय

आदि— पुराणश्रुतिवाक्यानि परामृश्य बुधैः सह ।

पुरुषोत्तमेन क्रियते दानवाक्यसमुच्चयः ॥

४३. ४६०५

धानतपद्धति

आदि— धानत इति भविष्योक्तेः । जातः कंसव(व)धाथार्येत्यस्य परभागोऽत्र न संगृहीतः ।

अन्त— ऋक्षादिभिर्भाव्यमिति तच्चेष्टादिकमनुकर्तव्यमित्यर्थः ॥ ४३ ॥ इति समाप्तम् ।

४६. ४१८४

प्रायश्चित्तमयूख

आदि— नमामि भास्वत्पदपंकजंतच्छ्रीनीलकण्ठोऽहमथ प्रकुर्वे ।

स्मृत्वोपदेशान् गुरुशंकरस्य विनिर्णयं पापविशुद्धिहेतुम् ॥ १

अन्त- निशायां वा दिवा वापि यदज्ञानकृतं भवेत् ।
त्रिकालसंध्याकरणात्तत्सर्वं प्रविणश्यति ॥

५४. ४४४६

मदनपारिजात

आदि- प्रवालादिप्रस्थद्युतिनिचयपठ्यायवपुषे
नमो विघ्नश्रेणीविघटनवरिष्ठाय महसे ।
जगत्प्रादुर्भावस्थितिलयनिरायासरचना-
विनोदासक्ताय प्रणतिफलसिद्धिप्रतिभुवे ॥ १
सोऽयं कौशिकवंशभूषणमणिश्रीभट्टविश्वेश्वरो ।
वेदस्मार्तमते नयेच सय (प) दे वाक्ये कृती वर्द्धते ॥ २

अन्त- "मतिर्येषां शास्त्रे प्रकृतिरमरणीया व्यवहृतिः
परा शीलं श्लाघ्यं जगति ऋजवस्ते कतिपये ।
चिरं चित्ते तेषां मुकुरतलभूते स्थितिमिया-
दिद्यं व्यासारण्यप्रवरमुनिशिष्यस्य भक्ति रिति ॥"

इति पण्डितपारिजातकहरिमल्लेत्यादिविस्तराजीविराजमानस्य श्रीमदनपालस्य निबन्धे
मदनपारिजाताभिधाने नवमः स्तवकः समाप्तः ।

५६. ४४४४

महाव्रतभाष्य

आदि- मधुसूदनं गुरुं वन्दे देवमातं त्रयीविदम् ।
कृष्णं विनायकं रामं हरिरामं हलायुधम् ॥ १
सप्त चैतान्गुरुत्वा तेषां वै पादपांसवः ।
भाष्यं महाव्रतस्याहं कुर्वे गोविदसंज्ञकः ॥ २

अन्त- चातुर्विंशकान् पुच्छानीत्पुच्छसंस्थे चातुर्विंशकानीत्यादिद्विरभ्यास्तेष्व्यावपरि-
समाप्त्यर्थः । इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टादशोऽध्यायः ॥

६२. ४५१६

मानवधर्मशास्त्रसंहिता

आदि- स्वयम्भुवे नमस्कृत्य ब्रह्मणोऽमिततेजसे ।
मनुप्रणीतान् विविधान् धर्मान् वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥ १
अन्त- इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रोक्तं पठन् द्विजः ।
भवस्याचारवान्नित्यं यथेष्टं प्राप्नुयाद्गतिम् ॥ १२६
इति श्रीमानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां द्वादशोऽध्यायः ।

७६. ४३५०

रत्नसंग्रह

आदि- नत्वा रामं धनश्यामं शारदां च महेश्वरम् ।
बालबोधाय गोविदः कुरुते रत्नसंग्रहम् ॥ १

अन्त- धर्माधिकारिरामस्य निर्ममे तनुजः कृती ।

निबन्धान् वीक्ष्य निर्व[रव]न्नाद् गोविन्दो रत्नसंग्रहम् ॥

इति श्रीधर्माधिकारिपण्डितरामसुतश्रीमद्गोविन्दपण्डितकृतौ ज्योतिषरत्नसंग्रहः समाप्तः ।

८८. ४५३३

शांखशास्त्र

आदि- श्वयम्भुवे नमस्कृत्य सृष्टिसंहारकारिणे ।

चातुर्वर्ण्यहिताथायि शंखः शास्त्रमकल्पयत् ॥ १

अन्त- शंखप्रोक्तमिदं शास्त्रं योऽधीते द्विजपुङ्गवः ।

सर्वपापविनिर्मुक्तः स्वर्गलोके महीयते ॥

इति शांखे धर्मशास्त्रेऽष्टादशोऽध्यायः ।

८९. ४४४७

शांखायनसूत्र भाष्य

आदि- ॐ श्रीऋग्वेदमूर्तये नमः । ओम् । पुरुषस्य बुद्धिपूर्वकारिणोऽभ्युदयनिःश्रेयस-
मुपादित्सतं तच्च विशिष्टक्रियासाध्यं, सा च वैदिकी क्रिया नान्या, या काचित् कुत एतत्
इत्यादि ।

अन्त- शांखायनकसूत्रस्य समं शिष्यहितेच्छया ।

वरदत्तसुतो भाष्यमानत्तीयोऽकरोन्नवम् ॥

इति शांखायनसूत्रभाष्येऽष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।

६-पुराणकथामाहात्म्यादि

७७. ४२३०

भागवत

१. भागवत द्वादशस्कन्ध के १२वें व १३वें अध्याय पृ० १ से ३८ तक ।

२. नारायणकवच पृ० ३९ से ५६ तक

३. सप्तश्लोकी गीता पृ० ५७ से ६० तक

४. चतुश्लोकी गीता पृ० ६१ से ६३ ,,

५. एकश्लोकीरामायण पृ० ६४ से ६५ ,,

६. भारतसावित्री पृ० ६५ से ६७ ,,

७. रामरक्षाकवच पृ० ६८ से ८१ ,,

८. रामाष्टोत्तरनामस्तोत्र पृ० ८२ से ९९ ,,

(पद्मपुराणांतर्ग)

९. नारदगीता पृ० १०० से १०१ तक, श्रीर

१०. इन्द्राक्षीस्तोत्र पृ० १०२ से ११३ तक हैं ।

६७. ६४८५

भागवतक्रमसन्दर्भटीका

अन्त- इति कलियुगपावनस्वभजनविभजनप्रयोजनावतारश्रीश्रीभगवच्चैतन्यदेवचरणानु-
चरणाचार-विश्ववैष्णवराजसभाजनभजनरूपसनातनानुशासनभारतीगर्भे श्रीभागवतसंदर्भे
क्रमसंदर्भो नाम सप्तमः सन्दर्भः, समाप्तश्चायं भागवतसन्दर्भः ।

१३३. ६४८८

भागवतसन्दर्भे तत्त्वसन्दर्भः प्रथमः

आदि- जयतां मथुराभूमी श्रीलरूपसनातनी ।

यो विलेखयतस्तत्त्वं ज्ञापिको पुस्तकामिमाम् ॥ ३

कोऽपि तद्बान्धवो भट्टो दक्षिणद्विजवंशजः ।

विविच्चाऽप्यलिखद्ग्रन्थं लिखिताद्वृद्धवैष्णवैः ॥ ४

तस्याद्यं ग्रन्थमालेख्यं क्रान्तव्युत्क्रान्तखण्डितम् ।

पर्यालोच्याथपर्यायं कृत्वा लिखति जीवकः ॥ ५

७-वेदान्त

२. ४५६४

अन्तःकरणबोध सविवृतिक

अन्त- पितृपादाब्जपरागधनिना मया श्रीवल्लभेन रचिता त्रि(वि)वृतिः पूर्णतामगात् ।

३. ४२४४

अनुस्मृति

आदि- शतानीक उवाच-

ॐ महातेजो महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।

अक्षीणकर्मबंधस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ॥ १

अन्त- ननु व्यायति यो देही कथयामि च तत्सुखम् ।

सर्वबन्धविनिर्मुक्तः परंपदमवाप्नुयात् ॥ ७३

इति श्रीमहाभारते विष्णुधर्मोत्तरे अनुस्मृतिः सम्पूर्णा ।

२३. ४१४१

आत्मबोध सटीक

आदि- टीका- शतमखपूजितपादं शतपथमनसाप्यगोचराकारम् ।

विकसज्जलरुहनेत्र (त्रं) उमाद्यायाङ्कमाश्रयं शम्भुम् ॥ १

मूल- तपोभिः[क्षीण[य]माना[णा]नां शान्तानां बीतरागिणाम् ।

मुमुक्षूणामपेक्षोयमात्मबोधो विधीयते ॥ १

अन्त- दिग्देशकालाद्यनपेक्षसर्वगं शीतादिहृन्नित्यसुखं निरञ्जनम् ॥

यः स्वात्मतीर्थं भजते विनिः क्रियः यः सर्ववित् सर्वगतोऽमृतो भवेत् ॥ ६७

टीका— शीतादिद्वन्द्वदुःखानि हरतीति शीतादिहृत् नित्यसुखं मोक्षानन्दप्रापकत्वाद् ।
इतरतीर्थेषु तद्विपरीतं द (द्र)ष्टव्यम् तस्मादात्मतीर्थे स्नातस्य न किंचिदवशिष्यत इति भावः ।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यगोविन्दभगवत्पूज्यपादश्रीमच्छंकराचार्य-
विरचितात्मबोधप्रकरणं समाप्तम् ।

५८. ६०६१

नाटकद्वीपाख्याख्या

श्रीगणेशाय नमः ॥

नत्वा श्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनीश्वरौ ।

अर्थो नाटकद्वीपस्य मया संक्षिप्य वक्ष्यते ॥ १

चिकीर्षितस्य ग्रन्थस्य निःप्रयूहपरिपूर्णायाभिमतदेवतातत्त्वानुस्मरणलक्षणं मङ्गलमाचरन्
मन्दाधिकारिणामनायासेन निःप्रपञ्चब्रह्मात्मतत्त्वप्रतिपत्तयेऽध्यारोपापवादाभ्यां निःप्रपञ्चं
प्रपञ्च्यते शिष्याणां बोधसिद्ध्यर्थं तत्त्वज्ञैककल्पितः क्रमः इति न्यायमनुसृत्यात्मन्यध्यारोपं ताव-
दाह परमात्मेति—

परमात्माद्वयानन्दपूर्णः पूर्ण स्वमायया ।

स्वयमेव जगद्भूत्वा प्राविशज्जीवरूपतः ॥ १

देवाद्युत्तमदेहेषु प्रविष्टो देवताऽभवत् ।

मर्त्याद्यधमदेहेषु स्थितो भजति देवताम् ॥ २

अन्त— न तत्र मानापेक्षास्ति स्वप्रकाशस्वरूपतः ।

तादृग्व्युत्पत्त्यपेक्षाचेच्छ्रुतिं पठ गुरोर्मुखात् ॥ २५

यदि सर्वग्रहत्यागो शक्यस्तर्हि धियं ब्रज ।

शरणं तदधीनोन्तर्वहिर्वेषोनुभूयताम् ॥ २६

इति श्रीनाटकद्वीपाख्या नाम दशमः ॥ १०

यद्यप्युक्तन्यायेन स्वात्मा परिशिष्यते तथापि तदापरोक्ष्या (य) यत्किञ्चित् प्रमाणम-
पेक्षितमित्यत आह न तत्रेति तत्र हेतुमाह स्वप्रकाशेति नन्वात्मा प्रकाशतया स्वस्फूर्तो मानं
नापेक्ष्यत इति व्युत्पत्तिसिद्धये मानमपेक्षितमित्याशङ्क्य श्रुतिरेवात्र प्रमाणमित्याह तादृ-
गिति ॥२५॥ एवमुक्तमाधिकारिणः आत्मानुभवोपायमभिधाय मन्दाधिकारिणस्तं दर्शयति
यदि सर्वेति बुद्धिशरणत्वे किं फलमित्यत आह तदधीन इति बुद्ध्या यद्यत्परिकल्पयते बाह्यम-
भ्यन्तरं वा तस्य तस्य साक्षित्वेन तदाधीनपरमात्मा तथैवानुभूयतामित्यर्थः ॥२६॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिङ्करेण श्रीराम-
कृष्णाख्यविदुषा विरचिता नाटकद्वीपाख्या नाम दशमः ॥१०॥



११-ज्योतिष

५. ४४४२

अद्भुतसागर

इति श्रीपाकसमयाद्भुतावर्तः ॥ इति श्रीमहाराजाधिराजनिश्चकशंकरश्रीमद्बल्लाल-
सेनदेवविरचित अद्भुतसागरः समाप्तः ।

पुस्तकके अन्तमें इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न मानसिहादि राजाओंका वंशवर्णन है ।

लिपिकर्ता—पुरोहित सदाराम, ठाकुर भैरू सिधजीपठनार्थम् ।

लिपिस्थान—शिवपुरी ग्राम । संवत् १७८७ माघ शुक्ला १ बुधवार ।

६. ४६३०

अद्भुतसागरी प्रथम खण्ड

पूर्ण ग्रंथकी पत्र संख्या ऊपर ३६० लिखी है किन्तु यह प्रति अपूर्ण है । प्रतिमें ऊपर
“पुस्तकमिदं शुक्लसदासुखजीकस्य” ऐसा लेख है ।

७. ४३१४

(अयनांशादिकरणविधि)

इस गुटके में उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त शीघ्रबोध करणकुतूहल, शनिचारफल, बंध्या-
भेद, सन्तानार्थ औषधविधिके दोहे व यन्त्र बीच बीचमें दिये हुए हैं । दोहे उपयोगी हैं ।
२४ पृष्ठ तक अयनांशादिकरणविधि है । फिर १ पृष्ठ से ७५ पृष्ठ तक शीघ्रबोध है ।
इसके बाद प्रकीर्ण है ।

१४. ७०६१

आकाशपुरुषचित्र

यह सुषुम्णारचक है, जिसमें पुरुषाकारमें सुषुम्णा नाड़ीमें नक्षत्रमालाकी स्थापना
करके बताया गया है । चित्र अध्येतव्य है ।

५०. ४१०४

ग्रहणपद्धति

आदि— श्रीमद्दोवर्द्धनधरं नत्वा सौरमतानुगाम् ।

स्वल्पानल्पार्थयुतां कुर्वे ग्रहणपद्धतिम् ॥ १

अन्त— नखधूतिविक्रमवर्षे काम्यकवनवासिनन्दरामेण ।

रचितोपरागपद्धतिरियमतिहृद्या ग्रहज्ञानाम् ॥ २४

इति श्रीमिश्रनन्दरामविरचिता ग्रहणपद्धतिः समाप्ता ।

रचनाकाल—१८२० संवत् । स्थान—काम्यकवन ।

६१. ४३६२

गणितनाममाला

आदि— गणितस्य नाममालायां वक्ष्ये गुरुप्रसादतः ।

बालानां सुखबोधाय हरिदत्तो द्विजप्रणीः ॥ १

अन्त— कुण्डलज्ञानविप्रेण हरिदत्तेन धीमता ।

नाममाला कृता श्रेष्ठा देवगुर्वोः प्रसादतः ॥ ३०

श्रीश्रीपतिसुतेनैषा बालानां बुद्धिबृद्धये ।

गणितस्य नाममाला या रचिता शास्त्रसंग्रहे ॥ ३१

इति श्रीज्योतिषनाममालेयं संपूर्णम् ।

६३. ४७७१ (१)

गणितलीलावती आदि

लिपिस्थान—१६७० शाके विभवनासंवत्सरे वसन्तर्तौ वैशाखमासे शुक्लपक्षे नवम्या-
मिन्दुवासरे सप्तपिक्षेत्रमध्ये लिखितम् ।

ग्रंथके प्रारम्भमें मराठी भाषामें गजेन्द्रमोक्ष आदि स्तोत्र हैं ।

७८. ४६७२

चमत्कारचिन्तामणि

अन्त— दधीचे पुरे लाटहासे पुराणां गणाच्छ्रीहरेः स्थापितः स्थानपालः द्विजोऽचीकरात्सुन्द-
रालं द्विजन्मा नृपाणामपि नाम चिन्तामणीयः ।

लिखितं देराश्री लीलाधर पुरुषोत्तमसुत कंकनपुरमध्ये ।

६६. ४२८६

ज्योतिषरत्नमाला

आदि— प्रभवविरतिमध्यज्ञानवन्द्या नितान्तं
विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोऽपि ।
तमहमिहनिमित्तं विश्वजन्मात्ययाना—
मनुमितमभिवन्दे भग्नहैःकालमीशम् ॥ १
विलोक्यगर्गादिमुनिप्रणीतं
वराहललादिप्रपञ्चशास्त्रम् ।
दैवज्ञकण्ठाभरणार्थमेपा—
विरच्यते ज्योतिषरत्नमाला ॥ २

अन्त— सुवृत्तया श्रीपतिदृढध्यानया
कंठस्थितज्योतिषरत्नमालया ।
अलक्षणोप्यर्थपरिच्युतोप्यलं
सभामु भूम्नां गणको विराजते ॥ १३

इति श्रीश्रीपतिविरचितायां ज्योतिषरत्नमालायां प्रतिष्ठाप्रकरणं विशतितमम् ।

६७. ४४०५

ज्योतिषरत्नमाला

अन्त— ग्रामदण्डे चन्द्रा उत्तरउ श्रीदुर्गाजीराज्ये रामपुरानगरे श्रीकाशद्रावालगच्छे
भट्टारक श्रीगोइंदपत्पट्टे आचार्य श्रीकान्हाउपाध्यायशिवदासलिखितं स्वशिष्यपरंपरावाचनार्थं
तथा स्वकार्यार्थं तथा च परोपकारार्थं उच्छेकेन लिखिता ।

१०८. ४४०७

ज्योतिषसार संग्रह

आदि— लग्नं लग्नपतिर्बलान्वितवपुः केन्द्रत्रिकोणे शिवे
पृच्छाजन्मविवाहयानतिलके कुर्यान्नृपतिः ध्रुवम् ।

सच्छीलं विभवान्वितं गतरुजं मुक्तातपत्रान्वितम्
जातो निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसन्ति गर्गादयः ॥

अन्त- सत्वेन जायते सिद्धि रजसिद्धिगुणं फलम् ।
तामसे फलता नास्ति शिवस्य वन्दनं तथा ॥

१०६. ४४१०

ज्योतिषसारसंग्रह

आदि- यदा मेषे गुरुद्वयं करोति तदा दुर्भिक्षमनावृष्टिः ।

अन्त- देशा मार्गे पुरे ग्रामे मंत्र औपध देवता ।
स्वामिनो भूमिकार्येषु नवस्थाने निरीक्षयेत् ॥

११८. ६३६६

जन्मपत्रीप्रकारः

यह ग्रंथ मारवाड़में रचित है क्योंकि चरखंडे जोधपुर, जालोर, सोजत आदि स्थानों के दिये गये हैं ।

१२०. ५२१५

जन्मपत्रीपद्धति

यह प्रति राजस्थानमें ही लिखी गई है । कारण यह है कि राजस्थानके प्रायः सभी नगरोंके अक्षांश इसमें विद्यमान हैं ।

१७४. ६४२०

ताजिकसारवृत्ति

वर्षे शैलहयाङ्गभूपरिमिते मासे तथा फाल्गुने
पक्षे शुभ्रतरे तिथौ दशमिते श्रीखेरवातत्पुरे
श्रीमति विष्णुदासनृपती वैरीभवन्दे हरी
वृत्तिः[त्तिः] श्रीगुरुहर्षरत्नकृपया सामन्तनामाऽकरोत् ।

१६१. ५८३०

नरपतिजयचर्या

पूर्णाभिन्नर्क्षभौमे दिनपतिवृषभे माधवे शुक्लपक्षे
नन्दानन्दाष्टचन्द्रे गमयति तदा सोमवंशावतंसः ।
देशऽलर्काक्षमध्ये विदितखरपुटीराममिश्रो लिलेख
पाठार्थं पाठयोग्यं कलयति तदा श्रीजयपालसिंहः ।

१६६. ४८५१

नवरौजप्रकाश

आदि- हैय्यतजीजमिजस्तिरोमकयवनादिगदितशास्त्राणाम् ।
मतमवलोक्याशेषं वक्ष्ये किञ्चित्फलं रम्यम् ॥

अन्त- श्रीगौरोपतिनगरे यवनेशोत्साहमानं सुफलम् ।
शिवलालपाठकेन प्रकाशितं शिष्यजनतुष्ट्यै ॥
अर्द्धोदयेन्दे भूतायां माघशुक्लनिवासरे ।
सम्पत्तिरामतोषाय मणीरामः समालिखत् ॥

२०१. ७०८८

नष्टोद्दिष्टविधि

अन्त- विसमजसकिरणधवलिय महियल सुरनिवहममिपय
पयजुअत्तं तिहुअणसिरिवर कुलहर मणहर गुणनिलय जिणजयहि ।

२०६. ७०१०

नारचन्द्र (द्वितीयप्रकरण)

लिपिस्थान—सारसामध्ये महोपाध्यायगुणसुन्दरशिष्यकर्मचन्द्रशिष्य चिरं दीला-
पठनहेतवे ।

२०७. ४३५२

नारचंद्रयंत्रकोट्टार सटिप्पण

आदि— अर्हतं जिनं श्रीनं नत्वा नारचन्द्रेण धीमता ।

सारमुद्रियते किञ्चित् ज्योतिषक्षीरनीरधेः ॥ १

अन्त— इति नारचन्द्रटिप्पणके श्रीसागरचन्द्रसूरिकृते द्वितीयं प्रकीर्णकं समाप्तम् ।

इति श्रीनारचन्द्रस्योभयप्रकीर्णके शतकसार्द्धशत १५० यंत्रकाणि समाप्तानि ।

२२८. ४१८३

प्रश्नमार्ग

आदि— श्री गुरुभ्यो नमः । मध्याटव्यधिपं दुरधसिन्धुकन्याधवं धिया ।

ध्यायामि साध्वहं बुद्धेः शुद्धयै वृद्धयै च सिद्धये ॥ १

अन्त— कुम्भपूर्तितितिभानुचन्द्रमोवृद्धिरिप्परिपुचन्द्रमंदहृक् ।

धान्यवृद्धिशुभदत्रवृत्तिका शक्रनक्रवणिकायराशयः ॥ ३६

विदुसंल्लिपिविसर्गवीचिकाश्रुगवंद्विपदहीनदूषणं ।

हस्तवेगजमबुद्धिपूर्वकं क्षन्तुमर्हति समीक्ष्य सज्जनः ॥

श्रीसांवशिवापणनस्तु । इति प्रश्नमार्गस्समाप्तिमगमत् ।

२५५. ४४५२

पञ्चपक्षी प्रश्न

आदि— अभिवंद्य महादेवं सर्वशास्त्रविशारदम् ।

भविष्यदर्थबोधाय पप्रच्छुर्मुनयो मुदा ॥ १

अन्त— भोज्ये च मासे गमने च पक्षे राज्ये दिनानित्ययनं च स्वप्ने ।

मृत्येषु वर्षं सुखता विचार्या कालप्रमाणे मुनयो वदन्ति ॥

ग्रन्थाङ्क ५५५६ 'पञ्चपक्षी' में यह श्लोक निम्नप्रकार है—

भुक्ते तु मासं गमने तु पक्षं राज्ये क्षणानित्ययनं च स्वप्ने ।

मृतेषु वर्षं शकुनाख्यया च कालप्रमाणं मुनयो वदन्ति ॥

२६८. ४८६३

पद्धतिप्रकाश

आदि— नन्देन्दुवर्षेण मया कृतोऽर्थं ग्रन्थो रवेः पादयुगप्रभावात् ।

शाके नगाम्भोधिहरेन्दु (१५४७) तुल्ये प्राचां प्रबंधान्यभिभाष्य सम्यक् ॥१०४

२८२. ४६७८

पैतामही सारिणी

अन्त— आसीत्पार्थपुरे वरे द्विजन(व)रः श्रीगोपिराजाभिधः ।

सिद्धान्ताभिनवोद्यमैककुशलो दैवज्ञचूडामणिः ॥

तज्जः श्रीपतिरग्रणीः कृतिविश्वो मिद्धान्तपारंगमः ।

तत्सूनुर्मधुसूदनाख्यगणकः पैतामहीं निमंभे ॥

२८६. ४२७७

बालावबोध

अन्त- अर्द्धप्रहरकः त्याज्यः चतुर्थः सप्तमस्तथा
द्वितीयः पंचमो घट्टः षष्ठो रविपूर्वकः ॥

आदि- उदयाचलपर्यन्तामस्ताचलमहीमिमां ।
विख्यातो बालबोधोऽयं मुञ्जादित्यो ॥
पूर्वसागरपर्यन्ता पश्चिमोदधिसंयुता
बालमाक्रमते नित्यं समां तु दिनेश्वरः ॥

इति श्री मुंजादित्यविरचितं ज्योतिःशास्त्रे बालावबोधारूपम् ।

२६४. ७११२

बालबोध

अन्त- इति श्रीगोविन्दपदारविन्दमकरन्दवेदाङ्गपाठदक्षिणहिसारनगराधिवासश्रीसुन्दर-
शर्महृदयानन्द-श्रीहरिकर्णकृते बालबोधमकरन्दपद्धतिमणी ग्रहाणामुदयाधिकारः पंचमः ।

२६६. ६२१२

बीजवासनाभाष्य

अन्त- इति श्रीमन्मार्तण्डात्मजप्रकटस्थगोकुलग्रामनिवासी श्रीमत्प्रचण्डपाण्डित्य-
मण्डितोद्दण्डपण्डितमण्डलीमण्डनबलभद्रभट्टात्मजमाधवभट्टसुतव्रजनाथभट्टसूनुना गणकमण्डली-
मण्डनेन ज्योतिर्विनितांततोपहेतवे विरचितं बीजवासनाभाष्यं सफ(क)लमन्वेहापनोदनवसं
श्रीमत्प्रचण्डप्रतापसार्वभौमरामसिंहराज्येऽम्बावत्यां अम्बिकेश्वरपुर्यामंकाभ्रनृप १६०६ मिते
शके चैत्रशुक्लपक्षे गुरौ सप्तम्यां समाप्तिमगमत् । संवत् १७७६ शाके १६४१ प्रथम
आश्विनकृष्णा १२ सोमे लि० इन्द्रमणिना ।

२६८. ४१८६

बृहज्जातक

आदि- मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्मा पुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजनां (तां) भर्ता महः ज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभूश्चानेकधा यः श्रुतो ।
वाचं नः त्वनेककिरणास्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ १

अन्त- दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदं ।
शास्त्रमुपसंग्रहां नमोऽस्तु पूर्वप्रणोतृभ्यः ॥ १०

इति वराहमिहिरकृतौ बृहज्जातके उपसंहाराख्यः षड्विंशोऽध्यायः ।

३३६. ४२८४

मयूरचित्र

आदि- अथ मयूरचित्रं लिख्यते ।
यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि ।
कुस्तेऽञ्जलिं त्रिनेत्रः स जयति धाम्नां निधिः सूर्यः ॥

३४६. ४२८३

माससारिणी

आदि- सूर्ये स्पष्टग्रहविधि ५२ ।

अन्त- ^{४ ८ ८ ९} वेदाष्टगजभूराज्याद्गता विक्रमवत्सरा ।

शालिवाहन

मार्गशीर्षे सिते पक्षे नष्टेन्दुचन्द्रवासरे ।

मासानां सारिणीश्रेष्ठं बालानां शीघ्रबुद्धिदम् ॥ २

४२२. ५१६५

रमलनवरत्न

नगरसवसुचन्द्रे (१८६७) वत्सरे विक्रमार्के ।

शिववाटिकायां अवन्त्यां सीतारामपुत्रेण अनूपदेव्याः सुतेन परमसुखसनाढ्येन रचितमिदम् ।

३३२. ४७६६

रमलसार

(लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुतगोकुलवास्तव्यश्रीपतिविरचित ।)

आदि- यः सिंहनदपुर्यां स मे हरेत्युपनामकः

गुलावरायो धर्मात्मा यशस्वी तत्तनूद्भवः ॥ ३

गुरोर्गोविन्दरायस्य क्षात्रवंशशिरोमणेः

प्रसादात् कुरुते रमलसारः श्रीपतिना मया ॥ ४

४७०. ४३५५

वसन्तराजशाकुन

आदि- विरंचिनारायणशंकरेभ्यः शचीपतिस्कंदविनायकेभ्यः ।

लक्ष्मीभवानीपतिदेवताभ्यः सदा नवभ्योऽपि नमो ग्रहेभ्यः ॥ १

अन्त- इति श्रीवसन्तराजशाकुने सदागमार्थशोभने ।

समस्तसत्यकौतुके कृतं प्रभावकौर्तनम् ॥ विशतितमो नयः ॥ २०

इति भट्टवसन्तराजविरचितं दारिद्र्यचविद्रावणं नाम सर्वशाकुनं समाप्तम् ।

६२३. ४४२७

क्षेत्रसमासावचूरि

आदि- श्रीवीरजिनेन्द्रं सर्वैकांततमोरविम् ।

नत्वा नव्यो लघुक्षेत्रसमासोहयवचूर्ण्यते ॥

ऐदं युगीनान् संक्षिप्तरुचीनपेक्ष्य भगवद्भिः

श्रीसोमतिलकसूरीश्वरैर्विदधेयमिति महार्थः ॥ २

अन्त- एवं सर्वद्वीपसमुद्रादिसंख्या आनेयाः तथात्र मनुष्यक्षेत्रे सर्वाग्नि सर्वेऽपि शशिनो-
रवयश्च पृथक् प्रत्येकं द्वात्रिंशच्छतं तथा बहिर्मनुष्यक्षेत्रात् शशिनोरवयश्च स्थिरा अर्द्ध-
प्रमाणाश्च ज्ञेयाः ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ इति नरक्षेत्रविचार इति श्रीसोमतिलकसूरिविरचितायां
नव्यक्षेत्रसमासस्यावचूरिः श्रीगुणरत्नसूरिविरचिता ।

१२-छन्दः शास्त्र

४. ४४३२

वृत्तमुक्तावली

आदि- सकललघुमपूर्ण तत्कृतीनां कवीना-
म्प्रभवति सुखहेतुः संश्रितायेन.....।
.....शुभगणाद्या व्याललोकावसान-
ङ्कलयति भवतीयं छन्दसां मालिनीव ॥ १

अन्त- अतो मेरोरर्धाल्लगविषयणीजातिषुलादिकासुक्रमा-
देकद्वयादिप्रमितिरचिराद्वात्ति रः को युतः स्यात् ।
तदङ्कः स्यात्संख्या भवति यदि वा मिश्रितं रेकयुक्तः
समुद्दिष्टाङ्कः स्याद्विष्टुणवपुषा संख्ययैकोनयाध्वा ॥

इति श्रीमत्कविधुरन्धरमल्लारिविरचितायां वृत्तमुक्तावली (ल्यां) प्रस्तरादिनिरूपणं नामा-
ष्टमो गुच्छः ॥

लिपिकर्ता—वराहग्रामस्थ वम्मणभट्टात्मज कालिङ्ग ।

१५. ७५१३

वृत्तरत्नाकरवृत्ति

अन्त- शरवाराणपर्वतैकेन्द्रे चैत्रके विशदे ब्रधे ।
एकादश्यां तिथौ रात्रौ व्यलेखि विक्रमे पुरे ॥ १
भूतनाथप्रसादेन शर्मशेन लिपीकृतम् ।
कल्याणमस्तु श्रेयोऽस्तु विजयोऽस्तु शमस्तु च ॥ २
पुस्तिकेयं वदत्येवाविघ्नमस्तु प्रजासु च ॥

१३-संगीत

१. ६७४१

अनूप संगीतरत्नाकर

आदि- श्रीगुरुगणाधिपबटुकशारदाभ्यो नमः ।
श्रीमज्जनार्दननत्त्वा संगीतार्थफलप्रदं ।
तन्यते भावभट्टेन रागालापनमंजरी ॥ १
त्रिशतुग्रामरागास्यु नवोपरागका स्मृताः ।
रागाणां विंशति प्रोक्ता भाषा षण्णवतिः स्मृता ॥ २

अन्त- इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमाहाराजाधिराजश्री.....हात्मजजयश्रीविराज-
मानचतुःसमुद्रमुद्रावच्छिन्नमेदिनीप्रतिपालनचतुरवदान्यताग्रेस (सर) निजितचितामणिरिव

प्रतापतापितारिवर्गधर्मवितारश्री ५ माहाराजाधिराजश्रीमदनूपसिंहप्रमोदितश्रीमहीमहेंद्रमौलि-
मुकुटरत्नकिरणनीराजितचरणकमलश्रीसाहिजहाँ सभामंडणसंगीतराजजनाह्नभट्टांगजानुष्टुप-
चक्रवर्तिसंगीतराजभावभट्टविरचिते श्रीअनूपसंगीतरत्नाकरे रागाध्यायो द्वितीयः समाप्तः ॥
२ छा॥ छा॥ ॥ छा॥ छा॥

२. ४१६६

रागमाला

आदि- नत्वा शम्भुपदाम्बुजं तदनु च श्रीशैलकन्यापद-
द्वन्द्वं विघ्ननिवारकं च सततं तं वारणास्यं स्मरन् ।
रागाणां किलभैरवादिसुमनोमोदप्रदानां ब्रुवे
षणां लक्षणरूपगानसमयान् संगीतवित्तुष्टये ॥ १
अन्त- रागाणां भैरवादीनां षणां रूपनिरूपणम् ।
हरिदत्तबुधप्रीत्यै व्रजनाथेन सूचितम् ॥ २

श्री पञ्चनदान्वयसम्भूतगोकुलस्थव्रजनाथदीक्षितविरचिता हरिदत्तभट्टप्रीत्यै रागमाला
समाप्ता । लिपिकर्ता—पुरुषोत्तम आचार्य ।

१४—कामशास्त्र

३. ४४२६

रतिरहस्य

आदि- येनाकारिप्रसभमचिरादद्धं नारीस्वरत्नं
दग्धेनापि त्रिपुरजयिनो ज्योतिषा चाक्षुषेण ॥
इन्दोमित्रं सजयति मुदां धाम वामप्रचारो
देवः श्रीमान् भवरसभुजां दैवतं चित्तजन्मा ॥ १

अन्त- सुरतरुतगरवचागरुमृगमदमलयजगन्धरसधूपः ॥
वेश्मनि विहितस्तेषां परस्परं प्रीतिमातनुते ॥७१॥

इति सिद्धपटीय पण्डितश्रीकोककृतौ रतिरहस्ये योगाधिकारो दशमः परिच्छेदः ॥

४. ४७७५

रतिरहस्य

अन्त- शाके वेदनगेषुचन्द्रमितिगे संवत्सरे नन्दने
माघे मास्यथ धर्मदैवततिथौ सौरस्यवारे पुनः ॥
तापीतीरनिर्वमिना द्विजवरेणालेखि वै पुस्तकं ।
शिष्याणां पठनाय वामलधियां सौख्याय शैवेन यत् ॥

१५-काव्य नाटक चम्पू (१)

२. ४३७६

अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक

आदि- श्रीमहादेव उवाच- शतयोजनविस्तीर्णं समुद्रं मकरालयम् ।
लिलंघयिषुरानन्दसन्दोहो मारुतात्मजः ॥ १

अन्त- यत्पादपद्मयुगलं तुलसीदलाद्यै-
स्संपूज्य विष्णुपदवीमतुलां प्रयान्ति ॥
तेनैव किं पुनरसौ परिरब्धमूर्ति-
रामेण वायुतनयः कृतपुण्यपुञ्जः ॥ ६४

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डे पंचमः सर्गः ॥

३. ४५२०

अध्यात्मरामायणसेतु

अन्त- इति श्रीमत्कलराजविपदुद्धारणसमर्थत्यादिविरुदावलीविराजमानस्य हिम्मति-
वर्मणः पुत्रस्य श्रीरामवर्मणः कृतावध्यात्मरामायणसेतावुत्तरकाण्डे नवमः सर्गः ॥समाप्तः॥

१०. ४३३१

अनर्घराघव

आदि- ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः ॥
निष्प्रत्यूहमुपास्महे भगवतः कोमोदकीलक्ष्मणः ।
कोकप्रीतिचकोरपारणपटुज्योतिष्मती लोचने ॥
याम्यामर्धविबोधमुग्धमधुरश्रीरर्घनिद्रायतो ।
नाभीपल्लवपुण्डरीकमुकुलः कंवाः सपत्नीकृतः ॥१

अन्त- दृष्ट्वा तुप्यत्पुलक्यो जगति विजयते जानकीजानिरेकः ।

इति निष्क्रांताः सर्वे । इति दशग्रीवनिग्रहो नाम षष्ठाङ्कः समाप्तः ।

१२. ६४०२

अन्यापदेश शतक

लिपिकर्ता-अभयराम दादूपंथी नागपुर-

लेभेज्यं शुभदो तपोभिरमलैः श्रीपद्मनाभात्सुतं ।
यद्देशो मिथिलाखिलावनितलालंकारचूडामणिः ॥
तेनेदं मधुसूदनेन कविना विद्यावता निर्मितं,
श्लोकानां शतकं मुदे सुकृतिनामन्यापदेशाव्हयम् ॥ १५

१४. ४३२५

अमरशतक सटिप्पण

अन्त- प्रासादे सा दिशिदिशि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा ।
पर्यंके सा पथि पथि च सा तद्विद्योगानुरस्य ॥

हंहो चेतः प्रकृतिरपरा नास्ति मे कापि सा सा ।

सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः ॥ १०२

इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितममरशतकं समाप्तिमगमत् ।

१८. ४३३०

ऋतुसंहार

आदि— प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः ।

सदावगाहक्षनवारिसंचयः ॥

दिनांतरम्योऽयुपशांतमन्मथो ।

निदाधकालः समुपागतः प्रिये ॥ १

अन्त— आलव्यचन्दनरसाः स्तनशक्तहाराः ।

कंदर्पदर्पशिथिलीकृतगात्रयष्ट्याः ॥

मासे मधौ मधुरकोमलभृंगनादै-

र्नाय्यो हरन्ति हृदयं प्रसभं नराणाम् ॥ २४

इति श्रीविशेषकाव्ये श्रीकालिदासकृतौ ऋतुसंहारे वसन्तवर्णनो नाम षष्ठः सर्गः समाप्तः
तत्समाप्तो समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

३०. ४३६५

कुमारविहारशतक

आदि— तेजः पुष्पातु पाश्वो दुरितविजयि वः शाश्वतानन्दबीजं ।

संक्रान्तः सप्तरत्न्यां भुजगपतिफणाचक्रपर्यंकभाजि ॥

कर्माण्यष्टौ समन्तात्रिभुवन भवनोत्संगतानां जनानां ।

यश्चेत्तुं तुल्यकालं बहति निजतनुक्लृप्तसामान्यरूपाम् ॥ १

अन्त— आस्तां तावन्मनुष्यः प्रकृतिमलिनधीः शाश्वतालोकचक्षु-

वंक्तुं वक्त्रोश्चतुर्भिर्विधिरपि किमलं तस्य सौन्दर्यलक्ष्मीम् ।

स्त्रीणां शेषाभिलाषः परमलयमयं स्थानमाप्तोऽपि यस्मि-

न्नास्थां श्रीपाश्वर्नाथस्त्रिभुवनकुमुदारामचन्द्रश्चकार ॥ ११६

इति विहारशतकं समाप्तम् ॥छ॥छ॥

४१. ७७६४

कृष्णगणोद्देशदीपिका

अन्त— शाके दशश्चशक्रे नभसि नभोमणिदिने षष्ठ्याम् ॥

व्रजपतिसद्मनि राधाकृष्णगणोद्देशदीपिकाऽदीपि ॥

६५. ५६०२

धर्मशस्त्राभ्युदयम्

आदि— श्रीनाभिसूनोश्चिरमंघ्रियुग्म-

नखेन्दवः कौमुदमेघयन्तु ॥

यत्रानमन्नाकिनरेन्द्रचक्र-

चूडाश्मगर्भप्रतिविम्बमेणः ॥ १

अन्त- अभजदथ विचित्रैर्वीवयसूनोपचारैः
प्रभुरिहहरिचन्द्राराधितो मोक्षलक्ष्मीम् ॥
तदनु तदनुयायी प्राप पर्यन्तपूजो-
ऽपचितसुकृतराशिः स्वंपदं नाकिलोकः ॥ १८५

इति महाकविश्रीहरिश्चंद्रविरचिते श्रीधर्मशर्माम्युदये महाकाव्ये श्रीधर्मनाथनिर्वाणगमनो
नाम एकविंशतितमः सर्गः पूर्णः । कविवंशवर्णनं तत्रैव-

मुक्ताफलस्थितिरलंकृतिषुप्रसिद्ध-
स्तत्राद्रंदेव इति निर्मलमूर्तिरासीत् ॥
कायस्थ एव निरवद्यगुणग्रहस्स-
न्नैकोऽपि यः कुलमशेषमलं चकार ॥ २
लावण्याभ्युनिधिः कलाकुलगूहं सौभाग्यसद्भाग्ययोः ।
क्रीडावेकमविलासवासवलभीभूषास्पदं सम्पदाम् ॥
शौचाचारविवेकविस्मयमहीप्राणप्रिया शूलिनः—
शर्वाणीव पतिव्रता प्रणयिनी रथ्येति तस्याभवत् ॥ ३
ग्रहंत्पदाम्भोरुहचंचरीक-
स्तयोः सुतः श्रीहरिचंद्र आसीत् ॥
गुरुप्रसादादमला बभूवुः
सारस्वते स्रोतसि यस्य वाचः ॥ ४
स कर्णपीयूषरसप्रवाहः
रसध्वनैरध्वनि सार्थवाहः ॥
श्रीधर्मशर्माम्युदयाभिधानं
महाकविः काव्यमिदं व्यधत् ॥ ७

६६. ४०६२

नलोदय टीका

आदि- नत्वा हरिकमलशंखगदासिपाणि ।
लक्ष्मीनखांकविलसद्हृदयं दयाब्धिम् ॥
वागीश्वरीमथ गुरुंश्च परापरेषां ।
टीकां मनोरथकविः स्वधिया विधत्ते ॥ १
नलोदयपदावोधाद्बुधाः खेदं विमुञ्चत ।
मनोरथकृतां टीकां शुद्धां सम्प्रति पश्यत ॥ २

अन्त- नलोदयमहाकाव्यटीका विबुधचंद्रिका ।
आचन्द्रतारकं यावद्भूयादानन्दवर्द्धिनी ॥ ३
एकेन यमकालापो निस्तरीतुं सुदुःशकः ।
तस्मात्सन्तो दयावन्तः स्निह्यन्तु मयि निर्भराः ॥ ३

इति श्रीमन्मनोरथविरचितायां विबुधचन्द्रिकायां नलोदयमहाकाव्यटीकायां चतुर्थं
आश्वासः ॥ ४ ॥ समाप्तः ॥

७४. ४३८८

नृसिंहचम्पू

आदि— कनकरुचिदुकूलः कुण्डलोल्लासिगल्लः
 शमितभुवनभारः कोऽपि लीलावतारः ॥
 त्रिभुवनसुखकारी शेषधारी नृसिंहः
 परिकलितरमांगो मंगलं नस्तनोतु ॥ १

अन्त— इति श्रीमन्महाराजधिराजस्पृहणीयशौर्योदाय्याद्यनेकानवद्यपद्यगुणगणविराजमान-
 श्रीमदुमापतिराज्योद्योतितभट्टकेशवविरचिते नृसिंहचम्पूकाव्ये पञ्चमः स्तवकः ॥ ५ ॥

८६. ६२४४

महाभारत सभापर्व

लिपिकर्तुर्गोवर्धनस्य ग्रन्थान्ते वंशवर्णनं यथा—

गोविन्दात्मजजीवनाथनिपुणः शास्त्रप्रवाहागमे ।
 तेषामात्मजरुद्रभक्तिनिपुणः ख्यातो हि शैवागमे ॥
 सोऽयं लेखितग्रन्थमेव सुधियो गोवर्धनख्यातिवान् ।
 पाठे चात्मपरार्थमेव सकलं तस्माच्छिवप्रीतये ॥ २
 अस्मत्पितामःतुलपुण्यमूर्ते-
 विख्यातनाम्ना हरजीति संज्ञे ॥
 गोवर्धनोऽहं इदमाललेख
 प्रसाद तेषां गुरुमातुलस्य ॥ ३
 वर्षातीते वेदगोभूषणेति ।
 मासेष्वादे पूर्णिमाभूमिजेति ॥
 ग्रन्थेऽलेखी विप्रगोवर्धनेति ।
 तीर्थपुण्ये क्षेत्र भूतेश्वरेति ॥ ४

सं० १६६४ वर्षे आपादमासे शुक्लपक्षे पूर्णिमास्यां भौमवासरे च ठाकुरगोविन्दसुतठाकुर-
 जीवनाथात्मजगोवर्धनेन लिखितं इदं पुस्तकं मथुरामध्ये श्रीमहान्हरजीपितामातुलप्रसादेन ।

१०८. ६४७१

महाभारत कर्णपर्व

अन्त— हुताशनांगाद्रिकुभिर्मिते शके ।
 श्रीविक्रमार्कस्य च कार्तिके सिते ॥
 त्रयोदशी भौमदिने समाप्त-
 मिदं तु शास्त्रं हरिलालमिश्रात् ॥
 लिखनत इति शेषः । दाता मध्ये ।

११८. ६१६६

महाभारत मोक्षपर्व

अन्त— मनरामेणालेखि नभोत्यशरारे धृत्यब्दशके भारत्यां सेश जगति शमस्तु ।

१२५. ४३६१

मुद्राराक्षस सटीक

आदि— सिद्धारारुणगण्डमण्डलमदामोदभ्रमद्भृंगिका ।
 भंकारेण कलेन कर्णमुरजध्वानेन मंद्रेण च ॥

तत्तीर्यत्रिकरीतिमेति शिरसश्शिवन्मदान्दोलनं ।

यस्य श्रीगणनायकः स दिशतु श्रेयांसि भूयांसि वः ॥ १

अन्त- बाणान्यर्तुमहीसंख्यामितेव्दे जयनामके ।

ढुंढिना व्याकृतं जीयान्मुद्राराक्षसनाटकम् ॥

रचनाकाल—शाके १६३५ फाल्गुने । रूपजित्तनयहरदत्तस्येदं पुस्तकम् ।

१३५. ४३६०

मेघदूत सटीक

अन्त- आसीन्निर्मलवंश्यतरणिस्वाचारचित्तामणिः-

सद्विद्यासरणिर्भवाब्धितरणिः श्रीसोमनाथो द्विजः ॥

सूनुस्तस्य धनेश्वरो व्यरचयट्टीकां शिशूब्दोधिनीं ।

काव्येऽस्मिन् सरसप्रबंधविषमे श्रीमेघदूतामिधे ॥ १

१३६. ५१५६

मेघदूत सटीक

अन्त- श्रीवैकुण्ठाभिधगुरुवचोलब्धतत्त्वावबोधो ।

वाराणस्यां विबुधनिकरालंकृतायां यतीन्द्रः ॥

पूर्णानन्दश्चतुररचनां मेघदूतस्य टीकां ।

काव्यच्छन्दोनिगमनिपुणो बालबुद्ध्यै व्यतानीत् ॥ १

१५६. ७३०२

रघुवंशटीका

अन्त- चन्द्रवसुसम्बतसमं वह्निवाण परमानिये ।

आसोज सुदि एकादशी भूगुवार इह जानिये ॥

लि.क. खुशालसागरगणि मेदपाटदेशे वैराटमंडले संग्रामगढ़नगरे तथा टुकरवाडग्रामे ।

१६३. ७०८३

राधाकृष्णप्रेमसम्पुटकाव्य

अन्त- षट्शून्यत्वंवनिभिर्गुणिते तपस्ये ।

श्रीरूपवाङ्मधुरिमाभूतपानपुष्टः ॥

राधागिरीन्द्रधरयोः सरसोस्तटान्ते ।

तत्प्रेमसम्पुटमविन्दत कोऽपि काव्यम् ॥

१७१. ४४००

रामहनुमत्नाटक

आदि- श्रीरामे दशरथेन कैकेयी वाक्पात्रा वनं प्रति प्रेष्यमाणे लक्ष्मणस्य भावः ।

निर्यातिमाकर्ण्य वनाय रामं ।

सौमित्रिरुत्तंभितकोपकम्पः ॥

विश्रान्तहृष्टिः किल चापयशो ।

दध्यौ स वै लक्ष्यमिदं हृदन्तः ॥ १

अन्त- रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।

मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिर्शंकया ॥

इति रामहनुमतं नाटकम् ।

२०२. ६०२०

रामायण उत्तरकाण्ड

अन्त- वाल्मीकिना विरचितं श्रीरामायणपुस्तकम् ।
लिखितं लक्ष्मणाख्येन समाप्तं भक्तनुष्ठितम् ॥

२१६. ७०८७

शिशुपाल व(च)घ

अन्त- इति श्रीमाधवणिग्विरचिते महाकाव्ये श्रचके शिशुपालवधो नामविंशति (त)
मः सर्गः ॥ सम्पूर्ण माघकाव्यम् ॥ सं० १५५२ वर्षे चैत्रसुदिद्वादशीदिने सोमवासरे
ब्रह्मश्री (षि) रतन पठनार्थे श्री माघकाव्ये लिखितं ज्योतिरणमल शुभं भवतु ।

२२१. ६१७६

शृङ्गारमाला

अन्त- श्री गुरुदेवः ।

संसारसर्पमुखमर्दनताक्ष्यरूपाः
विज्ञानभाषटलपाटितमोहकूपाः ॥
येषां कटाक्षकलिताः फलिताः लसन्ति
गङ्गेशमिश्रगुरवः सततं जयन्ति ॥ १

कविवंशवर्णनम् ।

पानीयप्रस्थात् परतस्तु मार्गो
षट्क्रोशमध्ये हि घटोत्कचस्य ॥
ग्रामो 'घरोडे'ति प्रसिद्धनामा
पूर्वेस्थितास्तत्र पुरा मदीयाः ॥ १०
श्रीविष्णुदत्तस्वकुलाब्जभानु-
नारायणस्तत्तनुजो बभूव ॥
कौशल्यगोत्रो यजुषामधीता
माध्यन्दिनीयो द्विजगौड़जोसी ॥ ११
तस्यात्मजो स्यादगमत्तु काश्यां ।
षड्दशिनीवैरमपुत्रमन्त्री ॥
दामोदरो वैद्यकग्रन्थकर्ता
श्रीरामकृष्णस्तदपत्यमासीत् ॥ १२
तुलसीमाधवगंगारामाख्यास्तत्तनूद्भवाश्चासन् ।
माधवरामसुपुत्रो हृदयराम इति सुगीयते मनुजैः ॥ १३
साहित्ये रसग्रन्थकृद्बुधवरस्तस्याङ्गजातः कवि-
र्बाबूराय इति प्रसिद्धिमगमद्वासीपुरे चार्गले ॥
तत्पुत्रेण कृता मया रसमयी माला रसोपासकाऽऽ-
ज(ज्ञ)प्ता प्रापयितुं गुणैरपि युता कल्पासत्रह्याणि ॥ १४
सुखलालेन सुकविना रचिता शृंगारमणिमयीमाला ।
सा रसिकानां सगुणसुवर्णा विलासमातनुताम् ॥ १५
सुधांशुव्योमवस्विन्दौ वर्षे ज्येष्ठसिते रसे ।
शुभा शृंगारमालेयं रविपुष्ये सुगुम्फिता ॥ १६

इति श्रीमत्साहित्यशास्त्रानुभावरसिकगीडविप्रवरवाबूरायमिश्रसूनुखलालमिश्रेण
विरचितायां शृंगारमालायां संकीर्णवर्णनं नाम तृतीयं विरचनम् ॥ श्रीरस्तु ॥

प्रथम विरचनम्—नायिकाभेदविवरणम् ।

द्वितीय. ,, —शिखनखवर्णनम् ।

तृतीय ,, —षड्भूतुवर्णनम् (संकीर्ण-विरचनम्) ।

२२३. ५३०३

संवित्प्रकाश

अन्त- श्रीगोविन्दकवीशमीशभजनप्राप्तं कवीशाग्रणीः ।

श्रीमत्कान्हकविः सुतं प्रसुपुवे श्रीकर्मदेवी च यं ॥

वेदान्ताम्बुजभास्वतार्थवहुलं संवित्प्रकाशाभिधं ।

काव्यं तेन कृतं समाप्तिमगमद्विद्वज्जनानन्दनम् ॥

२२४. ४१२६

सप्तशती आर्यावृत्तबद्धा

आदि- पाणिग्रहे पुलकितं वपुरैशं भूतिभूषितं जयति ।

अंकुरित इव मनोभूर्यद्वस्मावशेषेऽपि ॥ १

अन्त- हरिचरणलीलाकविवरवचनवामनशीला वामन इव कविपदं निष्ठ्यः ।

अकृताचार्यः सप्तशतीमेकां गोवर्धनाचार्यः ॥ ७५०

इति गोवर्धनाचार्यकृता सप्तशतीयं समाप्तम् ।

संवत् १८०७ मिति माघ शुक्ल २ गुरुवासरे सम्पूर्णम् । लीखतं जोसी परसरामेण ।
पर्वणीकरोपनामरघुनाथस्येदम् पुस्तकम् । लेखकपाठकयो शुभमस्तु ॥

॥ शुभं भवतु कल्याणम् भव ॥

२२५. ६०६३

सुन्दरमणिसन्दर्भं

अन्त- मधुराचार्यनाम्नैष गालवाश्रमवासिना ।

सुन्दराभिधसन्दर्भो भावशोघाय निमित्तः ॥



१६-रसालङ्कार

२. ४३६६

अलंकारचन्द्रिका (कुवलयानन्दटीका)

आदि- अनुचित्य महालक्ष्मीं हरिलोचनचन्द्रिकाम् ।

कुर्वे कुवलयानन्दसदलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

अन्त- असी कुवलयानन्दश्चन्द्रालोकोत्थितोऽपि सन् ।

प्रतिष्ठां लभते नैव विनाऽलङ्कारचन्द्रिकाम् ॥

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणज्ञतत्सद्रामभट्टात्मजवैद्यनाथकृतालङ्कारचन्द्रिकाख्या कुवला-
नन्दटीका ।

४. ५६८३ काव्यकल्पलतावृत्ति (कविशिक्षा)

आदि— विमृश्य वाङ्मयं ज्योतिरमरेण यतीन्दुना ।

काव्यकल्पलताख्येयं कविशिक्षा प्रतन्यते ॥

अन्त— इति श्रीजिनदत्तसूरिशिष्यमहाकविचक्रचूडामणिश्रीमदमरसिंहविरचितायां काव्यकल्पलताकविशिष्या(क्षा)वृत्तौ अर्थसिद्धिप्रदाने तुर्ये(तुरीये) समस्यास्तवकः सप्तमः समाप्तः ।

१३. ६०७३ चन्द्रालोक सटीक त्रिपाठ (चन्द्रालोकप्रकाश)

अन्त— इति श्रीरामचन्द्रदेवात्मजयुवराजश्रीवीरभद्रदेवादिष्टमिश्रवलभद्रात्मजसकलशास्त्रा-
रविन्दप्रद्योत्तमभट्टाचार्यविरचिते चन्द्रालोकप्रकाशे शरदागमे दशमो मयूखः समाप्तः ।

२४. ६४६८ रसमञ्जरीटीका व्यङ्ग्यार्थकौमुदी

वर्षाभ्रांकसुधांशुभिश्च मिलिते संवत्सरे भाद्रके ।

पक्षे मेचकसंज्ञके कुजदिने व्यङ्ग्यार्थविद्योतिकाम् ॥

व्यालेखीद्रसमञ्जरीतिलकिकां गोविन्दशर्मा द्विजो ।

राज्ये भारतपत्तने च बलवत्सिंहस्यपुण्यात्मनः ॥

प्रति के आदि २३ पत्रों में काशिराज श्रीचन्द्रभानु के वंश का विस्तार से वर्णन है । (सं०)

३४. ४३०६ वाग्भटालंकारवृत्ति

आदि— श्रियं दिशतु वो देवः श्रीनाभेयजिनः सदा ।

मोक्षमार्गं सदा ब्रूते यदागमपदावली ॥ १

व्याख्या—श्रीनाभेयजिनो वो युष्मभ्यं श्रियं दिशतु ददातु किंविशिष्टः श्रीनाभेयजिनः देवः दीव्यति क्रीडते परमानन्दपदे इति देवः यस्य भगवतः आगमपदावली सिद्धान्तपदपरम्परा सतां सत्पुरुषाणां मोक्षमार्गं ब्रूते सिद्धेः पन्थानं वदति । अन्यापि पदावली मार्गं ब्रूते ॥ १

अन्त— अनुमानमाह—

प्रत्यक्षाल्लिङ्गतो यत्र कालत्रितयवर्तिनः ।

लिङ्गिनो भवति ज्ञानमनुमानं तदुच्यते ॥ ३८

व्याख्या—लिङ्गतोहेतोरतीतानागतवर्तमानकालत्रितयवर्तिनः सलक्षणस्य लिङ्गिनो ज्ञानं भवति तदनुमानम् ॥ ३८ ॥ इत्यादि ।

४२. ५६०३ श्रवणभूषण (विदग्धमुखमण्डनटीका)

आदि— अहं ॥ ॐ ॥ नमो वीतराग ।

हेरम्ब वव किमम्ब किं त(व)करे तातस्य चांद्रीकला

कृत्यं किं शरजन्मनोक्तमनया दन्तान्तरं स्यादिति ।

तातः कुप्यति गृह्यतामिति विहायार्तुमन्यां कला-

माकाशं जयति प्रसारितकरस्तम्बेरमग्रामणीः ॥

यः साहित्यसुधेन्दुर्नरहरिरल्लालनन्दनः ।

कुस्ते स श्रवणभूषणाख्यां विदग्धमुखमण्डनव्याख्याम् ॥

अन्त- इति श्रीनरहरिभट्टविरचितायां श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः ।
मंगलं जैन्यधर्मो उदेवसंवेगमंगलं । मंगलं गच्छसंधेन लेखके मंगलं भव ॥ श्रीश्रमणसंघाय ॥
श्रीविदग्धमुखमण्डनवृत्ति ॥



१७-सुभाषितादि

२. ७२७२

एकषष्टियुतप्रश्नशत

अन्त- अचलावेदवार्द्धीन्दुवत्सरे श्रीरिणीपुरे ।
विद्याविलासगणिना लेखीदं कृति हार्दकृत् ॥

३. ४३४७

कर्पूरप्रकर सावचूरि

आदि- कर्पूरप्रकरः शमामृतरसे वक्त्रेन्दुचंद्रातपः
शुक्लध्यानतरुप्रसूननिचयः पुण्याब्धिफेनोदयः ।
मुक्तिश्रीकरपीडनेच्छसि च यो वाक्कामधेनोः पयो
वशाख्या लक्ष्यजिनेशपेशलरदज्योतिश्चयः पातु वः ॥ १

अन्त- श्रीवज्रसेनस्य गुरोस्त्रिपष्टि-
सारप्रबंधस्फुटसद्गुणस्य ।
शिष्येण चक्रे हरिणेयमिष्टा-
सूक्तावली नेमिचरित्रकर्त्रा ॥ ७८

इति श्रीजिनवर्धनसूरिपट्टेश्रीजिनचंद्रसूरिपट्टालंकारभाग्यसौभाग्यसारश्रीजिनसागरसूरि-
वरेणकर्पूरप्रकराभिधसुभाषितकोशस्यावचूर्णिः समाप्तः कृता ॥ १४००

१०. ४४५२ (३४)

नीतिशतक

आदि- यां चिंतयामि० इति ॥ १
अन्त- भर्तृहरिभूपतिना रचितमिदं नीतिरीतिविज्ञेन ।
ज्ञाते यत्र न मुह्यति धीरोऽधीरः प्रमाणं स्यात् ॥
इति श्रीभर्तृहरिकृतं नीतिशतकं सम्पूर्णम् ॥

१४. ४४१५

प्रश्नोत्तरषष्टिशतक

आदि- द्विरसि यस्य चकासति दीपिका
इव फणामणिसप्तकदीप्तयः ॥
निखिलभीतितमःशमनाय किं
सपदि पार्श्वजिनं विनवीमितम् ॥ १
अन्त- किमपि यदिहाश्लिष्टं क्लिष्टं तथा चिरसत्कवि-
प्रकटितपथानिष्टं शिष्टं मया मतिदोषतः ॥

रिणीपुर को तारानगर कहते हैं जो कि बीकानेर डिवीजन के चूरु जिले (राजस्थान)
में है । (सं०)

तदमलधिया बोध्यं शोध्यं सुबुद्धिधनैर्मनः-

प्रणयविशदं कृत्वा धृत्वा प्रसादलवं मयि ॥ ६१

इति अलङ्कारविदग्धप्रश्नोत्तरषष्टिशतककाव्यं समाप्तम् ।

१७. ४४८२

रत्नकोश

आदि- वैशंपायन उवाच-

रत्नकोशं प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया ।

पृथिव्यां यानि रत्नानि तेषामुद्धरणं प्रभो ॥ १

कथयिष्ये महाराज शृणु त्वं पांडुनन्दन ।

सर्वशास्त्रमयं दिव्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् ॥ २

अल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं समम्यसेत् ॥ ३

अन्त- पंचविधा गतिः नरकगतिः । तिर्यक् । मनुष्य । देव । मोक्षगतिः ।

इति श्रीरत्नकोशरत्नाकरं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—कान्हीराम ।

२५. ६१२७

शतकत्रय

अन्त- पुष्पिका- इति श्रीबोधमते गोतमरिषीशिष्यग्रमरसिंहतच्छिष्यरूपचंदविरचिते मानुष्यबोधे त्यजबोधमतसम्पूर्ण । संमत १४३४ वर्षे आषाढशुक्ल १५ काशीनगरमध्ये लिषतं श्रीवाङ्गीगुजरातीवंशे हरीशर्माभट्टतत्पुत्रविष्णुभट्टशर्मा लिपीचक्रे लिषायतं महाराष्ट्रभट-
रांमकिसनजीवाचनार्थं सर्वसमुच्चयटीका सूत्रग्रंथ ५१७५ सर्वः ।

४१. ४४५६

सिद्धरप्रकरसटीक

आदि- श्रीमत्पाश्र्वजिनं नत्वा स्वोवशीयसकारकम् ।

सद्यः संस्मृतिमात्रेण प्रत्यूहव्यूहकारकम् ॥ १

श्रीचंद्रकीतिसूरीणां सद्गुरुणां प्रसादतः ।

सिद्धरप्रकरव्याख्या क्रियते हर्षकीतिना ॥ २

अन्त-सिद्धरप्रकरस्यव्याख्यायां हर्षकीतिभिः सूरिभिः विहितायांनु सामान्यप्रक्रमोज्जनि ॥ १
तपागणे नागपुरीयपूर्वं । श्रीचंद्रकीर्त्याह्वयसूरिराजा । तेषां विनयहर्षकीतिसूरिश्चवरो वृत्तिमिमा-
मकार्षीत् ॥ इति श्रीसिद्धरप्रकरस्यटीका समाप्ता ।

५७. ४३४८

सुभाषितसूक्तावली

आदि- दानं सुपात्रे विशुद्धं च शीलं ।

तपो विचित्रं शुभभावना च ॥

भवार्णवो त्यर्णवयानयात्रा ।

धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति ॥

५८. ५६८४

सुभाषितार्णव

आदि- चंद्रनाथं जिनं नत्वा जिनयातिचतुष्टयम् ।

सुभाषितार्णवं वक्ष्ये ज्ञानविज्ञानकारणम् ॥ १

६१. ४४१४ सूक्ताली

आदि- वीरं विश्वगुरुं नत्वा कृत्वा यत्नेन संग्रहम् ।
सदोपकारसूक्ताली स्वान्यपाठाय लिख्यते ॥ १

अन्त- आराधयेद्धर्ममनन्यकर्मा प्रायः प्रसादावधिरेव सर्वः ।
आराद्धुमेनं तत्कृतप्रसादं कस्यापि विस्फूर्तिं निर्याति चेतः । १८३४
लि.क. शुभसुन्दरगणि । लिपिस्थान—बृद्धग्राम ।

५५. ४३४६ सुभाषितसंग्रह

पत्र २३वें में पुष्पिका इस प्रकार दी हुई है—

इति श्रीमदाचार्यजी श्री ६ केशवजीकृतानि काव्यानि समाप्तानि । लिपिकृतं पूज्यऋषि-
श्री ५ सामजी तच्छिष्य पू०ऋषि श्री ५ महिराजी तत्सिष्य पू० ऋषिश्री ५ टोडरजी-
तत्सिष्य पू० पवित्रात्माश्री ५ भीमजी तच्छिष्येण मुनीदामाख्येणालेखि शुभं श्रेयः संवत्सुगगन-
समुद्रचंद्रवर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशीगुरुवासरे राणपुरे लिपिकृता प्रतिरियं शुभं श्रेयः ।



१८—कथा-चरित्र-आख्यानादि

१. ४३३२ अंबडचरित्र

आदि- ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
धर्मात्सम्पद्यते लक्ष्मीर्धर्माद्रूपमनिन्दितम् ।
धर्मात्सीमाग्यदीर्घायू धर्मात्सर्वसमीहितम् ॥ १
अन्त- इत्थं गोरखयोगिनो वचनतः सिद्धोम्बडः क्षत्रियः
सन्तादेशवराः सकीतुकभरा भूता न चाभाविनः ।
द्वात्रिंशन्मितपुत्रिकादिचरितं यद्गद्यपद्येन त-
च्चक्रे श्रीमुनिरत्नसूरिविजयी तद्वाच्यमानं बुधैः ॥

इति श्रीमुनिरत्नसूरिविरचिते गोरखयोगिना दत्तसन्तादेशकरअंबडकथानकं सम्पूर्णमिह ।
लिपिकर्ता—ज्ञानसुन्दर । स्थान—सवाला ।

७. ४३३५ उत्तराध्ययनकथा

आदि- प्रणम्य श्रीमहावीरं नम्राखण्डलमण्डलम् ।
आरभ्यंते कथाः कर्तुमुत्तराध्ययनस्थिताः ॥

अन्त- गङ्गामुत्तीर्य साधुसमीपे प्रव्रजितः अग्रगः सम्बन्धः सूत्र एव प्रोक्ताः । इति पंचविंश-
ाध्ययनकथाः समाप्ताः ।

कथाः कृताःपण्डितपद्मसागरैः
स्वशिष्यवाक्यप्रणयेन संस्कृताः ॥
पिपाडिपुर्या जिनपार्श्वनायक-
प्रसादतः सत्कुशलाय सन्त्विमाः ॥
रचनाकाल—१६५७ । पीपाडग्राम ।

१६. ४३८७

चित्रसेनपद्मावतीकथा

आदि— कल्याणकमलागेहं निःसन्देहं सहोदयम् ।
कल्याणविलसद्देहं वन्देऽहं वृषभप्रभुम् ॥
अन्त— नभरसरसचन्द्राब्दे श्रावणसितपंचमीतिथौ सोमे ।
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा जयतु बुद्धिविजयकृता ॥ ५६४
श्रीचित्रसेनपद्मावतीकथा सम्पूर्णा ।

१६. ४३८८

चित्रसेनपद्मावतीचरित्र

आदि— नत्वा जिनं प्रतीमाहं पुण्डरीकं गणाधिपम् ।
शीलालंकारसंयुक्तां साश्चर्यां तत्कथां ब्रुवे ॥ १
अन्त— शिष्यस्तदीयो महिमानिधानः
चरित्रपात्रैः स्वगुणैः प्रधानम् ॥
पद्मावतीश्रीलगुणस्य कीर्तने
कथाऽकरोत् पाठकराजवल्लभः ॥ १२१४
श्रीनयोविजयशिष्यै भक्तिनास्ति बुकार्थ ए ।
चरित्रं चित्रसेनस्य पुण्यार्थं चाह निर्मितम् ॥ १२१५
इति श्रीशीलविषये चित्रसेनपद्मावतीमहासतीचरित्रं सम्पूर्णम् ।

लिपिकर्ता—रामविजयगणि ।

लिपिस्थान—राधनपुरनगर

२२. ४४३५

देवकुमारकथा

आदि— ॐ नमः सिद्धम् ।
पुरा अभूत्कुसुमपुरे सूरनामा नरेश्वरः ।
विरोधिध्वंसकरप्रसरसुन्दरः ॥ १
अन्त— चिरमंत्रिपदं भुक्त्वा प्राप्यान्ते व्रतमुत्तमम् ।
प्रपाल्य स्वयंमोक्षं गन्ता च कतिभिर्भयैः ॥ ३६२
पुत्रात्सुखं न भवति जनस्य जनकस्य च ।
रात्माश्चर्यमयी चौर्यव्रतपोषकरीकथा ॥ ३६३
इति श्रीदेवकुमारकथातृतीयव्रतमाहात्म्यम् ।

लिपिकर्ता—श्रीजिनसुन्दरसुगुरोद्दिश्याणुविजयसुन्दरो विनयी ।

देवकुमारकथानकमलिखच्च परोपकाराय ॥ १

२५. ४४३४ धर्मबुद्धिमंत्रिकथा

आदि— उद्धाहे प्रथमो वरः किल कलाश(शि)ल्पादिके यो गुरु-
भूपः च प्रथमो यतिः प्रथमकस्तीर्थेश्वरश्चादिमः ।
दाताद्यःवरपात्रमाद्यमपरः सिद्धो पदं वादिमः
सच्चक्री प्रथमश्च यस्य तनयः सोऽस्त्वादिनायः श्रिये ॥ १
धर्मतः सकल मंगलावली धर्मतः सकलसौख्यसम्पदः ॥
धर्मतः स्फुरति निर्मलं यशो धर्म एव तदहो विधीयताम् ॥ २
अन्त— आरोग्यं सौभाग्यं धनाढ्यता नायकत्वमानन्दः ॥
कृतपुण्यस्य स्यादिह सदा जयो वाञ्छितावाप्तिः ॥ १
धनदो धनमिच्छूनां कामदः काममिच्छताम् ।
धर्म एवापवर्गस्य पारंपर्येण साधकः ॥ २
इति पापबुद्धिन्पधर्मबुद्धिमंत्रिकथानकं सम्पूर्णम् ।

३७. ४३३३ युवराजऋषि-चरित

आदि— विशालास्तिपुरीजैनप्रासादैरतिसुन्दरा ।
जयन्ति(न्ती)स्वः पुरीमात्मधनधान्यसमृद्धिभिः ॥ १
अन्त— एवं निश्चम्य युवराजऋषेश्चरित्रं ।
कर्पूरदीप्तिभिरचौरगुणैः पवित्रम् ॥
संसारवारिधितरीतुलिते प्रयत्नं ।
स्वाध्यायकर्मणि गुणिन् कुरु निःस्वपन्नम् ॥ १३
इति श्रीयुवराजकथासमाप्तमिति । लि. स्था. —हर्षपुर ।

३६. ४४०२ रूपसेनकथा

आदि— देवाः स्युर्वंशगा नवापि निधयश्चाष्टौ महासिद्धयः
गेहस्थाः सुरधेनुशास्त्रिमणयो यस्य प्रभावाद्गुणाम् ।
शृष्टाभीष्टफलप्रदाननिपुणः श्रीवीतरागादितो
लोभव्याभवपारदप्रतिदिनं धर्मः समाराध्यताम् ॥
अन्त— यशो धर्मो गुणाः सौख्यं लक्ष्मीरायुः सुमंगलम् ।
सफलान्येतानि दत्ते च धर्मकल्पद्रुमोह्ययम् ॥ १०१४

श्रीवीरदेशनायां धर्मकल्पद्रुमे शिखरोपमरूपसेननृपाख्यानवर्णनोनाम नवमः यत्नः
समाप्तः ॥ इति श्रीरूपसेनकथा सम्पूर्णा ।

४२. ४४५८ वरदत्तगुणमंजरीकथा

आदि— श्रीमत्पाश्वर्जिनाधीशं फलवर्द्धिपुरसंस्थितम् ।
प्रणम्य परया भक्त्या सर्वाभीष्टार्थसाधकम् ॥ १

अन्त- श्रीमत्तपगणगंगांगणदिनमणिविजयसेनसूरीणाम् ।
 शिष्याणुना कथेयं विनिर्मिता कनककुशलेन ॥ ५०
 बुधपञ्चविजयगणिभिः प्रवरैर्भीमादिविजयगणिभिश्च
 संशोधिता कथेयं भूतेषु संदुमिते वर्षे ॥ ५१
 गणिविजयसुन्दराणामभ्यर्थनया कृता कथा मयका ।
 प्रथमादर्शं लिखिता तैरेव च मेढ्रतानगरे ॥ ५३

इति कातिके सौभाग्यपंचमीमाहात्म्यविषये वरदत्तगुणमंजरीकथानकं सम्पूर्णम् ।

४५. ४३३४

शांतिनाथचरित्र

आदि- श्रेयो रत्नाकरोद्भूतामर्हलक्ष्मीमुपास्महे ।
 स्मृह्यंति न के याम्ये शेष श्रीविरताशयाः ॥ १
 अन्त- यस्योपसर्गाः स्मरणे प्रयांति
 विश्वे यदीयाश्च गुणा न मांति ॥
 यस्यांगलक्ष्मीः कनकस्य कांतिः
 संघस्य शांतिं स करोतु शांतिः । ६२६

इत्याचार्यश्रीप्रजितप्रभसूरिविरचिते श्रीशांतिनाथचरिते द्वादशभाववर्णनो नाम षष्ठः
 प्रस्तावः । इति श्रीशांतिनाथचरित्रं सम्पूर्णम् । श्रीजीवविजयगणिनी परत ।

५१. ४३३६

शालिभद्रचरित्र

आदि- श्रीदानधर्मकल्पद्रुर्जीयात्सौभाग्यभाग्यभूः ।
 पूर्वापश्चिमतोर्थेशलक्ष्मीभोगमहाफलः ॥ १
 अन्त- श्रीशालिचरिते धर्मकुमारसुधिया कृते ।
 श्रीप्रद्युम्नधिया शुद्धे सप्तमः प्रक्रमोऽभवत् ॥ ५६

श्रीशालिभद्रचरिते सर्वार्थसिद्धिप्राप्तिवर्णनो नाम सप्तमः प्रस्तावः सभाप्तः ।
 जिनातिशयपक्षाख्यवत्सरे विहिता कथा । ग्रन्थेन द्वादशशती चतुर्विंशतिसंयुता ॥



२०-राजस्थानी

१. ७७५३ (१-१७)

अंकपाटी आदि गुटका

आरंभिक दो पत्रोंमें लघु चरणवयनीतिके दूसरे अध्यायका अंतिम श्लोक तथा तृतीय अध्याय लिखित हैं । आगे १७ पत्रोंमें अंकपाटीका लेखन हुआ है, पत्रमें ऊपर अंक-संख्या और नीचे सुभाषित (नीतिपरक) दोहे, श्लोक आदि हैं । उदाहरणार्थ—

‘दानं दया दमोद्विग्नं दर्शनं देवपूजितं ।

दकारा पंचवर्तते दूर्गतं नैव गच्छति ॥ १

(पत्र १)

दूहा ॥ सरतर अक्षर सीप पीव, जो रपे अप्यांण ।

सर वैरीतर सायरां, अक्षर राज दुवांण ॥ १

(पत्र २)

अन्तके १६-१७वें पत्रमें—

दूहा ॥ काली तू कोयल भली, जस मनषरो विवेक ।

अंव विहूणी अवरसुं, बोल न बोलै एक ॥ १

(पत्र १६वां)

गांम गोरमें होत है, जोय दूर मत जाय ।

वनी वणाइ पारसी, अरथ कह्यो इण मांय ॥ १

(पत्र १७वां)

॥ लीषतं । पीडित श्री ५ श्रीबालचंदजी लीपी छै । सं० १८३५ मीगसर सुद ५ वार
मंगलवार अपसुरं जै सरूप गोठीरा छै ।

६

६५२५

अंजनाचोपाई

आदि— ॥दं०॥ श्रीगणेशायनमः ॥

दूहा ॥ श्रीगणधर गीतम प्रमुष, एकादस अभिराम ।

मन वंछित सुष संपजै, नित समरंता नाम ॥ १

प्रथम उद्यम मै माडियो, मति दीसै अति मंद ।

तिण कारण पहिला नमुं, श्रीगणधर सुपकंद ॥ २

सेवकनं सानिध करै, देड्यो अविरल बांणि ।

जिम वेगो सिद्धै चढै, कांइम रापिस कांणि ॥ ४

अन्त— तिणि गच्छ पीपल थापीयो, आठ साषा विस्तार ।

संवत रुद्रबाबीसमै, बीसमै हूई सुषकार ॥ १२

ते गच्छ दीसै दीपतो, साचौर नगर मझारि ।

वीर जिणैसर दीपती, जिहां तीरथ प्रगट उदार ॥ १३

तास पाटै अनुक्रमै हूवा, श्रीलीषमीसागरसूरि ।

विनय करी कर्मसागर, वाचक देय सनूर ॥ १४

तास सीस पुण्यसागर, वाचक पभणै एम ।

अंजनासुंदरी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५

संवत सोलसत्यासीई, श्रावण मास रसाल ।

सुदि तिथि पंचमी निरमल, रिद्धि वृद्धि मंगल माल ॥ १६

सर्वं गाथा ॥ इति श्रीअंजनासुंदरीचौपई संपूर्णः । संवत १८६८ मीगसर कृष्ण पक्षे
तिथि १ भौमवासरे द्वितीय प्रहरे लिषतं ऋषी नोलचंद पीही ग्रामे उदावत राज्ये वाचनार्थ
चीरं नद्यः श्रीरस्तुः ॥ श्रीः ॥

३० ७७४३

अध्यात्मरामायण भाषा

आदि— श्री गणेशाय नमः ॥ सुरसती नीमो ॥ श्री सीतारामजी सत छं जी ॥
श्री रामाय नमा ॥ कथेतं अध्यात्म रामायने भाषा लीपतं रामहृदय ॥ राज श्रीराजसंघजी
सभापीत ।

चौपई— जवै भुव भार भयों दुष्टनतै । तब ही देव गये जाचन प्रभुरै ॥
चिदानंद सुंती ब्रदस बानी । परजापते असतुते ही ठानी ॥ २
तीन सुप्त सन भेये भगवाना । चीदानंद यनकी सब जाना ॥
मेघ गिरा बानी जु बुचारी । सुनीक ब्रमा सते बीचारी ॥ २

अन्त— दुहा ॥ राम हीरदैको राजैदानीते प्रीते करतै वुचारै ।
सीय्याराम हीरदै बसैय्या समे नाहे बीचारै ॥ ६५
राम हीरद भाषा अरथै कीनौ मते वुनमानै ।
सुनी कह रीजै न धारी है करीये मते अपमानै ॥ ६६

ईती श्री अध्यात्म रामायण राम हीरदये भाषा अरथ सपुरन ॥ कथेते महाराजे श्रीराज-
सीधजी ॥ सुभ समुरथै ।

८५. ५२११ कछवाहोंकी वंशावली

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कछवाहोंकी वंशावली लिख्यते ॥
श्रीआदिनारायणतै कवलमै ब्रह्माजी ॥१॥ मारीच ॥२॥ कस्यप ॥३॥ सूर्य ॥४॥
ववस्वान ॥५॥ मनु ॥६॥ इष्वाक ॥७॥ विकुषि ॥८॥ पुरंजय ॥९॥

अन्त— महाराजाधिराज जन्म नांव मोहोनसिंघ नरवलका राजाकी बेटो सो राज
पायो । जदि मानसिंघजी नाव पड़्यो । मीती पोस बदि ९ सं० १८७५ का । राज कीयो
महीना ४ दिन ६॥ महाराजाधिराज श्रीसवाई जयसिंघजी संवत १८७० कै साल श्रीजमनायजी
पधारद्या जाति देवा । सब माज्यां साथ पधारी मीती असाढ सुदि ८ संवत १८८४ कै साल ।

८७. ७७२० (२२) कपडकुतूहल

आद्य अंश खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—

.....दि पिलंग पर सुंदर डोलिये वाय ॥ १३
मसी जर सु मो मन भयो, प्रीउ डोलिये बोलाय ।
माल मुहेंगीधे लाजिये, सो माहरइ आवी दाय ॥ १४
तन सपुकी साडी चणी, कंचु वण्यो सुचंग ।
रतन जडीत नीरपीः, सोनी सुंदर अंग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो, कीधो सेज तीआर ।
तिण वेलं मंदिर गई, प्रीउ माणइ तिणि वार ॥ ३१
प्रीआंग गंगदास सूत, नगर उदैपुर वास ।

कपडकुतूहल कीधा, वणी देहि दुवास ॥ ३२

इति कपडकुतूहल संपूर्णः ॥

६६. ४०२०

कविकल्पलता

आदि- ॥ दं० ॥ अथ श्रीसारकृत बावली लिख्यते ।
 ॐकार अपार पार तसू कोइ न लभ्यै ।
 सवर कर सिरताज मंत्र धुरि कवियणभ्यै ॥
 अरधचंद आकार उवरे मोडो जसु सोहै ।
 जै व्यावै चित लाय तिकै तिहुयण मन मोहै ॥
 साधक सिध जोगी जती जामु ध्यान अहनिस करै ।
 कवि सार कहै ॐकार जप कांइ सैण भुलो फिरै ॥ १

अन्त- क्षिते मंडल क्षिति तिलक सहर पाली पुर सोहै ।
 गढ मरु मंदिर महिल वाग वाडी सनमोहै ॥
 राज करै जगनाथ सुर सामंत र सवायौ ।
 सोनगरे सुसमथ सुजस वसुधा वर तायो ॥
 समत सोलैनिध्यासियै आसु सुदी दसमी दिनै ।
 श्रीसार कवित वावन कह्या सांभलिज्यौ साचै मनै ॥ ५५

इति श्रीकविकल्पलता श्रीसारकृते संपूर्ण । सुभं भूयात् ॥ श्री संवत् १८७८ रा
 मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीगुरांजी श्रीवेनरामजी । लीषतां कु. इन्द्रभाण वाचनारथम्
 अणदपुरमध्ये ।

१०५. ४४१५ (१६)

कागदरी नकल

इस गुटकेमें पत्र सं० ३६८से पत्र सं० ४०६ तक चार कागजों प्रेम(पत्रों)की नकलें दी
 हुई हैं, जो इस प्रकार हैं—

पहली नकल । आदि- कागदरी नकल ।

छंद नराच- मते हृत सांभर नगरं सुघरं । प्यारी निज हाथ दियो पतरं ।
 भूभ वांन कथानक सुंदरियं । छिब गात अनंत चित हरियं ॥ १
 सलिता सर निसर नीर वहै । नलनि सूंभ वास धरै र लहै ।
 बहु वास निवास न कुप वनै । वनिता गनि तीर सूनीर थनै ॥ २

अन्त- दिन जात वृथा तुम संग बिना । कबहु सुप होत न आप बिना ।
 कहता ज रजौ समचार सबै । सु मिथ्या तन मानहु भांम कवै ॥ १७
 न लिषे तुम पत्र सनेह धनौ । पय जावनकी तुम रीत गनौ ।
 जुग रांम वसु ससि संवत यं । सुभ मास तथी सरस चरयं ॥ १८ इति ॥

दूसरी नकल-

[संवत् १८३४]

आदि- कागदरी नकल लीषते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुयाने सुकल सुभ ओपमा
 केलास बयारी, प्रेमरसप्यारी, चंदवदनी, मृगलोचनी, लगनरी लडो, जीवरी जडी,
 हीयारी हार, सेजरी सिणगार, प्रीतमरी पीलार, चितरी ऊदार, हसतमुषी, सदा
 सुषी..... ।

अन्त- सव सरपी नारी नहीं, सव सरषी नहीं बांण ।
 सव गुण एकणमें नहीं, दापुं चतुर सुजांण ॥ ६२
 इती ओपमा लिपणरी, जथाजोग मत जांण ।
 कहत दुल्लैमल चुप सु, रुप चुप परवांण ॥ ६३ ॥ संपुर्ण ।

तीसरी नकल-

आदि- सिध श्री प्यारी दिसे, जैपुर नगर जठेह ।
 प्रीतम लिपत बणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
 चंदवदनि मृगलोचनी, चिता लंक सुचंग ।
 गजगमणि रस जोग है, अतहि जांण सुचंग ॥ २
 अन्त- बाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
 हित कर लिपजो हेतसुं, दसकत अपणा पास ॥ २० संपुरण ॥

चौथी नकल-

आदि- सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमालायक गुणनिधान बहोतर
 कलामुजांण, चवदै विध्यनिधानं, सूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चंद्रमा जेहा
 सितल, रूपा जेहा ऊजला..... ।

अन्त- मत किणहिमु लागजो, नैणाहंदो नेह ।
 धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरंगी देह ॥ १८
 सजन फलजो फूलजो, वड जुं विसतरजो ।
 नालेरां जु लूबजो, आंवां जु फलजो ॥ १९
 इति श्रीपत्री संपुर्ण ।

२५७ ४६१४ (५४)

जोगी रासा

आदि- अथ जोगी रास लीषीते ॥ ॐ नमः सीध्येभ्यो नमः ॥
 आदिपुरिष जो आदिजगोत्तमु, आदिनाथो ।
 आदिजुगोत्तमो जोग पयसो, जय जय जय जगनाथो ॥ १
 तास परंपर मुनिवर हुआ, दीगांवर सहिनाणी ।
 कृदकुदाचरज^१ गुरु मेरै, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
 अन्त- जोगीह रासो सीषहु श्रावक, दुष न कवहु लहिसी ।
 जो जिणदासह त्रिविधि हि, सिधहु समरण कीजहू ॥ ४२
 ईती जोगीरासो संपुरणमस्तु ।

२६१. ५४१८ (५४)

टंडाणा गीत

आदि- टंडाणा टंडाणा वे, जियड़े टंडाणा टंडाणा ॥
 इत संसारं दुख भंडारै, क्या गुण देपि लुभाणा छे ॥
 जिन ठग ठगिया नादइ कालै, फिर तस जोग पत्याणा छे ॥

१. कुन्दकुन्दाचार्य ।

अन्त— करि उदिम आपन बल मंडी, भोगी अमर विमाणा छे ।
समिकि तपोहण दस विधि पूरा, निरमल घरम कराणा छे ॥
सुध सरीर सहज लव लावहु, भावहु अंतर भा(णा) छे ।
जंप वूचा तम सुष पावहु वंछे पद निरवाणा छे ॥

इति टंडाणा समाप्तम् ।

३३६. ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्ण)

आदि— ॥दं०॥ श्रीसारदाय नमः ॥ अथ नागदमणि लिप्यते ॥

दूहा ॥ बलतो सारद विनवुं, गुणपति करो पसाऊ ।
पवाडा पनगां सरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
प्रभू अनेके पाडीया, देत बडाचा दन ।
के पालणै पोढीया, के पय पान करन ॥ २
कोइ न दीधो कानवा, सुण्यो न लीला बंध ।
आप बंधावण उपला, बीजा छोडण बंध ॥ ३

अन्त— कलश ॥ सुणें गुणें सम वास, नंदनंदन अहिनारी ।
समुद्र पार संसार, दोई गोपद अणहारी ॥
अनंतर आणंद सवे बपताप सुणावै ।
भगति मुगति भंडार, कशन मुगताह करावै ॥
रमीयो चरित राधारमणि.....॥

५३८. ४६०६ (२) राजसभारंजन

आदि— ॥दं०॥ अथ राजसभारंजन लिप्यते ॥

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।
राजसभारंजन कहों, मन हुलास रस लीन ॥ १
दंपतिरति नीरोग तन, विद्या सुधन सुगेह ।
जो दिन जाय आनंदमैं, जीतवको फल एह ॥ २

बीचसे कुछ उदाहरण—

साथ सहेट चल्थो चहै, मुग्धा तिय पिय छैल ।
पीसेमें कोडी न्हीं, चले बागकी सैल ॥ ६७
सहज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै साज ।
बाप न मारी मींडकी, बेटा तीरंदाज ॥ ७०

अन्त— छंद तीनसै साठ सब, व्यवहारै सुष देत ।
राज-सभा-रंजन सरस, कियो रसिकजन हेत ॥ ६७
अंक बांन मुनि ससि (१७५६) समा, विक्रम सक नभ मास ।
उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रस-प्रकास ॥ ६८

सुषद भूमि संग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।

तहि कवि मन सुप्रसन्न अति, मति रतिसों अवगाह ॥ ६९

जब लों सुप सज्जन कला, मेरु धराधर धांम ।

तब लों चिर जीवहु रसिक, पढत गुणत गुंन नाम ॥ ७०

इति श्रीराजसभा-रंजन दोहा समाप्तं ।

संवत् १७९८ वर्षे मिति पोस वदि १४ शुक्र लिपिकृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

५५०. ४८३४

राठोड नाहरपांनरो छंद

आदि— छंद राठोड नाहरपांनरी गाडण माधोदासरी कछ्ही ॥

आरज्या ॥ उप्पन्ना पुरसांणी उडा । पांणी पंछा पाषर होडा ।

अंराकीआ रछ्छीस जोडा । नाहरपांन समप्पं घोडा ॥ १

भाडंजी केवी मुगलांणी । पासा पैंग जिके पुरसाणी ।

वड पातां सुण अवरल वाणी । रेवंत रीभ दीये राजाणी ॥ २

अन्त— कलस ॥ वहस तेज बहु सफल बहुत मोला बहु भोयण ।

धीरज तेज अनंत लोय दीप बवहलोयण ॥

धड विसाल पैं करह गात उतंगह मैंगल ।

पवंग वेग विसराल वाजि वीया वेगागल ॥

बरहास वडा वड कवीयणां त्यागी द्यणं हरतै रवै ।

समपीया पांन राजांनकै कुंप करन्नह अभिनवै ॥

इति नाहरपांन घोडांरा दाताररी छंदः संपूरणं ॥

६४१४

विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि— ॥दं०॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ प्रणम्य देवदेवं च वीतरागसुरचितं ॥

लोकानां हि विनोदाय करिष्येहं कथामिमां ॥ १

नत्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूषिता ।

पद्मपत्रविसालाक्षी नित्यं पद्मासने स्थिता ॥ २

अन्त— श्री विक्रमनें वेताल कथा कही चउवीस उदार ।

सोल छियालै भाद्रव मांस । हेमाणंद कहै उल्हास ॥ ३९

इति श्रीवेतालपचीसी २४ कथा ।

दोहा— बलि विक्रम सीसम गयो, पाछो तिण ही डाल ।

मडबंधी कांधइ कीयो, तब बोलै भूपाल ॥ १

विशेष— आगेका अंश अपूर्ण है ।

६०३

६१११

विद्याविलास चोपाई

आदि— ॥दं०॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

दूहा— सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणमेवि ।

जित तित थित थानक अचल, सोभित दह दिसि देवि ॥ १

कवियण नरसां निधि करण, दूर हरण अग्न्यांन ।

चरण सरण उपम धरण, उपावण गुण ग्यांन ॥ २

अन्त- दाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगरिण सुषसाया जी ।

इम जिनहरण पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुष पाया जी ॥ १४

हिव राजानि सुणै गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलासचोपई संपूर्ण ॥ सं० १८२६ वर्षे मिति: आसाढ सुदि ७ दिने ।

६११. ७७२२ (१४) वीरमदे ईडरिया आदिके कवित्त

आदि- ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कवित्त- गढत लंक दईवत संक भंकत अहिराइण ।

धनत धीन अहि वेलत पांन पेधत पत्राइण ॥

अमरत आस माया तपास रस होइ महा जल ।

परमा वात सोवन धात चितत वेगागल ॥

अणराइ चाइ एकाणवै सालिहांतर दिठो सवे ।

त्रिहुं राइ तिलक नारियेण तना दाता तो वीरमदे ॥

अन्त- कर परि जिण गिरवर धरचौ, मथुरा मारचौ कंस ।

रेषा राषस निरदले, जयकारी जदुवंस ॥ १०

श्रीठाकुरांरी साषी छै ॥ लिपतं मिश्र आनंदराम ॥ शुभमस्तु ॥

६१५. ७७४३ (४) वेदस्तुति भाषा

आदि- ॥ श्रीरामजी ॥ अथ वेदस्तुता भाषा लीप्यते ॥ राजश्री राजैसीधजी संभाषतं ॥

छंद- श्री भागीतं दसम सकंधं, वेद सतुत्स भाषा बंध ॥

अती आनंदं भव बंध छेदं, आवागमन मिटै भ्रम पेदं ॥

चोपई- श्रीसुषदेव ब्रह्म तनुवज्ञाता । वेदव्यासके पुत्र विष्याता ॥

तीनके पदबंधन मै करु । तीनको ध्यान हीरदैमै धरु ॥

अन्त- नीतीप्रती पाठ जु जे करे, वुपजै ब्रम ज्ञान ।

तत पद नीहचै पाय है, राजै प्रम बीज्ञान ॥ ६०

इति श्रीवेदस्तुती भाषा अरथ सपुरण ॥ कथीतं म्हारज श्रीराजैसीधजी ॥

६७५. ४०१० शुक्वहोतरी

आदि- ॥ दं० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ वात सुवावहुत्तरी लिप्यते ।

दूहा- करि प्रणांम श्री सारदा, अपनी बुध परमानं ॥

सुक शप्त वार्ता उ करो, न्यायते देवी दानं ॥ १

विक्रम नगर सुहामणो, सुष संपतकी ठोर ।

हिंदू थांन ५४ हिंदू धरम, असो सहर न और ॥ २

अन्त- "हरदत्त सेठ होम करायो तिहां सारिका पिण आई । ऊपरसुं दिव्यमाला पडी । उणरे दर्शन सेती सराप छूट शुक्शारिका गंधवं होय आपणै लोक गया ।

इति श्री बहुतर वात्ता सुध सूवावहुतरी संपूर्णम् ॥ ७२ संवत् १८६६ रा मिति
श्रावण सुदी १ दिने लिपतं पं० विजैसमुद्रेण श्रीजैसलमेर दुर्गं चतुर्मास्यां स्थिता ।

६७६. ४४१६ शुक्रवहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि—दी कह्यो । पृथ्वीकै विपै बहुतरी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे
कहसी । सील रपावसी । तदि गंधमाद परवतकै विपै आविनै शुक्र सरीर छोडिकें मूलगौ
शरीर पामी पांचसै मोहर ब्राह्मणनै दान देई । निपाप थाइस....।

अन्त— ...कवि देवदत्त कहै । शुक्रका वचन भेला करिकें आपकी बुद्धिकें अनुसारै
बांधी छई ।

इति श्रीशुक्रवहोतरी कथा समाप्ता ॥ संवत् १७६० वर्षे आसोज वदि ६ पण्टी
भोम वासरे पं० वनीतविजय लिपि चक्रे ॥ शुभंभवतु ॥ श्रीसमाप्ता ॥

७२४. ४२८७ (१६) सवाई जैसिहजीकी जोधपुर चढ़ाईका वर्णन

आदि— “संवत् १७६७ का मीती सावण वदी ८ ने श्रीमाहराजा सवाई जैसंधजी
जोधपुर वुपर चढा । राजा अभैसंधरी हुकम पातसाह महमुदसाह का[सा]थे चढा । सो रोज
पदरामै १५ जोधपुर जाइ लागा । त्ररफ मडोवरकी डेरा जाइ कीया । मुकाम १.....
विशेष— आगे युद्धके खर्चे और जोधपुरकी तरफसे लिये गये उपहार आदिका वर्णन है जो
अपूर्ण है ।

७७५. ४६०३ हमीररासो (हमीरायन)

आदि— श्री गनेसाय नम । हमीराइन लीपतै ॥

कवीत— गवरीनंद आनंद चंद लीलाट वीराजैत ।

च्यार भुज कर फरस सरस भुषन अग राजत ॥

कर कमंडल जयमाल लाल वसत्र वोह सुहावै ।

मधुर स्वगंध स्वणमय रची ओर उदभाहन कीन ।

हो हय प्रसन सुधी बुधी धनी जो कथ कवीत प्रमा माण ॥ १

अन्त—कवीतः ॥ असी करीउ काहु करै नहीं, कोउ सो करी राजवी चक्र तल ।

वाईस वीक्रम राण वुयवीन पाईवयाभाः अजहु मध्यकी रोड रोले ।

दर्शान भंडारा मदगल कहु हमेल करी ।

कदल रनथंभ गढ असी करै न कोई ॥

ईती श्रीहमरायन साको श्रीगार संपुरन समापती ।

छंद जाजाकोः ॥ कुडलीयो माई मोहदे असीस काई जीवो वरस सो । याई मोह दे
असीस छीनी ई तोर जीवो । वारा ऊपर वीस भनैजा जन वीरम केह ।

लीपतं पांडे नाथुराम ब्राह्मण गोड मी आसावी श्रम धर्ममुर्त गड ब्राह्मणका रक्षपाल
राजा श्रीमलजीकूः नाथुराम ब्राह्मण गोड सदारामको भतीजो टोडै रहै है पंकीजीको अप
भीष्टुकको असीस वंचजोजी मीतो पोस वदी ६ मंगलवार संवत् १७८७ जो पुस्तग वाचं जीकु
राम राम वंचजोजी । जाद्रष्टं दत्त्वा ताद्रसं लीपते मा । जदी सुद्ध वीसुद्धं वा मम दोषे न
दीयते ॥ शु० ॥

२१-हिन्दी

१२. ५३६८

अध्यात्मरामायण

आदि-

॥ श्रीरामाय नम ॥

दोहा- जुधकांड पूरन भयी, ब्रह्मज्ञानके भाइ ।

उत्तरकांड कहत हों, विधिसीं सब बनाय ॥ १

चौपई- जयति जयति रघुकुल उजिआरे । जयति राम कौसल्या प्यारे ॥

रावन दस सिर मारचौ येन । राम कमल दल निरमल नैन ॥ २

अन्त- संवत सत्रहसै इकताला । तीज जेठकी चंद उजाला ॥

पूरन भयी मउ मैदान । यहई जानौं थान मुकाम ॥ ११०

ग्रंथ हीत भए विघन सु भारे । हनुमान गनपति सब टारे ॥

भगवान ग्रंथ यह पूरन गायी । गुरकी कृपा सबै बनि आयी ॥ १११

छंद- भंग अक्षिर कटित, अर्थ बिपरजै होइ ।

दुषनतैं भूषन करें, कोविद कहिए सोई ॥ ११२

इति श्रीब्रह्मांड पुराणे उत्तरपंडे अध्यात्म रामायणे उमा महेश्वर संवादे उत्तरकांडे नवमौ अध्याय ॥ ६ ॥ मूल ४४६३ ॥ भाषा ५२६६ ॥ इति श्री रामचरित्र भगवानदास निरंजनी कथिते संपूरण । सुभं मंगल । सुभ भवत । व्रषे जेठ मासे वदि दसै रिबि वासुरे ॥ संवत १७८३ ॥ जले रक्षत पेले रक्षित पेले रक्षे रक्षे सथ लाभ तवधानान मूरप हस्त न दातव्यं । रावे वधनात पुस्तकं ॥ १ ॥ मंगल लिपकानां पाठकांनाव मंगल मंगल सर्व देवानां भूमी भूपति मंगल ॥ १ ॥ सति निरंजन तुम सरना मंत्र सति राम ॥ राम राम ॥

४०. ५३८२

कवित्त संग्रह

आदि-

॥ श्री महागणपतये नम ॥

कवित्त- सील भरी सोहैं, आन पतिकौं न जोंहैं,

कुल कांनि अरमोहैं तन जोति सरसाती हैं ।

उदैनाथ भोंहैं कर तीन तीरछोहैं

रति भोंन लों चलों द्वार लों ना चलि जाती हैं ॥

बैन कहिवेकों पति मोनहीमें राषें प्रान,

अैसी कुलवधू काहू कासों बतराती हैं ।

रिस रचें मनमें ती मनहीमें मेंटें,

जैसे जलकी लहरि जल मांझ ही विलाती हैं ॥ १

अन्त-

दोहा- सावन सुदिकी तीजकों, करी पचीसी सार ।

संवत अठारह सतहि त्रेपन थिर सनिवार ॥ १०७८

इति छक पच्चीसी संपूर्णः ॥ संवत १८६३ शाके १७२७ मिति फाल्गुण बुदि १२ गुरु-

वार । इदं पुस्तकं समाप्तं । दसकत भट्ट शामसुंदरका । रणजीत तत्सुत बलदेव पठनार्थ ॥
यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ रामः ॥

३५५. ५३८६

रामायण, युद्धकांड

आदि— (प्रारंभिक पत्र अप्राप्त)

मनोहर कवि कलानिधि रच्यो ।

तहां जुद्धकांडहि नारदागम सर्ग वत्तीसौ सच्यो ॥ ३२

अन्त— ब्रज चक्रवर्ति कुमार गुनगन गहिर सागर गाजई ।

श्री रामचरन सरोज अलि परतापतिघ विराजई ॥

तिहि हेत रामायन मनोहर कवि कलानिधिनै रच्यो ।

तहं जुद्धकांडहि सतरू चौतीस ग्रंथ फल वर्गन सच्यो ॥ १३४

लिख्यते लेषक रामसेवग लिखायतं ठाकुरजी श्रीमेदसिंहजी तस्य पुत्र पृथ्वीसिंह आत्म-
पठनार्थ संवत् १८३७ शाके १७०२ प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे उत्तम मासे अश्वेन.....।

३६५. ४६२३ (१)

रूपमंजरी

आदि— श्रीगणेशाय नमः । अथ रूपमंजरी नंद कृत लिष्यते ।

दोहा— प्रथम हि प्रणऊ प्रेममय, परम जोति जो आहि ।

रूप उपावन रूपनिधि, नित्य कहत कवि जाहि ॥ १

अन्त—

दोहा— जदपि अगमते अगम अति, निगम कहति है जाहि ।

तदपि रंगीले पेमते, निपट निकट प्रभु आहि ॥ ११७

इति श्री नंददास कृत रसमंजरी ग्रंथ संपूर्ण समाप्तं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु । सम्बत्
१७२६ चैत्र वदि तृतीया बुधवारे मोकाम रंगामाटी सबलसिंघ कुवरस्य पठनार्थ रसमंजरी
ग्रंथ मुरलीधर मिश्रेणमलेखि ॥

३७४. ६०१६

व्रतकथाकोश

आदि— ॥ दं० ॐ नमः ॥ अथ श्री व्रतकथा कोश भाखा लिष्यते ।

चौपई— आदिनाथ वंदू जिनरा [य] । कर्म कलंक रहित सुषदाय ।

धनुष पंच से जाको काय । वृषव लख्य सोभै अधिकाय ॥ १

अन्त—

छप्पै— श्री जिनंद गुण धाम जास वच सुणि चित धरिये ।

श्रावकको आचार पालि कर्मनिसौ लरिये ॥

दान सील तप भाव च्यारि वृष मुल विचारो ।

और सकल परिहारि चहू उत्तम उरि धारो

सुरगादि थान दाइक महा क्रमते सिवपदको कराहि ।

ताते पुस्याल अनिको अवै इनि विनि मनमें किम घरहि ॥ २१

इति श्रीसूरिश्रुतसागर कृत व्रतकथाकोशके अनुसारि भाषा श्रीपत्य विधानकी

समापिता ॥ मित्ती माघसिर सुदि १३ पंचम्या तिथी वार वृहस्पति वासरे संवत् १६२३ का ।
श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

४६२. ४०२८

सभासार नाटक

आदि- प्रथम पत्र अप्राप्त

सै पथरन भीजै पानी कब लौं विचारीयै ॥
जिहां बकवाद तिहां अंत न सवाद कछु,
आपै जो न सुधरै तो कौनको सुधारिये ।
जोपै अति जोर तो वताउं एक ठोर तोहि,
जानीये जगत जोपै एक मन हारीये ॥ २६

दोहरा- सब लछन पहिलै सुनौ पुण्य सुसंगत पाय ।

मन चंचलतासूं वसै, नीच संग न सुहाय ॥ २७

अन्त- सतगुरु सोही जो वतावै साचे मारगकुं,

साथी सतसंग जामै चलत ने हान है ।
कहत अरूप कोउ कोट काम कैसे तेज-
पुंज धाम जाहि जैसी ही पहिचान है ।
ताहिमै मगन देहको विसर जान,
वेदको विचार यहै जान है सुजान है ॥
यहै पेम लछिना अनन्य भक्ति मुक्ति यह,
यत्र पदप्राप्ति विग्यान निरवान है ॥ २७

दोहा- सब विथ सब रस सोहियत, कहत यहै रघुराम ।

यह नाटिक सम सदा, भूषन भेद सुनाम ॥ २८

छप्पै- यह नाटिक जो सुनै, ताहि हिय फाटिक पुलै ।

यह नाटिक जो सुनै, बुधबल कमल प्रफुलै ॥
यह नाटिक जो सुनै, ग्यान पूरन मन आवै ।
नाटिक सुनै सुजान, मरम मनुजको पावै ॥
विग्यान जान निरवानकै, जोग ध्यान धर धन लहै ।

पावत परमपुरुष गत, मति प्रमान कवि रघु कहै ॥ ३२६

इति श्री कवि रघुराम विरचित सभासार नाटिक संपूर्णम् ।

संवत् गुणकृत वसु शशी, तपस्यपक्ष शिति जान ।

पक्षति छाया सुत दिवस, ग्रंथ चढ्यो परमान ॥ १

ऋषि किसोर सोभत हुंते, रत्नचंद्रके मित्त ।

सभासारनाटिक लिप्यो, सकल रिभावन चित्त ॥ २

निगम दिवसकी संख्यमै, सत्वरतें शपिरत्न ।

लिख्यो ग्रंथ वाचत सुनत, करीयो इनको यत्न ॥ ३

॥ श्रीरस्तु ॥ सबनर ॥ भद्रं भूयादिति ॥ श्रीः ॥

४८४. ५८६५

सिंहासन बत्तीसी

आदि— ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ स्थंघासन बत्तीसी भोज प्रबंध हिसौ उंपदेस
कवि कस्तनदाश कृति लिपते ।

छैपा— प्रथम सुमरि गए इसनं गणनायक ।

विघ्नहरन मति राय काज सिधिकरण सहायक ॥

येक दंत मय मंन अंत नहि पाव पाव सुमति गति ।

फरस हथ समरथ देव परतछ अमित गति ॥

कवि कस्तनदास वंदत चरन, और सुमति दुस्तर तरन ।

रस सिंधु मौढ विक्रम चरित सु, करित दुरित दुर्गम हरन ॥ १

अन्त— दीनो वरु विक्रमकों सोय, सारिवाहन तन दाहन होय ।

तो लगि सो नृप आयो तहा, विक्रम बीर अंबि जहा ॥ ४०

चंडी वाच तेरे हेत दहयो तन आय.....

विशेष— इसके पश्चात् पत्र रिक्त है ।

२२—जैनस्तोत्र

३. ४१४६

अन्तरिक्ष पार्श्वस्तव

आदि— श्री अन्तरीक पार्श्वनाथ छन्द लिख्यते ।

दूहा— सारदपाय प्रणमां करी, आपो अविरल वांणि ।

पुरसादाणी पास जिण, गास्युं गुण-मणि-वांणि ॥ १

अद्भुत कौतुक कलियुगै दीसै एह अदंभ ।

घरतीथी अघर रहै, सदा अंतरीक थिर थंभ ॥ २

अन्त— कीयो छंद आनंद वृंद मनमाहै आणी ।

सांभलतां सुषकंद चंद जिम सीतल वाणी ॥

श्रीविजयदेव गुरुराज आज तस गएधर राजै ।

श्रीविजयप्रभ सूरि नाम काम सम रूप विराजै ॥

गएधर दोय प्रणामी करि थुणियो पास असरण-सरण ।

भावविजय वाचक भणै जयो देव जय जय करण ॥ ४६

इति श्री अंतरीक पार्श्वनाथ छंद संपूरण ।

४. ४३४६

अजित शान्तिस्तव (सबालावबोध) त्रिपाठ

आदि— अजि अजि असघ भयं संति च संत सब गय पावं ।

जय गुरु संति गुण करे दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १

अन्त- जइ इच्छह परम पयं अहवा किंति सवित्थडं भुवरणे ।
ता तेलक्कुद्धरणे जिणवयरणे फु आयरं कुणह ॥ ४०
इति श्रीअजितशांतिस्तवः ।

८. ४३६२

एकादश गणधर स्तवन

आदि- गोयम गणहर पढम संघयण ।
तित्थंकर वीर जिण पढमसीम सोन्न समणउ ॥ इत्यादि ॥ १

अन्त- इय समयज्जत्ति सव्यसत्ति चित्त भत्ति वन्निया ।
वैशाख सुदि इग्यारिसि दिनि वीर नाहइ थापिया ॥
ए सयलगणहर ए इग्यारसि जे आगहइ भाविया ।
एतवन भणसि भावै सुणसि ते लहइ सुख सपया ॥ ५
श्रीप्रभासगणधरस्तव ।

इति श्री एकादशदिनसम्बन्धि श्री एकादशगणधर स्तवनं सम्पूर्णं ॥

२०. ४०३०

कायस्थिति स्तोत्र

आदि- श्री पन्नवणा भगवती माहि थकी उदार करी गीतार्थ पूर्वाचार्य कायस्थिति
नउ स्तवन करइ छइ ।

आदि गाथा-जहतु हदंसण रहिउ कायठिई भीसणे भवारन्ने ।
भमिउ भवभय भंजणा जिणिदत्तह विन्न विस्सामि ॥ १
जह कहतां जिम हे जिनेश्वर तुह दंसण रहिउ, ताहरइ...आदि ।

अन्त- बहु सो अनन्ती वार हिव घणइ पुण्य तणइ
उदय सांप्रत तुभ कुमइ दीवं उछइ ।
ता तस्मात्तिणि कारणि अकाय नहीं काया जिहां एहवा जे सिद्ध तेह तउ
पद मुक्तिपद तेहती संपदा हे तीर्थकर द मुनइ ॥ २४
इति श्रीकायस्थितिस्तवनबालावबोधः समाप्तः ।

२५. ४३६३

गौतम दीपाली का स्तवन

आदि- इन्द्र भूती गउतम भणइं तिसला कुलि निधान ।
ज्ञात पूतनूं पामीउ दइ मुभ मुगतिनो दान ॥ १

अन्त- देव गुरु भगवियमी सुगती वर अणुसरो ।
सकल कहि हीर गुरु गुण विचारो ॥ ७५
जिन वचन दीप दीपालिका राजती ।

इति श्री गउतम दीपालिकालि स्तवनम् ॥

२६. ४५६६

चतुर्विंशति जिनस्तोत्र

आदि- जाडयध्वंसकृते नत्वा नाभेयप्रमुखान् जिनान् ।
आत्मनः स्मृतये वक्ष्ये यमकस्तुतिवृत्तिकाम् ॥ १

अन्त— स्निग्धा अविरला चासो विभा दीप्तिश्च अनच्छविभा अलकानां केशानां अन्ता यस्याः सा अनच्छविभालकांता ॥

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनसंक्षेपतो वृत्तिः समाप्ता ।

३७. ७४४४ (१)

चौबीसी

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१. आनंदघन चौबीसी. २ संग्रहणी सूत्र. ३ जीव-विचार प्रकरण. ४ नवतत्त्व. ५ दण्डक प्रकरण. ६ सप्तस्मरण. ७ प्रतिक्रमणसूत्र. ८ पांच तिथिरी थुई. १० स्तुतिस्तवन. ११ गोतम रासो. १२ स्नात्रपूजादि. १३ चौढा-लिया. १४ थूलभद्र नवरसो. १५ बार भावना. १६ आनंदघन वहीतरी. १७ पनरै तिथिरी थुई. १८ पंचसंधि (सारस्वत प्रक्रिया) १९ सिद्धरप्रकर आदि स्तोत्रस्तवन ।

६५. ४२६८

पंच-परमेष्ठि-नमस्कारार्थ

आदि— श्री जिनाय नमः । नमो अरिहंताणं ।

माहरउ नमस्कार श्री अरिहंत भगवंत नइ हुउ । किंसा छइ ते अरिहंत जीय अरिहंते राग द्वेष रूपिया अइरि वइरी जीता अनइ अठारे दोषे रहित । इत्यादि ।

अन्त— माहरउ नमस्कार पंचांग प्रणाम त्रिकाल वंदणा सदा हुइ ।

इति श्री पंचपरमेष्ठिनमस्कारार्थः सम्पूर्णः ॥

६१. ४०२५

भक्तामर-स्तोत्र

आदि— इनही पछइ आपणे घरे पाछा आवी राजानी सेवा करिवा लागी पूर्विली रीतइ आदि ।

अन्त— अन्न इन्वत्तिकरी मानतुंग सूरि इं रची, मई इस ताहरा स्तोत्र रूपिणी पुष्प-माला जे कठ कंदलि धरइ तेह नह लक्ष्मी स्वयंवर वरइ ॥ ४४

इति भक्तामरस्तोत्र-प्राकृतवार्तिकवृत्ति समाप्तम् ॥

१००. ६२७७

भक्तामर भाषा

भाषा भक्तामर कियो, हेमराज हित हेत ।

जे नर पढ़े सुभाव सो, ते पावे सिव खेत ॥

इति श्री भक्तामर भाषा संपूर्ण ।

१०१. ७४५०

भक्तामर भाषा आदि १८ कृतियाँ

इस गुटकेमें निम्न कृतियाँ हैं—१ भक्तामर भाषा हेमराज कृत १-१६. २ चौंसठ योगिनी नाम तथा घंटाकर्ण १७-२१. ३ कल्याणमंदिर भाषा २२-३२. ४ चैत्यवंदन २-४. ५ भक्तामर स्तोत्र ५-१७. ६ कल्याणमंदिर स्तोत्र सिद्धसेन कृत १७-२६. ७ लघु शांति २६-३३. ८ अजित शांति ३३-३६. ९ स्तोत्र संग्रह आदि १३ कृतियाँ ३६-८१. १० शक्ति मंत्र ८३-८४. ११ पदस्तवन ८४-८६. १२ वसुधारा ६०-११५. १३ सोलह पद ११५-१३०. १४ स्नात्र अष्ट प्रकारी नवपद पूजा १३१-१६५. १५ वीस

विहरमान गीत १६६ वां । १६ अतीत अनागत वर्तमान चौबीसी १६७-२०० । १७ बावन वीर नाम २००-२०२. १८ पदस्तवन (१२ कृतियाँ) २०२-२३२ ।

११४. ४६४४

वीतराग स्तोत्र

आदि— यः परात्मा परं ज्योतिः परमः परमेष्ठिनाम् ।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तादमनन्ति यम् ॥ १
अन्त— तव प्रेक्ष्योऽस्मि दासोऽस्मि सेवकोऽप्यस्मि किकरः ।
उमिति प्रतिपद्यस्व नाथ नाथ परं ब्रुवैः ॥ ८
श्रीहेमचंद्रप्रभावाद्धीतरागस्तवादितः ।
कुमारपालभूपालः प्राप्नोतु फलमीप्सितम् ॥ ९
इति वी० स्तोत्रे आशीस्तवो विंशः प्रकाशः ॥ २०

१२३. ४१५६

श्रीदेवीछन्द, शनैश्चर स्तुति

आदि— सकल-सिद्धि-दातारं पाश्र्वं नत्वा स्तविमहं ।
वरदा सारदा देवी जगदानंददायिनी ॥ १
अन्त— इच्छं बहु भक्ति भर अडल छंदन सधुं ।
या देवी भगवई तुंम पसोई होऊ सया संग कल्याणं ॥ ४५
इति श्री देवीछंद संपूरण ।

शनि स्तुति—आनंदन जग जयो रविसूत सांभलवान ।
कोड कवित करो तुझ स्तव तुज गुण को हवें मान ॥ १
अन्त— ए मंत्र धरी ऊंकार उक्षर सारह । ए मंत्र जपीय नर धारह ॥
एणो मंत्रें उलट धरी विनतडी चीत आणिये ॥
रिध वृध सहजें सदा, वली वली एम सनीसर वषाणीये ॥ १६
इति शनीसर स्तुति ॥ लिपिकर्ता—सुबुद्धिविजय गणी ।

१२८. ४५११

शोभन-स्तुति

आदि— भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारि कर्मावली
रंभा सामजनाभिनन्दनमहा नष्टा पदा भासुरैः ।
भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादय प्रोज्झिता (स्थिता)
रंभा सामजनाभिनन्दन महा नष्टापदा भासुरैः ॥ १
अन्त— सरभसनातनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमांभोरुहे ।
परमवसुतरागजारोवसन्नाशितारातिभाराजिते भासिनी हारतारावलक्षा मदा ।
क्षणवचिरुचिरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोद्भूटे संस्थिते ।
संकटा भव्यलोकं त्वमंबांबिके परमंब सुतरां गजारोवसन्नाशिताराति भा
राजिते भासिनी हार तारावलक्षा मदा ॥ ६६ ॥ २४ ॥ श्री शुभं भवतु ॥

१३० ७२७८

शोभन स्तुति

आदि— आसी[द्]द्विजन्माखिलमध्यदेशप्रकाशसांकाश्यनिवेशजन्मा ।
 अलब्धदेवषिरिति प्रसिद्धि यो दानवपिस्त्वविभूषितोपि ॥ १
 शास्त्रेण्वधीतो कुशलः कलामु बन्धे च बोधे च गिरा प्रकृष्टः ।
 तस्यात्मजन्मा समभून्महात्मा देवः स्वयंभूरिव (वा) सुदेवः ॥ २
 अञ्जायतास्यश्लाघ्यस्तनूजो गुणलब्धपूजः ।
 यः शोभनत्वंशुभवर्णभाजा ननाम नाम्ना वपुषाप्यधत्त ॥ ३
 कातन्त्रचंद्रोदिततन्त्रवेदी यो बुद्धबौद्धार्हततत्त्वकतत्त्वः ।
 साहित्यविद्याणंवारदर्शी निदर्शनं काव्यकृतां बभूव ॥ ४
 कौमार एव क्षतमारवीर्यश्चेष्टां चिकीर्षन्निव रिष्टनेमेः ।
 यः सर्वसावद्यनिवृत्तिगुर्वी सत्यप्रतिज्ञो विदधे प्रतिज्ञाम् ॥ ५
 एतां यथामति विमृश्य निजाम्बु (नु) जस्य
 तस्योज्ज्वलां कृतिमलंकृतवान् स्ववृत्त्या ।
 अभ्यर्थितो विदधता त्रिदिवप्रयाणां
 तेनैव सांप्रत कविधर्मपाल नामा ॥ ६

अन्त— इति श्रीशोभनदेवाचार्यकृतचतुर्विंशतितीर्थकरस्तुतिवृत्तिः, कृतिरियं तस्यैव ।

१३२ ६८३६

स्तम्भ पार्श्वस्तुति आदि

इस गुटकेमें निम्न ५ कृतियाँ हैं—१ स्तम्भ पार्श्वस्तुति, २ आत्मोपरि सज्भाय,
 ३ शांतिजिनस्तवन, दानशीलादि चौड़ालियो, ५ जम्बूकुमार सज्भाय ।

१३४ ६१६०

स्तवनम्

पुष्पिका के अन्तिम २ श्लोक
 पूर्वं पाटलिपुत्रमध्यनगरे भेरी मया ताडिता
 पश्चान्मालवसिधुटक्कविषये कांचीपुरे वैदुषे ॥
 प्राप्तोहं कलहाटकं बहुभट्टैर्विद्योत्कटैः संकटं
 वादार्थी विचराम्यहं नरपते सा(शा)दूर्लवत्क्रीडितम् (क्रीडितुम्) ॥ १
 काञ्च्यं नगनाटकोऽहं मलमलिनतनुल्लाम्बुसे पाण्डुपिंडु ।
 पुंड्रोङ्गे शाकभक्षी दशपुरनगरे मिष्टभोजी परिव्राट् ॥
 वाराणस्यामभूवं शशिकरधवलः पांडुरांगस्तपस्वी ।
 राजन् यस्यास्ति शक्तिः स वदतु पुरतो जैननिग्रंथवादी ॥ २
 इति समंतभद्रस्त्रामिविरचितं स्तुवनं ॥ छ॥

१३६ ६८२५

स्तोत्रसंग्रह

इस गुटकेमें निम्न ५ स्तोत्र हैं—१ नवकार रो स्तवन, २ श्री महावीरजी रो स्तोत्र,
 ३ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र, ४ श्रीशांतिनाथ स्तोत्र, ५ संगीत बंध नमस्कार, ये पांच स्तोत्र हैं ।

२३-जैनागम

- २७ ४३५८ आवश्यकसूत्र सवालावबोध
 आदि- नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं ।
 नमो उवज्जायाणं नमो लोय सव्वसाहूणम् ॥ १
 अन्त- समाईय पोसह, संठियस्म जीवस्स जाइजो कालो ।
 सो सफलो बोधवो सेसो संसार फल हेउ ॥ १
 इति श्री आउशक संपूर्णम्
- ४२ ४४१८ उत्तराध्ययनसूत्र (सवालावबोध)
 आदि- संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्षुणो ।
 विणयं पउ करिस्सामि आणुपुब्बं सुणोहमे ॥ १
 अन्त- श्रीवर्द्धमानस्वामी परिनिवृतः निर्वाणं प्राप्तः कि० ।
 उत्तराध्ययनभवसिद्धिका भव्यजीवाः तेषां समन्तात् ॥८२ छ॥
 इति षट्त्रिंशत् श्रीउत्तराध्ययनवालावबोधः समाप्तः ॥
- ५० ४३५७ उत्तराध्ययनावचूरि
 आदि- श्रीवर्द्धमानमानम्य बृहद्बृ त्यनुसारतः ।
 श्रीउत्तराध्यायनानामवचूरि लिखाम्यहम् ॥ १
 अन्त- योग उपधानादिरुचितव्यापारस्तदानतिक्रमेण यथायोगं गुरु० तच्चित्तप्रसन्नता
 स्याद्धेतोरधीयेत न तु प्रमादं कुर्यादिति भावः ।
 इति श्रीउत्तराध्ययनावचूरिः ॥
- ८१ १०६ कल्पसूत्र (सस्तवक)
 आदि- ॐ नमो अरिहन्ताणं नमो सिद्धाणमित्यादि ।
 अन्त- श्रीमत्तपागणाधीशश्रीदेवविमलप्रभोः ।
 श्रीसोमविमलाह्णेन टवार्थो लिखितः स्फुटः ॥
 टवार्थः कल्पसूत्रस्य मूर्खशिष्यस्य हेतवे ।
 बृहद्बृ त्यनुसारेण संशोध्यः सर्वधीधनैः ॥
- १२१ ७४४५ प्रतिक्रमणसूत्र आदि
 १. प्रतिक्रमणसूत्र । २. जयतिहूयणस्तोत्र । ३. श्रावककरणीस्वाध्याय-जिनहर्षकृत ।
 ४. शत्रुञ्जयरास-समयसुन्दरकृत । ५. गोतमरास । ६. मुनिमालिका-वादित्रसिंहकृत ।
 ७. गोतमस्वामिस्तवनादि । ८. कालज्ञानभाषाचौपई—लक्ष्मीवल्लभगणिकृत ।
- १२२ ७४४६ प्रतिक्रमणसूत्र आदि
 १. प्रतिक्रमणसूत्राणि । २. स्तुति-स्तवन । ३. शत्रुञ्जयरास । ४. गोतमरासो ।

५. स्तवनादि ८ । ६. जीवविचार, प्राचीन राजस्थानी भाषार्थसहित । ७. नवतत्त्वप्रकरण ।
८. विचारषट्त्रिंशिका । ९. बावीस परिसह छंद । १०. बारहभावनास्वाध्याय ।

१२७ ७३४५ प्रश्नव्याकरणाङ्गटीका

अन्त- निवृत्तिककुलनभस्थलचन्द्रोणाख्यसूरमुख्येन ।
पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेत्यम् ।

१५६ ७२२३ समवायाङ्गवृत्ति

वृत्तिरचनाकालः- एकादशशतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसभानाम् ।
अणहिलपाटकनगणे(रे) रचिता समवायटीकेयम् ॥



२४-जैनप्रकरण

७. ७०१६ आगमसारोद्धार भाषा

यह और संख्या ७३३१ वाली प्रति मिलती है, किन्तु इसमें निम्न दोहा अन्तमें विशेष है—

करचो इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभ चित्त ।
समभावन निज मित्त कौं, कीनों ग्रन्थ पवित्र ॥ १२

१६. ४३०२ ऋषभपंचाशिका

आदि- ॐ नमो वीतरागाय नमः ॥

भक्तिभरनमिरसुरवरातिरीडं मणियंति कंतिकयसोहो ।

उसभाइ जिणवरिदाणं पायपंकेरुहे नमिमो ॥ १

निज्जिय परीसहचमं संभयुव सग्रवग्रिउपसरम् ।

संपत्तकेवलिसिरि सिरिवीरजिणेसर वंदे ॥ २

अन्त- इयम्भाणग्रपलीवियकम्मिधण बालबुद्धिणा विमय ।

भत्ती इषू उभयभयसमुद्दवो हिच्छवो हि फलम् ॥ ५०

इति ऋषभपंचाशिका समाप्ता ॥

१७. ४५६६ धम्मोपदेशश्लोकाः

आदि- हण्ट्वा शत्रुञ्जयं तीर्थं नत्वा रैवतकाचलम् ।

स्नात्वा गजपदे कुण्डे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १

अन्त- इति श्रीपुराणे कथिताः श्लोकाः ।

८४. ७२००

प्रबोधचिन्तामणि

अन्त- यमरसभुवनमिताब्दे स्तम्भनकाधीशभूपिते नगरे ।
श्रीजयशेखरसूरिः प्रबोधचिन्तामणिमकार्षीत् ॥

८६. ७३४७

प्रवचनसारोद्धार सटीक

ग्रन्थान्ते- श्रीमानवृन्दपदतप्रभुरभूत् भूमान् सुरत्राणभूः,
सत्याब्धो भुवि राजसिंह इति यो रामावतारः परः ।
श्रीमानक्षयराराजराजतिलकः प्रोद्यत्प्रतापानल-
स्तत्पुत्रोद्भूतभाग्यभूमिरधुना वालोऽपि पाति क्षितिम् ।
तस्य श्री.....सत्पुत्रद्वयीसंयुतो,
राज्यस्तम्भनिभः समस्तभुवनप्रख्यातकीर्तिव्रजः ॥ २
यात्रां श्रीविमलाचलस्य महता संघेन साडम्बरं,
द्वेधाभूततपागणस्य सुचिरादद्रेरिवाश्चर्यकृत् ।
सन्धानं च मिथो विधाय भूतवान् यो बोधिलक्ष्म्याङ्गिनः,
स्वात्मानं सुकृतं श्रिया च यशसा द्यावापृथिव्यन्तरम् ॥ ३
तेन श्रीतपगच्छनायकगुरुश्रीहीरसूरीशितुः,
संघे श्रीमदुपासकेन नगरे श्रीरोहिणीनामनि ।
वर्षे विक्रमतो रसावसुरसक्षमासम्मिते वत्सरे (१६८१)
चित्कोशे स्वकृते चिरं विजयतामेषा गृहीता प्रतिः ॥ ४

१११. ४०८५

मङ्गलकलशचोपाई

आदि- श्रीगुरुभ्यो नमः ।

दुहा- प्रह उठी नीत प्रणामीयइ, श्रीरिसहेसरदेव ।
नांम थकी नवनिध मीलइ, सिवपद आपइ सेव ॥ १
मंगलकलसइं दांसुं, पामि परधल रिद्ध ।
राजलीला सुख भोगवी, देव तरणी गति लीध ॥ ७
अन्त- तस सेवक नित्य हर्षगणि रे, सदा मन आगुंद ।
तत शिष्य लक्ष्मीहर्ष कहै रे, सबै नरनावृंद ॥ ५ ॥ दा०
सहैर काकंदीनयर भली रे, रह्या तिहां चोमास ।
श्रावक सदा सुखिया बसै रे, पुन्यै करी जस वास ॥ ६ ॥ दा०
सांभलवो करवो भावसू रे मनमें आंणी विनोद ।
धरम करै ते सुख लहै रे, उछै एह प्रमोद ॥ ६ ॥ दा०
इति श्रीमंगलकलशचउपी संपूर्ण ॥

१२१ ४२६६ विंशतिस्थानकविचारामृतसंग्रह

ग्रन्थान्ते- विंशतिस्थानकाचारविचारामृतसागरः ।
गच्छेशश्रीजयचन्द्रसूरिशिष्येण निर्मितः ॥ २२

वीरग्रामाख्यपुरे युग्मव्योमेन्दुपञ्चभिः ।
 प्रमिते वत्सरे हर्षेज्जिनहर्षेण साधुना ॥ २३
 ग्रन्थस्यास्य पवित्रस्य वाचनश्रवणादिभिः ।
 लभन्ते प्राणिनः प्रौढां श्रीजिनेश्वरसम्पदम् ॥ २४
 ग्रन्थोऽष्टाविंशतिशतानुमितः सर्वसंख्यया ।
 जीवेदयं बुधश्रेणिवाच्यमानो निरन्तरम् ॥ २५
 इति श्रीविंशतिस्थानकविचारामृतःसंग्रहः सम्पूर्णाः ॥

१२२ ७४७७

विचारामृतसंग्रह

अन्त- सूरिः श्रीकुलमण्डनोऽमृतमिव श्रीआगमाम्भोनिधि
 इचक्रे चारुविचारसङ्ग्रहमिमं रामावधिशक्रावदके (१४४३) ॥

१२७ ४०२६

शीलोपदेशमालावालावबोध

अन्त- इति श्रीशीलोपदेशमालावालावबोध श्रीखरतरगच्छमेरुमुन्दरोपाध्यायविर-
 चित धनश्रीकथा समाप्ता । हिव ग्रंथकार ग्रन्थनी समाप्ती भणी आपणउं
 नामगभित मंगलगाथा कहइं
 ईय जईसिंहमुणीसरविनेयजयकित्तिणा कयं
 एयं सीलोवएसमालं आराहिय लहइ बाहि सुहां ॥ ११५.

व्याख्या—इणइं पूर्वोक्त प्रकारि करी जयसिंह सूरि तेहनउ विनीत शिष्य
 शिष्य जयकीर्तिमुनि तीणइं ए शीलोपदेशमाला प्रकरणरूप मूलसूत्र
 कीधऊं.....। इति श्रीशीलोपदेशवालावबोध प्रकरण समाप्तम् ॥ ग्रन्था-
 ग्रन्थ ६२५० ॥ सैलानागावधचन्द्रो, वृद्धमासं त्रयोदशी । कृष्णपक्षे रविपुत्रो
 अरुणोदयजिनपूजनम् ॥ १

१४२. ४३५६

संग्रहणीवालावबोध

आदि- श्रीपार्श्वनाथं फलवद्विकाख्यं गुरुंश्च श्रीमज्जिनदत्तसूरीन् ।
 गीर्देवतां भाष्यसुधासमुद्रं क्षमाश्रयं श्रीजिनभद्रनाम्ना ॥ १

अन्त- इति श्रीवाचनाचार्यश्री श्रीश्रीशिवनिधानगणिविरचिते संग्रहणीवालावबोधे
 सामान्याधिकारः समाप्तः । इति श्रीलघुसंग्रहणी वालावबोधः समाप्तः ॥

१४५. ४००४

संग्रहणीसूत्र (संघेणनो रासछंद)

आदि- दशमइं ग्रहं सातमीइं चौदश तर आटमइं । अधिके एकेकं तिहां थी
 तिमइं । २३॥

अन्त- (ढाल एह) अर्थ- निरुपम अमृत उपम सुण्यो श्रवणो सुख करी,
 विचार करंता चित्त धरंता कर्मकोडिना दुःख हरें ।
 तां रहु रास प्रकास उत्तम मेरू हूं शशि दिणयरू,
 शासना देवी पसाउलि श्रीसंघ चतुर्विध जय करूं ॥ ५५०

इति श्रीसंग्रहणीसूत्रे परिपूर्णता नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ श्लोक संख्या ग्रन्थाग्रं ॥ ६४१

१४६. ४०३१

संग्रहणीसूत्र सस्तबक

ग्रन्त- मलिहारि हेमसूरीणं सीस लेसेण सूरिणा रइयं ।

संघयणिरयणमेयं नंदउ वीरजिणतिच्छं ॥ ३०

इति श्री संग्रहणीसूत्रं संपूर्णमिति ।

१६० ६२०३

सम्मेदसिखरमाहात्म्य

ग्रन्थान्ते पुष्पिका- इति श्रीभगवत्लोहाचार्यानुक्रमेण श्रीभट्टारकजिनेन्द्रभूषणोपदेशा-

च्छ्रीमद्दीक्षितदेवदत्तक्र(कृ)ते श्रीसंमेदसिखरिमाहात्म्ये समाप्ति सूचको नाम

एकविंसतिमोऽध्यायः ॥ २१

१६२. ७२१७

समाधिशतकटीका

ग्रन्त- तुरङ्गदृष्टितत्त्वभूमिसंयुते (१७२७) सुवत्सरे,

तपस्यशुक्लपञ्चमीदिने च तक्षके पुरे ।

समुद्धृतं सुपुस्तकं समाधिसाधिताशयम्,

सुवादिराजधीधनेन धारितं स्वधीगृहे ॥

१७१. ५६११

हरिवंशपुराण

ग्रन्त- इत्यरिष्टनेमिपुराणसंग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृती गुरुपादकमलवर्णनो
नाम षट्षष्टितमः सर्गः ।

विशेष- श्रीवर्द्धमानपुरे श्रीपाश्वालय नन्नराजवसती निर्मितम् ।

* श्री *

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ
अखैराज २४२
अग्निवेश मुनि १३६, १५४
अग्रदास २११, २१३
अचलकीर्ति १६५
अजितप्रभ १५२
अद्वयारण्य ७१
अनुभूति स्वरूपाचार्य ७७, ७८, ७९
अनूपसिंह १६५
अनंतदेव ४१, ४३, ४५, १५७
अनन्त पण्डित १२६, १४६
अनन्त पण्डित (त्र्यम्बकात्मज) १४३
अनन्त भट्ट २५
अनन्तराम ६६
अन्नं भट्ट ७०, ७१
अप्पय (?) (वेंकटेशशिष्य) ११७
अप्पय दीक्षित १००, १४१, १४३
अभयदेव २३६, २५५, २५६, २५७,
२५६, २६५
अभयसोम १८६, १६४, २४१
अभिनव नारायणोन्द्र सरस्वती १५
अमृत कवि १७४
अमृतचन्द ७०
अमरचन्द्र १४१
अमरप्रभ २४२
अमरसिंह ८२, ८३, ८४
अमर भरूक १२६, १२७
अष्टावक्र ५८
अहोबल शास्त्री १२
आ
आढमल्ल १६०

आणन्द जेटूमल १७५
आत्माराम २०७
आनन्द कवि २०६
आनन्दगिरि १६, ६१
आनन्दघन १६१, २०८, २३६
आनन्दचन्द १६१
आनन्दतीर्थ ४
आन्हिदत्त १०२
ई
ईसरदास २०४
उ
उज्ज्वलदत्त ७३
उत्तम २६६
उत्पल भट्ट ६६, १०३, ११२, ११५, १६८
उदय २११
उदयनाचार्य ७०
उदयप्रभ ८५
उदयरत्न १६४
उदयरत्न १७८, १६४, २४०
उदयरज १६७
उदयवन्त १७०
उदैराज १८२
उपेन्द्र ११४
उमास्वामी २६३
ऋ
ऋषभसागर १६४
ऋषि शर्माचार्य (महर्षि) १२१
क
कृपाराम १०४, १७४
कृपाराम मिश्र १०२
कृष्ण कवि २१७, २२७

कृष्ण जीवन २०८
 कृष्णदत्त १५६
 कृष्णदास ५६, २०८, २११, २१८,
 २३३ २३६
 कृष्णदास पयोहारी १३
 कृष्णानन्द ६६
 कृष्ण मिश्र ७६
 कृष्णयाजी ६४
 कणाद महर्षि ७१
 कनककीर्ति १७८
 कनककुशल १५१, २४२, २४३
 „ „ (विजयसेन सूरशिष्य) १५३
 कनकनिधान १६०
 कनकसुन्दर २०४
 कनकसोम १६५, २६६
 कबीर १६७
 कमलबन्धु १८१
 कमलसंघम २४६
 कमलाकर ३६, ११५, १२०
 „ (रामकृष्णसुत) २८
 „ भट्ट ४२, ४५
 करणीदान २०३
 कर्काचार्य २१, २७
 कर्णसिंह ३२
 कर्मचन्द १७३
 कलश कवि १७१
 कल्याण १५६, १८६
 कल्याणकर १००
 कल्याण मिश्र २२२
 कल्याणराम ६०
 „ वर्मा ११८
 कविकान्त सरस्वती ४४
 (आदित्याचार्य सुत)
 कवियण १८१, १६१, १६३
 कविराज भिक्षु ६६
 कवि शेखर १२५
 कवीन्द्राचार्य २२०

कात्यायन २८
 कालिदास ७, ६०, १२२, १२३, १२६,
 १२७, १२८, १३०, १३४, १३५,
 १३६, १४०, १५२
 काशीनाथ ६८, १११, ११४, १५४
 „ भट्ट (जयराम सुत) ३२
 काशीराम १६०, २०१
 किशनसिंह २१८
 किशोरी अली २१४
 कीर्तिप्रभ २४१
 कीर्तिविलास २३०
 कुक्कोक पण्डित २५
 कुवेरानन्द वर्णी ५०
 कुमुदचन्द्र २३७
 कुलपति मिश्र २३१
 कुलमण्डन २६८
 कुशलधीर १६३
 कुशललाम १७७, १८८, २३८
 कुशला २१६
 केदार भट्ट १२२
 केयदेव १५५
 केशरविमल २०२
 केशराज १७६
 केशव ८७, ६३, १११, ११४, २०८
 „ (आचार्य) १८६
 „ (कवि शेखर) १३०
 „ दास १६५, २२१
 „ देवज्ञ ६२, १०७
 केशव भट्ट १३१
 „ मिश्र ७०
 केसरसिंह १६७
 केसरी कवि (बालकृष्ण भट्टसुत) २७४
 कैवल्याश्रम १३
 कोक १२५
 कोविद मिश्र २३५
 कौण्डि भट्ट ७६
 कंकाली भाटण १७४

ख

खडियो जगो १६१, १६२

खुशाल २३३

खुशालचंद १८७, २३५

खेतल १७३

खेतसी २२६

खेमचंद २०८

खेमो १६३

ग

गजकुशल १७०, २००

गजसागर २६२

गजसार २३६

गरापति दैवज्ञ २४, २८, १०५

(रावल हरिशङ्कर सूनु)

गरापति मिश्र २२७

गणेश ८८

,, गणक (ढुंढिराजात्मज) ६४, ६५

,, दीक्षित ६०

,, दैवज्ञ ६३, ६४, ६५, १०२, ११४

गंगं ऋषि ८८, ६८, १०१, १८३

गाङ्गला १८८

गिरिधरराय २३०

गिरिधारी मिश्र १११

गुणकीर्ति १६७

गुणभद्र २०७, २६७

गुणरत्न १२१

गुणविजय २३८, २५१

गुणविनय १२६

गुणसागर १६७, १७६, १७७, १८०

गुणसार २४३

गुणाकर १२०, २४२

गुरुप्रसाद २२०

गुरुसेवक (श्रीकाल) ३२

गोपदास ५८

गोपाल ३, ७८, ६२, २११, २१३

गोपालदास १५४, १८३, १८८, २१६

गोपाल (न्याय पंचानन भट्टाचार्य) ४२

गोपाल भट्ट ६४, १४२

गोपीनारायण (सूर्यसेन महीमहेन्द्र) ४२

गोपेश्वर ६८

गोरखजी १७१

गोरक्षनाथ ३८

गोवर्द्धन ७१, १२६, १३०, १३१, १४०

गोवर्द्धन कण्डोलक (द्विजराज सुत) १०१

गोविन्द (विष्णु दैवज्ञ सुत) ६६

गोविन्द कवीश्वर १४०

गोविन्द गण २४०

गोविन्द ठक्कुर १४१

गोविन्ददास १६२

गोविन्द दैवज्ञ ११६, ११७

गोविन्द गाटारणी २१०

गोविन्द पण्डित ४२, ४३

गोविन्दराम २०३

गोविन्दाचार्य ५६

गौतम मुनि ८६

गौरीकान्त भट्टाचार्य ७०

गौरीकान्त सार्वभौम १३

गङ्गा १६७, २०८

गङ्गादास १२२

गङ्गाधर (रामचन्द्र पाठक सुत) २६

,, १००

गङ्गाधर भट्ट २७३

गङ्गागम १०६

,, कवि (जडचू पनामक) १४१

,, भट्ट ४१

गङ्गेश्वर ७०

गङ्गेश मिश्र २२७

च

चक्रधर १०६

चक्रपाणि ६७, १५८

चक्रवर्ती ६

चक्रदास २१६

चतुर्भुजदास कायस्थ १८७

चतुर्भुज मिश्र २, १२७
 चतुरविजयगणि १०७
 चरणदास २१८, २३६
 चानण खिडियो १८८
 चाणक्य १४५
 चामुण्ड कायस्थ १५५
 चिन्तामणि २०६, २१०
 ,, पण्डित ११०
 चिरञ्जीव भट्टाचार्य ६६
 चूडामणि चक्रवर्ती १०४
 चूडामणि भट्टाचार्य ७१
 चेतनदास १७४
 चैतन्यदास १२७, १२६, १६६
 चैनराम २२१
 चैना १८६
 चोथमल १७६
 चोथो श्रावक १६६
 चीर कवि १३०
 चन्द ? १८४
 चन्द कवि १८४, २३३
 चन्द्रकीर्ति ७८, ८१, १८५
 चन्द्रचूड २५
 चन्द्रसिंह ६०
 चन्द्रशेखर ११२

छ

छत्रसिंह श्रीवास्तव २२७
 छीतरदास १७४

ज

जगदेवज्ञ १०८
 जगदानन्द महामहोपाध्याय ३१
 जगदीश २०८, २१०
 जगदीश भट्टाचार्य ७१
 जगन्नाथ भट्ट (तैलङ्ग पण्डितराज) २
 जगन्नाथ (पण्डितराज) ५, १३, १३१, १४१
 जगन्नाथ मिश्र १२२

जगन्नाथ सम्राट् १११
 जगमाल मालावत १७०
 जटमल १७१
 जङ्गभरत ६१
 जनगोपाल २१६
 जनार्दन २२८
 जयकृष्ण ७५
 जयकीर्ति २६८
 जयगणि ६२
 जयदेव १२६, १३१, १४१
 जयपारदीक्षित १५६
 जयराम ६४
 जयरामन्यायपञ्चानन ७१
 जयराम भट्ट १७
 जयराम भट्टाचार्य २२
 जयरङ्ग १६७
 जयवल्लभसूरि २३६
 जयशेखर २६५
 जयानन्द २४४
 जसराम १८२, २१६
 जसवन्तसिंह १७६, २१६
 जानकवि २१७
 जिनकीर्तिसूरि २३६
 जिनचन्द्र ८१
 जिनदत्तसूरि ७२, २६८
 जिनदास १७६
 जिनप्रभ २६४
 जिनभद्र २६८
 जिनमाणिक्य २०२
 जिनरङ्ग २०३
 जिनवल्लभ १४४, १६५, २४२, २६६
 जिनसागर २४०, २४१
 जिनसागरसूरि १४२
 जिनसुन्दर १७६, २६४
 जिनसूरि १७०
 जिनसेन २३६, २७१
 जिनहर्ष १६४, १६६, १७४, १८२,

१६४, १६५, १६६, २०२, २०४

२०७, २६८

जिनहर्षसूरि (सुमतिहंस) १६४

जिनहंस २४७

जिनोदय २०३

जीवक ५५

जीवगोस्वामी ५६, ६०, ६१, ६३

जीवनाथ ११६

जीवागुर्जर (याज्ञिक नरहरिसुत) ६६

जैतकवि १६८

जोरावरसिंह २२१

ठ

ठण्डीराम २१६

ठाकुरसी १८२

ड

डेडराज २२६

(जनराज)

ढ

ढुण्डियज्वा १३४

ढुण्डिराज ६३, १०६

त

तत्त्वहंस १६६

तरुणीवीरेन्द्र ३२

(नरोत्तमारण्यमुनीन्द्रशिष्य)

तिलकसूरि १८६

तिलकाचार्य २६३

तुलछीदास २०६

तुलसीदास १४, २२२, २२३, २२४,
२२५, २२६, २२७, २२८, २३३, २३४

तेजसिंह १४८, २१६

तेजसिंहगणि १४२

तेणकवि १८५

द

दत्तलाल १७८, २१६

दलपतिराम २

दलपतिराय २०७

दक्षनकवि २११

दादू १६८

दादूजी १७८, १०६

दामोदर १०८

दासपण्डित १६०

दिनकर ८७, ८६

दिनकर भट्ट (रामकृष्णात्मज) ४५

दिवाकर १००, १०१, १०४, ११२

दिवाकर (नृसिंहगणकसुत) ६२

दिवाकर भट्ट ४५

दीपचन्द्र १५५

दीपोऽऋषि १७०

दीपो १७८, २०२

दुर्गदेव ८५

दुर्गाशङ्कर ११६

दुर्गाशङ्कर पाठक ८८

दुर्गाशङ्कर शुक्ल २८

दुर्योधन ६८

दुर्वासा ऋषि ६

देद कवि १६६

देवकीनन्दन (जीवानन्द सुत) २३

देवगुप्त १६३

देवचन्द्र २६०

देवदत्त १६८, २६६, २७१

देवप्रभ १३१

देवभद्र २६६, २७०

देवयाज्ञिक २१, २२

देवयाज्ञिक (प्रजापतिसुत) २३

देवसागर (रविचन्द्रशिष्य) ८२

देवसूरि ७२

देवसेन पण्डित ७१

देवीदान १६८

देवीदास २१४, २२२

देवेन्द्र २६५

देवेन्द्रसूरि १४४, २६१, २६८

देवेन्द्राश्रम ३३

घ

धनपाल (पण्डितबान्धव) २४३
 धनराजगणि (भुवनराजगणिशिष्य) १०५
 धनसार १४४, १४५
 धनेश्वर १३४, १३६, २७१
 धनञ्जय ८४
 धनञ्जयसूरि ११
 धर्मकुमार १५२
 धर्मघोष २४३
 धर्मदास १४३, २६०
 धर्मदेव १६४
 धर्ममन्दिर १६४, १६०
 धर्ममन्दिरगणि १८२
 धर्ममेरुगणि १३६
 धर्मराजाध्वरीन्द्र ६६
 धर्मवर्द्धन २०२
 धर्मसमुद्र १६३
 धर्मसागर २५२
 धर्मसी २३७
 धर्मसुधी १४३
 धर्मेश्वरमालवीय ८६
 धुरन्धरमल्लारि १२२

न

नृपति भूपति ११८
 नृसिंह ३५
 नृसिंहदैवज्ञ १२०
 नृसिंहाश्रम १३०
 न्यायवागीश भट्टाचार्य १४१
 नकुल १६८
 नथमल २२७
 नयनसुख २१२
 नयनसुख (केशवमिश्र सुत) २२८
 नयविजय १६०
 नयविलास २६८
 नयसुन्दर १६७, २०२
 नर्यदो चारण १६३

नरपति ८७, ६६
 नरसिंह १३
 नरसिंह (रतनराजगणिशिष्य) १०६
 नरसिंह सरस्वती ६७
 नरहरदास २०३
 नरहरिदास वारहृठ १६४
 नरहरि भट्ट १४३
 नरेन्द्रपुरी ७६
 नरोत्तमदास २३३
 नागदेव उपाध्याय ३६
 नागभट्ट ३८
 नागराज (टाकवंशीय) १३१
 नागरीदास २१४, २१६
 नागार्जुन १५५
 नागार्जुनसिद्ध ३१
 नागेश ७६, ८१
 नागेश भट्ट ७५
 नागेश भट्ट (श्रीकालोपनामकशिवभट्टसुत)
 १४२
 नागोजी भट्ट १२, ३२, ७५
 नाथिया १८१
 नानू ऋषि २४४
 नाभादास २१७
 नामदेव १८१
 नारचन्द्र ६७, १०३
 नारायण १०, २१, ८६, ६०, १०८
 „ (रामेश्वर भट्टसुत) २५
 नारायणदास सिद्ध (ब्रह्मदाससुत) ६८, ६६
 नारायणदैवज्ञ (अनन्तपुत्र) १०७
 नारायणदैवज्ञ कौशिक ११२
 नारायण पण्डित (नृसिंहदैवज्ञसुत) ८८
 नारायण भट्ट ३, २७, १३६
 „ „ (रामेश्वरसुत) २३
 नारायणमुनि (शठकोपमुनि) २६
 नाहरखान राजसिंहोत्त २०४
 नित्यनाथ १५८
 नीलकण्ठ ८, ४२, ४५, ६४, ६५, ६८,

१०४, ११२, ११३, ११६, ११७,
१३२, १३३, १४०
नीलकण्ठ (शंकरभट्टात्मज) २४, ३६
,, (गोविन्दसूरिसूनु ३७)
नीलकण्ठ शुक्ल ७६
नेमिचन्द्र २६१, २६३
नेमिप्रभ १४६
नन्द २०२
नन्दमिश्र ६८
नन्दन (अमरसिंहसूनु) ६०
नन्ददास १४, ६०, १८१, २०६, २१०,
२१२, २१४, २१७, २१९, २२०,
२२१, २२६
नन्दराम ८७, २२०
नन्दराम मिश्र ८८, ९८, ११६
नन्दिकेश्वर ८८

प

पतञ्जलि ६५, ७३
पतञ्जलिऋषि ७५
पृथ्वीधर मिश्र (शाण्डिल्यगोत्रज, जगन्नाथ-
सुत, हरपुरवासी) ३७
पृथ्वीधराचार्य ७
पृथुयश ११५, १६८
पृथ्वीराज १६८, १६३
पदम कवि १६८
पद्मचन्द्र मुनि १७५
पद्मनाभ ११२
पद्मनाभ (नर्मदात्मज) १०२
पद्मप्रभदेव ८
पद्मप्रभसूरि १०४
पद्मसागरगणि १८६
पद्मसुन्दर ७६
पद्माकर २०६, २१३
परमानन्द ५४
परमानन्ददेव ६६
परमानन्ददास २११

परमानन्द विष्णुपुरी (दण्डिपुत्र) ८३
परमानन्दशर्मा ६८
परमल्ल १६६
परमसुखोपाध्य १००, ११०
परमहंस विष्णुपुरी ६२
पर्वतधर्मार्थी (कुन्दकुन्दाचार्य शिष्य) ६८
पराशरऋषि ११२
पराशरमुनि ४४
प्रकाशानन्द ७२
प्रजापतिदास १००
प्रताप २०१
प्रतापरुद्रदेव ३१
प्रतापशाहदेव ३३
प्रतापसिंह सवाई १६४, २२८, २२९,
२३०, २३४, २३६
प्रतापसिंह (महाराज) २११, २१५
प्रतापसिंह २१२, २१३, २१४, २१६,
२२०, २२१, २२६
प्रद्योत्तम भट्टाचार्य १४१
प्रधानपुद्गलकर २२१
प्रबोधानन्दसरस्वती ११, ५६
प्रभाचन्द्र २३६, २७१
प्रभुचन्द्र १७६
पशुपतिराठोय ७३
पञ्चानन भट्टाचार्य ७२
पाणिनि १७, ७३, ७५
पारस्कर २६
पार्श्वचन्द्र २५०, २६५
पाशचन्द्र १७७, २५८
पासचन्द्र २४३
प्रियदास २१८
प्रियादास २१७
पीताम्बर १५४
पुञ्जराज २४०
पुञ्जराजनरेन्द्र ७८
पुण्यकीर्ति १८४
पुण्यानन्द मुनीन्द्र ३१

पुण्यसागर १६२
पुन्हकवि १८८
पुलिन्द भट्ट (बाणभट्टतनय) १२७
पुरुषोत्तम ४०, ४१, ५५, ६८
पुरुषोत्तमदेव ७६
पुष्पदत्त ७, १२
पूर्णानन्दगिरि ३६
पूर्णानन्दयतीन्द्र १३४
पूर्णानन्द श्रीगौड़ ६०
प्रेमजी गणि २५८
प्रेमविजय २४३
प्रेमविमल २४१

व

वृहस्पति ८३
वखतो १८५
वनवारीदास २०२
वनारस १६५
वनारसी गर्ग २१६
वनारसीदास २०१, २०६, २१०, २१२,
२२६, २३२, २३६, २४३, २४५,
२७३
वप्प भट्टि २३८
वलदेव २
वलभद्र ७२, १०६, १२०, २३०
वलभद्रशुक्ल २२
वल्लालदेव ४२
वल्लालसेन ८५, १५३
ब्रह्मगुलाल २०१, २३६
ब्रह्मचैतन्यमुनि ६०
ब्रह्मजिणदास १६३, १८५, २०४
ब्रह्मदेव २६३
ब्रह्मरायमल २१६
ब्रह्महंस २४४
ब्रह्मानन्द ६७
ब्रह्मज्ञानतत्त्वसार ५६
बाण १२७

वावादैवज्ञ (रामपुत्र, शिवानुज) १००
वालकृष्ण १००, २२२
वालकृष्णानन्दसरस्वती ६४
वालचन्द्र १८६
वालपुरी २३२
विहारी २१७
वीका १८८
बुद्धिविजय १५०
बुद्धिराज ३३
वैजापण्डित ६०
वोपदेव १५७, १६०
वोपदेवमधुसूदन १४०

भ

भक्तिलाभ १७२, २४५
भक्तिविजय १५०
भगवतीदास २१५
भगवान् (अर्जुननागाशिष्य) २०६
भगवानदास निरंजनी २०७
भगवतीदास १७६
भट्ट गदाधर (ज्ञानानन्दापरनामधेय, विमर्श-
शिष्य शिवशङ्करसुत) ३८
भट्टाचार्य ३६, ४०
भट्टाचार्यशिरोमणि ७३
भट्टाचार्यसिद्धांतपञ्चानन ७१
भट्टोजी ८१
भट्टोजीदीक्षित २६, ४१, ४६, ७५, ८०
भट्ट १८६
भरत ११७, ११८
भर्तृहरि १४४, १४५
भवदेव ७०
भवदेव महोपाध्याय ६५
भद्रराजदशार्ण १७६
भद्रसेन १७२
भवानी २१६, २२२
भान २०६
भानुकीर्ति १६१

भानुजी दीक्षित ८३
 भानुदत्त १४१
 भानुदत्त मिश्र १४२
 भानुमेरु १६७
 भारवि १२७
 भारामल २७०
 भाव कवियण १६३
 भावचन्द्र १५२
 भावदेव १५१, १५३, १५६
 भावप्रभ १६५
 भावभट्ट (जनार्दनसूनु) १२४
 भावमुनि ६०
 भावविजय २३७
 भास्कराचार्य ८६, ८७, ८८, १०२,
 ११२, ११६
 भास्कर शर्मा १२२
 भीमविजय २६४
 भीमसेन ७५
 भीषम २१६
 भुवनकीर्ति १६२, २४१
 भूधर ५६, २१५, २३६
 भूपति मिश्र ७६
 भेवानन्द ७६
 भैरवदत्त (हरिरामशमपुत्र) ११२
 भोज १५८

म

मकरन्द २०६
 मगनीराम १८२
 मञ्चनाचार्य २५
 मण्डनसूत्रधार १११
 मणिकण्ठ भट्टाचार्य ७३
 मतिकुशल १७३
 मतिचन्द्र १६७, २६१, २७०
 मतिराम २२१
 मतिवर्धन २६२
 मतिसागर २०५
 मतिसागर उपाध्याय ११२
 मतिसार १६७, १६८, २७०

मथुरानाथ (मालवीय शुक्ल) ६१
 मदनगोपाल १५५
 मदनपाल १५६
 मदन भट्टोपाध्याय ७१
 मदनस्वामी ६३
 मधुरशर्मा ६
 मधुराचार्य १४०
 मधुसूदन १२६
 मधुसूदन दैवज्ञ (श्रीपतिशिष्य) १०१
 मधुसूदन सरस्वती ७, १२, ६८
 मनोराम १७३
 मनसाराम (रामकृष्णसुत) १०७
 मनीराम ११५, २२०
 मनोरथ कवि १३०
 मनोहर २२५
 मनोहरदास २२६, २३१, २३६
 मनोहरदास सोनी २१२
 मयासुर ११६
 मयूर कवि १४०
 मलयकीर्ति १७३
 मलयगिरि २५३, २५६, २५७, २६१
 मल्लिनाथ ६३, १२७, १२८, १३६,
 १४०
 मल्लकदास १८३
 मलयेन्द्रसूरि १०६
 महमद १८६
 महात्मा आम्त्रिपूर्ण ६
 महादेव ६२, ८८, १००, ११०
 महादेव (हीरामणिमुत) ६०
 महादेव (कान्हड़जी वाडवमुत) १०७
 महादेव दैवज्ञ ६३
 महादेव राजगुरु २२, ११८
 महादेव सरस्वती मुनि ६०
 महानन्द २३८
 महानन्द पाठक २७
 महामुद्गल भट्ट १३५
 महाक्षपणक (काश्मीराम्नायी) ८२
 महिमानिधान १५०

महिमोदय १६६
 महीदास ७७
 महीधर ३४, ३५, ६४, ६५, १०३
 महेशकवि २०३
 महेश्वर ७६, १३८, १५८
 महेश्वर कवि ७३
 महेश्वर भट्ट ६
 महेश्वर शर्मा ८३
 महेन्द्र सूरि १०६
 माध १३६
 माणिक्यसुन्दर १४६, १५०, २६०
 माधव १५, २२, ४२, ४३, ७७,
 १०३, १५६
 माधवदास २१६
 माधवदैवज्ञ (गोविन्दसुत नीलकण्ठपौत्र)
 १२३
 माधवपण्डित १५४
 माधव भट्ट ७८
 माधो (भगवन्त हरिदासशिष्य) २२८
 माधोदास १८१, १६२, २२५
 माधोदास गाडण १६२
 मानकवि १६५, २३१
 मान कवेसर १६६
 मानतुङ्ग २४१, २४२
 मानतुङ्ग (हेमराज) २४१
 मानदेव २४२
 मानसागर १६८, २०२
 मालकवि १८७
 मालजी (त्यगलाभट्टसुत) २७
 मालदेव १८४
 मालमुनि १८३
 मिट्टन शुक्ल ११६
 मुकुन्ददास २१७
 मुञ्जादित्य ६५, १०८
 मुनिचन्द्र २४३
 मुनिरत्नसूरि १४६
 मुरारि १२६

मुरलीदास २१६, २३३
 मुरलीधर भट्ट २१३, २२२
 मूला (मयारामसुत) २३७
 मूला वाचक २४३
 मेघराज वाचक २५६, २५७
 मेघराज (लब्धिविजयशिष्य) १८२
 मेस्तुङ्ग २६५
 मेरुसुन्दर १२२, २४२, २६८
 मोतीलाल २०६
 मोतीराम २१६
 मोरेस्वर १५६
 मोहन २१५
 मोहनदास २१६
 मोहनदास मिश्र १४०
 मोहनविजय १७२, १७३, १८२, १८८,
 १८९, १९०, २४५

य

यदुनन्दन १०७
 यशवन्तसिंह (महाराज) २०७
 यशोदानन्द गुसाई २२२
 यशोधर मिश्र ६७
 यशोवर्धन १७२
 यशःसोम २३६
 यज्ञेश्वर ११३
 यामुनाचार्य १, २
 याज्ञवल्क्य ऋषि १६, ६५
 याज्ञिक दीक्षित ४५
 योगचन्द्र १६०
 योगेश्वर ६१
 योद्धराज २३

र

रघुदेव ७३
 रघुदेव तर्कालङ्कार ७१
 रघुदेव भट्टाचार्य ७०

रघुनाथ ८, १७, ७०, २२०
 रघुराम (शिवरामसुत) ५६
 रघुराम कवि २३१, २३२
 रघुवीर १०८
 रघुवीर दीक्षित २२
 रत्नकीर्ति १५१
 रत्नशेखर १६५, २०४, २०५, २२०,
 २५७, २६०, २६२
 रत्नाकर पुण्डरीक ४०, ४१
 रत्नेश्वर सूरि २८
 रतनविमल १८४
 रतनू हमीर २०४
 रविदास १३४
 रसग्रानन्द २०६, २१३
 रसानन्द २२६
 रसनायक २१४
 रसरशि २०७, २१३, २१६, २२०, २२१,
 रसिक १६१ २३५
 रसिकराय २१७
 रसिकोत्तंस ६१
 राघवचैतन्य ७
 राज १६३
 राजर्षि भट्ट ६०
 राजर्षि १०६
 राजमार्तण्ड १५८
 राजवल्लभ पाठक १५०
 राजसिंह १६३, १८५, १६५
 राजसी २०१
 राजशील पाठकवर १४६
 राजानक क्षेमराज १३
 राजुल १६१
 राधाकृष्ण २२२
 राधागोविन्द मिश्र (किशोरीरमणशिष्य
 नवनन्दसुत) १३६
 राधादामोदरदास १२२
 राम ११०, १५८
 रामकृष्ण ११, ६०, ६१, ११०

रामकृष्ण कवि ५, ६
 रामकृष्ण दैवज्ञ (नीलकण्ठवंशीय
 आपदेव सुत) ३७
 रामकृष्ण भट्ट (नारायणसुत) ४१
 रामकृष्णविद्वान् ६०
 रामकवि १७२, २३५
 रामचरण १८१, २२५
 रामचरणदास १६२
 रामचन्द्र ७४, ११८, १२७, १६६, १८६,
 २२५, २२६
 रामचन्द्रदास २३०
 रामचन्द्र नैमिषवासी २२
 रामचन्द्र भट्ट (विठ्ठलसुत बालकृष्णपौत्र)
 ४०
 रामचन्द्राचार्य (गोपालगुरुशिष्य) ४०
 रामचन्द्राचार्य सोमयाजी ११७
 रामचन्द्राश्रम ७४, ८१
 रामतीर्थ ३५
 रामदान मुंता २२६
 रामदैवज्ञ ८६, १०६, १०७, १०८,
 ११०, १११
 रामदैवज्ञ (मधुसूदनात्मज) १०६
 रामनाथ १६२
 रामप्रसाद (सीतापतिशरण) २२५
 रामरत्न २१६
 रामरुद्र ११०
 रामलाल २२७
 रामशरण २०४
 रामानुजाचार्य ६२, ६६
 रामानुजदास ६६
 रामानन्द १६२
 रामानन्द भिक्षु (रामेन्द्रवनशिष्य) १
 रामाश्रम १३०
 रामेश्वरदास २१०
 रामेश्वर भट्ट (नारायणभट्टसुत) ४१
 रायचन्द्र ऋषि १८५

रावण १२, १५४, १५६
 रुधनदास १६४
 रुचिपति महोपाध्याय १२२
 रुद्रधर २८
 रुद्रधर (लक्ष्मीधरात्मज) ४५
 रुद्रधरत्रिपाठी ११०, १११
 रुद्रमणि ६६
 रूपगोस्वामी ६२, १२७, १४०
 रूपचन्द्र १४५, १७६, २१६, २४०
 रूपचन्द्र २६७
 रूपनारायण ४२
 रूपसनातन ५६, ६३
 रंदास १६३
 रंगनाथ ८६, ११४, ११६
 रंगदास १३

ल

लच्छीराम २०८
 लब्धिचन्द्र ६२
 लब्धिविजय १८०, २३७
 लब्धिविज्ञान १६३
 लल्ल आचार्य ११२
 लक्ष्मणदान वारंठ २३४
 लक्ष्मणाचार्य ६६
 लक्ष्मीधर १४१
 लक्ष्मीनिवास (नृसिंहाश्रमशिष्य) ३५, ३६
 लक्ष्मीनिवास १३५
 लक्ष्मीपति (कृष्णानन्दसुत) ८६
 लक्ष्मीपति ८६
 लक्ष्मीवल्लभ १६४, २५३
 लक्ष्मीवल्लभ गणि १६८
 लक्ष्मीहर्ष २६७
 लाभवर्धन १८३, १६३
 लालचन्द्र १८०, १८७, १६२, १६३,
 १६४, २३५
 लालचन्द्र २३१
 लालदास २०७, २१८

लालभट्ट (अनारगिरिशिष्य) ३६
 लालमणि (जगद्रामात्मज) ६६, १०७
 लावण्यकीर्ति १६२
 लावण्यविजय २३८
 लावण्यसमय २०२, २३८
 लीलाशुक २, १२७
 लेशसूरि २७०
 लोलिम्बराज १४०, १५४, १५८

व

वृद्धवशिष्ठ २३
 वृद्धविजय २६०
 वृन्द १६७, १८२, २०६, २१३, २१६,
 २२६, २२७
 वृन्द (वरदराज) २२८
 वृन्दावनदास २३०, २३२
 वृन्दावनहित २१०
 वच्छराज २७६
 वनमाली ६७
 वरदराज ७५, ७६, ७६
 वरदार्य ६०
 वरदाचार्य (वेङ्कटनाथाचार्यशिष्य) ५८
 वररुचि ७३
 वर्द्धमान सूरि ७४
 व्रजजीवन २३६
 व्रजनाथदीक्षित १२४
 व्रजलाल गोस्वामी ६६
 व्रजवासीदास २२६
 वल्लभ ४६, ५८
 वल्लभ (आनन्द देवायनि) १३६
 वल्लभगणि ८२
 वल्लभाचार्य ५३, ५४, ६०, ६१, ६२
 ६८, ६९, २१५
 वराहमिहिर १०२, १०३, १०५, १११,
 ११२
 वसन्त १८०
 वसन्तराजभट्ट ११३

वसिष्ठ ऋषि ११३.
 वसुदेव दीक्षित २३
 वाग्भट्ट १४२, १५४
 वाचस्पति ६५, १५६, १५७
 वानर २४४
 वाल्मीकिमुनि ६७, १२६, १३४, १३७
 १३८, १३९
 वासुदेव भट्ट ७८
 विक्रम १३०
 विघ्नराज १८५
 विजयचन्द्र १६७
 विजयदेवसूरि १६८
 विजयरामाचार्य ८
 विजयहर्ष १६३
 विट्ठल ८, ८६
 विट्ठलदीक्षित २२, ५४, ६१
 विट्ठलेशदीक्षित ११
 विद्यातीर्थ ११
 विद्यानन्द ७०
 विद्यानन्दनाथ (श्रीनिवासभट्ट गोस्वामी) ३८
 विद्याभूषण ५४, ६८, १२२
 विद्यारण्य ३७
 विद्यारण्य योगी १३१
 विद्यारुचि १७२
 विद्याराम १४२
 विद्याविलास ६१
 विद्वन्नारायण ६३
 विनयविजय १६६
 विनयसुन्दर २४२
 विनीतविमल १६४
 विनोदीलाल २४१
 विमलसूरि १४४
 विलास २१२
 विष्णुदास २१६, २३०
 विष्णुदेवज्ञ १०२
 विष्णुपुरी ६३
 विष्णुशर्मा १५३, २३५

विश्राम १५८
 विश्वनाथ ११, २२, ७०, ८८, ९३,
 १०४, ११३, ११८, ११९
 विश्वनाथ चक्रवर्ती ३
 विश्वनाथ दैवज्ञ ८७, १२०
 विश्वनाथ पञ्चानन, भट्टाचार्य ७२
 विश्वनाथ (श्रीपतिद्विवेदिसुत) २२
 विश्वभूषण २११
 विश्वामित्र ऋषि ८
 विश्वेश्वर ५०, ५८, ६१, ६४, १४१
 विश्वेश्वर (लक्ष्मीधरात्मज) १४१
 विश्वेश्वर कौशिक ४२
 विश्वेश्वर सरस्वती ६२
 विश्वेश्वराश्रम ७०
 विशाखदत्त १३४
 विज्ञानेश्वर ४०
 विज्ञानेश्वर (श्रीपद्मनाभभट्टोपाध्यायात्मज)
 ४३
 वीरचन्द्र २००
 वीरचन्द्र २३८
 वीरविजय २४३
 वीरसागर गरि १०६
 वेङ्कटाचार्ययाजी १३६
 वेङ्कटनाथ वेदान्ताचार्य १०, १४
 वेङ्कटेश १०६
 वेणीराम १७६
 वेदाचार्य १४
 वेदव्यास ५, ११, ४८, ४९, ५६, ५७,
 १३१, १३२, १३३
 वैजलभूषण ७४, ७५
 वैद्यनाथ १४१, १५७
 वैद्यनाथ शाम्भव ६५
 वैद्यनाथ (सोमनाथवंशज) २२७
 वंगसेन १५५
 वंशीश्रीली २१४, २२६
 वंशीधर ६४
 श
 श्याम २०१

इयामल ११५
 इयामाचार्य २५६
 श्रीकृष्ण (नरसिंहसूरिसूनु) ७४
 श्रीकृष्ण कवि २२२
 श्रीकृष्ण भट्ट २०६, २११, २१५, २२०
 श्रीकण्ठ १२२
 श्रीचन्द्र २६६
 श्रीचन्द्रसूरि २६६
 श्रीधर ११
 श्रीधरस्वामी १०, ५१, ५२, ५३, ५४,
 ६२, ६३, ६४, ७३
 श्रीनिवासदास ६, ११, ६४, ६५
 श्रीनिवास भट्ट ६६
 श्रीनिवासाचार्य ४४
 श्रीपति ६०, ६१, ६२, ११०
 श्रीपतिपण्डित ६४
 श्रीपति भट्ट ८६, १०४, २३६
 श्रीरामवर्मा (हिम्मतवमपुत्र) १२६
 श्रीरामानुज ३६
 श्रीरामोपाध्याय ३६
 श्रीवल्लभ ८, ६८
 श्रीवल्लभगणि ८१
 श्रीविठ्ठल ६६
 श्रीसार १६४, १६५, १६७, १६६,
 १६०, १६३
 श्रीहर्ष ७०, १३०
 श्रुतसागर २२६
 शठारि ? ६६
 शतानन्द १०४, १०७
 शशधर ७१
 शशिनाथ माथुर २११
 शत्रुघ्नोपाध्याय १८, २०
 शाण्डिल्य ऋषि ६७
 शालिग्राम १८६
 शालिनाथ १५७
 शालिवाहन २७३

शाङ्गधर १५६, १६०, १६१
 शान्तिविमल १६५
 शान्तिहर्ष १६४, १७०, १८७
 शितिकण्ठशर्मा ७१
 शिरोमणिदास २१२
 शिवकवि २०८
 शिवचन्द २५०
 शिवदासराय २३२
 शिवनिधान १६३, २५३, २६६
 शिवपण्डित १६०
 शिवप्रसाद २४
 शिवराम १६५
 शिवलाल पाठक ६६
 शिवशङ्कर ११४
 शिवादित्य ७२
 शिवानन्द भट्ट ३८, ४१, १५६
 शीलाङ्क २४७
 शीलाचार्य २५८
 शुक् ११५
 शुद्धकीर्ति १६८, २७३
 शुभचन्द्र १६४
 शुक्वर्द्धन गणि २६१
 शुभशील २०२
 शूलपाणि ४६
 शेखआलम २२१
 शेरसिंह १८३
 शेषकमलाकर १२६
 शेषचिन्तामणि १४२
 शेषनाग ६०
 शेषानन्द पण्डित ७२
 शोभन २४४
 शंकर भट्ट २२, १५१
 शंकराचार्य १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ११,
 १२, १३, १४, १६, ३८, ५०, ५८,
 ५९, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, १००
 १२६, १३५, १४४

शङ्कराचार्य नारायणतीर्थ ५६
 शङ्ख ऋषि ४४
 शम्भूनाथ मिश्र (सुखदेवशिष्य) २०७

स

सकलकीर्ति १५१, १५२, १७१, १८३,
 १६८, २३७, २३८, २४०, २४२,
 २४४, २५५, २६४, २६८, २७१

सकलकीर्ति भट्टारक २६०

सकलचन्द्र सूरि २३८

सत्यानन्द ३३

सदानन्द ६६, ६७

सदानन्द गण ८१

समयराज २४०

समयसुन्दर (सकलचन्द्रशिष्य) १२२,
 १३६, १७०, १७३, १७४, १७८,
 १७९, १८० १८१, १८२, १८६,
 १८८, १८९, २०२, २४२

समरसिंह ८६ ६४, ६५

समुद्र ऋषि ११८

समुद्रमुनि १६५

समन्तभद्र २४४

सरूपदास १७७

सरस्वती (वैरिसाल) २१९

सरस्वतीतीर्थ (परमहंसपरिव्राजकाचार्य)
 १२८

सर्वदेव ७१

सहजसागर २६०, २४३

स्वच्छन्द शङ्कराचार्य ११३

स्वप्नेश्वराचार्य ६७

स्वात्माराम योगीन्द्र ६६

स्वरूपदास २१४, २१५

साईदास १८०

सागरचन्द्र १७४, १८६

सागरचन्द्रसूरि ६७

साधुकीर्ति २००, २०१, २३८

सामन्त (हर्षरत्नशिष्य) ६५

सायणाचार्य १८

सारकवि २२०

सारंग १८८

सालवाहण २३५

सिद्धसेन ७१, २६३, २६५

सिद्धान्तवागीश ७१

सिद्धिबिजय ११९

सिद्धसेनसूरि १६६

सिंहतिलक १०४

सिंहनन्दि २४३

मीताराम पर्वणीकर १३, १३०

सुखदेव मिश्र २११

सुखलाल १४०

सुखसागर २०६

सुजसविजय १६६

सुदर्शनविजय २४०

सुन्दर २१३

सुन्दरदास २०७, २०८, २११, २१४,
 २२५, २२८, २३३, २३४, २३५,
 २३६

सुन्दरलाल २०८

सुन्दरसूरिचन्द्र १६७

सुबन्धु १३६

सुमतिकीर्ति १६४

सुमतिरंग २३६

सुमतिविजय १३६

सुमतिसूरि २५४

सुमतिहंस २५२

सूत्रधारमण्डन ६६

सूर २३०

सूरज १८१

सूरजीशाह १६५

सूरत २१६

सूरतमिश्र २०७, २०८

सूरतदास ४१६

सूरदास २३४

सूरदेव भट्ट (गोपीनाथसुत) १३६
 सूर्यकवि ६५, १३७
 सूर्यमल्ल १६४
 सूरविजय १६०
 सूरविप्र ८७
 सूरसागर १७६
 सेवक १६६
 सेवकसूर १६०
 सोमतिलक २७३
 सोमचन्द्र १२२
 सोमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १४४
 सोमतिलक १२१
 सोमनाथ १२१, २११, २२१
 सोमनाथ (नीलकंठात्मज) २३१
 सोमप्रभ १४६, १४७, २३८
 सोमप्रभाचार्य १४०
 सोमविलास २५२
 सोमसुन्दर २६०, २६५
 सोमसूरि १६५, २६६

ह

हनुमत्कवि १२८, १२९
 हरदयाल २२९
 हरदास १८६
 हर्षकीर्ति ८४, १४६, १८२, २३८,
 २३९
 हर्षकीर्तिसूरि ७४, ७६, ९२, १०६,
 १५७
 हर्षमुनि १८४
 हर्षचन्द्रगणि १८४
 हर्षरुचि २४३
 हर्षविजय ६३
 हर्षसागर २४०
 हर्षसीभाग्य (सूर्यसीभाग्यशिष्य) ८५
 हरिकर्ण १०२

हरिकवीश्वर १४४
 हरिदत्त ८८
 हरिदत्तभट्ट ६१
 हरिदास २३१, २४१
 हरिनाथ ११६
 हरिभद्रसूरि २४७, २५४
 हरिभट्ट ६५, १०८, १७७
 हरिभद्रश्वेतभिक्षू ६४
 हरिभद्रसूरि ७२
 हरिमुनि (वज्रसेन शिष्य) १४४
 हरिराम २१०
 हरिराय ८, ६१
 हरिलाल २३५
 हरिवल्लभ ६३, २०६, २१६, २३१
 हरिहर ४०
 हलायुध २६
 हरिश्चन्द्र (आर्द्रदेवकायस्थ) १३०
 हस्तिरुचि १५६
 हारीत ऋषि ४६
 हितहरिवंशगोस्वामी ५७
 हिल्लाज ६४
 हीर २०६
 हीरकलश १६८
 हीररत्न १६२
 हेमकवि १६७
 हेमचन्द्र ७३, ८१, ८२, ८४, १३१,
 २४६, २६७
 हेमचन्द्र (रत्नशेखरशिष्य) १६६
 हेमचन्द्रसूरि ७६, २४३
 हेमचन्द्राचार्य ६५, ७२, ७६, ८०, १४०
 हेमप्रभसूरि १२०
 हेमरत्न १७१, १८३
 हेमराज २०६, २४२
 हेमहंस ७१, २५७
 हेमहंसगणि ८५
 हेमाद्रि ४१

हेमानन्द १९४

हंसकवि १७१

क्ष

क्षपणक ८४

क्षमाकल्याण ७५, १८२, २६२

क्षमाश्रवण २६८

क्षीरस्वामी ८३, ८४

क्षेमशर्मा १६०

क्षेमहंस १२२

क्षेमेन्द्र १२३, १४४

त्र

त्रिमल्ल १५४, १५५, १५६

त्रिविक्रमाचार्य ११८

त्रैविध्यवृद्ध २१

ज्ञ

ज्ञानकवि १७६

ज्ञानचन्द १८३

ज्ञानभूषण १८४, २३६

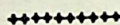
ज्ञानविमल ७६

ज्ञानराज ११६

ज्ञानविमल १६५, १७०

ज्ञानसागर १६६, १७३, १६६

ज्ञानेन्द्रसरस्वती ८०



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग २

परिशिष्ट ३



इन्द्रगढ़ पोथीखाना

ग्रन्थ सूची



१६६० ई०

इन्द्रगढ़ का हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रह

राजस्थान सरकार के आदेश सं० २६१, दिनांक ४-८-५६ ई० के अनुसार इस विभाग की ओर से इन्द्रगढ़स्थित पोथीखाने का निरीक्षण किया गया। ग्रन्थों की अस्तव्यस्त स्थिति की जानकारी प्राप्त होने पर राज्य सरकार से उक्त संग्रह को इस संस्थान के संरक्षण में प्राप्त कराने का प्रस्ताव किया गया। तदनन्तर राज्य के पत्र सं० एफ. ६ (६२) एज्यू. बी. ५६, दिनांक २४-१०-५६ ई० के अनुसार अनुमति प्राप्त होने पर इन्द्रगढ़ से उस संग्रह को इस विभाग में प्राप्त कर लिया गया।

ठिकाना इन्द्रगढ़ (कोटा) का पोथीखाना विद्याप्रेमी महाराजा श्री शिवसिंहजी के समय में 'सरस्वती भंडार' के नाम से स्थापित किया गया था। महाराजा शिवसिंह स्वयं अच्छे विद्वान्, सुकवि एवं विद्याप्रेमी थे। इनके द्वारा निर्मित कितने ही ग्रंथ उपलब्ध होते हैं जिनमें से कुछ इस संग्रह में भी प्राप्त हुए हैं। शिवसिंहजी के सुपुत्र महाराजा हाड़ा संग्रामसिंह अपने समय के एक आदर्श साहित्यकार नरेश हुये हैं। ये बड़े ही विद्यारसिक एवं सुकवि थे। अच्छे-अच्छे पंडितों को पुरस्कृत करना एवं ग्रन्थरचना करते-कराते रहना इनका व्यसन था। इनके द्वारा निर्मित सौ से भी अधिक ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जिनमें से भी अधिकांश इन्होंने अपने ठिकाने में शिला-मुद्रणालय की व्यवस्था कर मुद्रित करा लिये थे, जो अब प्रायः अप्राप्त हैं। उक्त हाड़ा संग्रामसिंहजी के समय में इस संग्रह की दशा अवश्य अच्छी रही होगी, यह स्वतः अनुमेय है। इनके उत्तराधिकारी महाराजा सुमेरसिंहजी के निःसंतान अवस्था में अकाल ही काल-कवलित हो जाने पर इस संग्रह की दुर्दशा होने लगी और ग्रन्थ भी इतस्ततः नष्टभ्रष्ट एवं जीर्ण-शीर्ण होने लगे। जिस समय इस संग्रह को देखा गया उस समय यह ठिकाने की सम्पत्ति के रूप में रखा हुआ था। बहुत से ग्रन्थ गढ़ में धूल में दबे हुये जीर्ण-शीर्ण, कीट-विद्ध, दीमक-वर्षादि से क्षतिग्रस्त अवस्था में पड़े थे जिन्हें प्राप्त करके इस विभाग के संग्रहालय में व्यवस्थित-रूप में संशोधकों के उपयोगार्थ रखा गया है। संप्रति इस संग्रह में २०६ हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हैं। इनमें बहुत से ग्रन्थ हाड़ा संग्रामसिंह एवं उनके पिता महाराजा शिवसिंहजी के रचे हुये हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छपे हुए उर्दू ग्रन्थ भी प्राप्त हुये हैं।

राजवंशीय साहित्यकार हाड़ा संग्रामसिंह की ओर, जितना चाहिये उतना, अभी विद्वानों का ध्यान नहीं गया है। उक्त संग्रह की पुस्तकों की प्रस्तुत सूची विद्वानों एवं सर्वसाधारण की जानकारी और उपयोग के लिये प्रकाशित कराई जा रही है।

—मुनि जिनविजय

परिशिष्ट ३

इन्द्रगढ़ पोथीखाने से प्राप्त हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१	अलंकारमञ्जरी	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३२	१६११	त्रिमल्लभट्टकृत अलंकार- मञ्जरी का भावानुवाद
२	शालिहोत्र		राजस्थानी	आयुर्वेद	१३२	१८६५	लि. क. गुमानीसाह लि. स्था. इन्द्रगढ़
३	हनुमन्नाटक, सटीक (रत्नमञ्जूषा टीका)	मू. हनुमत्कवि, टी. मोहन- दास माथुर चतुर्वेद	संस्कृत	काव्य	१३०	१८वीं श.	
४	मधुमालती चौपई	चतुर्भुजदास	हिन्दी	,,	२२२	१६वीं श.	कामदारी लिपि, प्रारम्भ में 'स्वप्नावलि' के ५ पत्र हैं। पद्य संख्या १४५४
५	छन्दःकोस्तुभ	संग्रामसिंह	,,	छन्दःशास्त्र	४३	१६३४	लि. क. वंशीधर गुजराती
६	सभाप्रकाश	हरिचरणदास	,,	रसालंकार	७६	१६२३	
७	पृथ्वीराजरासो (पद्यावती समय)	चन्दवरदायी	,,	काव्य	७४	१८२६	लि. क. चैनराम ब्राह्मण लि. स्था. किला रण-
८	हिकमतग्रन्थ		फारसी, हिन्दी	आयुर्वेद	६४	२०वीं श.	स्तम्भवर हिकमत के फारसी भाषा के नुस्खे नागरी लिपि में लिखे हैं

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६	रूपकप्रभाकर	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	२८	१६वीं श.	शिर्वासिंहनृपतिकारिता आदि में कुछ स्फुट कवित्त लिखे हैं। चारों कृतियों के कुल ५८ पत्र हैं।
१०	वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	"	८५	१६२(?)	
११	पुरुषपरीक्षा	विद्यापति	संस्कृत	कथा	८७	१६१२	
१२	नाममञ्जरी	नन्ददास	हिन्दी	कोष	५८	१६१४	
१३	(क) हरिरस (ख) नीसाणी विवेकवार्ता (ग) नीसाणी ईसरदास (घ) सूरदासके पद	ईसरदास	राजस्थानी " " हिन्दी	काव्य " " "			
१४	सिखनख शृंगार सटिप्पण	बलभद्र	"	"	१५	१६२३	अन्तिम प्रशस्ति में गुलाब कवि (अलवरवासी) ने स्वयम् को ग्रन्थकर्त्ता बताया है।
१५	रसतरंगिणी	शम्भुनाथ मिश्र	"	रसालंकार	४१	१६२४	
१६	रूप(क) रत्नावलि	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१२	२०वीं श.	
१७	रसाणव	सुखदेव (?)	हिन्दी	कार	५७	"	अपूर्ण, लि. क. धाभाई लक्ष्मण, शिर्वासिंहराज्ये
१८	केसोदासकी वाणी	केसोदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	३-२५४	१८८८	लि. क. भवानीराम शिर्वासिंहराज्ये
१९	काव्यरसायन	देवदत्त कवि	हिन्दी	रसालंकार	७८	१६३१	लि. क. रामदत्तभ गुजराती
२०	(क) जनकजुहार		राजस्थानी	काव्य	१-४	१६२६	

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) सुखमलरासो		राजस्थानी	काव्य	४-७	१६२६	
	(ग) कृष्णबालचरित्र		"	"	८-११	"	
	(घ) तारातम्बोलको विस्तार		"	इतिहास	१२वाँ	"	
	(च) कोटाके महाराजाओं की सूची		"	"	१३वाँ	"	
२१	पाण्डवयशोन्दुचन्द्रिकासटीक (रसाल-बोधिनी)	मू. स्वरूपदास, टी. रसाल	हिन्दी	काव्य	१४२	१६१७	लि. क. वगसीराम
२२	(क) विज्ञानसागर		राजस्थानी	वेदान्त	१-११	१६११	
	(ख) गङ्गास्तुति		"	स्तोत्र	११-१३	"	
	(ग) आश्चर्यनिधान		"	वेदान्त	१-६	"	
	(घ) भगतिचिन्तामणि		"	"	६-३२	"	
	(च) चौदहरतन खेल		"	"	३२-५०	"	
२३	पृथ्वीराजरासो	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	३१६	१६वीं श.	सुलिखित प्रति
२४	(क) कबीर की साखी		राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१-४	१८३६	लि. क. खुशालपाण्डे
	(ख) हरिवंशपुराणभाषा		"	काव्य	१-५७	"	
२५	(क) रामचरित	तुलछीदासदाहूपन्थी	"	"	१-१५४	१६वीं श.	
	(ख) सुदामाजी की बारहखड़ी		"	"	११४-१६२	"	
२६	(क) कविकुलकल्पतरु	चिन्तामणि	हिन्दी	रसालंकार	१२-१८	२०वीं श.	आद्य ११ पत्र अप्राप्त, अपूर्ण
	(ख) सूरजमलपं(पि)गल	सूरजमल(?)	"	छंदःशास्त्र	१८-२२	"	अपूर्ण
	(ग) सभाप्रकाश (दशमोल्लासान्त)	हरिचरणदास	"	रसालंकार	१-२४	१६२६	लि. क. दीक्षित वृद्धिचन्द
	(घ) रघुनाथरूपक मरुधरदेशभाषा	कविमैछ	राजस्थानी	काव्य	१-५	२०वीं श.	लि. स्या. इन्द्रगढ़, अपूर्ण

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
	(च) पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका तृतीय- मयूखान्त		हिन्दी	रसालंकार	१२१२	२०वीं श.	
	(छ) कविप्रिया	केशवदास	"	"	१२-३६	"	अपूर्ण
	(ज) साहित्यानन्द, षोडशस्कन्धान्त	गवालकवि	"	"	३७-२५३	"	
२७	(क) इशकचमन		"	काव्य	१-१४	"	अपूर्ण
	(ख) राजनीति कवित्त	देवीदास	"	नीति	१-३५	"	
	(ग) स्फुटकवित्तसंग्रह		"	काव्य	१-७	"	
२८	रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड	गो. तुलसीदास	"	"	१३३	१८६८	लि. क. लाला खुमानसिंह
२९	(क) गुरुपरिचय		"	सन्तसाहित्य	१-७५	२०वीं श.	'श्रीगुरु बलदेवजी
	(ख) ग्रन्थपरिचयअष्टांग		"	"	१-६६	"	शिक्षा' व 'श्रीदुर्जनगुरु शिक्षा' आदि विभिन्न भाग हैं।
३०	फुटकर गजल		"	काव्य	८	"	
३१	(क) धनञ्जयकोष (नाममाला) द्वितीय परिच्छेदान्त	धनञ्जय	संस्कृत	कोष	४-१५	१७५१	लि. क. पं. दयाराम, गुटके के आदि व अन्तमें स्फुट कवित्तादि हैं तथा दोनों कृतियों के मध्य छत्रबन्ध कवित्त आदि हैं।
	(ख) पृथ्वीराजरासो (नाहराय समय	चन्दवरदायी	हिन्दी	काव्य	१-१३	१७६०	लि. क. चारण विहारीदास
३२	विहारीसतसई लालचन्द्रिका टीका	कवि लाल	"	"	५४	१९वीं श.	अन्तमें नृपस्तुति आदि हैं।

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिसमय	विशेष
३३	गीतावली (कवितावली)	मोहनराय	हिन्दी	काव्य	३०६	१८८०	शिवसिंहजी द्वारा लिखाये गये गीत, लि. क. गुजराती 'मांघाता' लि. स्था. इन्द्रगढ़
३४	रसमहार्णव	संग्रामसिंह	"	रसालंकार	१०६	१६२६	लि. क. गुजराती वंशीधर
३५	चन्द्रालोकटीका (रसमयूख)		राजस्थानी	"	३८	१६वीं श.	अपूर्ण
३६	भक्तिभूषण	संग्रामसिंह	"	योग(भक्ति)	४०	१६२७	लि. क. गुजराती वंशीधर
३७	(क) रागचमनचौतीस्यो	"	राजस्थानी	काव्य	१-१२	२०वीं श.	
	(ख) शृंगारतिलक	"	हिन्दी	रसालंकार	१-५	"	
	(ग) हठप्रदीपिका	"	"	काव्य	१-६	"	
	(घ) स्फुट कवित्त	ग्वालकवि	"	"	१-७	"	
	(च) राधाष्टक	"	"	"	८-११	"	
	(छ) सितारसिद्धान्त	संग्रामसिंह	"	संगीत	१२-८१	"	
३८	रामचन्द्रिका	केशवदास	"	काव्य	१५५	"	अपूर्ण
३९	(क) चेतनसिद्धान्त		"	सन्तसाहित्य	२	"	"
	(ख) कविप्रिया (चित्रालंकारप्रकरण)	"	"	रसालंकार	१-१२	१६०६	
	(ग) वृत्तरत्नाकर (द्वितियाध्यायान्त)	केदारभट्ट	संस्कृत	छन्दःशास्त्र	१३-२५	२०वीं श.	
	(घ) सत्यनामप्रकाश	कबीरदास	हिन्दी	सन्तसाहित्य	८८	"	
४०	वृन्दावनमाधवकथा (चारों मिलन)		"	कथा	१-२४	१८११	लि. क. लाला छेदीराम
४१	स्वरोदय सटीक		संस्कृत, हिन्दी	ज्योतिष	१-१८	२०वीं श.	अपूर्ण
४२	(क) निशानी (विवेकविचार)	केशवदास गाडण	हिन्दी	काव्य	१-२०	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि समय	विशेष
	(ख) स्फुट साखियां (कवित्त आदि)		हिन्दी	काव्य	२०-२५	२०वीं श.	
	(ग) गुणनन्दास्तुति	ईश्वरदास	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	२५-४८	,,	ग्रन्त में गीत व भौरगीता हैं
	(घ) ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	हिन्दी	,,	४१-८१	,,	
	(च) गजल, कवित्त, गीत आदि का संग्रह		,,	काव्य	८१-९४	,,	
	(छ) गुरुस्तुति, गोरखगणेशज्ञानगोष्ठी ग्रन्थ	गोरखनाथ	,,	सन्तसाहित्य	९४-९६	,,	ग्रन्त के २२ पत्रोंमें कबीर, नामदेव, मीरां, सूर आदि की साखियां व दोहे हैं
	(ज) निसानी, केशवदास गाडण चारण की		राजस्थानी	काव्य	११८-११९		
	(झ) प्राणशांकली		,,	,,	१२०-१२१		
	(ट) शंकावलि		,,	,,	१२१-१२२	,,	
	(ठ) डूंगरसी बागड़ी को गीत		,,	,,	१२३-१२४	,,	
	(ड) वज्रशूच्युपनिषद्	शंकराचार्य	संस्कृत	वेदान्त	१२५-१३०	१८८२	आगे पत्र १५४ तक विभिन्न पद आदि हैं तथा कुछ ओपधियों के योग हैं, लि. क. 'निहाल'
४३	विहारीसतसई टीकाशय					१९२४	
	(क) कृष्णचन्द्रिका	कृष्णकवि	हिन्दी	काव्य	१२३-२७६	,,	र. का. १७८२
	(ख) हरिप्रकाश	हरिकवि	,,	,,	,,	,,	र. का. १८३४

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४४	(ग) अमरचन्द्रिका (क) सदैवत्ससार्वलिंगी बात (ख) पन्ना वीरमदेकी बात	बलदेव	हिन्दी	काव्य	१२३-२७६	१६२४	र. का. १८७३
			राजस्थानी	वार्ता	१-७२	२०वीं श.	
			"	"	१-६२	१६१४	लि. क. चि. नूरीलाल
४५	डिगल ग्रन्थ	संग्रामसिंह	"	काव्य	२७	१६३०	
४६	कुलप्रकाश (हाड़ावंश के खरड़े)		"	इतिहास	६४	२०वीं श.	
४७	भृंगारगुडो	संग्रामसिंह	"	रसालंकार	७	१६३३	
४८	(क) भाषाभूषणटीका	मू. जसवन्तसिंह टी. हरिचरणदास	हिन्दी	"	४१	१६३०	लि. क. वंशीधरगुजराती
	(ख) कविप्रियाव्याख्या (कविप्रिया- भरण,	मू. केशवदास टी. हरिचरणदास	"	"	२४२	१६२६	" "
	(ग) पिगलकाव्यविभूषण	बक्शी सुमनेश	"	छन्दःशास्त्र	१०२	१६१२	लि. स्था. इन्द्रगढ़
	(घ) ध्रुवाष्टक नीति	विश्वनारायणसिंहदेव	"	काव्य	१०३वाँ	२०वीं श.	
	(च) पद्यामृततरंगिणी	भास्कर अग्निहोत्री	संस्कृत	"	१-२७	१६३०	लि. क. वंशीधर गुजराती ब्राह्मण, लि. स्था. ग्राम सुनमानपुरा
	(छ) काव्यरसायन	देवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	१-४	२०वीं श.	प्रति कीटविद्ध जीर्णशीर्ण
४९	हरिरस	बारहठ ईसरदास	"	काव्य	१-१२	"	
५०	बिहारीसतसई	बिहारीलाल	"	"	६८	१७८६	आगे पत्र ८५वें तक आयु- वैद संबंधी कुछ स्फुट योग हैं। लि. स्था. इन्द्रगढ़

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५१	शकुनावली		हिन्दी	ज्योतिष	६	२०वीं श.	अन्तमें १८ पत्रोंमें कुछ दोहे हैं
५२	(क) गीतगोविन्द	जयदेव	संस्कृत	काव्य	१-३८	"	
	(ख) भजन-संग्रह	चन्द्रसखी भीरां आदि	हिन्दी	"	१-५०	"	
	(ग) फुटकर कवित्त		"	"	१-३४	"	
५३	रामचरितमानस (बाल, अयोध्या, लंका व उत्तरकाण्डके स्फुट पत्र)	गो. लसीदास	"	"	१२४	१८८४	अपूर्ण, बा.का. के केवल २ पत्र (३१वां व ३२वां है) इसी प्रकार अन्य काण्ड भी अपूर्ण हैं। बीच बीचमें पत्र नहीं हैं
५४	पाण्डवयज्ञोत्तुचन्द्रिकाटीका (बोधिनी)	रसाल	"	"	१६३	१९१७	लि. क. ब्राह्मण रामनाथ
५५	पृथ्वीराजरासो (एकादशखण्डान्त)	चन्दवरदायी	"	"	१३०	१८७१	लि. क. लच्छीराम भगत
५६	भाषाभूषण	जसवन्तसिंह	"	रसालंकार	२३	१९०२	
५७	हितहमेल (४२वां ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	राजस्थानी	काव्य	१००	१९२९	लि. क. रामनाथब्राह्मण, कांटी
५८	(क) रसराम सटीक	मू. मतिरान, टी. शिवदत्त	हिन्दी	रसालंकार	६३	२०वीं श.	
	(ख) शालिहोत्र	गकुल	"	आयुर्वेद	७७	"	
५९	(क) अजामिलचरित्र		"	काव्य	१-१०	१८९८	अन्तमें ८ पत्रोंमें 'नाम
	(ख) कबीरजीकी बाणी	कबीर	"	सन्तसाहित्य	१-१२१	"	महिमा' व 'दासजीकी
	(ग) नामदेवजीकी वाणी	नामदेव	"	"	१२१-१७५	"	नामसहिमा' है
	(घ) ध्रुवचरित्र	जसवन्तसिंह	"	"	१७५-१९६	"	लि. क. ब्राह्मण भुवाना

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	हिन्दी	काव्य	१६६-२१४	१८६८	ग्रन्थमें ८ पत्रोंमें नाम महिमा व दासजीकी नाम महिमा है। लि.क. ब्राह्मण भुवाना।
	(छ) भरतचरित्र	"	"	"	२१४-२२१	"	"
	(ज) राजा मोहमदकी कथा	"	"	"	२२१-२२६	"	"
	(झ) सुन्दरदासजीके सर्वथा	सुन्दरदास	"	"	२२६-३१७	"	"
६०	(फ) फुटकर कवित्त	"	"	"	१-३५	२०वीं श.	
	(ख) हाथीके लक्षण	"	"	ज्योतिष	३६-४७	"	
	(ग) रागमाला	"	"	संगीत	१-१६	"	
६१	नखशिखवर्णन व कोकसार	आनन्दकवि	"	कामशास्त्र	२६	१६०७	लि. क. रघुनार्थसिंह
६२	(क) सुखसंवाद	"	राजस्थानी	सन्तसाहित्य	१-४६	२०वीं श.	ग्रन्थमें पत्र सं. ५० तक जनगोपाल आदिके भजन हैं।
	(ख) गणेशगोरखसंवाद	"	"	"	१-१६	"	अपूर्ण
६३	सतसई (डिगल)	संग्रामसिंह	"	काव्य	६३	१६३४	कि. क. रघुनार्थसिंह, कीटविद्ध
६४	गीतबही (६८० गीतोंका संग्रह)	"	"	"	२२८	२०वीं श.	
६५	भगवद्गीता का अनुवाद	"	हिन्दी (ब्रज)	वेदान्त	१८८	१६००	लि. क. ब्राह्मण भुवाना
६६	(क) विवेकविचार	शिवसिंह	हिन्दी	"	४०	१८६७	लि. क. राव जूहार 'मताप (महताब) पुत्र,
	(ख) फुटकर रागसंग्रह	"	"	संगीत	२०	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६७	विवेकवार्ता	केशवदास गाडण	हिन्दी		२१०		जीर्णशीर्ण, कीटविद्ध, अन्त में १० पत्रों में स्फुट श्लोक, पद्य व राग हैं
६८	रघुनाथरूपक	कवि मनसाराम (कविमंछ)	राजस्थानी	काव्य	८८	१९२५	लि. क. ब्राह्मण रामनाथ
६९	यवनछंद (फारसी छंदों का वर्णन)	संग्रामसिंह	हिन्दी	,,	२८	२०वीं श.	'गणपतिचरणसरोजरज, धर हाड़ा संग्राम । यवन छंद रचना रचित, इन्द्र-दुर्ग निजधाम ।'
७०	संगीतपयोनिधि (७९वाँ ग्रन्थ)	,,	,,	संगीत	११	१९३३	रामरामग्रहचन्द्रमा, दरश हरियाली रैन । इन्द्रदुर्ग निजधाम में, ये तो ग्रंथ लखै । गुनसन्तियोग्रन्थ जो, यह रच्यो संग्राम, यह सुधार सुध कीजियो, जो सुकवि गुणधाम ।
७१	(क) सुखसंवाद		,,	सन्तसाहित्य	२९	१८८४	लि. क. 'रामरतन', अन्त में ६ पत्रों में नक्षत्र राशि व वायुविचार आदि हैं ।
	(ख) सन्तदासजीकी साखी	सन्तदास	,,	,,	१	,,	लि. क. रामरतन
	(ग) प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	,,	,,	२-३२	,,	,,
	(घ) ध्रुवचरित्र	,,	,,	,,	३२-६३	,,	,,
	(च) फुटकर बूहा	अहमद	,,	,,	२	,,	,,
	(छ) ठीकरनाथजीकी भावना	,,	,,	,,	२	,,	,,
७२	छन्देन्द्रकल्याणकल्पद्रुम	कल्याणदास भट्टनागर	राजस्थानी	छन्दशास्त्र	५५	१९वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण, जीर्णशीर्ण

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७३	कोदण्डचन्द्रिका	संग्रामसिंह	हिन्दी	प्रकीर्ण	४७	१६वीं श.	जीर्ण
७४	बुधसिंहचरित्र	वंशभास्करगत	"	काव्य	१६०	२०वीं श.	अपूर्ण
७५	नखशिखवर्णन	रसिकप्रियान्तर्गत (केशवदास)	"	रसालंकार	१०	१८६७	लि. क. चि. नन्दराम लि. स्था. 'करवाड़'
७६	गुरुपरीक्षा		"	काव्य	३८	२०वीं श.	
७७	ढोलामारूरी वार्ता		राजस्थानी	वार्ता	१३४	"	अपूर्ण
७८	सदैवत्ससार्वलिंगारी वात		"	"	८६	"	"
७९	(क) भक्तिमुक्तिप्रश्नोत्तरी		हिन्दी	वेदान्त	१-७०	१९११	
	(ख) तत्त्वसारगीता		राजस्थानी				
	(ग) वर्णप्रभाकर		"	"	७०-८७	"	
	(घ) भक्तिपदार्थ		"	धर्मशास्त्र	८७-१६०	"	
	(च) शिरोमणिसार		"	भक्ति(योग)	१-१३	"	
	(छ) सहजानन्दभक्ति		"	वेदान्त	१३-२२	"	लि. क. ब्राह्मण चि. चम्पालाल
			"	भक्ति(योग)	३२-५५	"	लि. स्था. सेवागली मध्ये, चर्मण्वतीतटे
८०	कृष्णरुक्मिणीरीवेली सटीक	राठोड़ पृथ्वीराज	"	काव्य	८७	१८१६	प्रथम पत्र अप्राप्त
८१	वंशभास्कर सटीक		"	इतिहास	११७	२०वीं श.	अपूर्ण
८२	(क) चाणक्यदर्पण	चाणक्य	संस्कृत	नीति	१-२०	१८६४	
	(ख) नीतिशतक	भर्तृहरि	"	"	१-१६	"	
	(ग) बृहज्जातक		"	ज्योतिष	१-११८	"	ग्रन्थ में तीन पत्रों में नव- ग्रहदान लिखे हैं

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
८३	नरसीजीका माहेरा		राजस्थानी	काव्य	४६	२०वीं श.	अपूर्ण
८४	कर्मविपाक		संस्कृत, हिन्दी	कर्मकाण्ड	६	,,	,,
८५	पातशाहीका किस्सा		हिन्दी	कथा	१२२	१६वीं श.	,,
८६	हाडोंके प्रशस्तिगीतके स्फुटपत्र		,,	काव्य	६३	२०वीं श.	
८७	स्फुटकीर्त्तनकवित्तसंग्रह		,,	,,	५०	,,	
८८	हरिदासजीके पद	हरिदास	,,	सन्तसाहित्य	४३	१८०७	लि. क. जोशी जीवराम गुर्जरगौड़, पृष्ठ ४१ वें व ४२ वें में देवाचारणके कवित्त लिखे हैं।
८९	गजलचन्द्रिका	संग्रामसिंह	,,	काव्य	४१	१६२८	
९०	अकारादिक्रमसे कवित्तसंग्रह		,,	,,	५८	१६वीं श.	कवित्त संख्या ११६ से ७७५ तक
९१	रसभक्तिपथ	शिवदत्त	,,	योग(भक्ति)	१२	१६३५	
९२	लीलावतीगणितभाषा		,,	ज्योतिष	१४	१६वीं श.	अपूर्ण
९३	ताराविलास सटीक	विद्यानाथ	संस्कृत, हिन्दी	,,	१-६	,,	पृष्ठ सं. १० पर नक्षत्र-स्वरूपचक्र एवं पत्र ६ तथा १० के पृष्ठोंपर दोहा आदि लिखे हैं।
९४	(क) स्वरोदय	चरणदास	हिन्दी	,,	१-१३	,,	
	(ख) नामसार	फतेहसिंह राठौड़	,,	काव्य	१४-५४	,,	
९५	(क) स्वरोदय		,,	ज्योतिष	१-१६	,,	
	(ख) तिथिकल्पद्रुम	संग्रामसिंह	,,	,,	१६-२४	,,	
९६	(क) सुमुखीपञ्चाङ्ग	रुद्रयामलगत	संस्कृत	तन्त्र	समग्र १३६	१८२६	लि. क. आचार्य नगाद-विजय(?) लि.स्था. सांगोदा

क्रमाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
	(ख) रजःस्वलास्तोत्र (ग) शिवमहिम्नःस्तोत्रादि	पुष्पदन्ताचार्य	संस्कृत	स्तोत्र	समग्र १३६	१८२६	उच्छिष्टगणपति व बटुक भैरवस्तवराज आदि भी हैं। अपूर्ण लि. क. चि. रामरतन ब्राह्मण
६७	रामाज्ञा	गो. तुलसीदास	हिन्दी	काव्य	२१	१६१८	
६८	ज्योतिषग्रन्थ		"	ज्योतिष	४१	१६०७	
६९	फुटकरवार्ता (ज्योतिष आधुर्वेद केयोग व लोकल विद्या)		"	प्रकीर्ण	१७	२०वीं श.	
१००	स्फुटवार्ता (लोहगुणवर्णन आदि)		"	"	१०	"	प्रतिमें तीन खुले पत्र हैं जिनमें लोह परीक्षा आदि लिखित है।
१०१	रमलोत्कर्ष	चिन्तामणिपण्डित	संस्कृत	ज्योतिष	२७	१८६८	
१०२	छायापुरुषविधि और स्वरोदय (कबीरसाहबको)		राजस्थानी	"	१४	१९वीं श.	
१०३	(क) ज्योतिषसार (लघुजात- कानुसार)		"	"	१-३१	१६१०	लि. क. द्वारका व्यास, आगे पत्र सं. ३६ तक ज्योतिष एवं जैनशास्त्र सम्बन्धी कुछ चक्र हैं।
	(ख) मेघमाला		"	"	३६-४०	"	
	(ग) चमत्कारचिन्तामणि		"	"	४०-६१	"	
१०४	सुभाषितपद्धति	शाङ्गधर, दामोदरसूनु	संस्कृत	सुभाषित	२७	२०वीं श.	अपूर्ण, हम्मीरभूपतिचौहान राज्यसभासदस्यराघव- नाम्नः पौत्रः (ग्रं.क.)

क्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्र संख्या	लिपि काल	विशेष
१०५	जुबदा रमलभाषा, सोदाहरण		राजस्थानी	ज्योतिष		१८७०	लि. क. ब्राह्मणनानजी,
१०६	व्यंग्यपंचपंचाशिका	संग्रामसिंह					गुर्जरगौड
१०७	किष्किन्धाकाण्ड छप्पय	प्यारेराम	"	रसालंकार	१७	१६३१	प्रथम पत्र अप्राप्त
१०८	विक्रमभूपकी कथा		हिन्दी	काव्य	३१	२०वीं श.	आद्य १० पत्र अप्राप्त
१०९	संवत्सरीफल		"	कथा (वार्ता)	२१	१८८३	
११०	सुन्दरपदमुक्तावली	सुन्दर	राजस्थानी	धर्मशास्त्र	८१	१९वीं श.	कामदारीलिपि
			हिन्दी	काव्य	१०८	१९३४	लि. कि. ब्रजवल्लभ
१११	सेऊसमनजीकी परची	अनन्तदास	"	"	१०	१८८६	लि. स्था. माधवपुर
११२	राशियोंकी किताब		उर्दू	ज्योतिष	१२	२०वीं श.	लि. क. भुवना
११३	दीवान मोजीज		"	काव्य	१६८	"	फारसी लिपि
११४	गुंचापरागकी किताब		"	प्रकीर्ण	५५	"	"
११५	किताब खलायक मुहम्मदरफी उकदीन		"	"	१२०	"	मुद्रित
११६	किताब रमल		"	ज्योतिष	७४	"	फारसी लिपि
१२७	किताब ताजवीदीका रोजा		"	प्रकीर्ण	१४	"	"
			"	"			इस पुस्तकमें ताजमहल
११८	याफता		"	"	१३७	"	निर्माणका व्यौरा दिया
११९	वाकैराजपूताना		"	इतिहास	८८३	"	गया है। फारसी लिपिमें
१२०	वंशभास्कर		"	"	१४६	"	फारसी लिपिमें
१२१	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	हिन्दी	"	१४६	"	" मुद्रित
१२२	मर्यादापरिपाटीसमाचार		"	काव्य	६	"	जीर्णशीर्ण अपूर्ण
			संस्कृत, हिन्दी	धर्मशास्त्र	८६६से१०३२	"	अपूर्ण
						१९३४	मुद्रित

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१२३	प्रेमरत्नाकर	राजकुमार, भैया रतनपाल	हिन्दी	काव्य	३३	१७४१	लि. क.—स्वामी खेमदास आगे १२ पत्रोंमें स्फुट कवित्त आदि हैं ।
१२४	कबीरजीकी साखी	कबीर	„	„	२०२	२०वीं श.	आद्य ५ पत्र अप्राप्त । अपूर्ण
१२५	धिरदप्रकाश	उमेदसिंह	„	„	२७	१६१६	
१२६	गृहदर्पण, (३६वाँ ग्रन्थ) (यात्रा- विषयकवर्णन व स्टेशनोंके नाम)	संग्रामसिंह	„	प्रकीर्ण	१४	२०वीं श.	
१२७	शालिहोत्र	नकुल	„	आयुर्वेद	५८	१८६०	
१२८	मन उमंग अनुराग	संग्रामसिंह	„	काव्य	१६	१६३५	लि. क. वंशीधर गुजराती- ब्राह्मण
१२९	(क) चैतन्यसिद्धान्त		„	वेदान्त	२७	१६१३	आद्य दो पत्र अप्राप्त
	(ख) चतुरमहाबोध		„	„	११	„	अपूर्ण
१३०	(क) व्यंग्यार्थचन्द्रिका	गुलाबकवि	„	रसालंकार	१४	१६६२	
	(ख) पायसपचीसी	जगन्नाथकवि	„	काव्य	१४-१६	„	
	(ग) प्रेमपचीसी	गुलाबकवि	„	„	१७-१९	„	
१३१	(क) अलङ्कार-मुक्तावली	संग्रामसिंह	„	रसालंकार	३	१६१०	
	(ख) छन्दःप्रस्तार	„	„	छन्दःशास्त्र	३	„	
	(ग) अलङ्कारदीपिका	„	„	रसालंकार	५	„	
१३२	(क) आत्म-उद्धार	शिवसिंह	„	वेदान्त	१-५३	२०वीं श.	छन्दःसंख्या ५२२
	(ख) आत्मप्रकाश	„	„	„	१-२५	„	
	(ग) युक्तिरत्न	„	„	„	२५-३२	„	
	(घ) युक्तिरत्नत्रिधामणि	„	„	भक्ति(योग)	३२-४०	„	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(च) प्रेमप्रभा	शिवसिंह	हिन्दी	काव्य	४०-४७	२०वीं श.	
	(छ) मुक्तिमंगल	"	"	वेदान्त	४७-५५	"	
	(ज) स्नेहसार	"	"	काव्य	५५-५८	"	
	(झ) ग्रन्थसंक्रान्ति	"	"	"	५८-६७	"	
	(ट) स्फुटकवित्त	"	"	"	६७-७८	"	
१३३	भर्तृहरिचरित	"	"	सन्तसाहित्य	४०	"	
१३४	रामचरित	सेनापति	"	काव्य	१८	"	स्फुटकवित्त (प्रारम्भिक ४ पत्रोंमें)
१३५	संग्रामसिन्धु ग्रन्थव्याख्या (व्यंग्यार्थ-मौक्तिकमाला)	संग्रामसिंह	"	"	४७	१६०८	
१३६	रामचरितमानस (बालकाण्ड)	गो. तुलसीदास	"	"	११७	२०वीं श.	अपूर्ण
१३७	पावसषोडशी (५०वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	"	"	१७	१६२६	
१३८	भूगोलप्रश्नोत्तरी (१६वाँ ग्रन्थ)	"	"	"	१५	१६३१	
१३९	रससिरोमणि	महाराज रामसिंहजी छत्रसिंहजीसुत, नरवर-निवासी	"	रसालंकार	३७	१८३०	लि. क.-लक्ष्मण घाभाई लि. स्था.-बड़ौदा
१४०	विहारीसतसई, सटीक	विहारीलाल	"	काव्य	१८४	१८५६	
१४१	महाभारत उद्योगपर्व, ६ अध्याय, पद्यानुवाद	कृष्णकवि	"	"	८१	१६२७	र. का. १७६२ आद्य तीन-पत्र अप्राप्त
१४२	(क) पूर्णबोधप्रकाश ज्ञानप्रकरण	पूर्णदास (गोवर्धनाश्रम-वासिभक्तप्रतापसिंह)	"	वेदान्त	३१८	१७३१	लि. स्था.-बूंदीपतिभाव-सिंह राज्ये
	(ख) .. भक्तिभक्तसंप्रदाय	"	"	भक्ति (योग)	३२८	"	र. स्था. " "

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४३	(क) व्रजचरित		हिन्दी	काव्य	१-४	१८२६	र. का.-१७८१
	(ख) अमरलोकग्रन्थण्डधामवर्णन-लीला		"	"	४-७	"	
	(ग) धर्मजहाज		"	"	७-१७	"	
	(घ) गुरुचेलीसंवाद श्रष्टांगयोग		"	योग	१७-३७	"	
	(च) पञ्चोपनिषद्, भाषा		"	वेदान्त	३७-४५	"	
	(छ) ज्ञानस्वरोदय		"	"	४५-५६	"	
	(ज) ब्रह्मज्ञानसागर		"	"	५६-६४	"	
	(झ) भक्तिपदार्थ		"	भक्ति योग	६४-७५	"	
	(ट) चारयुगवर्णन कुण्डलिया		"	काव्य	७५वाँ	"	
	(ठ) नायिका अंगवर्णनादि		"	वेदान्त	७६-१००	"	
	(ड) चौबीसगुरुपरीक्षा		"	"	१००-११५	"	
	(ढ) मोहछुड़ावनअंगवर्णन		"	"	११५-१२४	"	
	(त) सन्देशसागर		"	"	१२४-१२७	"	
	(थ) शब्दोंके मंगलाचरणदूहा		"	काव्य	१२७-१७५	"	
	(द) स्फुट कवित्त छन्द आदि		"	"	१७५-१८१	"	
१४४	शनिश्चरकथा		"	कथा	१८	१८१४	
१४५	इन्द्रजाल		"	ज्योतिष	७	१९वीं श.	अपूर्ण
१४६	हरिलीलामृत		संस्कृत	तंत्र	१६	१८८८	लि. क.-मनीराम
१४७	(क) रसभृङ्गार		हिन्दी	काव्य	३	१९२०	प्रथमपत्र अप्राप्त
	(ख) पावसपञ्चाशिका		"	"	१-७	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ग) भूमाल (दूसरी) आदि		हिन्दी	काव्य	७-१०	१६२०	
	(घ) शृङ्गाररत्न		"	"	१०-१३	"	
	(च) अलङ्कारमञ्जरी	संग्रामसिंह	"	रसालंकार	१-११	१६२१	र. का.-१६११
	(छ) पावसषोडशी	"	"	काव्य	१-८	"	
१४८	साहित्यबोध (काव्यप्रकाशानुवाद)		"	रसालंकार	११	१६वीं श.	अपूर्ण
१४९	परिभाषाप्रकरण	सिद्धान्त पञ्चानन- भट्टाचार्य	संस्कृत	न्याय दर्शन	७	१७१८	लि. क.-लक्ष्मण, गंगारामा- त्मज, लि. स्था. काशी
१५०	रामस्तवराज	सनत्कुमारसंहितोक्त	"	स्तोत्र	१२	१८४७	
१५१	शिवशतनामस्तोत्र		"	"	३	१६वीं श.	अपूर्ण
१५२	शृङ्गारप्रश्नोत्तरी, भाषा (६८वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	हिन्दी	रसालंकार	३१	१६३१	
१५३	अलङ्कारमञ्जरी	त्रिमल्ल, वल्लभभट्टपुत्र	"	"	१३	१६वीं श.	प्रथम पत्र अप्राप्त
१५४	वाजिचन्द्रिका (६३वाँ ग्रन्थ)	संग्रामसिंह	"	ज्योतिष	२१	१६३१	
१५५	आरामदर्पण (७४वाँ ग्रन्थ)	"	राजस्थानी	प्रकीर्ण	१८	१६३४	आद्य दो पत्र अप्राप्त, लि. क.-रामनाथ
१५६	स्फुट कवित्त	पद्माकरभट्ट	हिन्दी	काव्य	१५	२०वीं श.	एक कवित्त बेनीका भी है
१५७	(क) ध्रुवचरित	परमानन्द	"	"	१-१२	१७६१	लि. क.-वखतराम
	(ख) मंगलाष्टक	कवि कालिदास	संस्कृत	"	१२-१७	"	
	(ग) गणेशजीकी स्तुति		हिन्दी	स्तोत्र	१७-२३	"	
	(घ) गोरखनाथजीकी स्तुति		"	"	२३-३०	"	
	(च) भोगलपुराण		"	पुराण(कथा)	३०-४०	"	
	(छ) रागचिन्तन		"	संगीत	४०-४८	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ज) छोटमजीकी जकड़ी	छोतमराम	हिन्दी	काव्य	४१-५१	१७६१	
	(झ) कायस्थद्वादशनाम टीका	"	"	कथा (पुराण)	५१-५७	"	
१५८	रसचन्द्रोदय	संग्रामसिंह	"	रसालंकार	३५	१६१६	
१५९	रसचन्द्रोदय	"	"	"	२०	१६१०	
१६०	राजयोग भाषा	राजा प्रथ्वीचन्द्र अनन्य	"	वेदान्त	४	१६२१	लि. क.—श्रीलाल
१६१	बहुलाष्टमी कथा			कथा	५	२०वीं श.	
१६२	खींवरा बालेसरकी वारता		राजस्थानी	वार्त्ता(कथा)	१७	१८५४	लि.क.—घासीराम ज्योतिषी (डाकोत) लि. स्था. गेणोली (बूंदी)
१६३	पद्मकोश राजस्थानीटीकासहित		संस्कृत	ज्योतिष	११	१९वीं श.	प्रथमपत्र अप्राप्त
१६४	(क) मासविचार (ज्येष्ठमाससे)		राजस्थानी				
	(ख) छायापुरुषाविचार		राजस्थानी	"	१४-१६	१६०५	कीटविद्ध
	(ग) कबीरजीके रेखता		"	"	१६-१७	"	
	(घ) आत्मप्रकाश	धर्मदास	हिन्दी	सन्तसाहित्य	१८-२५	"	
	(च) बालबोधिनी चौपाई		"	"	२५-३०	"	
	(छ) हरिबोल		"	"	३८-४६	"	
	(ज) शब्द	कबीर	"	"	४६-४९	"	
	(झ) कबीराष्टक		"	"	४९-५०	"	
	(ट) अखण्डपरब्रह्मकी स्तुति	धर्मदास	"	"	५१-५२	"	
	(ठ) आत्मदान श्रारती		"	"	५२-५३	"	
	(ड) सम्बत्सरको फल		"	"	५३वाँ	"	
			"	ज्योतिष	५४वाँ	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	(ढ) गुप्तज्ञानगुदरी	कबीर	हिन्दी	सन्तसाहित्य	५५-५६	१६०५	
	(त) रामरक्षा	रामानन्द	संस्कृत, हिन्दी	"	५७-५८	"	
	(थ) मूलपांजीग्रन्थ		हिन्दी	"	५८-६१	"	अपूर्ण
१६५	विवेकमार्तण्ड	जालन्धरनाथ	संस्कृत	वेदान्त	७	२०वीं श.	"
१६६	शृङ्गारसिन्धु (नवम कल्लोल)	भगवानदास	हिन्दी	रसालंकार	१४	"	
१६७	(क) सिद्धान्तबोध	जसवन्तसिंह	"	वेदान्त	५-३२	१८१०	ग्राह्य ४ पत्र अप्राप्त
	(ख) सिद्धान्तसार	"	"	"	१-२२	"	
	(ग) गोरक्षशतक		संस्कृत	योग	२३-३०	"	लि. क.-विश्वनाथ
	(घ) चौबीस अवतार		"	प्रकीर्ण	३१वां	"	
१६८	चौहानोंकी वंशावली	गोविन्दराम बडवा, कोटा- निवासीकी पुस्तकसे	हिन्दी	इतिहास	१२	१८८३	
१६९	गीतबही	बेला चारण	"	काव्य	१४	१९वीं श.	
१७०	गीतमध्याक्षरी	शिवसिंह	"	"	१	"	खरड़ा
१७१	(क) आदित्यव्रतमाहात्म्य		संस्कृत	पुराण(कथा)	१-७	"	
	(ख) नक्षत्रफल		"	ज्यौतिष	८-३३	"	
१७२	मानसदीपिका व्याख्या		हिन्दी	काव्य	५२	"	
१७३	पञ्चाङ्ग		संस्कृत	ज्यौतिष	१३	१९१९	
१७४	सूर्यजीकी कथा (हिन्दी)	पद्मपुराणगत	हिन्दी	कथा (पुराण)	१४	२०वीं श.	
१७५	छत्रबन्ध		संस्कृत	रसालंकार	१	"	
१७६	भूमाल	गोरखा ढाढी	राजस्थानी	काव्य	२१	"	
१७७	(क) कवित्तशतक	श्रीकृष्णचन्द्र (महाराजा- धिराज)	हिन्दी		१-२८	"	

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१७८	(ख) दोहाशतक	मोहनकवि	हिन्दी	काव्य	१-१४	२०वीं श.	लि. क.—रामवल्लभ चौबे गुजराती, लि. स्था.-इन्द्रगढ़
	(ग) स्फुटकवित्त		"	"	१-६	"	
	(घ) विष्णुपद		"	"	१-४०	"	
	(च) मोहननामपचीसी		"	"	१-२	"	
	(छ) दोहासंग्रह		"	"	१-१२	"	
	(क) शृंगारचमन	संग्रामसिंह	"	"	१-६	१६३२	
१७९	(ख) प्रेमचमन	"	"	"	६-११	"	अपूर्ण
	(ग) रागसंयोग	"	"	संगीत	१२-२३	"	
	(घ) दृष्टिकलानिधि (६८वां ग्रंथ)	"	"	रसालंकार	२४-२७	"	
	(क) छन्दःशास्त्र		संस्कृत	छन्दःशास्त्र	१-१०	२०वीं श.	
	(ख) वृत्तरत्नाकरटीका	समयसुन्दरगणि	"	"	१०-२०	"	
	गणेशमहिमाकथा		हिन्दी	कथा	५१	१७८५	
१८१	संग्रामसिन्धु	संग्रामसिंह	"	रसालंकार	१-६	१६०८	लि. क.—व्यास कालूराम इसमें निम्नलिखित सूची के अनुसार विविध गीतों का सङ्कलन है।
१८२	गीतापरिचयटीका	शिर्वासिंह (महाराजा)	"	वेदान्त	८-११६	२०वीं श.	
१८३	चारणगीतसंग्रह—		राजस्थानी	काव्य	३४४	"	
	१ कवित् हींगलाजकी			कवित्तसंख्या	१		
	२ कवित् बीजाशणिजीकी				२	१	
	३ गीत नरसिगजीकी				२५	३	

क्रमांक	ग्रन्थसूची	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४	डुहा सीरदुण			१	४		
५	कवित राढ(ठ)			२६	४		
६	गीत जाति त्रीबल			३०	४		
७	कवित यंघतध्वनि			४७	५		
८	नशाणीमीराछलतन(त)जीकी			५४	६		
९	गीत हामाजीको			१	७		
१०	गीत चतभ्रळोळ हनुमत- जीको			५१	८		
११	गीत गोख डोढो देवजीको			५३	८-९		
१२	गीतजोगारमां(रंम)			५६	९		
१३	कवित् चवाणकी उत्पत्ती			५६	१०		
१४	गीत गोग(गोगा) चहवाण			५८	१०		
१५	गीत राव कोलणको			५९	१०		
१६	गीत हाळुजी को			६३	११		
१७	गीत रों(गो)पाळजीको			६४	११		
१८	गीत बैरसळ			६५	११-१२		
१९	गीत लालाहाडाको			६६	१२		
२०	गीत भापो पशुकाळको			६७	१२		
२१	गीत राव अरजनजीको			६८	१३		
२२	कवित राव मुरजनको			६९	१३		
२३	गीत रावमुरजमलजीको			७१-७६	१३-१६		५६वें गीत का प्रसङ्ग नहीं मिलता है।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२४	नसाणी राव सुरजनकी			८०	१६-१७		
२५	नीसाणी राव दूदा भोजकी			८१	१७		
२६	नीसाणी दूदाजीकी			८२-८३	१७		
२७	गीत दूदाजीको			८३-८७	१८-१९		
२८	राव भोजको गीत			८८-९८	१९-२३		
२९	गीत पाड़गति			९९-१५८	२३-४०		
३०	राव भार्वांसिघजीका गीत			१५९-१६७	४०		
३१	गीत भगतसिघजीकी			१६८-१७८	४२-४६		
३२	राव अमेद(उमेद) साँघजीका गीत			१७९-१८३	४६-४९		
३३	घ(जोध)सिघजी लार सती होई जीको			१८४-१९१	४९-५३		
३४	गीत राव छत्रसालजीको			१९२वां	५३वां		
३५	गीत म्हारजा ईंद्रसालजीको			१९३-१९९	५३-५५		
३६	गीत म्हारजा सरदारसाँघ-जीको			२००-२११	५५-५८		
३७	गीत महाराजा मेघसिघजीको			२१२-२२०	५८-६०		
३८	गीत म्हारजा छीत्रसिघजीका (गीत चोसरो)			२२१-२६८	६०-७५		
३९	गीत म्हारजा देवसाँघजीको			२६९वां	७५वां		
४०	गीत बेलियो सांणोर			२७०	७५-७६		
४१	गीत त्रीकुटबंध			२७१	७६-७७		इसमें इन्द्रगढ़महाराजाकी प्रशस्ति है

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
४२	रूपका महाराजाजी भगत- रामजी का कवित			२७३-२७६	७७-७९		
४३	गीत मुक्ताग्रह			२७७-२७८	७९		भगतेसनरेशकी प्रशस्ति है
४४	गीत चोसरा			२७९	७९-८०		"
४५	गीत त्रिकुटबंध			२८०-३०४	८०-९०		
४६	भाखड़ी			३०५-३६२	९०-१०४		इसमें स्फुटकवित भी हैं।
४७	साखी महाराजा सरदारसिंघ- जीकी कही			३६३	१०४		
४८	रूपक कवरजी सुनमानसिंघजी का गीत पंचसर			३६४-३६५	१०४-१०५		
४९	गीत मुक्ताग्रह			३६६-३६७	१०५-१०६		सुनमानसिंह प्रशस्ति है।
५०	गीत सुपंखरो			३६८-३७८	१०६-१११		"
५१	गीत त्रिकुटबंध			३७९-३८५	१११-११७		"
५२	गीत (कु)वरजी अमानसिंघ- जीका			३८६-३८८	११७वां		
५३	गीत म(प्र)तापसिंघजीको			३८९-४०६	११७-१२०		
५४	गीत राव अजीतसिंघको			१	१२०-१२२		पद्यसंख्या मूल पुस्तकमें केवल १ ही दी गई है। पुनः ४०४ से प्रारम्भ है।
५५	रूपक माहाराजा अमरसिंघ- जीका गीत बेलीयो			४०४-४०८	१२३-१२४		
५६	गीत माहाराजा फकीरसिंघ- जीको			४०९-४१०	१२४-१२५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
५७	माहाराजा जोगीरामजीका			४११-४१३	१२५-१२६		
५८	गीत महाराजा सालमसींघ- जीका			४१४-४१६	१२६-१२७		
५९	गीत घासीरामजीका			४१७-४१८	१२७		
६०	गीत महाराज प्रतापसिंघजीको			४१९	१२७-१२८		
६१	गीत दलेलसींघजीको			४२०	१२८		
६२	गीत महाराजा मरजादसिंघ- जीको			४२१-४२३	१२८-१२९		
६३	गीत कैवर फतेसींघजी सुजाण- सींघजी ईद्रसालोतको			४२४-४२५	१२९-१३०		
६४	गीत बरीसालोवताका			४२६-४३६	१३०-१३४		
६५	कबित् रूपजी माहासीगोत			४३७	१३४		
६६	माधोसींघजीको			४३८	१३४		
६७	गीत मुकुनसिंघजीका सावभङ्गो			४३९-४४६	१३४-१३६		
६८	धीजी कसोरसींघजीका गीत			४४७-४५१	१३६-१३८		
६९	गीत रामसींघजीका			४५२-४५५	१३८-१३९		
७०	गीत भीव(व) सींघजीका			४५६-४६५	१४०-१४३		
७१	गीत स्यामसींघजीका			४६६	१४३-१४४		
७२	गीत दुरजलसाल(दुरजनसाळ) जी का			४६७-४७८	१४४-१४८		
७३	गीत जैराम बीयास (व्यास)			४७९-४८०	१४८-१४९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
७४	गीत मोहोणसिंघजीका			४८१-४८२	१४६		
७५	गीत गोरधनसिंघजीका			४८३-४८४	१४६-१५०		
७६	गीत प्रजीतसिंघजीका			४८५	१५०		
७७	माहाराव छत्रसाळजी कबित्			४८६-४८६	१५०-१५१		
७८	गीत प्रथीसिंघजीका			४९०	१५१-१५२		
७९	गीत नाहरसिंघजीको			४९१	१५२		
८०	गीत नाथजीको			४९२	१५२-१५३		
८१	गीत हरदेनारायेणको			४९३	१५३		
८२	गीत दोलतसिंघ हरदावतको			४९४	१५३		
८३	गीत भीवसिंघ हरदावतको			४९५	१५३-१५४		
८४	जंतसिंघ हरदावत कबित्			४९६-४९७	१५४		
८५	छीत्रसिंघजी मेवाउता गीत			४९८-४९९	१५४-१५५		
८६	फतेसींघ जंतसिंघजीको कबित्			५००-५०१	१५५		
८७	कसुबा(कसुंबां) बायको गीत			५०२-५०४	१५५-१५६		
८८	गीत हाडा भीवसिंघजीको			५०५-५०६	१५६-१५७		
८९	कबित् राव हमोरको			५०७-५०८	१५७वां		
९०	प्रथीयरजकी छप्पै			५०९-५१२	१५७-१५८		
९१	गीत गोख डोढ़ो बरडोदको			५१३	१५८		
९२	राणा भोजराज चहुंवाणको कबित् टोडरमल चहुवान नीमराणाको राजा			५१४	१५८-१५९		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
६३	गीत बेदलाका ठाकुर बखत- सीघ चहुवाण को। सुपंखरी चोटीबंध			५१५से५१७	१५६-१६०		
६४	गीत चहुवाणाको			५१८-५१९	१६०-१६१		
६५	गीत सत्रसाळ देवड़ाको			५२०	१६१		
६६	गीत अखसीघ देवड़ाको			५२१	१६१		
६७	गीत सुरताण देवड़ाको			५२२	१६१		
६८	गीत (बी)रमदे सोनगराको			५२३	१६२		
६९	गीत राणगदे सोनगराको			५२४	१६२		
१००	गीत जसो सोनगरको			५२५	१६२-१६३		
१०१	गीत कुभा(कुंभा) खीचीको			५२६	१६३		
१०२	गीत धीरतसीघ खीचीको			५२७	१६३-१६४		
१०३	गीत नगा खीचीको			५२८-५२९	१६४		
१०४	गीत फतेसीघ खीचीको			५३०	१६४-१६५		
१०५	गीत अकबर पातस्याको			५३१-५३२	१६५		
१०६	कवित साहिजादो दानसाहको			५३३	१६५		
१०७	कवित् खान खान नवाबको			५३४-५३६	१६५-१६६		
१०८	कवित् मोरंजे(ब) पातस्याका			५३७	१६६		
१०९	गीत साहिजादाको			५३८	१६६-१६७		
११०	गीत दलिको			५३९	१६७		
१११	गीत राणा कुंभाको			५४०-५४३	१६७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
११२	गीत रायमल राणाको			५४४	१६८		
११३	गीत राणा परतापसींघको			५४५-५४६	१६६-१६६		
११४	गीत राणा अमरसींघको			५४६	१६६-१७०		
११५	गीत राणा जगतसींघजीको			५५०	१७०		
११६	गीत राणा राजसींघको			५५१-५५५	१७०-१७१		
११७	गीत राणा परतापसींघजीको			५५६	१७२		
११८	गीत राणा सगरांमसींघजीको			५५७	१७२-१७३		
११९	गीत राणा सांगाको			५५८-५५९	१७३-१७४		
१२०	गीत जमल पताको			५६०-५६१	१७४-१७५		
१२१	गीत रावलजीका			५६२	१७५		
१२२	गीत रावलको			५६३	१७५-१७६		
१२३	गीत अमरसींघ रावलको			५६४	१७६		
१२४	गीत जेतसी रावलको			५६५	१७६		
१२५	गीत सालमसींघ देवलको			५६६	१७६-१७७		
१२६	कवित् सेवो रावलको			५६७	१७७		
१२७	कवित् कावड्या खेडीको भारतसींघजीको			५६८	१७७		
१२८	गीत राणा भीवको			५६९-५७०	१७७-१७८		
१२९	गीत उडणा प्रथीराजको			५७१-५७२	१७८-१७९		
१३०	गीत सागा मीणाको			५७३	१७९		
१३१	गीत चोडो लाखाको			५७४	१७९		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१३२	गीत सीही चलो			५७५	१७६-१८०		
१३३	गीत देवीसीध बेगुंका ठाकुरको			५७६	१८०		
१३४	गीत दवारिकादास चोडावतको			५७७	१८०		
१३५	गीत जसोतसीध चोडावतको मुक्ताग्रह			५७८	१८०-१८१		
१३६	गीत नरायणदास सगतावतको			५७९	१८१		
१३७	गीत गजगति नरायणदास सगतावतको			५८०-५८१	१८१-१८२		
१३८	गीत अठतालो			५८२	१८२		
१३९	गीत गोकलदास सगतावतको			५८३-५८६	१८२-१८४		
१४०	गीत परतापसीध सगतावतको			५८७-५९३	१८४-१८५		
१४१	गीत जगतसीध सगतावतको			५९४-५९५	१८५-१८६		
१४२	गीत लालसीध सगतावतको			५९६	१८६		
१४३	गीत सगतसीध सगतावतको त्रीकुटबंध			५९७	१८६-१८८		
१४४	गीत सुरतसीध सगतावतको			५९८	१८८		
१४५	गीत सगतावतको			५९९	१८८		
१४६	गीत राणा संग्रामसीधजीको			६००	१८८-१८९		
१४७	रूपक म्होकमसी चंद्रावतको			६०१-६०४	१८९-१९०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१४८	गीत अमरसींघ चंद्रावतको			६०५	१६०-१६१		
१४९	गीत भारतसींघ साहपुर			६०६-६०७	१६१वां		
१५०	गीत उमेदसींघ साहेपुर			६०८-६१२	१६१-१६४		
१५१	गीत अदोतसींघको			६१३	१६४		
१५२	गीत रामानंद नागाको			६१४	१६४-१६५		
१५३	गीत केसरीसींघ सीसोदो			६१५	१६५		
१५४	गीत सांवलदास डाबरको			६१६	१६५-१६६		
१५५	गीत अचलसींघ राणाउतको			६१७-६१९	१६६-१६७		
१५६	गीत जगमाल जाजपुरको ठाकुरको त्रीबंकडो			६२०	१६७		
१५७	गीत देवलाका ठाकुरको तसर गीत			६२१	१६७-१६८		
१५८	गीत जंगखोडो बेघुका रावत हरीसींघजीको			६२२	१६८		
१५९	गीत बिहारीदास गलोतको			६२३	१६८		
१६०	गीत आनु गलोतको			६२४	१६८-१६९		
१६१	गीत मुलराज सोलखीको मुक्ताग्रह			६२५	१६९-२०१		
१६२	कबित् नाहारसिंघ सोलखीको			६२६	२०१		
१६३	दोनू कबित् नाहारखीजीको छं । ऐक कबित् नाहारखांजी को ऐक सुरजीको			६२७	२०१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१६४	कवित हरोजीको			६२८-६२९	२०१-२०२		
१६५	गीत लालसींघ सोलैं(लं)खीको			६३०-६३१	२०२		
१६६	गीत कसनसींघजीको			६३२	२०२-२०३		
१६७	गीत बीरमदे सोलखीको			६३३	२०३		
१६८	गीत सीधराव जैसंगको			६३४	२०३-२०४		
१६९	गीत मुळराज सोलखीको			६३५	२०४		
१७०	कवित नाथावताको			६३६	२०४		
१७१	गीत देबीसींघ नाथावतको			६३७	२०४-२०५		
१७२	कवित् करण नाथावतको			६३८	२०५		
१७३	गीत गोयंदा सखराड़ाको			६३९-६४०	२०५-२०६		
१७४	गीत अमरसिंघ भाटी जैसलमेरको			६४३	२०६		
१७५	गीत सबळा भाई			६४४	२०७		
१७६	गीत जादुको			५४५	२०७		
१७७	गीत बिजासर वैयाको			६४६	२०७-२०८		
१७८	गीत करण सरवैयाको			६४७	२०८		
१७९	दुहा जसा सरवैयाका			६४८	२०८-२०९		
१८०	गीत राठोड़ाका			६४९	२०९-२१०		
१८१	गीत राजा गजसींघजीको			६५०-६५२	२१०		
१८२	गीत राजा जसोतसींघजीको			६५३-६५६	२१०-२१२		
१८३	गीत अमरसींघ राठोड़ाको नागोरको राजा			६५७-६५८	२१२		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	१८४ गीत राजा अजीतसिँघजीको			६५६-६७२	२१२-२१४		६६७ से ६७० तकके गीत नहीं हैं ।
	१८५ गीत राजा अम(य)सिँघजीको			६७३-६७५	२१४-२१६		
	१८६ गीत बखतसिँघको			६७६-६८१	२१६-२१९		
	१८७ गीत जीवा आपा दखणीको			६८२	२१९-२२०		
	१८८ गीत राजा बिजेसिँघको । सुपंखरो			६८३	२२०-२२१		
	१८९ गीत राजसिँघ रूपनगरको राजाको			६८४-६८६	२२१-२२३		* यह दोहेकी संख्या है ।
	१९० (गी)***त कुंपा राठोड़को			६८७-६९०	२२३-२२५		
	१९१ गीत नीबाको			६९१	२२५		
	१९२ गीत रतनको			६९२	२२५		
	१९३ गीत बलु चाँपावतको			६९३-६९५	२२६-२२७		
	१९४ सोनंग बलुको बेटो दोहा			१*	२२७		
	१९५ गीत रामसिँघ राठोड़को			६९६-६९७	२२७-२२८		
	१९६ गीत दोलतसिँघ राठोड़को			६९८	२२८		
	१९७ गीत अमरसिँघ गरडवाको गीत नागेटो			६९९	२२८-२२९		
	१९८ गीत ईंद्रसिँघ खैरवाका ठाकुरको			७००-७०१	२२९-२३०		
	१९९ गीत गोकलदास राठोड़को अमरसिँघ नागोरका ठाकुरको आटे काम आये			७०२	२३०		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२००	गीत जतसीघ सुमीयांगको ठाकुर राठोड़को			७०३	२३०-२३१		
२०१	गीत केसरीसीघ उदाउतको			७०४	२३१-२३२		
२०२	गीत उदाउतको			७०५	२३२		
२०३	गीत मोहोकम राठोड़को			७०६	२३२-२३३		
२०४	गीत बिजा राठोड़को			७०७	२३३		
२०५	गीत हठीसीघ राठोड़को			७०८	२३३-२३४		
२०६	गीत तेजसीघ राठोड़को			७०९	२३४		
२०७	गीत कुसलसीघ चांपावतको			७१०	२३४-२३५		
२०८	गीत सेरसीघजी कुसल- सीघजीको			७११	२३५		
२०९	गीत कुसलसीघ सेरसीघको			७१२-७१४	२३५-२३६		
२१०	गीत सेरसीघजीको			७१५-७१७	२३६-२४१		
२११	गीत दुरगादास राठोड़को			७१८	२४१		
२१२	गीत गोपालसीघ मेड़त्याको			७१९	२४१-२४२		
२१३	गीत अरघ गोख कसनसीघ राठोड़को			७२०	२४२		
२१४	गीत परसा राठोड़को			७२१	२४२-२४३		
२१५	गीत चतुरा राठोड़को			७२२	२४३		
२१६	गीत करण राठोड़को			७२३	२४३		
२१७	गीत साहाबसीघ राठोड़को			७२४	२४३-२४४		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२१८ गीत करण राठोड़को			७२५	२४४		
	२१९ गीत संसमल राठोड़को			७२६-७२९	२४४-२४६		
	२२० गीत माधोसींघ राठोड़को			७३०-७३१	२४६-२४७		
	२२१ गीत जसोतसींघजीका उमरावाको			७३२	२४७		
	२२२ गीत अमरसींघजीका उमरावाको			७३३	२४७-२४८		
	२२३ गीत परथीराज राठोड़को			७३४	२४८		
	२२४ गीत ज(य)सींघ राठोड़को			७३५	२४८		
	२२५ गीत सेवो वादेलको			७३६	२४९		
	२२६ गीत घाणोराको ठाकुर पदम- सींघको			७३७	२४९		
	२२७ गीत सगतसींघ राठोड़को			७३८	२४९-२५०		
	२२८ गीत मोकम चांपाउतको			७३९	२५०		
	२२९ गीत अखँसींघ राठोड़को			७४०	२५०-२५१		
	२३० गीत कमो राठोड़को			७४१	२५१		
	२३१ कबित् राव बीकाको			७४२	२५१		
	२३२ गीत कल्याणसींघजीको			७४३	२५१-२५२		
	२३३ गीत प्रथीराज राठोड़को			७४४-७४५	२५२-२५३		
	२३४ गीत रायसींघको			७४६	२५३		
T	२३५ गीत बीकानेरको मोणसींघका बेटाको			७४७	२५३		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२३६	गीत सांणोर थाणवंध बेलीयो रामसींघको			७४८	२५३-२५४		
२३७	गीत रायसींघ बीकानेरको			७४९	२५४		
२३८	कवित् बीकानेरका राजा अनोपसींघको			७५०	२५४-२५५		
२३९	गीत बीकानेरको पदमसींघको			७५१-७५४	२५५-२५६		
२४०	गीत केसरीसींघ बीकानेरको			७५५	२५६-२५७		
२४१	कवित् राजा गजसींघजी बीकानेरको			७५६	२५७		
२४२	गीत भौंवि राठोड़को			७५७	२५७-२५८		
२४३	गीत दुदा राठोड़को			७५८	२५८		
२४४	गीत लखधीर रींदा			७५९	२५८-२५९		
२४५	गीत योक अखरो करण बीकानेरका राजाको			७६०	२५९		
२४६	गीत आफुको			७६१	२५९-२६०		
२४७	गीत भ्यागको			७६२	२६०		
२४८	छप्पे राव भाराकी जाड़ो- चाकी			७६३	२६०		
२४९	गीत जाड़ेजाको बीसर			७६४	२६०-२६१		
२५०	गीत हीरा मांगळयाको			७६५	२६१		
२५१	गीत महेड़ जाड़ेचाको			७६६	२६१-२६२		

क्रमाङ्क	ग्रन्थसूची	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२५२	गीत राव देसलको			७६७	२६२		
२५३	दुरजनसाल सोडाको			७६८	२६२		
२५४	गीत भोज काबाको			७६९	२६२-२६३		
२५५	गीत घासड़ी सोड़ा चवाणको			७७०	२६३		
२५६	गीत सोड़ा राठोड़ाकी चुकको			७७१	२६३-२६४		
२५७	गीत सोड़ा भाटीकी चुकको			७७२-७७३	२६४		
२५८	गीत राजा मानको			७७४-७७५	२६४-२६५		
२५९	कवित बड़ो जैसींघको			७७६-७७८	२६५-२६६		
२६०	गीत बड़ो जैसींघको			७७९	२६६		
२६१	गीत जगतसींघ ग्राम[मे]रका राजाको लहचाल			७८०	२६६		
२६२	गीत राजा रांमसींघजीको			७८१	२६६-२६७		
२६३	कवित् राजा बसनसींघको			७८२	२६७		
२६४	गीत सीहि ओगान राजा सवाई जैसींघको			७८३-७८८	२६७-२७०		
२६५	गीत बडा जैसींघजीको			७८९-७९०	२७०-२७१		
२६६	गीत दुमेळ । मनोहर साखळो बड़ा जैसींघको उमरावको			७९१	२७१		
२६७	गीत तलोकसींघ राजाउतको			७९२	२७१		
२६८	कवित् कुशलसींघ नाथाउत चोमा[मू.]को ठाकुर			७९३-७९४	२७१-२७२		
२६९	गीत गजैसींघ नाथाउतको			७९५-७९६	२७२-२७३		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
२७०	गीत सोरठो उद(य)सींघ सेखाउतको			७६७	२७३		
२७१	गीत दीर्घसिंघजीको			७६८	२७३-२७४		
२७२	गीत दोलतसींघको			७६९	२७४		
२७३	गीत सोसींघ सेखाउतको			८००	२७४-२७५		
२७४	गीत कानसिंघ बलभदोत			८०१	२७५		
२७५	गीत देवसींघ खंगारोतको			८०२	२७५-२७६		
२७६	गीत भ्रमरसींघ खंगारोत			८०३	२७६		
२७७	गीत गोरघन कल्याणोत			८०४-८०५	२७६		
२७८	गीत मानसिंघ कल्याणोत			८०६	२७६-२७७		
२७९	गीत कमा कल्याणोतको			८०७	२७७		
२८०	गीत जंचंद कल्याणोतको			८०८	२७७		
२८१	गीत फतेसींघ नागाको			५०९	२७७-२७८		
२८२	गीत जैसींघ नरुको			८१०	२७८		
२८३	गीत दोनु जैसींघ नरुकाका			८११	२७८		
२८४	गीत मुजाणसींघ जंग- नाथोतको			८१२	२७८-२७९		
२८५	गीत साहेबखां भाखरोतको			८१३	२७९		
२८६	कवित राजसींघ भाखरोतको			८१४-८१५	२७९-२८०		
२८७	गीत राजसींघ भाखरोतको			८१६	२८०		
२८८	गीत गुजरीका पेट(बेटा)को नरायणदासजीको दोलतखां बेटो छे जीको गीत छे			८१७	२८०-२८१		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	२८९ कवित् जैतसींघ मानसींघउत (बाकाउत)को			८१८	२८१		
	२९० दुहो बाकाउतको			१*	२८१		*यह दोहेकी संख्या है ।
	२९१ गीत सपुतको			८१९	२८१-२८२		
	२९२ गीत कपुतको			८२०	२८२-२८३		
	२९३ गीत बेसरै मानसींघोताको			८२१	२८३		
	२९४ दुहा सवाई जैसींघजीको			१*	२८३		*यह दोहेकी संख्या है ।
	२९५ गीत खंगार कछावाको । खंगारो ताको बड़ो सारा सु			८२२	२८३		
	२९६ कवित् नाथाउत कछावाको			८२३	२८३-२८४		
	२९७ गीत जंग खोडो राजा विठल- दास गोड़को			८२४-८२७	२८४-२८५		
	२९८ गीत राजा अनाद (अनां?)को			८२९	२८५-२८६		गीतसं० ९२८ नहीं है ।
	२९९ कवित् राजा बीठलको डुंगरसी बाभूडीका कहघा			८३०-८३२	२८६		
	३०० गीत राजा अनरद गोड़को			८३३	२८६-२८७		
	३०१ कवित् सावभूडो			८३४-८३५	२८७		
	३०२ गीत राजा नरसं(ग)को			८३६-८३९	२८७-२८८		
	३०३ गीत जाति हंसमग			८४०	२८९		
	३०४ गीत अरट गोड़ांको			८४१	२८९		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३०५	गीत श्ररजन गोड़को			८४२-८६०	२८६-२८६		गीतसं. ८६५ नहीं है ।
३०६	गीत सुभराम गोड़को			८६१-८६४	२८६-२८८		
३०७	गीत राजा मनोरदासजीको			८६६	२८८-२८९		
३०८	गीत राजा उत्तमरामजीको			८६७	२८९		
३०९	गीत वीरभद्र गोड़को			८६८	२८९		
३१०	गीत श्ररजन वीरभद्रको			८६९	२८९-३००		
३११	गीत जोरावरसीधजी माहा- राजाछीत्रसीधजीका नावजीको			८७०	३००		
३१२	गीत उद(य)भाण हरभाण गोड़को			८७१-८७२	३००-३०१		
३१३	गीत सगता गोड़को			८७३	३०१		
३१४	बुहो रासा(णा)सांगा उत्तमराव रतनको कह्यो			१*	३०२		*यह दोहेकी संख्या है ।
३१५	गीत थानसीध सांगाउतको			८७४-८७५	३०२-३०३		
३१६	गीत कसनसीध गोड़को			८७६-८७७	३०३		
३१७	गीत बलाभालाको			८७८-८७९	३०३-३०४		
३१८	गीत राज कीरतसीधजी सादई(डी)का ठाकराको			८८०	३०४		
३१९	गीत नाथजी भालोताणाको ठाकुरको			८८१	३०४-३०५		
३२०	कुंडल्या जसोत भालाका			८८२-८८९	३०५-३०६		

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३२१	दूहो माधोसींघ भालाको			*१	३०६		*यह दोहेकी संख्या है।
३२२	दूहो मदनसींघ भालाको			१-८६०	३०६-३०७		८६० कवित् सं. है।
३२३	कवित् हमतेसिंघ भालो			८६१	३०७		
३२४	मंत्र हेमतसींघ भाला उपर			८६२	३०७		
३२५	गीत जालमसींघ भालाको			८६३	३०७-३०८		
३२६	दूहो पुंवाराको			*१, ८६४	३०८		*१ संख्या दोहेकी है।
३२७	गीत सादुल (सादुल) पुंवाराको			८६५	३०८		
३२८	गीत रावत मयण उमटको			८६६	३०९		
३२९	गीत परसराम उमटको			८६७	३०९-३१०		कवित्संख्या के अतिरिक्त ४ दोहे और हैं।
३३०	दूहो मानधाता पुवार बीजोल्यांका ठाकुरको			*१	३१०		*यह संख्या दोहे की है।
३३१	गीत नंगा खातीको			८६८-८६९	३१०-३११		
३३२	गीत नारंग देसतीको			९००	३११		
३३३	गीत रजपुताका गाढको			९०१-९०४	३११-३१३		
३३४	गीत अनोपसींघ कछवावो			९०५	३१३		
३३५	गीत माधोसींघ कछवावो अजबगढ भानगढका ठाकुरको			९०६	३१३-३१४		
३३६	गीत गोयंददास माधाणीको कछवावो			९०७	३१४		
३३७	गीत कमा माधाणी कछवावो			९०८	३१४		
३३८	कवित् सवाई जंसींघको			९०९	३१४-३१५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
३३६	कवित् सताराका राजाका			६१०-६१६	३१५-३१७		
३४०	कवित् हरदसाह बुदेलाका			६२०-६२१	३१७-३१८		
३४१	कवित् आतमाराम रुघनाथ- सींघ गोड़ भाखरोत			६२२-६२३	३१८		
३४२	कवित् तरवरसाह भाटको			६२४-६२५	३१८-३१९		
३४३	कवित् धरती चकवहुवाको			६२६-६२७	३१९		
३४४	कवित् रूपगाकी खोडको			६२८	३१९-३२०		
३४५	कवित् प्रसताई देवीदासका कहा			६२९-६३६	३२०-३२२		
३४६	कवित् कुडळया गिरधरका कहा			६३७-६६६	३२२-३२६		
				इसके पश्चात् स्फुटपत्र हैं, उन्हीं पर क्रमशः पत्र- संख्या दी हुई है। अतः गीत संख्या क्रमशः नहीं है			
३४७	गीत अमरसींघजी खातोली का ठाकुरको			३३०			
३४८	गीत महाराजा भगतरामजी को छसर । भय्यारीदास बागड़ीको कहा			३३०			
३४९	कवित् खटवरसणका भाव- परी छप्प			३३०			
३५०	गीत डोढो अठताळो सवा- सोको			३३५			
							पत्र ३३१ से ३३४ तक स्फुट कवित्त बोहे हैं।

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
	३५१ गीत सावभूडो			३३६			
	३५२ गीत जाति अठतालो			३३८			
	३५३ गीत पदमसींघजी रहणावन को ठाकुरज्याकी ठुकराण्या मुथरामे काम आयी ज्याको			३४०			
	३५४ गीत देवो बागाको			३४४			
	३५५ नशाणी राव साडाकी			३४४			
१८४	उम्मेदचरित्र	वंशभास्करगत	हिन्दी	इतिहास	४-११६	२०वीं श.	अपूर्ण
१८५	गीतासार		"	वेदान्त	१०	"	
१८६	मदनकँवाररी कथा		राजस्थानी	कथा	३०	"	अपूर्ण, कीटविद्ध
१८७	(क) वैराग्यशतक	भर्तृहरि	संस्कृत	काव्य	८-१२	१८००	
	(ख) पोथी साठसम्बत्सररी		हिन्दी	ज्योतिष	१-३३	"	
	(ग) गोकुल नायामल्ल अखाड़ाके युद्ध		"	काव्य	१-६	"	
	(घ) शाहजहाँका चारोंशहजादांकी कथा (पद्यबद्ध)		"	"	१-७	"	
	(च) कुतुबरात		"	"	३६	"	अपूर्ण
१८८	परिचय अष्टाङ्ग		"	योग	३-८०	२०वीं श.	कीटविद्ध, अपूर्ण
१८९	भाषापिंगल		"	छन्दःशास्त्र	६	"	अपूर्ण
१९०	(क) कविकुलकण्ठाभरण		"	रसालंकार	४१	"	"
	(ख) काव्यकौमुदी	संग्रामसिंह	"	"	१-१३	"	
	(ग) सपखरो वसानोर गीत लक्षण		"	छन्दःशास्त्र	३	"	"

क्रमांक	ग्रन्थनाम	कर्ता	भाषा	विषय	पत्रसंख्या	लिपिकाल	विशेष
१६१	(घ) भाषाभूषण परमलोकपत्रिका	जसवन्तसिंह	हिन्दी	रसालंकार	१०	२०वीं श.	अपूर्ण
१६२	यशःप्रकाश	कविजुहार	"	वेदान्त	१०	१६०५	
१६३	विदग्धमुखमण्डन (तृतीयपरि- च्छेदान्त)	धर्मदास	संस्कृत	काव्य	१२	२०वीं श.	
१६४	वीरसप्तशती	सूर्यमल्ल	हिन्दी	रसालंकार	१०	"	
१६५	महाकालभैरवकवच	गन्धर्वतन्त्रोक्त	संस्कृत	काव्य	१६	"	जीर्णशीर्ण, अपूर्ण
१६६	भैरवकवच (त्रैलोक्यमङ्गलनामक)	रुद्रयामलोकत	"	तन्त्र	३	"	
१६७	सुमुखीसहस्रनाम	रुद्रयामलगत	"	"	३	"	
१६८	अर्गलाकीलकस्तोत्र	सप्तशतीगत	"	"	१२	१८६१	
१६९	सुमुखीपटल (हनूमद्विषयक)	रुद्रयामलगत	"	"	४	२०वीं श.	
२००	गणेशकवच	"	"	"	१०	१८६०	
२०१	क्षेत्रपालमन्त्र	"	"	"	३	१८६५	
२०२	अमृतसञ्जीवनीकल्प	"	"	मन्त्रशास्त्र	३	१६वीं श.	
२०३	बालापूजनपद्धति	"	"	तन्त्र	८	"	
२०४	उड्डीशतन्त्र	"	"	मन्त्रशास्त्र	१४	"	अन्तिमपत्र अप्राप्त
२०५	गर्गसंहितागिरिराजखण्डटीका	नाथूराम गुजराती	"	तन्त्र	८	"	अपूर्ण
२०६	इन्द्रगढेन्द्रमहाराजसंभारमसिंहवि- रचितग्रन्थोंकी सूची आदि	"	हिन्दी	पुराण	३३	२०वीं श.	
			"	प्रकीर्ण	२६	"	

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

प्रकाशित ग्रन्थ

१-संस्कृत ग्रन्थ

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक—मीमांसायकसरी पं० पट्टाभिराम-शास्त्री, विद्यासागर । मूल्य—६.००
२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिंह-कारित । सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित् । मूल्य—१.७५
३. महर्षिकुलवंभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी । मूल्य—१०.७५
४. तर्कसंग्रह, अन्नभट्ट, सम्पादक—डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए., पी-एच. डी., मूल्य—३.००
५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य—१.७५
६. वृत्तिदीपिका, मोनिक्कण-भट्ट, सम्पादक—पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—२.००
७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी. । मूल्य—२.००
८. कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—१.७५
९. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच डी., डी. लिट् । मूल्य—१.७५
१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका—डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—२.७५
११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयरज, सम्पादक—पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—२.२५
१२. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री । मूल्य—३.५०
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण रचित, सम्पादक—प्रो. रसिकलाल छोटालाल पारीख, तथा डॉ० प्रियवाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट् । मूल्य—३.७५
१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि । सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य—४.७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक—पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य । मूल्य—४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक-पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इसी ग्रंथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित । मूल्य-१.५०
१७. ईश्वरविलास-महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक-श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य-११.५०
१८. रसदीधिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक-पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । मूल्य-२.००
१९. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक-पं० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य-४.००
२०. काव्यप्रकाशसंकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत, सम्पादक-श्री रसिकलाल छो० परीख भाग १ मूल्य-१२.००
२१. " " " भाग २ मूल्य- ८.२५
२२. चस्तुरत्नकोश, अज्ञात कर्तृक, सम्पादिका-डॉ. प्रियवाला शाह । मूल्य-४.००

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

२३. कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक-प्रो. के. वी. व्यास, एम. ए. । मूल्य-१२.२५
२४. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक-डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अग्रचन्द भंवरलाल नाहटा । मूल्य-४.७५
२५. लावारासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पादक-श्री महताबचन्द खारैड़ । मूल्य-३.७५
२६. बाँकीदासरी ख्यात, कविवर बाँकीदास, सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य-५.५०
२७. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग १, सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी एम. ए. । मूल्य-२.२५
२८. कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-२.००
२९. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत । मूल्य-१.७५
३०. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक-उदैराजजी उज्ज्वल मूल्य-१.७५
३१. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची-भाग १ मूल्य-७.५०
३२. " " " भाग २ मूल्य-१२.००
३३. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक-श्री बदरीप्रसाद साकरिया । मूल्य-८.५०
३४. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा कृत, सम्पादक-श्री सीताराम लाळस मूल्य-८.२५
३५. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, सम्पादक-श्री मुनि जिनविजयजी । मूल्य-४.५०
३६. बीरवांण, ढाढी बादर कृत, सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूडावत । मूल्य-४.५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१. शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी
२. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	„ „ „
३. करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित	„ „ „
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित	„ „ „
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित	„ „ „
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	„ एम. सी. मोदी
७. नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	„ „ वी. जी. सांडेसरी
८. चांद्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	„ श्री वी. डी. दोशी
९. वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित	„ „ एच. डी. वेणलकर
१०. कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	„ „ „
११. स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	„ „ „
१२. प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	„ मुनि श्री जिनविजयजी
१३. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित	„ श्री एम. एन. गोरी
१४. दशकण्ठबधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	„ „ गङ्गाधर द्विवेदी
१५. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत	„ डॉ. प्रियबाला शाह
१६. भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	„ श्री गोपालनारायण बहुरा
१७. इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	„ डॉ. दशरथ शर्मा

२-राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ

१८. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुंहता सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया	
१९. गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित	सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर
२०. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एस. भण्डारकर	अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी ।
२१. राठोड़ारी वंशावली	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२२. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	„ „ „
२३. मोरां बृहत् पदावली	„ विद्याभूषण स्व. पुरोहित हरि- नारायणजी द्वारा संकलित
२४. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता आदि)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
२५. पुरोहित बगसीराम होरां और अन्य वार्ताएं इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रन्थोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है ।	„ श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी

‘राजस्थान पुरातत्त्व’ नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है ।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ-१. प्रमाणमंजरी-ताकिचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य २. यन्त्रराजरचना-महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलदैभवस श्रीमधुसूदन ओष्ठा, मूल्य १०.७५। ४. तर्कसंग्रह-पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३. ५. कारकसम्बन्धोद्योत-पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका-पं० मौनि मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति-कवि सोमनाथ, मूल्य ६. शृङ्गारद्वारावली-हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य-पं० धरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद-कवि उदयराम, मूल्य २.२५। १२. नृत्य मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग-महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४. रत्नाकर-पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि-पं० दुर्गाप्रसाद मूल्य ४.२५। १६. कर्णकृतूहण तथा कृष्णलीलामृत-भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७. विलास महाकाव्य-श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्मपुष्पावली-कविकल श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। १९. रसदीधिका-विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००। २०. प्रकाशसङ्केत-भट्ट सोमेश्वर, भाग १, मूल्य १२.००, भाग २, मूल्य ८.२५। २१. वस कोश, अज्ञात कर्तृक, मूल्य ४.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ-१. कान्हडदे प्रबन्ध-कवि पद्मनाभ १२.२५। २. व्यापखारासा-कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा-गोपालदान ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात-महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. जुगल-विलास-कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७. कल्पलता-कवीन्द्राचार्य, मूल्य २.००। ८. भगतमाळ-चारण ब्रह्मादासजी, मूल्य ६. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मान्दरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य १०. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची भाग २, मूल्य १३. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न.पै.। १२. रघुवरजसप्रकाश, वि आढ़ा, मूल्य ८.२५ न.पै.। १३. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य १४. वीरवाण, ढाढी बादर कृत, मूल्य ४.५०।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ-१. त्रिपुराभारतीलवुस्तव-लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप-शर्मा। ३. करुणामृतप्रपा-ठकुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण-ठकुर सं ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा-पं० कृष्णमिश्र। ६. वसन्त-विलास फागु। ७. नृत्य भाग २। ८. नन्दोपाख्यान। ९. चान्द्रव्याकरण। १०. स्वयंभूछंद-स्वयंभू ११. प्राकृतानंद-कवि रघुनाथ। १२. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १३. कवि पं० रघुनाथ मनोहर। १४. दशकण्ठवधम्-पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १५. भु स्तोत्र सभाष्य-पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ। १६. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १७. महाकाव्यम्-नयचन्द्रसूरि। १८ ठकुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ-१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग नैणसी। २. गोरावादल पदमिणी चऊपई-कवि हेमरतन। ३. चंद्रवंशावली-कवि म ४. सुजान संवत-कवि उदयराम। ५. राजस्थानी दूहा संग्रह। ६. राठोडारी ७. सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रंथ सूची। ८. देवजी बगड़ावत और ग्रन्थ ९. बगसीराम श्रीर ग्रन्थ वार्ताएँ।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थ हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।